यज्ञ और औषधि विज्ञान

१ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०९ ०७ १९८२ ---------- 4

वाजपेयी याग का सूक्ष्म स्वरूप ---------- 6

मूर्ध्वा का अभिप्रायः ---------- 7

सत्रह दिवसीय याग ---------- 7

सूक्ष्म दृष्टि ---------- 8

सत्रह तत्व ---------- 9

साकल्य से अनुष्ठान ---------- 10

याग से बुद्धि की ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण ---------- 10

२ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १० ०७ १९८२ ---------- 12

प्राणों से गति ---------- 12

याग से वायुमण्डल का शुद्धिकरण ---------- 14

हिंसक और अहिंसा परमाणु ---------- 16

शुद्ध चिन्तन की अनिवार्यता ---------- 18

शब्द से हिंसा ---------- 20

३ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०५ ०८ १९८२ ---------- 22

४ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०६ ०८ १९८२ ---------- 28

५ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०७ ०८ १९८२ ---------- 38

वैद्यराज सुधन्वा ---------- 39

प्राण चिकित्सा ---------- 40

कुरुणी चिकित्सा ---------- 40

नाना प्राणियों को अपने रूग्ण की औषधियों का ज्ञान ---------- 42

६ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १७ १२ १९८२ ---------- 45

७ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १८ १२ १९८२ ---------- 54

कवच ---------- 54

पीपल वृक्ष का पंचांग ---------- 57

वृक्षों के पुरातन नाम ---------- 58

८ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १९ १२ १९८२ ---------- 65

९ प्रभु की अनन्तता २० १२ १९८२ ---------- 75

१० यज्ञ एवं औषधि विज्ञान २१ १२ १९८२ ---------- 84

११ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १४ १२ १९८३ ---------- 93

१२ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १५ १२ १९८३ ---------- 99

१३ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १६ १२ १९८३--- 104

संजीवनी बूटि-- 105

औषध विज्ञान से पशु भाषा का बोध -- 105

१४ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १७ १२ १९८३ -- 112

१ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०९ ०७ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस ममतामयी यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन होता रहता हैं क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं क्योंकि याग ही उसका आयतन माना गया हैं अथवा उसका गृह माना गया हैं प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस महान देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं क्योंकि यह ब्रह्माण्ड की गाथा गाने वाली अनुपम पृथ्वी कही जाती है, परन्तु ब्रह्म का गान गाने वाली यह वाणी मानी गई हैं, जैसे ब्रह्माण्ड की गाथा गाने गानी वाली पृथ्वी है, इसी प्रकार ब्रह्म की गाथा गाने वाली वाणी मानी गई हैं। मानो एक-एक आभा में रमण करने वाला एक विज्ञानमयी आभामयी मानो एक सूत्र माना गया हैं, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, प्रायः अनुसन्धान करता रहा हैं।

क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने बहुत अनुसन्धान किए और अनुसन्धान करते ही रहते हैं, एक-एक वस्तु के ऊपर अनुसन्धान करने से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे हम एक महान धारा में रमण कर रहे हैं, क्योंकि धारा में गति करने वाला मानो उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता हैं। परन्तु आज मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें देने नही आया हूँ, मेरे प्यारे महानन्द जी नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रगट करते रहते हैं उन वार्त्ताओं का उन मूल प्रहा कृतं ब्रह्मा मानो उनकी विवेचना होती रहती हैं। परम्परागतों से ही, आभा में रमण करने वाला और वन्दना करने वाला एक महान सूक्ष्म धाराओं को प्राप्त होता रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! हमारे यहाँ आज का वेदमन्त्र, कुछ सूक्ष्म संकेत दे रहा हैं और वह संकेत क्या है श्वंजनं ब्रह्मे वर्णः अस्सुतां दिव्यां गतं प्रमाणं ब्रह्मे लोकाः सम्भविताः वेद का मन्त्र कहता है, कि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, विचार-विनिमय करता रहा हैं कि मैं ब्रह्म की आभा में रमण करना चाहता हूँ, अथवा ब्रह्म को जानना चाहता हूँ। परन्तु इस प्रकार की उड़ान, परम्परागतों से ही, मानवीय क्षेत्र में रही हैं। आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में ले जाने के लिए आया हूँ, जहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में, ब्रह्मचारी कवन्धि उनके चरणों में ओत-प्रोत हो गया और ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा, कि-प्रभु! आपके इस महान लेखनीबद्ध में, यागों का बहुत विशेष वर्णन होता रहा है। क्या वास्तव में याग इसी प्रकार के, मानवीय आभा में रमण करते रहते हैं। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने उसका उत्तर दिया। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारी कवन्धि! हमारे यहाँ अनुसन्धान होता रहता हैं, यागों का चलन होता रहा है परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन, हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा हैं। जैसे हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग हैं और अमावेष्टि और पूर्णोष्टि और वाजपेयी गन्धवाहन और भी नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है परन्तु हमारे यहाँ अमावेष्टि याग और पूर्णोष्टि का बड़ा विशेष वर्णन होता रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है क्या इन यागों का चलन, परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में रहा हैं। ये वैज्ञानिक तरंगों में भी रमण करता रहा है, परन्तु हमारे यहाँ अमावेष्टि और पूर्णोष्टि यागों का अभिप्रायः क्या है हम अपने में पूर्णता को प्राप्त होना चाहते हैं अमावेष्टि का अभिप्रायः है कि हम अन्धकार में रहना नही चाहते। परन्तु उन यागों को करना कौन चाहता है? जो अपने आत्मकल्याण को चाहता हैं, आत्मा के स्वरूप को जानना चाहता है, वह बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों की आभा में उड़ान उड़ना चाहता हैं, अथवा उस उड़ान को उड़ने वाला, मानो परम्परागतों से मानवीय क्षेत्र में महान रहा हैं तो मुनिवरों! देखो, तुमने यह जान लिया होगा, कि हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड होते हैं भिन्न-

भिन्न प्रकार के स्थान होते हैं जिसके ऊपर प्रायः हम अपनी आभा में रमण करना चाहते हैं।

सम्भूति याग

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ सम्भूति रूप में जो याग करना चाहता हैं उसका अभिप्रायः क्या है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! सम्भूति यागों को तो तुम परम्परागतों से जानते ही हो सम्भूति याग उसे कहते हैं जो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों में एक रस हो करके विचरण करता हैं वह सम्भूति याग कहलाता हैं। जैसे हमारे यहाँ यागों का चलन तो बहुत कुछ रहा हैं परन्तु सम्भूति का अभिप्रायः यह है कि अपने को सम बनाना हैं और जब तक अपने को सम नही बनाया जाता जब तक हम सम्भूति याग या किसी भी प्रकार का याग करने का हमें अधिकार प्राप्त नही होता।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! जो मानव द्वेषारोपण करता रहता है और नाना प्रकार की संसार की वासनाओं का चयन करता रहता है क्या उसे इन यागों का अधिकार प्राप्त होता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! ऐसा तो नही होता, जैसा तुमने कहा है, कि संसार की विलासता और कामातुर वाला यागों में कितना वह अग्रणीय बन सकता हैं। अपने को ऊर्ध्वा बना सकता हैं यह तो उसके चलन के आधार पर हैं परन्तु रहा यह वाक् तुम उच्चारण करना क्या चाहते हो? इस रहस्य को नही जान पाएं।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ जैसा आपने कहा कि हमारे वैदिक साहित्य में यागों का चलन और अमावेष्टि, पूर्णेष्टि, वाजपेयी, और अग्निष्टोम, सम्भूति नाना प्रकार के यागों का चलन तो होता ही रहा है परन्तु इन चलनों में हम केवल इतना ही जानना चाहते हैं कि यह अधिकार भी तो होना चाहिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ पुत्र अधिकार तो होना ही चाहिए।

पूज्य महानन्द जीः- तो भगवन! प्रथम तो आप, अधिकार चर्चाएं की कीजिए क्या अग्निष्टोम याग कौन कर सकता हैं? अमावेष्टि कौन कर सकता हैं? पुत्रेष्टि कौन कर सकता है? वाजपेयी कौन कर सकता हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! तुमने यह कौन-सा प्रसंग लिया हैं? इस प्रसंग को तो ऋषिजन जानते हैं। अधिकार, अनधिकार की चर्चा तो वही जान सकते हैं, जो जिस मार्ग को जानते हैं, परन्तु हो सकता है कि हम यागों के मार्ग को इतना नही जानते इतना चलन हम नही चला सकते।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! हमने एक समय यह ऐसा चलन किया था बहुत पुरातन काल की वार्त्ता थी, जब आश्रमों में आपके अध्ययन किया करते थे तो एक समय हम मगध राष्ट्र में चले गएं और मगध राष्ट्र में यह चर्चा हो रही थी त्रेणकेतु ऋषि मगध राजा के पुरोहित थे परन्तु वह वाजपेयी याग कराना चाहते थे। तो त्रेणकेतु ऋषि ने यह कहा था क्या तुम कजली वनों में चले जाओ और वहाँ तुम्हें वाजपेयी यागों का वर्णन प्राप्त होगा परन्तु हम भी उस समय भ्रमण करते हुए त्रेणकेतु ऋषि के द्वार पर पंहुचे, और त्रेणकेतु के समीप जब यह प्रश्न आया तो हमे सम्बोधित किया गया क्या तुम कजली वनों में रहते हो तुम यह याग करो तो उस समय मैने कहा कि मेरे पूज्यपाद जानते हैं जब पूज्यपाद का हमने परिचय दिया तो त्रेणकेतु ने यह कहा कि वास्तव में यह जानते हैं जाओ तुम कजली वनों में चले जाओ तो पूज्यपाद उस समय कजली वनों का साथ नही बना और हम उस याग को जानते नही थे तो उस समय मानो हमें यह ज्ञान हुआ कि आप जैसा आप जैसा उच्चारण करते हैं प्रायः उस वाक् गोपनीयता में धारण करना चाहते हैं

पूज्यपाद गुरुदेवः- हास्य..... मेरे पुत्र यह जो संसार का यह जितना भी विषय है, ज्ञान और विज्ञान का जितना भी विषय है। कर्म काण्ड का जितना विषय है, यह सब गोपनीय होता हैं। परन्तु रहा यह कि तुम बहुत पुरातन वार्त्ता

प्रगट कर रहे हो, क्या मगध राष्ट्र में तुमने यह श्रवण किया होगा, हम इसका खण्डन नही कर रहे हैं, परन्तु इसका मण्डन भी होता रहता है। परन्तु इस वाजपेयी याग इत्यादियों का जो वर्णन है इन याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बहुत-सी लेखनियाँ बद्ध की हैं। परन्तु और भी नाना ऋषि हुए हैं। जिन्होंने लेखनियाँ बद्ध की हैं उनके कर्म काण्ड का वर्णन किया हैं और उसका अधिकार भी उन्हें प्राप्त हुआ।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! आप इस याग का वर्णन नही कर सकते?

पूज्यपाद गुरुदेवः- नहीं, यागों का वर्णन तो कर सकते हैं। इसमें कोई वाक् नही है परन्तु तुम याग जब करना नही चाहते तो तुम याग का वर्णन क्यों चाहते हो?

पूज्य महानन्द जीः- पूज्यपाद गुरुदेव! सम्भवतां वन्धनं मेघा वर्णसुतः प्रवी अस्सुता जैसे भगवन! मेघों की वृष्टि होती है, और उससे सर्वत्र वनस्पतियां प्रफुल्लित हो जाती हैं, इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी ज्ञान चाहता हैं जैसे नाना प्रकार की वनस्पतियां मानो सूक्ष्मतम रहस्य को पाना चाहती हैं इसी प्रकार हमें भी जानकारी और हमारी, आकाशवाणी मृत मण्डलों लोकां ब्रह्मे स्वाहा यह हमारी वाणी मृत मण्डल में जाती है इसीलिए हमारी इच्छा है जितना आपके मुखारबिन्दु से यह ज्ञान का उर्पाजन हो जाएं, उतना ही प्रियतम हैं। क्योंकि हमारे यहाँ एक चलन रहा है, वर्तमान काल में क्या यह जो वाजपेयी याग है इसका हिंसा से कुछ सम्बन्ध कहते हैं और ऐसा मैंने श्रवण भी किया है। महाभारत के काल में वाजपेयी यागों की बलि का भी वर्णन किया हैं एक सुधन्वांकान्त केतु था, जो वाममार्ग था उन्होंने एक समय पूज्यपाद यह अपना वाजपेयी किया और उसमें गऊ की बलि प्रदान की गई, परन्तु उसका परिणाम यह हुआ कि समाज में नास्तिकवाद आ गया। वेदों के प्रति, मन्त्रों के प्रति, आस्था न रही। तो क्या भगवन! आपके ही, आप तो परम्परा की वार्त्ता जानते रहते हैं क्या भगवन! वास्तव में यागों में हिंसा का चलन रहा है या नही क्योंकि मध्य काल में रहा हैं। इसीलिए वैदिक साहित्य लुप्त हो गया।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! ऐसा तो नही है, कि हिंसा का वर्णन तो कहीं नही आता, और किसी भी याग में हिंसा का वर्णन नही आता।

वाजपेयी याग का सूक्ष्म स्वरूप

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! यह जो मन्त्र हैं, मन्त्र है, वर्ण स्वस्ते स्वाहा। वाचनमां ब्रह्मे स्वाहा अस्वान कृति ध्वस्णं स्वाहा, क्या भगवन! यह वाजपेयी यागों में स्वाहा के वर्णन आते हैं क्या इसके स्वरूप को आप क्या उच्चारण करेंगें।

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र! यह तो यह है, कि वरशवन्ध श्वान सुवर्णः ब्रहे व्रतः स्वस्ति मानो जैसे स्वस्ति अस्वान हैं। मानो देखो, जैसे बैल का स्थान हैं यह तृण का स्थान हैं आपका अभिप्रायः यह है कि तृण को पान करने वाला बैल और बैल को याग में हूत किया जाता हैं। यही तो मन्त्र कहता हैं परन्तु इसका ऊर्ध्वा मुख यह है, क्या तृण कहते हैं अन्न के निचले भाग को और बैल कहते हैं उसको पान करने वाले को और याग कहते हैं। उस याग में उस बैल को अर्पित किया जाएं ऐसा कहा जाता हैं परन्तु यहाँ इसका अभिप्रायः आता है इसका रूप स्वरूप बनेगा क्या तृण कहते हैं अन्न के निचले भाग को और बैल पान करता है। निचले भाग को याग को अर्पित किया जाता हैं तो यहाँ कृषक याग को कहा है क्या कृषक याग तृण को पान कराता हैं, और बैल उसे पान करता है बैल के पान करने पर उसको याग में हूत किया जाता हैं हूत का अभिप्रायः है, क्या कृषक जब अन्न को उत्पन्न करने के लिए मानो देखो, भूमि को उस योग्य बनाता हैं तो वहाँ बैल अपना कार्य करता है उस अर्पित करने वाले को कृषक जब हूत में अर्पित करा देता हैं तो कृषक अर्पित करके मानो देखो, उसको याग कहते हैं यहाँ यह इसको ब्रहो वाजपेयी याग का एक वर्णन आता है, सूक्ष्म में परन्तु यह जो याग करता है, कृषक परन्तु इससे यज्ञशाला में अग्नि में

आहुति देने का प्रश्न नही आता क्योंकि याग का अभिप्रायः है, जो व्यापक रूपों से कर्म किया जाता है, उसका नाम याग हैं।

मूर्ध्वा का अभिप्रायः

परन्तु द्वितीय रूप भी आता हैं कि अग्नि अग्नं ब्रह्मेअस्विही मानो देखो, यदि हम यज्ञ में लेते हैं, आध्यात्मिकवाद में लेते हैं, तो वृख और बैल रूप मन बनता है क्योंकि वृख को भी गऊ के बछड़े को वृख कहते हैं। जब वह कृषक के सुयोग्य आता है तो उसे बैल कहते हैं परन्तु देखो, जब वह उसे हम अर्पित कर देते हैं। इसी प्रकार यह जो मन है जब हम आध्यात्मिक रूपी, वाजपेयी याग को जानने लगते हैं जैसे मानव अपने स्वरूप को जानता है मानवीय अपने स्वरूप को जान करके वह सूक्ष्म धाराओं में गति करने लगता है। सूक्ष्म धाराओं में रमण करता है तो मानो देखो, उस समय यह मन मन को वृख अथवा बैल कहा जाता हैं। गऊ का बछड़ा कहा जाता हैं क्योंकि इसको हम जब तक उसमे संलग्नता से सम अर्पित नहीं करेंगें परन्तु मन को इसमें संलग्न करना होगा और वह याग कहलाता है परन्तु रहा यह कि अब वाजपेयी यागों का वर्णन परन्तु देखो, वह आध्यात्मिक यागों में उसमें मूर्ध्वा शब्द आता हैं मूर्ध्वा कहते हैं स्वरों को क्योंकि जो वेदमन्त्रों का स्वर सहित गान गाता है, वह मूर्ध्वा को अपनी मूर्धतव को प्राप्त हो जाता हैं। परन्तु जहाँ स्वर रूप बनता हैं। वहाँ मूर्ध्वा का रूप मानो वेद का पारायण पाण्डितव, को अच्छी प्रकार वेद के मन्त्रों की सन्धि करना उसको भी मूर्ध्वा कहते हैं परन्तु रहा यह कि याग को हम तीसरा मूर्ध्वा उसे कहते हैं, जब हम याग करते हैं, और वाजपेयी याग करते हैं। तो याग कर्म करने वाला मानो उस याग से ही अपने आन्तरिक स्वरूप को वह अपनेपन में जान लेता है उसको भी वह मूर्ध्वा कहते हैं परन्तु वह कैसे बनता हैं सम्भविता ग्रहणं लोकां मानो देखो, मूर्ध्वा बन करके, एक लौकिकता को प्राप्त होता रहता हैं। परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में और तुझे ले जाऊंगा इसकी भूमिका बना करके, आगे इसके स्वरूप का वर्णन करूंगा।

परन्तु देखो, हम जैसे मूर्ध्वा में जाना चाहते है मूर्ध्वा उसे कहते हैं जो अपनी आत्म तत्त्व को जानने वाला, आत्म स्वरूपवेत्ता बनता है, उसे भी मूर्ध्वा कहते हैं परन्तु अब इसके क्षेत्र में हम यह कि हम नो नमाः अष्टवे नमाः और देखो, सप्तम नमाः मानो देखो, हम सत्रह दिवस में, इस याग को करते रहते हैं।

सत्रह दिवसीय याग

हम सत्रह दिवस का वर्णन याज्ञवल्क्य मुनि ने भी किया है सत्रह दिवस का अभिप्रायः हमें सूक्ष्म ऊर्ध्ववेत्ताओं ने भी दिया हैं मानो जो अपने विचारों को, ऊर्ध्ववेत्ता बना लेते हैं ऊर्ध्वा बना लेते हैं तो वह इन मानो देखो, मूर्ध्ववेत्ता बनते हैं उनको मूर्ध्ववेत्ता भी कहते हैं, ध्रुववेत्ता भी कहते हैं और उसे अश्विनी भी कहते हैं। परन्तु रहा यह कि अब हमारा एक स्वरूप और बनेगा वाजपेय अग्नांसुता परन्तु वह स्वरूप क्या बनेगा मानो यागों के चयन में हमारे यहाँ सत्रह दिवस क्यों माने गएं हैं कि सत्रह दिवस की एक अवधि है सत्रह दिवस क्यों कहा है ऐसा? क्या वह सत्रह दिवस तक याग करना चाहिए, उस याग का अभिप्रायः यह है कि उसमें कुछ मन्त्र हैं, मन्त्र है, जैसे सम्भव ब्रह्मे निम्व्रणा स्वस्ति ब्रह्मा चक्रणि स्वस्ति रूद्रो भागा अश्वनं ब्रह्मे कृतां लोकाः सम्भविते ऋतुम् अस्तु सुप्रजा। ऐसा यह वेदमन्त्रों की कुछ ध्वनियां होती हैं और वह जो ध्वनियां हैं वह पुनरूक्ति रूप में गाई जाती हैं, जैसे पुनरूक्ति रूप से कहते हैं मंगलम् ब्रहे सम्भूता ब्रहे चक्रो रुद्रो स्वस्ति सुप्रजा अप्रमाणं भविते स्वस्ते वायु रूद्रा अस्सुति मंगलं वत्तेः मानो देखो, इस प्रकार के जो वेदों की ध्वनि और गान गाने वाला हैं वह सत्रह दिवस तक मानो सत त्वन्भनं गृ अस्ता देवा रोवस्तनं उसकी पुनरूक्ति करता रहता हैं, और वह पुनरूक्ति करता हुआ, पुनरूक्ति इसीलिए करता है क्योंकि पुनरूक्ति में जीवन रहता हैं और पुनरूक्ति ही मानव की आभा कहलाती हैं। और पुनरूक्ति एक शब्द की

विवेचना करने का पुनरूक्ति पूर्ण वृत्तियाँ आयेंगी पूर्णताएं आयेंगी। परन्तु देखो उसमें इसीलिए उच्चारण करता है। क्योंकि सत्रह दिवस उसे पूर्ण करने हैं।

सत्रह दिवस का अभिप्रायः यह है, कि सत्रह तत्त्वों का हमारा सूक्ष्म शरीर होता हैं। और वह तो सूक्ष्म शरीर है उसे हमे दृष्टिपात करना चाहते हैं। याग के द्वारा उसे हम दृष्टिपात करना चाहते हैं तो अब यागों के द्वारा हम उसे सूक्ष्म बनाना चाहते हैं, यागों के द्वारा उस सूक्ष्म शरीर को हम दृष्टिपात करना चाहते हैं। क्योंकि जहाँ चित्त का मण्डल रहता हो चित्त के मण्डल में मानो सत्रह प्रकार की आभाएं होती हैं, सत्रह प्रकार की आभाएं, मानो मन के साथ में चित्त के मण्डल में होती हैं, और वह जो चित्त का मण्डल है, उसमें जन्म-जन्मान्तरों के अंकुर संस्कार विद्यमान होते हैं। जो पढ़नेकी मानो शक्तिवर्धक कहलाते हैं।

तो इसी प्रकार ऋषि-मुनि जब मानो देखो, इस याग को करते हैं तो सबसे प्रथम वह अपने को जानने की इच्छा करते हैं, परन्तु अब यह प्रसंग आता हैं, जैसा तुमने पुत्र! अभी कहा था। क्या अधिकार और अनधिकार प्राप्त होना चाहिए। तो वह इन यागों का करने का अधिकार है, उसे अनुसन्धान करने का अधिकार हैं, जो अपनी मानसिक प्रवृत्तियों को, संसार से वह मानो देखो, प्रेय मार्ग को, उस अपनी प्रवृत्तियों को वह मूर्ध्वा बना लेता हैं। परन्तु जैसे उसे मानो संसार के किसी कारण से उसके मनों में विवाद बन गया हैं उस विवाद को वह नष्ट करे परन्तु ज्ञान के द्वारा उस अज्ञान को समाप्त करने वाला बनें परन्तु जैसे कर्मफल और क्रियाफल की चर्चा आती हैं मानो जैसे कर्मफल है एक मानव कर्म कर रहा है, और वह कर्म तो उसी प्रकार का करेगा परन्तु उसको त्रास देना उसमें उसके प्रति मानो उसे घृणात्मक होना यह उस अज्ञानता को जब तक समाप्त नही कर देता, तब तक मानो वह याग में अनुष्ठान करने का उसे अधिकार प्राप्त नही होता।

हमारे यहाँ, मुझे स्मरण हैं, पुत्रों! तुम्हें स्मरण होगा एक समय चंग्रेत नाम के राजा थे, चंग्रेत नाम के राजा थे वह जब एक समय मानो चंग्रेत नाम के राजा थे हरिश्चन्द के पिता जी, चंग्रेत नाम के राजा का पुत्र था हरिश्चन्द मानो चंग्रेत नाम के राजा का एक समय विभाण्डक मुनि के द्वार पर आए तो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से कहा क्या महाराज! मैं ऊर्ध्वा में जाना चाहता हूँ, और मैं अग्निष्टोम मानो मैं वाजपेयी करना चाहता हूँ वाचन्ने में शुन्धामि, श्रोत्रं में शुन्धामि, और घ्राण ब्रहे घ्राणम्में शुन्धामि, मैं सबको अपने में शुन्धामि करना चाहता हूँ। परन्तु महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज आश्रम में थे, हमारे समीप आ पंहुचे, परन्तु जब ऋषि-मुनि उपस्थित हो गएं तो उस समय राजा से कहा कि महाराज! आप जो इस याग को करना चाहते हो, क्यों करना चाहते हो? राजा ने कहा कि मेरी इच्छा यह है क्या मैं इन्द्र की उपाधि को प्राप्त करना चाहता हूँ, हमारे यहाँ इन्द्र वह मानव बनता था, जो वृष्टि याग, पुत्रेष्टि याग, और जो वाजपेयी याग, अग्निष्टोम याग का जिसे अधिकार प्राप्त हो जाएं, और वह याग करने लगे, और याग करके मानो वह इन्द्र की उपाधि को प्राप्त होता है, वह अनुष्ठान कहलाता हैं वह अनुष्ठान में विद्यमान होता हैं, जो मानो देखो, अपने को समाप्त कर देता हैं। इसी प्रकार जब उन्होंने देखो, यह कहा, तो राजा शान्त हो गया, और राजा ने यह कहा कि महाराज! मैं तो इस याग को करने ही वाला था। उन्होंने कहा नही, जब तक तुम्हें अधिकार प्राप्त नही होगा, जब तक तुम्हारा जीवन ऊर्ध्वा के मार्ग को नही जा सकता। परन्तु देखो, ऊर्ध्वा में रमण करना हैं ऊर्ध्वा वाला ही मानो इसका अधिकारी होता है।

सूक्ष्म दृष्टि

तो उस समय देखो, राजा मौन हो करके चले गएं तो राजा ने उस याग के लिए अपने में तप किया और अपने को चक्षुम्मे शुन्धामि प्राणं प्राणो में शुन्धामि, श्रोत्रं में शुन्धामि मनों में शुन्धामि और देखो, उन्होंने त्वचा में शुन्धामि, इसका पठन-पाठन करते हुए, उन्होंने अपने में यह विचार लिया, कि मैं वास्तव में अपने को शुन्धामि बनाना चाहता

हूँ। क्योंकि जब तक प्रत्येक इन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियां उसकी तप में नही पंहुच जाती, तब तक मानो देखो, उसकी दिव्य दृष्टि नही होती। और जब तक सूक्ष्म दृष्टि नही होती। तो सूक्ष्म विषयों को वह अच्छी प्रकार मानो क्रियात्मक में नही ला सकेगा। श्रवण कर सकता है, आभा में रमण कर सकता हैं परन्तु उसमें अधूरापन दृष्टिपात आता हैं।

सत्रह तत्व

उसके पश्चात पुत्र! तुमने जहाँ यह कहा है कि हम देखो, सत्रह दिवस तक याग करना चाहते हैं। तो सत्रहों का अभिप्रायः यही है क्या सत्रह सूक्ष्म, शरीर में तत्व होते हैं जब स्थूल शरीर को त्यागता है, प्राणी तो मानो देखो, उसमें दस प्राण होते हैं पंच महाभूत होते हैं, मन और बुद्धि का मण्डल होता हैं, उस मण्डल के अन्तर्गत मानो यह दसों प्राण कार्य करते हैं, उसी मण्डल के अन्तर्गत पंच महाभूत, सूक्ष्म पंच महाभूत, अपना कार्य कर रहे हैं। परन्तु देखो, मन बुद्धि का यह विशेषकर यह मण्डल कहलाता है हमारे यहाँ यह माना जाता है कि जब एक समय हमारे यहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस याग को किया तो उन्होंने यह स्वीकार किया गया सबसे प्रथम क्या जितना भी यह दसों प्राण है परन्तु इनका जितना भी विश्लेषण जितनी भी इसकी प्रतिक्रिया हैं, वह मन और बुद्धि के अन्तर्गत परिक्रमा करती रहती है। क्योंकि इस से सिद्ध हुआ, क्या यह जो मन है, यह प्रकृति का सूक्ष्मतम एक मानो तन्तु कहलाता हैं, और वह जो सूक्ष्मतम तन्तु हैं, इसी के अन्तर्गत मानो सत्रह तत्त्वों का जो मानो जो षोडश कलाएं है, यह मन के अन्तर्गत प्रकृति के क्षेत्र में गति करती रहती है इसी प्रकार मानो देखो, इसी मन और बुद्धि के क्षेत्र में प्रकृति का जितना भी अंकुर हैं, जितना भी अंकुर है चाहे वह जन्म-जन्मान्तरों का अंकुर हैं, चाहे वह बीजों का प्रीवार्षिक भी कहलाता हैं, परन्तु इस सबका क्षेत्र कहलाया गया है। उसमे अंकुर विद्यमान रहते हैं। जैसे मुझे स्मरण है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के जो महपिता थे अथवा गुरु थे वो अंगिरस कहलाते थे। उनका अंगिरस गोत्रीय जन्म था, और वह याज्ञवल्क्य मुनि महाराज को उन्होंने ब्रह्मवेत्ता बनाया, और वह उनका नामोकरण सुडेशवत् नामक ऋषि थे सुडेश नाम के ऋषि थे बेटा! सुडेश नाम के ऋषि को तुमने दृष्टिपात भी किया होगा, वह कितने ब्रह्म के मर्म को जानते थे। परन्तु एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने उनके चरणों में ओत-प्रोत हो करके यह कहा क्या महाराज! तुम जिस प्रतिक्रिया में अनुष्ठान कर रहे हो, यह कैसे हो रहा है? तो उन्होंने कहा कि मैं वाजपेयी याग को कर रहा हूँ, मैंने कहीं वेद में यह श्रवण किया हैं क्या वाचन्नमं ब्रह्मे वाचा यागां ब्रह्म लोकाः मानो देखो, मैं वाजपेयी याग में रमण करना चाहता हूँ। वाजपेयी याग का जब वर्णन आया तो उस समय ऋषि ने याग किया, तो ऋषि ने जब याग किया तो वह अनुष्ठान में विद्यमान हो गएं उन्होंने सत्रह दिवस तक या मानो देखो, उन्होंने दिवस का अभिप्रायः यह है, क्या सत्रह प्रकार के अनुसन्धान का नाम दिवस कहलाता हैं मानो जैसे अनुष्ठान करना है, हमें प्राण के ऊपर अनुष्ठान करना है, अपान प्राण और अपान के ऊपर मानो एक अनुष्ठान करते हैं, अनुष्ठान का अभिप्रायः है उसके ऊपर चिन्तन करना। अनुष्ठान का अभिप्रायः है उसके ऊपर मनन करना, और उसको मानो एक रूप में अच्छी प्रकार जान लेना, उसको जान करके जब वह अग्निष्टोम याग बनेगा, परन्तु देखो, अग्निष्टोम याग को भी त्यागों, वह वाजपेयी याग बनेगा। परन्तु देखो, वाजपेयी याग बनेगा, तो यह वाजपेयी याग मानो एक-एक तत्त्व की एक-एक आभा में गति करना, दिवस का अभिप्रायः यह नही है मानो आज सूर्य उदय हो गया, सूर्य अस्त हो गया, सूर्य उदय हुआ इसका नाम यहाँ दिवस नही कहलाता दिवस का अभिप्रायः वाजपेयी याग में यह बनेगा, क्या एक-एक तत्त्वों को जानना, यह हमारे क्योंकि बुद्धि को जानना, मन को जानना, उनकी विकृतियों को जानना, और इस ब्रह्माण्ड को एक आभा में, बाह्य जगत आन्तरिक जगत में इसके खिलवाड़ करना, इसके ऊपर अधिपथ्य होना ही, मानो देखो, हम उसके ऊपर अनुसन्धानित होते हैं उसके पश्चात हमारे जब इन तत्त्वों को जान करके इनके सूक्ष्मतम रहस्यों को जान करके उसके पश्चात हम मानो देखो, मन, बुद्धि के ऊपर

अनुष्ठान जब करते हैं, तो वह जो चित्त नाम की भूमि हैं मानो इनमें जन्म-जन्मान्तरों के चित्र विद्यमान हैं, मानो वह जो चित्र विद्युतां ब्रह्मे हम मानो अंकुर विद्यमान रहते हैं उन अंकुरों को साक्षात्कार जानना है उन अंकुरों को साक्षात्कार जा करके मानो हम अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को जानना ही मुनिवरों! देखो, यह वाजपेयी याग कहलाता है। आज मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ ये बड़े गम्भीर विषय हैं पुत्रों! बहुत अनुसन्धान किया है, इनके ऊपर तुम्हें यह प्रतीत होगा, क्या हमने एक-एक वर्षों तक मानो देखो, अन्न का भी पान नही किया। हम केवल वृक्षों का पंचांग पान करते रहे हैं, मानो देखो, योगासनों में लगे रहे, आसनों पर विद्यमान हो करके, चिन्तन की गहरी गम्भीर मुद्रा में चले गएं मुनिवरों! देखो, उस समय यह जाना जाता है।

साकल्य से अनुष्ठान

रहा यह है कि हम साकल्य के द्वारा याग करना चाहते हैं, अब मुनिवरों! देखो, साकल्य के ऊपर आ जाओ हम साकल्य के ऊपर आते हैं, नाना प्रकार की सामग्री को, घृत को एकत्रित करते हैं घृतोमयी यज्ञाः ऐसा कहता है वेद, यज्ञ में ही मानो देखो, घृत ही यज्ञ हैं। और घृत के यहाँ कई स्वरूप बनते हैं। घृत कहते हैं चिन्तन को, घृत कहते हैं मानो पदार्थ को, और घृत कहते हैं मानो देखो, साकल्य को, साकल्य भी घृत है। और मुनिवरों! देखो, चिन्तन भी घृत हैं। और पदार्थ भी घृत माना गया हैं। इन तीनों की सन्तुलना जब हमारे मस्तिष्क में आ जाती है, उस समय हम अग्नि का चयन करते हैं, अग्नि को प्रदीप्त करते हैं, और उसके द्वारा हम याग करते हैं, अनुष्ठान करते हैं। परन्तु जब अनुष्ठान करते हैं, तो जब मानव की प्रवृत्ति मन, कर्म, वचन से विचित्र बन जाती है, चिन्तनीय बन जाती हैं, तो उसमें ही संकल्प के द्वारा, जिस अनुष्ठान के द्वारा, हम आहुति देते हैं, और स्वाहा कहते हैं, मानो देखो, उसी प्रकार का स्वरूप बन करके, द्यौ लोक को चला जाता है। द्यौ लोक में उसकी स्थिरता हो जाती है, वह द्यौ लोक को प्राप्त हो करके मानो देखो, उस काल में जो संकल्प आता है वही मानो देखो, आकार बन करके द्यौ लोक से मानव के मस्तिष्क का निर्माण हो जाता हैं। उस मानव के मस्तिष्क की आभा बनती है।

याग से बुद्धि की ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण

तो इसी प्रकार मानो देखो, मेरे पुत्र इस प्रसंग को लिया है तुमने मुझे भयंकर वन में तुम मुझे ले जा रहे हो, परन्तु मैं भयंकर वनों में जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल हमारा यह है, कि हम अग्नि, वाजपेयी यागों के द्वारा अग्नि के द्वारा हम वाजपेयी याग करना चाहते हैं। जो याज्ञिक होता है कर्मवेत्ता होता है वह सबसे प्रथम अपने आहार व्यवहार को ऊँचा जब तक नही बनाता जब तक ही हमारा यह भौतिक याग ही क्रिया में सफलता को प्राप्त नही होता परन्तु देखो, बुद्धि की ग्रन्थियाँ वास्तव में इन यागों से बुद्धि की ग्रन्थियों में स्पष्टीकरण आता हैं। मुझे स्मरण हैं जब मैं किसी काल में अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा पंहुचा तो गुरुओं ने मुझे वर्णन कराया तुम अग्नि, तुम वाजपेयी याग करो तो उस समय मैंने मानो देखो, वाजपेयी याग किया और वाजपेयी याग करके इन्द्रियों पर सयंम करके और नाना साकल्य एकत्रित करके कामधेनु गऊ मानो प्राप्त हुई और कामधेनु गऊ के दुग्ध के द्वारा मानो हम पय याग करते थे, उसको पय याग भी कहते हैं उसको देखो, हम वाजपेयी याग भी कहते हैं उस याग के कर्म करने से तो हमारे मस्तिष्कों की क्योंकि उसमें सूक्ष्म आहार अपना मौन रहना और शान्ति पूर्वक प्रभु की महिमा का चिन्तन करना, जब वह याग करते थे तो मस्तिष्क की ग्रन्थियाँ स्पष्टीकरण को प्राप्त हो गई। क्योंकि ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण होना स्पष्टीकरण का आ जाना ही मूर्धा मुख होना है, तो इसे मूर्धा कहते हैं, मूर्धा का अर्थ है क्या देखो, ग्रन्थियों का मुख मानो देखो, स्पष्टीकरणता को प्राप्त हो, करके और ब्रह्माण्ड से, उसका समन्वय हो जा जाता है। और आकुञ्चन प्रवृत्तियां समाप्त हो जाती हैं, परन्तु देखो, यह जो जितने भी प्रकार के अनुष्ठान हैं, अथवा कर्म है, इनसे होता क्या है? एक मानव का हृदय प्रसन्न होता है और मानव का जितना हृदय प्रसन्न होता हैं

आकुश्चन शक्ति समाप्त हो जाती हैं संकुचित विचारधारा नही रहती तो मुनिवरों! देखो, जब संकुचित धारा नही रहती और संकीर्णता नही रहती, ब्रह्म और चरी के रूप को मानो हम मूर्ध्वा बना लेते हैं, तो उस समय शरीर में कोई रूग्णा भी नही रहता। उस समय मानो सर्वत्र आयुर्वेद भी सिमट करके देखो, उस मूर्ध्वा मुख के द्वार पर आ जाता है।

तो इसी प्रकार आज मैं तुम्हें यह वाक् उच्चारण करने आया कि हमें देखो, पुत्रों! न प्रतीत यह प्रश्न कहाँ से लाते हो? मानो देखो, यह वाक् जब लाते हो, तो मुझे इसका स्पष्टीकरण करना भी, हमारे लिए बहुत अनिवार्य हैं। मानो देखो, हमारे यहाँ वाजपेयी याग, का वाचा याग करने से वाज बन जाता हैं, और वाज का अभिप्रायः यह है कि गायन, और गान गाना हैं तो गान गाना है प्रभु का, गान गाना है यागों का, याग कहते हैं व्यापक कर्म को, जिसमें मानव अपने लिए कुछ नही चाहता हो, निस्वार्थ जो गान गाता हैं, निस्वार्थ जो गान गाता है वह गान प्रभु के क्षेत्र में, प्रभु के आँगन में, गति करता रहता हैं। तो इसी प्रकार, मेरे पुत्र! मैंने कुछ सूक्ष्म सा तुम्हें विश्लेषण कराया। परन्तु इन विचारों की भूमिका बनाई है, अब मैं इन विचारों की भूमिका का उत्तर तुम्हें कल दूंगा मानो आज मैं तुम्हें इतना उत्तर दे चुका हूँ, क्या हम जिस याग को पुरातन काल में करते रहे हैं, उनके क्या-क्या स्वरूप बनते हैं, क्या-क्या रूप रेखाएं बनती है अब मैं इसके विचार अब कल प्रगट करूंगा परन्तु देखो, इस विस्तार के प्रगट करने से तुम्हें स्पष्ट होगा, कि मानव जिस कर्म को करता है, उस कर्म करने से पूर्व, उसको उसका अधिकारी बनना हैं। उस धारा में रमण करना है, उस धारा में रमण करने से, उसमें हमें नाना रूपों में सफलता प्राप्त होगी मुनिवरों! देखो, यह मैं आज यह उच्चारण कर रहा हूँ।

मेरे पुत्र महानन्द जी कल कुछ प्रश्न करेंगें और उन प्रश्नों का उत्तर भी हम देंगे, और इनसे भी हम उच्चारण करेंगें कि जो वायुमण्डल हैं, यह इन वाक्यों के अनुकूल है, या नही कल मेरे पुत्र मुझे वर्णन कराएगें क्योंकि आज का वायुमण्डल मैं नही कहता कि यह वायुमण्डल ऐसा क्यों बन रहा हैं। परन्तु वायुमण्डल में यहाँ वाजपेयी याग जैसों का वर्णन करना यह अवांछनीय कहलाता हैं, परन्तु जैसे हम मानो देखो, अग्निष्टोम यागों का वर्णन उस काल में ऋषि-मुनि साधारण राजा महाराजा करते रहे हैं, परन्तु देखो, इन्द्र बनते रहे हैं, इन्द्र पुरी को प्राप्त करते रहे हैं, परन्तु राजा महाराजा इस प्रकार के तपों को भी करते रहे हैं, कल इसका विश्लेषण हम विशेष आभा में अपने विचारों को अब शान्त करना चाहते हैं। आज का विचार हमारा यह कह रहा है कि हम अपने को प्राप्त करने वालें बनें अपने जीवन को जब तक सुसज्जित नही बनाते अधिकारता को हम अपने को आभा में नही ले जा पाते। जब तक हम उस आभा को जान नही पाते यह आज का विचार अब हमारा समाप्त कौन ऐसा अनुसन्धान है, कौन ऐसा अनुष्ठान है, जो मुनिवरों! देखो, मानव नही कर रहा है, मानव ने नही किया है, यह चर्चाएं हम कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् गाता मनु आभ्यां दधि ब्रह्मा यशो गातौ वरुणाश्चाम आभ्यां रथाः मां त्रिवरुणाश्चां देवं भगा। ओ३म् नम नरथं आप्यां लोकं गताः ओ३म् सर्वे सु भद्रा मां हिरण रथा अच्छा भगवन्!

२ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १० ०७ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, क्योंकि हमारे पठन-पाठन का जो कर्म है वह परम्परागतों से ही, एक महान और विचित्रता में रमण करता रहा है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र के गर्भ में, मानो उसके मर्म में एक ऐसी आभा निहित रहती हैं जिसके ऊपर, मानव को अनुसन्धान करना बहुत अनिवार्य होता है। क्योंकि वेदां ब्रह्मणे ज्ञानवृत्ति अस्तो क्योंकि वेद को हमारे यहाँ ज्ञान कहते हैं, एक मूल के अंकुर को ले करके, इस संसार की रचना का, उसमें भास होता है। क्योंकि प्रत्येक अंकुर में, कोई न कोई विशेषता आभा निहित रहती है। हमारे आचार्यजन, परम्परागतों से, इसका अनुसन्धान करते रहे हैं, जैसे हमारे यहाँ एक याग शब्द हैं, परन्तु याग के गर्भ में, यज्ञ के गर्भ में सर्वत्र ब्रह्माण्ड का भास होता है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतीति होती है, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र के मूल में, मानो याग ही दृष्टिपात होता है। याग एक ऐसा विचित्र शब्द है, जिसके गर्भ में संसार की जितनी शुभ कामनाएं हैं, और शुद्ध रहस्य हैं, वह सर्वत्र उसके गर्भ में निहित रहता है। चाहे वह कृषक हो, चाहे वह वणाज हो, चाहे वह शिल्प हो, परन्तु कोई भी संसार का प्राणी क्रियाकलाप करने वाला हो, उसमें जितना भी सुकर्म है, मानो उसका मानो जो सु का जो अंकुर है वह याग में उसका निकास होता हैं। क्यों होता है? क्योंकि याज्ञं ब्रह्मे क्योंकि यह जो ब्रह्माण्ड में जो एक तरंगों का उद्बुद्ध हो रहा है तरंगों की धाराएं गति कर रही है, मानो उन धाराओं में, उन तरंगों में, यह सर्वत्र मानवीय जीवन निहित रहता है। और जब मानवीय जीवन निहित रहता है, तो वह जो याग कर्म है, मानो वह तरंगेंवाद का एक मूलक कहलाता है, तरंगेंवाद उसके गर्भ के मूल में विद्यमान रहती हैं। तो इसीलिए आचार्यों ने, बहुत पुरातन काल में यह कहा, तो हम चर्चा कर रहे थे, वाजपेयी यागों की चर्चा कर रहे थे, कहीं अमावेष्टि यागों की चर्चाएं होती हैं, कही पूर्णोष्टि यागों की चर्चाएं होती है, मानो देखो, इन यागों के मूल में, इस ब्रह्माण्ड का एक नृत्त हमें दृष्टिपात होता हैं। जिसके ऊपर हम परम्परागतों से ही, अनुसन्धान करते रहे हैं। मेरी पुत्रियाँ अनुसन्धान करती रही है। एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके, मानो अपने मानव जीवन का और भौतिक याग का दोनों का समन्वय करते रहे हैं। तो बाह्य जगत में, मानो अग्नि और वाजपेयी यागों का वर्णन है आन्तरिक जगत में, यह जो दस प्राणों का विभाजन होना है, और इन प्राणों में जो रहस्यमयी, विज्ञानमयी धाराएं विद्यमान हैं परन्तु उसको हम मूल में लाना चाहते हैं, उसको बाह्य जगत से, हम समन्वय चाहते हैं। मानो हमारे यहाँ, परम्परागतों से यह अनुसन्धान होता रहा है।

प्राणों से गति

आज मैं वाची अमृतं ब्रह्मणे वाजपेयी यागों के, मानो जो इस याग को जानते हैं। हमारे यहाँ यह आया कि मानो सत्रह दिवस की आभाएं आती रही हैं, परन्तु जब दर्शन में पंहुचे, तो दर्शन में यह प्रतीत हुआ कि सत्रह तत्त्व माने जाते हैं। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने और भी आदि ऋषियो ने बेटा! इसके ऊपर नाना प्रकार की टिप्पणियाँ की हैं और चिन्तन किया हैं, जैसे दस प्राण कहलाते हैं। परन्तु यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों की कल्पना करता रहता हैं। मानो यह प्राण ऊर्ध्वा में रहते हैं, और दस से विशेष मानो न्यूनतम नही होते, न उसमें विशेष कृतियां बनती हैं। केवल दस ही प्राण बनते हैं। पंच तन्मात्राएं बनती है, वह पंच महाभूतों की वासना कहलाती हैं। और मन और बुद्धि ये दोनों प्रकृति की मूल धारा कहलाती हैं। प्रकृति की सूक्ष्म धारा, परन्तु देखो, पंच महाभूत भी प्रकृति का रहस्य माना गया है, और प्राण यह आत्मा की छाया मानी गई हैं। परन्तु अब इसमें दो विशेषताएं आएंगी कि जैसे आत्मा की छाया, यह दस प्राणों का स्वरूप बना, त्रिकोण बन गया। ऐसे ही परमपिता परमात्मा की जो छाया है, यह

बाह्य जगत में भौतिकवाद, बाह्य जगत में भी प्राण, अपना कार्य कर रहा है। और वह भी परमात्मा की जो छाया है, वह भी प्रणव बन करके, इस संसार चक्र को गति दे रही है। मानो यहाँ उन प्राणों का आत्मा की छाया वाले प्राणों का, दोनों की मानो वह दोनों का समन्वय करना होगा। बाह्य जगत में यह प्राण क्या कार्य करता है? आन्तरिक जगत में क्या कार्य करता है? यह इतना विज्ञान है संसार में परमाणुवाद है, इसका जितना विभाजनवाद है, यह सब विज्ञान की एक छाया कहलाती हैं। क्योंकि उन्हीं दस प्राणों में यह सर्वत्र लोक-लोकान्तर सर्वत्र प्राणी मात्र सर्वत्र परमाणुवाद इसी की आभा में यह गति करते रहते हैं मानो इसी के अन्तर्गत हैं। तो इसीलिए प्राणों को जानना, हमारे यहाँ बहुत अनिवार्य है। वाजपेयी याग वाले क्या करते हैं? इन प्राणों को जानते है। इन प्राणों को जान करके और इन प्राणों का मिलान परमात्मा के प्रणव से समन्वय करते है क्योंकि यह आत्मा की छाया कहलाती है, वह परमात्मा की छाया कहलाती हैं। परन्तु दोनों छायाओं का जब समन्वय होता है, तो उसको हमारे आचार्यों ने, उस समन्वय का नाम मुक्ति स्वीकार किया है। परन्तु मैं आज यह रहस्य बहुत सूक्ष्म है, यह रहस्य मानो रहस्यमयी कहलाता हैं। तो वाजपेयी यागों में इसके ऊपर यह टिप्पणियाँ की हैं, कि सत्रह दिवस कहलाते हैं। कि सत्रह दिवस का अभिप्रायः यह है कि सत्रह में जो गति करने वाला सूक्ष्म जगत हैं, उस सूक्ष्म जगत को मानो जानने का नाम, यह सत्रह प्रकार की धारा कहलाती हैं। जिन धाराओं में, यह सूक्ष्म शरीर गति करता है, मानो यह सत्रह दिवस तो आत्मिक जगत में हैं, और अब रहा यह कि जो भौतिक याग, हमने किया साकल्य एकत्रित किया, तो सत्रह ब्राह्मणों का वर्णन आता हैं। परन्तु यहाँ सत्रह ब्राह्मणों का जब वर्णन आया, तो ब्राह्मण शब्द नही बनता। सत्रह ब्राह्मणों का शब्द नही बनता। क्यों नही बनता? क्योंकि आध्यात्मिकवाद में तो सत्रह विकृतियां बन गईं। परन्तु इस भौतिक जगत में, सत्रह ब्राह्मणों का प्रसंग अथवा ब्रह्मवेत्ता, ब्राह्मण जो बुद्धिमान हैं, जो प्रखर बुद्धि वाले हैं, क्योंकि इसमें नौ ब्राह्मणों का वर्णन बनेगा नौ ब्राह्मणो का वर्णन क्यों आता हैं? क्योंकि संसार में जितनी भी गणना है, वह गणना ही जो वह नौ शब्द है, नौ अक्षर बनते हैं, और जब यह नौ अक्षर बनते हैं, परन्तु नौ से आगे जितना भी हम रूपों में परितण करते रहेंगे, तो उसके उतने आकार और स्वरूप बनते रहते हैं। गणना विशेष बनती रहती हैं। परन्तु नौ की आभा में ही गति करता रहता है। अब रहा वाजपेयी यागों में सत्रह ब्राह्मणों का वर्णन, परन्तु सत्रह होने ही चाहिए, इसमें कोई आपत नही है, परन्तु सत्रह से न्यूनतम हो उसमें भी कोई आपत नही हैं, तो मानो देखो, इसमें पाप और पुण्य की कोई वार्त्ता नही होती। इसीलिए अब क्योंकि ऋषि ने वर्णन किया है, अब ऋषि ने क्यों वर्णन किया है? क्या वह तो एक आभा में, विकृतियों में कहलाया गया है। परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता देने के लिए तुम्हें नही आया हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है? कि एक अनुष्ठान कहलाता है, यज्ञमान यह अनुष्ठान करता है। पंचांग वृक्षों का पान करता हुआ, कुशा आसन पर विद्यमान हो करके क्योंकि यहाँ कुशा आसन का अभिप्रायः क्या है? कुशा कहते हैं, जो पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला एक आसनम कहलाता हैं। परन्तु इनमें ऐसी विद्युत धाराएं गति करती हैं, जो शरीर के लिए लाभप्रद होती हैं।

एक वाक् मुझे स्मरण आता रहा है जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा हम मानो अध्ययन करने के लिए पंहुचे, तो उन्होंने एक औषध होती है, जिसको हम सर्पनैनी का औषध कहते हैं तो सर्प नैनी का जो औषध हैं मानो उसका आसन विद्यमान करते हैं। उस आसन पर विद्यमान होते हैं। और उस काल में जो स्वाध्याय करते हैं, तो पृथ्वी की उस गन्ध को, वह मानो औषध, वह आसन वह लेता रहता हैं, जिससे हमारी गति मानो जैसे सर्प होता है, सर्प में जितनी सहन शक्ति होती हैं, परन्तु उतना उसमें क्रोधाभास भी होता हैं। परन्तु इस भाव को ले करके आसन नही बनाया जाता है, वह इस भाव को ले करके आसन पर विद्यमान होते हैं, जिससे हम सर्पों की वाणी

को, सर्पों की भाषा को, हम जानने वाले बन जाएं। क्योंकि सर्पों की भाषा अब वह जो उनका नृत्त है, उनको भी जानना बुद्धिमान के लिए बहुत अनिवार्य हैं। क्योंकि हमारे यहाँ, जैसे गुड़ शोनि एक औषध होती है, उसको पान करने से मानो हम अश्व की वाणी को, घोड़े के शब्द को, उसको अच्छी प्रकार हम जान लेते हैं। कि यह क्या कह रहा है? क्या इसमें रहस्यमयी उच्चारण कर रहा है तो इन सबका हमें ज्ञान, इस प्रकार औषधियों के द्वारा होता हैं। क्योंकि हमें उसी प्रकार के भाव हमें उसका शोधन करना होता हैं परन्तु इसके गृहणां हमें इसका अनुष्ठान प्रायः बहुत पुरातन काल में किया करते हैं। परन्तु आज तो इतना समय हमे इतना अनुष्ठान, सब क्रियाएं समाप्त हो गईं।

याग से वायुमण्डल का शुद्धिकरण

परन्तु देखो, इसके गर्भ में, हम तुम्हें यह उच्चारण अवश्य कर सकते हैं, पुत्र क्या यह जो वाजपेयी याग है, यह हमारे यहाँ मानो देखो, नाना प्रकार की औषधियों को एकत्रित करके अग्न्याध्यान करते हुए वायुमण्डल को पवित्र बनाया जाता है। वायुमण्डल को महान बनाते हैं और वायुमण्डल जब महान बनता हैं, क्योंकि उसमें उद्गाता, जो उद्गाता गान गाता है, अध्वर्यु उसमें मानो कुछ साकल्य प्रदान करता है। तो उसमें कुछ विशेष वरण की मानो वह आहुति देता है, जिससे वायुमण्डल उसके अनुकूल बन जाए। वायुमण्डल को बनाना, हमारे लिए बहुत अनिवार्य है। कोई भी गृह हो, गृहपति हो, जैसे हमें किसी राष्ट्र पिता को निमन्त्रण करना है, किसी महापुरूष को निमन्त्रण देना हैं, तो उसके अनुकूल वहाँ का वायुमण्डल बनाना होगा, इसी प्रकार, हम जो भी संसार का क्रियाकलाप करना चाहते हैं, उसी प्रकार का वायुमण्डल हमें बनाना होगा, तो उसको हम वाजपेयी यागों में वर्णन करते रहते हैं, उसको वर्णित किया है। परन्तु देखो, विशेष आहुति का अभिप्रायः यही होता है, कुछ श्वेत वर्ण की होती है, कुछ कालिमा के वर्ण की होती हैं, कुछ मानो देखो, हरित वर्ण की होती हैं। तो इस प्रकार वर्ण किसे कहते हैं? वर्ण कहते हैं जिसको वरा जाता हैं, एकत्रित करके उसका हम एक दूसरी औषधियों से समन्वय करते हैं, और समन्वय करके उसमें अपने विचार देते हैं, और उन विचारों को दे करके, हम आहुति देते हैं, वह जिस विचार की हमारा साकल्य होगा, वह उसी देवता को प्राप्त हो जाता है। तो ऐसा हमारे यहाँ वर्णन किया गया है परन्तु रहा यह कि सम्भूति ब्रह्मणाम्ब्रहे कृता मानो देखो, हमें सम्भूति पादों का स्वीकार करना होगा।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! मैं यह और जानना चाहता हूँ क्या यह सम्भूति याग का क्या अभिप्रायः है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! सम्भूति याग उसे कहते हैं जहाँ अपनी सम भावना उसमें हम भरण कर देते हैं और उसके अनुकूल हम अपने वायुमण्डल को बनाते हैं उसको सम्भूति कहते हैं सम्भो कृति सम्भा वस्ते ऐसा वर्णन हमारे यहाँ आता रहा हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो वाजपेयी याग हैं, यह राजा कर सकता है या साधारण प्राणी भी कर सकता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- इसको पुत्र! कोई भी कर सकता हैं किसी भी प्रकार के वायुमण्डल में गति करने वाला हो, वही कर सकता है।

पूज्य महानन्द जीः- परन्तु आप ने जो प्राणों का आश्रय प्रगट किया है क्या आत्मा की छाया का नाम प्राण है, क्या परमात्मा की छाया का नाम भी प्राण ही है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ इसमें दो प्रकार के प्राणों का वर्णन आता हैं, एक बाह्य जगत में, एक विशेष जगत में। मानो विशेष जगत में तो यह प्राण, अपान, उदान समान व्यान, नाग, देवदत, कुरु कृकल कहलाते हैं। परन्तु देखो, बाह्य जगत में भी मानो देखो, परमात्मा की छाया बन करके, प्राणों के उसी प्रकार के स्वरूप बन जाते हैं और स्वरूप बन करके मानो वही प्रणव बन करके और प्रणव बन करके वह आत्मा के साथ में तो छाया प्राण की रहती हैं

परन्तु ऐसे ही बाह्य जगत में जो सूत्रों में, जो लोकों में पिरोई हुई है, आकाश गंगा में पिरोया हुआ, जो प्राण स्वरूप हैं, प्राणेश्वर स्वरूप कहते हैं, तो उसको हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा की छाया कहा जाता हैं, उसको प्राणेश्वर कहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! इस प्राण से इसका कोई समन्वय नही होता।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ होता है, इस प्राण का, उस प्राण का दोनों का समन्वय होता हैं। परन्तु दोनो, एक दूसरे के स्वभाव को मानो वह अपने में नही परिणत कर पाते, इसीलिए हमारे यहाँ, जब इस विशेष प्राण का समन्वय देखो, जब सामान्य प्राण से होता हैं तो उसको आचार्यों ने मुक्ति माना तो उसको मुक्ति कहते हैं। क्योंकि उसके पश्चात हम उसका वर्णन भी नही कर पाते।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! मुक्ति इसी को कहते हैं प्राणों का समन्वय होने का नाम

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ ऐसा ही कहते हैं। क्योंकि प्राण के साथ में आत्मा रहता है, और जब इन प्राणों का समन्वय होता है, क्योंकि छाया है, छाया से छाया का समन्वय, चेतना का चेतना से समन्वय हो जाता है। और उस आनन्द को ग्रहण करता रहता है परन्तु ऐसा हमारे यहाँ दर्शनकार कहते हैं आचार्य जन भी कहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- परन्तु इन प्राणों का और वाजपेयी याग से क्या सम्बन्ध है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- वाजपेयी यागों से यह सम्बन्ध हैं क्योंकि यह वाजपेयी याग जो याग है यह साकल्य मूर्ध्वा कहलाता हैं यह साकल्य मूर्ध्वा कहलाता है यदि प्राण शक्ति नही होगी तो मानो साकल्य का निर्माण नही हो सकता, और साकल्य का निर्माण जब तक नही होगा, हम उस वायुमण्डल को अपने अनुकूल, प्राणों के अनुकूल नही बना सकते तो इसीलिए उनका सम्बन्ध इतना ही रहता हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या यह वाजपेयी यागों से हम दूसरों को अपने लिए आकर्षित भी कर सकते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्योंकि जितने भी पुत्र! याग होते हैं उन सबमें आकर्षण शक्ति तो प्रायः होती हैं, उनमें अन्तरण पिरोई रहती हैं उसमें एक मानो आकर्षण शक्ति से उसमें एक दूसरे का समन्वय रहता हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या प्रभु! यह भी हम स्वीकार कर सकते हैं क्या यह जो भौतिक और आध्यात्मिकवाद है इसका दोनों का समन्वय भी वाजपेयी यागों से होता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, ऐसा भी कहीं-कहीं होता है हम करते रहते हैं क्योंकि याग का अभिप्रायः मूल में याग हैं, यज्ञ है, और उसकी जो मानो पुष्पांजलि आगे चलती रहती हैं विस्तार में रहती हैं, और विस्तार ही मानो देखो, याग कहलाता हैं। जैसा हमारे यहाँ किसी भी याग में, हिंसा का प्रश्न नही आता, क्योंकि हिंसा याग में होती ही नही, क्योंकि याग का अभिप्रायः है मानव मुक्ति, अति मुक्ति चाहता है। एक मुक्ति होती है, एक अति मुक्ति होती हैं वह दोनों को चाहता है, और जहाँ मुक्ति की वार्त्ता आती हैं, वहाँ मानो देखो, जहाँ भी मानो देखो, मुक्त की आभा आई, वहाँ हिंसा नही होनी चाहिए।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो मानव हिंसा कर रहा हैं क्या हिंसक विचार, इस वायुमण्डल में गति नही करते हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ करते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- क्या वह तरंगें भी गति कर रही हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- तरंगें भी वायु अस्तों में रहती हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह भी हम स्वीकार कर लें कि इसमें हिंसक तरंगें भी ओत-प्रोत रहती है और अहिंसा तरंग भी रहती हैं। तो क्या जब अहिंसा तरंग और हिंसा तरंग का मिलान होता है, तो इनमें बलवती

कौन-सी होती हैं?

हिंसक और अहिंसा परमाणु

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र! यह तो वायुमण्डल के ऊपर मानो इसका सम्बन्ध विचारानकृत रहता है जैसे हम यह माने कि वायुमण्डल में दोनों प्रकार के परमाणु विद्यमान हैं, हिंसक भी है, और अहिंसा वाले भी हैं परन्तु अहिंसा वाले जो परमाणु हैं वह विशेष बलवती होते हैं और बलवती क्यों होते हैं? क्योंकि उनमें अहिंसा लगी हुई हैं, वह परमात्मा से आच्छादित रहते हैं। और वह जो हिंसक है, प्रकृति से आच्छादित रहते हैं। तो प्रकृतिवाद का जितना भी वाद है वह अहिंसा परमोधर्म से, वह मृतक बनता रहता है परन्तु उसकी विकृतियां बनती रहती हैं जैसे मानो देखो, अशुद्धियों को, अशुद्धियां मानव के जीवन में हैं और वह अच्छाईयों को ला करके, अशुद्धियां, वह अच्छाईयां निगल लेती हैं। परन्तु कहीं-कहीं अशुद्धियां मानो देखो, विशेष गुणों को भी निगल जाती हैं परन्तु वह निगली नही जाती, वह उसका, सु उसके साथ रहता है वह गुण उसके साथ रहता हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या प्रभु! यह हम ऐसा ही स्वीकार करें।

पूज्यपाद गुरुदेवः- यह जो इच्छा है कि जिस प्रकार का सिद्धान्त है, उस सिद्धान्त के अनुकूल हमें स्वीकार कर लेना चाहिए।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! आज का जो मानव हैं, आज का जो वर्तमान का जो मानव है, जैसे हमारी आकाशवाणी मानो मृत मण्डल में जा रही हैं, हिंसा में लगा हुआ हैं। जैसे एक मानव आधुनिक काल में, धुम्रपान की जो तरंगें हैं, वह बलवती बन रही है एक वाक्, द्वितीय वाक् यह है कि हिंसा को देखो, बलवती दे रहा हैं। परन्तु जैसे हिंसक वायुमण्डल बन रहा हैं, आधुनिक काल में यह भी हिंसा हैं, क्या इस पृथ्वी के गर्भ से मानो जल को सिंचा जा रहा है, और वह जल इतना शक्तिशाली है, जो पृथ्वी को मानो देखो, वह विष को निगलता रहता है, और देखो, अमृत को आभा में परिणत करता रहता हैं। तो विष को निगल रहा है, वह मानो देखो, वाहनों के द्वारा, जैसे वायुमण्डल में वाहन गति कर रहे हैं। उनके द्वारा, तो यह सब हिंसा कहलाती है। मेरे विचार में हमारे विचार में जब यह हिंसा कहलाती है तो हिंसा तो बलवती हो रही हैं और अहिंसा आपकी मानो देखो, निगली जा रही हैं। मैं यह स्वीकार कर रहा हूँ। आधुनिक जो जगत हैं, वह मानो देखो, हिंसा में लगा हुआ है, हिंसा में लगा हुआ है राष्ट्र में क्या नाना सम्प्रदाय मानो देखो, जैसे नाना रूढ़ियाँ हैं, उनमें भी हिंसा का वर्णन आता हैं। जैसे यवन प्रमाणं मोहम्मद के मानने वाले हैं, ईसा के मानने वाले हैं, बुद्ध के मानने वाले प्रवर्तक है, और भी बहुत-सी सम्प्रदाए इस प्रकार की है जो मानव को हिंसा में प्रेरित कर रही हैं, और हिंसा में ला रही है। तो आधुनिक, जो आपका जो वाजपेयी याग का जो वर्णन हैं यह आधुनिक काल में क्या करेगा, मेरा यह प्रश्न है? परन्तु द्वितीय यह है कि जब राष्ट्रवाद मानो देखो, याग जैसे कर्म को पाखण्ड कह रहा है और गऊ के इत्यादि मांसो को ले करके, वह द्वितीय राष्ट्रों में उसका आदान प्रदान हो रहा हैं, तो क्या भगवन! ऐसे काल में इन यागां ब्रह्मे देवाः अशुद्धं ब्रद्वे अस्ता।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! यह तो ऐसे वार्त्ता है जैसे धूर्तों के वाक् होते हैं। मुझे तो यह वाक् धूर्तों के प्रतीत होते हैं। क्योंकि राष्ट्र और यह वाजपेयी यागों का जो सम्बन्ध है, वह यह सम्बन्ध नही हैं। परन्तु यह वाक् जैसा मांसों का वाक्, हिंसा के परमाणुओं की चर्चा आती हैं तो हम हिंसा उसे कहते हैं, जिस हिंसा के वायुमण्डल में परमाणुओं को जब विभाजन किया जाता है, उससे यह जो अणुवाद हैं, और अणुवाद में जो एक प्रकार की विकृत आभाएं उत्पन्न होती हैं, जिससे परमाणु, अणु, महाअणु त्रेसेणु मानो देखो, जिससे इसका विकास होता रहता हैं, इसका विकास हुआ और मानव में उसी प्रकार के परमाणुओं को एकत्रित करके एक अणु शक्ति उत्पन्न कर दी। अणु शक्ति

के यन्त्र का निर्माण किया। परन्तु रहा यह कि पृथ्वी के गर्भ से, यह हमारे यहाँ समय-समय पर, प्रत्येक काल में मानो विज्ञान की धाराएं, भिन्न-भिन्न रही हैं। जैसे वाजपेयी यागवेत्ता ने वर्णन किया है, जैसे त्रिकोण होता हैं, और त्रिकोण इसी प्रकार का, त्रिकोण परमाणु होता हैं। जितने भी तुम परमाणु स्वीकार करोगे उतने ही परमाणुओं का त्रिमुख कहलाता हैं। वह त्रिमुख क्योकि तीन ही परमाणु होते हैं, जैसे पृथ्वी हैं, जल है, और अग्नि हैं इनके ही परमाणु यह तीन मुखी कहलाता हैं। परन्तु तीन मुखी परमाणु का जब विभाजन वैज्ञानिक करता है, तो उसमें जो भी शक्ति उर्पाजन होती हैं, वह जैसे अग्नि परमाणु विशेषकर रहता है, जल परमाणु विशेषकर रहता है, और पार्थिव और इसी प्रकार के मानो गुरूतव और मानो शीतांगकृति वरुणास्त जिसे कहते हैं, और देखो, ब्रह्म अग्नये अस्त्र जिसे कहते हैं, तो यह तीन प्रकार की धाराओं का जन्म एक ही तीन मुखी में उत्पन्न हो जाता हैं। परन्तु रहा यह कि पुरातन काल जिस काल में यह वाजपेयी याग अग्निष्टोम याग का वर्णन आता रहा है, अब यह तुम्हारी वाक् यहाँ घटित हो जाती हैं, क्या उस काल में वैज्ञानिक ऐसे थे, क्योंकि वह याग कर्म करते थे, वह औषधियों के द्वारा विचारते थे, उन परमाणुओं का ऊर्ध्वा मुख होता और ऊर्ध्वा मुख हो करके उन परमाणुओं में से उनका समन्वय सूर्य से रहता था। याग के जितने भी परमाणु है, मानो देखो, यज्ञमान जितनी शुभ कामना करता है, उतने ही परमाणुओं का ऊर्ध्वा मुख हो करके सूर्य की किरणों के साथ होता हैं, और उस काल में जो वैज्ञानिक याग के द्वारा जो परमाणु उद्बुद्ध करते रहे हैं। वह सूर्य से ले करके करते रहे हैं, क्योंकि सूर्य से एक यन्त्र बनाया, उन्होंने त्रिवाण केतु यन्त्र बनाया, और यन्त्र का निर्माण किया तो मानो वह सूर्य की किरण वह यन्त्र अपने में ग्रहण करता रहा, सूर्य की किरणों को ले करके, ताप को ले करके, उसकी आभा को ले करके, उन्होंने भी मानो इस प्रकार के अग्नि के भण्डार को उत्पन्न कर लिया है, कि वायुमण्डल में मानो देखो, उस अग्नि के परमाणुओं से उस महान सूर्य से जो विद्युत ली गई थी, उस विद्युत से वह वाहन गति करते रहते थे। चाहे वह पृथ्वी पर गति करने वाला हो, चाहे वह वायुमण्डल में गति करने वाला हो, तुम्हें प्रतीत होगा, कि जिस समय भारद्वाज मुनि ने एक यन्त्र का निर्माण किया था, तो वह यन्त्र उन्होंने वाजपेयी याग किया उन्होंने और वाजपेयी याग करते-करते कुछ परमाणु लिए और सूर्य की किरणों से ले करके, मानो देखो, उन्होंने यन्त्र बनाया। जिस यन्त्र का आयु लगभग दो सौ चौरासी वर्ष का आयु था, और उसमें सूर्य की किरणों से जो विद्युत ली, उस विद्युत को ले करके, मानो उसमें भरण कर दी और भरण करने के पश्चात वह मानो देखो, यन्त्र अन्तरिक्ष में गति करता रहा वह चन्द्रमा की परिक्रमा और मंगल की परिक्रमा करता रहा। इसी प्रकार एक-एक लाख वर्षों के आयु वाले यन्त्र को, ऋषि-मुनियों ने जाना। परन्तु सूर्य की किरणों से वह तेजोमयी ले करके परन्तु देखो, उसमें आभ्रत कहलाता हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! सूर्य की किरणों में त्रिमुख नही होता।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, सूर्य की किरणों में त्रिमुख होता हैं। उसमें गुरूतव भी होता है और देखो, उसमें शिवांगड़ी भी होता हैं और उसी के साथ में, तेजोमयी और अग्निवाद भी होता हैं। क्योंकि इन्हीं परमाणुओं से विद्युत धाराएं, धाराओं का जन्म होता है। तो इसीलिए हमारे यहाँ जितना याग कर्म है, वह बहुत अनिवार्य है, रहा यह वाक् हम हिंसा के प्रश्न पर आते हैं। हिंसा जैसे राष्ट्र में मानो जैसे तुम आदान प्रदान की चर्चा कर रहे हो, परन्तु देखो, यह कोई विशेषता नही यह राजा के मूल में नही होता राजा को अपने राष्ट्र के पशुओं को नष्ट करके, और वह आदान प्रदान मानो वह द्वितीय राष्ट्रों से करता है, तो यह राजा की हिंसा कहलाती है। इसमें मैं विशेषता नही दे रहा हूँ, विचारों, बहुत मानो इसके ऊपर अनुसन्धान करो, क्या एक राजा है उस राजा को तो रक्षा करनी हैं, वह राजा इसीलिए चुनौती वाला बना हैं, क्योंकि वह रक्षा ही करता रहे। जैसे एक गृह में माता-पिता है, वह सर्वत्र बाल्यों की रक्षा करना है। परन्तु रक्षा में उन्हें योग्यता में ले जाना है, सुन्दर अनुशासन देना है, वह मानो देखो, अग्नेय

गृहपथ्य याग कहलाता हैं। यदि माता-पिता, अपने पुत्र को अनुशासन दे नही सकते तो वह कोई माता-पिता नही कहलाते। उन माता-पिता हीनता को प्राप्त होते रहते हैं। आगे चल करके वही बाल्य, यदि अनुशासन नही देंगें, तो माता-पिता के हृदय में, एक अग्नि की दाह मानो क्रोध की क्रीड़ा और मानो द्वेष की दाह, ममता की दाह, उत्पन्न हो करके वह मानो देखो, अशुद्ध संस्कारों का जन्म उत्पन्न होता रहता है। जन्म होता रहता है। तो इसीलिए हमारे आचार्यों ने वैदिक साहित्य में यही कहा है, कि माता-पिता अपने पुत्रों! को, पुत्रियों को सुयोग्य बनाएं और अनुशासन में उन्हें धारण करके मानो देखो, उसमें एक सुन्दर याग की उत्पति हो जाएं। वह गृहपथ्य याग कहलाता हैं। जो हम गृह, अश्विनी याग कहते हैं, परन्तु देखो, मैं गृहों की चर्चा, यागों का चर्चाएं, मैं पुत्र इसीलिए कर रहा हूँ, क्योंकि इसे इसी प्रकार राष्ट्र में यदि देखो, अपने राष्ट्र में पशु से ले करके, मानव तक की रक्षा नही कर सकता, तो वह कोई राजा नही कहलाता। वह केवल प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला होता हैं। और प्रजा के वैभव को संग्रह करके, अनुसन्धान की दृष्टि उसके राष्ट्र में सूक्ष्म बन गई। जिससे वह दूसरे राष्ट्रों के लिए वह मानो देखो, आदान-प्रदान कर रहा हैं। तो यह कोई प्रियता नही हैं, परन्तु देखो, विचार केवल यह है, कि हम अपने में अपनेतव को प्राप्त होते रहें।

शुद्ध चिन्तन की अनिवार्यता

तो विचार-विनिमय क्या पुत्र! यह तो तुमने जान लिया होगा, रहा यह कि हम मानो देखो, हिंसा कर रहे हैं, भक्षण कर रहे हैं अशुद्ध पदार्थों का, यह वास्तव में करना नही चाहिए। क्योंकि मानव एक ऐसी जातीयता प्रभु ने उत्पन्न की हैं, जो विचारता है, मानो चिन्तन करता है, मनन करता हैं, और अशुद्ध आहार करने से अशुद्ध तरंगों का जन्म होता हैं। शुद्ध आहार करने से, शुद्ध तरंगों का जन्म होता है इतनी उसके हृदय में मन की धाराएं अशुद्धियों से उत्पन्न हो जाती हैं, क्या मन की धारा को प्रकृति को जानना, उसके लिए असम्भव हो जाता है, और जब वह साधारण अन्नाद को पान करता हैं, मानो प्रभु का चिन्तन करके, उसे पान करता है, तो मन उतना ही ऐसे वह व्यापकवाद की चर्चाएं व्यापकवाद में वह चिन्तनीय बन जाता हैं। वह मानव का जीवन कहलाता हैं।

रढियों की अधिकता से रक्तभरी क्रान्ति

तो इसीलिए आचार्य जनों ने यह कहा है कि संसार को ऊँचा बनाना है, अपने मानवीयतव को ऊँचा बनाना हैं, तो वायुमण्डल में मानो देखो, अशुद्धियों को नष्ट करने के लिए, शुभ कर्म करना हैं, वायुमण्डल को महान बनाना है। जैसे किसी के गृह में जैसे याज्ञिक पुरूष के हृदय में कामवासना का जन्म हो गया है, कामातुर बन गया हैं, तो उसे क्या करना चाहिए? तो वह जो आत्मा की छाया प्राण हैं, उस प्राण के ऊपर वह चिन्तन करने लगे, मानो मन की आभा को त्याग देना चाहिए, तो कुछ ही काल में, वह वासना के रहित हो जाता हैं, कुछ काल में कामना से रहित हो करके, वह यौगिकवाद में मानो देखो, वह परिवर्तित हो जाता है। तो इसीलिए मेरे पुत्र! तुमने जान लिया तुम देखो, यह जो प्रश्न और नाना प्रकार के जहां तक सम्प्रदाय है, जहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं, ये सब राष्ट्र की सूक्ष्मता रहती हैं, यह बुद्धिमानों की, क्योंकि राजा को इसीलिए आचार्यों जनों ने कहा है, कि ब्रह्मवेत्ता हो राजा ब्रह्म जिज्ञासु हो, जिससे वह दर्शन शास्त्र को, दर्शनों की भाषा को, अपने राष्ट्र में ला सके, और नाना प्रकार की रूढ़ियों का वह विनाश कर सके। रूढ़ियों का विनाश करना, राजा के लिए बुद्धिमता से बहुत अनिवार्य है। अन्यथा उसका परिणाम यह होता हैं, क्या जब रूढ़ियाँ विशेष बन जाती हैं, तो वहाँ रक्तमयी क्रान्ति का संदेश बना रहता हैं। नाना प्रकार की रूढ़ियों से ज्ञान का लुप्त हो जाता हैं, और अज्ञान की बलवती हो जाती है। उस अज्ञान से समाज अन्धकार में चला जाता है, और देखो, यहाँ जैसे समाज यहाँ वैदिक साहित्य में यागों का वर्णन हैं, यौगिक वर्णन हैं, मानो देखो, जैसे प्रभु की आभा उससे वंचित हो जाता हैं। तो यह राजा का कार्य है, पुत्र! परन्तु माता-

पिता का राष्ट्र का प्रत्येक मानव को अपने-अपने में याग कर्म करना चाहिए। यह सब याग कहलाता है, यह सब आभा कहलाती है, मानो देखो, वायुमण्डल को शोधन करना है, जिस काल में हिंसा के परमाणु वायुमण्डल में भ्रमण कर जाते हैं, उसी काल में हिंसक विज्ञान पनपा करता हैं। वह जब हिंसक विज्ञान पनपने लगता हैं, क्योंकि विज्ञान में भी हिंसक विज्ञान होता है, वह हिंसक विज्ञान कौन-सा हैं? क्योंकि हिंसक यन्त्रों का निर्माण करना उससे एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को विजय करना चाहता हैं, तो हिंसक यन्त्रों का निर्माण हो गया परन्तु अहिंसा यन्त्रों का कौन-सा निर्माण है, मानो जैसे हमारे यहाँ एक यज्ञशाला है, और यज्ञशाला में हम देखो, उससे हम यन्त्रों का निर्माण करते हैं। जैसे पितर लोक को जाना हैं। हमें पितर यान बनाना हैं, पितर यान कैसे बनता है? मानो जैसे हम मानो देखो, चित्रावली को दृष्टिपात करते हैं, वह चित्रावली जैसे उसका निर्माण हुआ, जैसे हमारे एक-एक शब्द से मानो यन्त्रों का निर्माण हो जाता है। एक-एक शब्द से विज्ञान का निर्माण विज्ञान की धाराओं का जन्म होता हैं, जैसे हमारे यहाँ एक ने कहा पिता, पिता कहते ही मानो देखो, उन्हीं परमाणुओं वह अन्तरिक्ष में मानो वह उनको अपने में लाने का प्रयास करता हैं। मानो वह परमाणु यन्त्र में आ गएं, और उन्होंने उस प्रकार का यन्त्र का निर्माण किया जिससे हम पिता परपिता द्वितीय पिता चतुर्थ पिता मानो देखो, पितरों को दृष्टिपात करने से हम यन्त्रों का निर्माण कर लेते हैं, परन्तु उन यन्त्रों में हिंसा नही हैं, उनमें केवल चित्र है, अब उन यन्त्रों में हम पितरों के दर्शन करें प्रिय है। अब हिंसा यहाँ से पुनः प्रारम्भ होती हैं। यदि उन्हीं चित्रों में हम अश्लील मानो देखो, पुत्रियों के दृश्यों को पुत्रियों के चित्रों को दृष्टिपात करते है, और पुत्री पुत्रों! के दृष्टिपात अश्लील आ रहे हैं, नग्न आ रहे हैं, तो उससे वह हिंसा हो गई, वह मानसिक हिंसा कहलाती हैं। उससे हिंसा क्या बनती हैं? कि मानव उन चित्रावलियों को दृष्टिपात करके मानो देखो, उसके हृदय में कामवासना का जन्म हो जाता हैं, और अपने शरीर से वासना उत्पन्न हुई, तो वह एक विशेष हिंसा कहलाती हैं। मानो देखो, कहीं मानो हम गृह आश्रम में पति पत्नी आए हैं, हमें सन्तान को जन्म देना हैं, हमें पितर याग करना हैं, परन्तु पितर याग के स्थान में वासना के क्षेत्र में चले जाते हैं, तो वह भी एक हिंसा है, क्योंकि उस हिंसा में उस हिंसा के करने से आलस्य और प्रमाद की उत्पति हो जाती हैं। आलस्य और प्रमाद जो है, यह कर्तव्यवाद की भावना नही लाने देता। इसीलिए यह विचार आता रहता है कि वह हमें हिंसा नही करनी चाहिए, तो इसीलिए ज्ञान तो बहुत कुछ होता है। बेटा! परन्तु मैं इतना आज्ञा समय तो नही दे रहा है, परन्तु विचार क्या है कि वह हमें वासना के चित्र हमारे समीप नही होने चाहिए तो उसी यन्त्र में हिंसा है, उसी में अहिंसा है, परन्तु हम पितरों का दर्शन कर रहे हैं, लोक-लोकान्तरों का दिग्दर्शन कर रहे हैं, यन्त्रों के द्वारा मानो उसमें हम अणु को दृष्टिपात कर रहे हैं। परमाणु को दृष्टिपात कर रहे हैं। गृह में प्रकाश हो रहा है, विद्युत का प्रकाश हो रहा हैं। मानो देखो, उस विद्युत को जो काष्ठ में रहती हैं, मानव में रहती है, अणु को देखो, गति कराती रहती है, जैसे हमारे यहाँ यह आता है, कि याग को एक समय मानो देखो, काला हिरण आया और वह याग को ले गया यहाँ से वह याग को ले गया, तो इसका अभिप्रायः यह है कि जो याग में से जो धाराओं का जन्म होता हैं, वह मानो कौन ले गया हिरण्यं ब्रह्मे मानो देखो, विद्युत की धाराओं पर जो कालिमा की जो विद्युत है। उसके ऊपर याग का कर्म मानो देखो, विराजमान हो करके वायुमण्डल में प्रसारित हो गया है, वह विद्युत में जैसे यज्ञाग्नि में विद्युत होती हैं, वास्तव में विद्युत है, मानो देखो, लोक-लोकान्तरों में जो किसी भी प्रकार का प्रकाश है, वह भी विद्युत है, सूर्य में प्रकाश है, वह भी विद्युत हैं, परन्तु देखो, जो ऐसी तरंगों में ओत-प्रोत होने वाला वह भी विद्युत है, तो इस विद्युत को ले करके मानो देखो, हम इन्हीं के द्वारा गति करते रहते हैं। यह विद्युत कहलाती है, आभा में कहलाती है, इसको हम ले करके यन्त्रों का निर्माण करते हैं। तो उसी प्रकार की गतियां उसमें प्रादुर्भाव हो जाता हैं। वह हिरण्यं ब्रह्मे कृतां स्वस्ता वह याग को ले करके मानो देखो, अन्तरिक्ष में भ्रमण कर देता हैं, इसीलिए वह

विद्युत को यहाँ काला हिरण्यं कहते हैं। परन्तु इसको हिरण्यं कहते हैं, और वह उसको ले करके और वहाँ अन्तरिक्ष में ले करके चला जाता हैं।

तो विचार-विनिमय क्या हमारे यहाँ जितना भी कर्म है, वह याग है उसको हिरण ले जाएं परन्तु सूर्य की किरण ले जाएं, उसको आभा में गति कराने का अभिप्रायः है विचार-विनिमय क्या मैं विशेष और गम्भीर क्षेत्रों में जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल हमारा यह है कि हम अपने में इतने महान विचित्र बनते चले जाएं, परन्तु देखो, हिंसा में हिंसा है, अहिंसा वाले जो परमाणु है। वह हिंसा को निगल जाते हैं, वह हिंसा को निगल जाते हैं, परन्तु यह कहीं अपवाद का वाक् रह जाता हैं, तो विचार-विनिमय क्या राष्ट्र का कर्तव्य भिन्न हैं। इसीलिए हमारे यहाँ विवेकी बुद्धिमानों की आवश्यकता हैं, वह राजा को जा करके संकेत दे सकें, संकेत दे कि हे राजन! यह कर्म तेरा अशोभनीय हैं, यह कर्म नही होना चाहिए। शोभनीय कर्म होना जिससे राष्ट्र और प्रजा दोनों सुखद हो जाएं।

शब्द से हिंसा

तो यह विचार कैसे हुए बेटा! मैं तुम्हारे प्रश्नो का उत्तर केवल इतना ही दे रहा हूँ, कि जो माता-पिता हैं, राजा है, उनका केवल कर्तव्य यही है। पितर बनने के पश्चात वह रक्षा करता हैं, राजा बनने के पश्चात रक्षा कर रहा हैं, याज्ञिक बनने के पश्चात रक्षा कर रहा हैं, जो रक्षा का अभिप्रायः केवल क्या हमें उसकी उपयोगिता को विचारना हैं। क्रियाकलाप उसी प्रकार का बनाना हैं, परन्तु देखो, हिंसा नही होनी चाहिए, यह मैं अवश्य उच्चारण करता हूँ। क्या जो मानव याग कर्म करना चाहता है, उसको मानो देखो, अपने जीवन में हिंसा नही करनी चाहिए। हिंसा की बहुत व्यापक व्याख्या है, यदि हम शब्द भी मानो कटु उच्चारण करते हैं, तो वह भी हमारे हृदय से द्वेष की भावना में हिंसा विद्यमान रहती हैं। वह हिंसा नही होनी चाहिए, हमारे यहाँ अनुष्ठान नाना प्रकार के यागों की आवश्यकता उस काल में बनती है, जबकि हमें अनुष्ठान करना है, हमें अपने जीवन में परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति बनाना है। जिससे हमें आयुर्वेद प्राप्त होगा विज्ञान प्राप्त होगा हम नाना प्रकार की चिकित्सा को अपने में परिणत कर सकते हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में बेटा! तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था क्या हमारे आचार्यों ने मानो औषधियों को एकत्रित करके वृष्टि याग किए हैं, और उन्हीं औषधियों के द्वारा मानो पान करके मानो देखो, वह यौगिकता को प्राप्त होते रहे हैं। इसी प्रकार मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नही करूंगा यह तो विचारों का वन है, मैं वनों में जाना नही चाहता हूँ, परन्तु तुम्हारा जो विचार है वह हिंसक तरंगें नही होनी चाहिए, हिंसक तरंगें मानो नष्ट होनी चाहिए। जिसका वाजपेयी यागों से सम्बन्ध हैं, क्या हम अपनी वाणी से कर्म वचन से हम हिंसा न करें। हम सुन्दर देखो, आहुति दे करके हम मानो जिस काल में वाजपेयी याग होते रहें है, अग्निष्टोम याग होते रहे हैं, और हमारे देखो, पूर्णोष्टि याग होते रहे हैं, उस काल में विज्ञान की दशा मानो सूर्य की किरणों से हम विज्ञान को उत्पन्न करते थे, आधुनिक जगत जैसा तुम उच्चारण कर रहे हो, मानो पृथ्वी से मानो हम तत्त्वों को ले रहे हैं, मानो देखो, खनिज को ले करके विज्ञान को उत्पन्न कर रहे हैं, खनिज तो होना ही चाहिए। परन्तु रहा यह है कि जल को हम निकास रहे हैं, और उसमें से वाहनों को गति दे रहे हैं, उस जल से परन्तु देखो, उस काल में जब वाजपेयी याग अग्निष्टोम याग होते रहें हैं। मानो उनका मानवीय जीवन से सम्बन्ध और परमाणुवाद से सम्बन्ध से होता हुआ मानो विद्युत से समन्वय होता हुआ उन किरणों को मानो लिया जाता था। वह उनका भरण करके वह उनका वायुमण्डल में गति करते रहे हैं, यह चर्चाएं मुनिवरों! देखो, विशेषकर है, मैं आगे समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या महानन्द जी ने कुछ प्रश्न किए हैं, परन्तु सम्प्रदायों का दायित्व राजा के ऊपर होता हैं। परन्तु देखो, हिंसा का प्रसंग भी यह राजा का है। इससे भी इससे मानो आभा में प्राप्त होने वाला है। राजा को यह विचारना चाहिए और यह राजा उस काल में हिंसक बनता है जबकि बुद्धिमान विवेकी

पुरूषों की हिंसा हो जाती हैं विवेकी पुरूष नही रहते और वह विवेकी रह जाता है वह मानो अंकुर मात्र रहता है उसकी वार्त्ता को वह स्वीकार नही कर रहा हैं उसमें स्वार्थ प्रमाद और विज्ञान का दुरूपयोग और विज्ञान की धाराओं का दुरूपयोग होना ही यह राष्ट्र के लिए विनाशदायक होता हैं तो इसीलिए आज का वाक् अब मैं समाप्त कर रहा हूँ क्योंक उसी विज्ञान को हम त्रैतवाद न ले करके एक अहिंसामयी मार्ग स्वीकार करते हैं यह चर्चा मैं पुनः चर्चा प्रगट करूंगा आज का वाक् अब यह समाप्त होने वाला हैं समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं तुम्हें कल प्रगट करूंगा ओ३म् गाताहम् मनु गतं आभ्यां सर्वं मधु मां गता वाचन्नमाः रयीष्णां ब्रह्माः आ पाहाम्। ओ३म् ब्रह्म वर्चोसि मंगलं व्रत्यं देवाः।

३ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०५ ०८ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का पठन-पाठन गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता हैं। क्योंकि वे प्रतिभाशाली है, उसी की महानता मानो इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में समाहित हो रही है। यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है। मानो यह ब्रह्माण्ड एक अनुपम हैं, और यह चिन्तनीय है। प्रत्येक मानव को इसके ऊपर मनन और चिन्तन करना चाहिए क्योंकि मनन करना हमारा कर्तव्य है, जब प्रत्येक मानव इसके ऊपर चिन्तन करने लगता हैं तो यह संसार मानो चिन्तनीय बन करके और अपने में सुखद अनुभव करता है, क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, अपनी मानवता को महान बनाना चाहता हैं, उसके हृदय में, यह आकांक्षा बनी रहती है, क्या मैं अपने को मानवतव व सत्य की आभा में रमण कराना चाहता हूँ, और मैं इससे अपने में आनन्दित होना दृष्टिपात करना चाहता हूँ, आनन्दित होना चाहता हूँ। प्रत्येक मानव की परम्परागतों से उड़ान उड़ी रही हैं, और उड़ान उड़नी चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव को ऊँची ऊँची उड़ान उड़ना ही आत्मीय चिन्तन कहलाता है, वह आत्म तृप्ति के लिए, मानो वह नाना प्रकार की उत्तर और प्रश्नावली उत्तरावली चाहता हैं। वह इसीलिए कि संसार में, जितना भी आत्म ज्ञान हैं, मानो आत्मीयता है, वह उसमें और घनिष्टतव को प्राप्त हो जाएं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, इससे पूर्व शब्दों में, मेरे प्यारे महानन्द जी, अपने कुछ व्यक्तव्य अथवा विचार दे रहे थे, इनका विचार चल रहा था, कि वैज्ञानिक बहुत भौतिक विज्ञान के ऊपर मानो इनकी कुछ टिप्पणियाँ चल रही थी। विचारधाराएं चल रही थी। कि जिस विचार-विनिमय करने के लिए आज हम अपनी अन्तरात्मा की आभा में रमण करते हुए, कुछ एक अपना विषय चिन्तन का बनाते हैं।

मेरे पुत्र महानन्द जी ने इससे पूर्व शब्दों में, यह कहा था कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए, और बिना याग किए बिना इस वायुमण्डल को कोई भी मानव शोधन नही कर सकता राष्ट्रवेत्ताओं को यह चाहिए, कि राजा के प्रत्येक गृह में, याग होना चाहिए। जिससे यह वायुमण्डल सुगन्धित हो जाएं, परमाणुवाद ही मानो इस वायुमण्डल को पवित्र बना सकता है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने यह कहा था, कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक, अपने को कुछ अधूरा ही, मानो दृष्टिपात आ रहा है, कुछ विचार ऐसे है, जिन विचारों में, वैज्ञानिक जन मौन हो जाते हैं। कुछ तथ्य ऐसे है, जो मानो देखो, भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद दोनों का समन्वय करता है। मानो जैसे पुत्र ने यह कहा, कि वैज्ञानिक जन यह अपने में अनुभव कर रहा है कि वायु मण्डल अशुद्ध हो गया हैं, समय आ रहा है अग्नि काण्डों में यह संसार मानो धीमी-धीमी अग्नि का प्रदीप्त हो जाना ही, मानो यह समाज के लिए हानिप्रद कहलाता है। प्रत्येक मानव, बेटा! मन्त्रों का उच्चारण करता रहता है, मन्त्रार्थों में रमण करता हुआ, और अपने में सुखद अनुभव करता रहता हैं। मेरी प्यारी माता जब अपने पुत्र को शिक्षा देती है, मानो उसे लोरियों का पान कराती है, तो उस माता की अन्तरात्मा की एक वेदना जागरूक होती हैं, और उस वेदना के आधार पर, माता मानो अपने पुत्र का पालन करने लगती है। वह माता यह कहती है, विष्णु गृहं ब्रह्मे वाचन्नमं प्रिय व्रताः वह माता यह कहती है कि हे विष्णु! तू पालन करने वाला हैं। हे विष्णु! तू मेरा पालन कर रहा हैं, हे विष्णु! तू सत्यमयी रहने वाला हैं। यदि सतोगुण नही होगा तो मुनिवरों! संसार में पालन भी नही हो सकता। उसके साथ में गन्धर्व गान गा रहा हैं, यदि गान को माता जान लेती है, तो पालन को वह महान पालन बना देती हैं।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हम अपनी उस आभा पर आना चाहते हैं जहाँ प्रत्येक मानव, मेरी प्यारी माता पालन कर रही है, तपस्या कर रही है परन्तु उसकी आत्म वेदना उसे जागरूक बना रही हैं। अन्तरात्मा उसे महान बनाने लगती है, उस अन्तरात्मा की वाणी को, ध्वनि को, अपने में पान करती हुई, बाल्य को ऊर्ध्वा में गति करा देती हैं। वही बालक ब्रह्मवेत्ता बनते हैं, वही बाल्य वितवेत्ता बनते हैं, वही बाल्य मुनिवरों! देखो, महानता को लिए हुए, अपने जीवन का उर्पाजन करते हैं। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, मैं विशेष चर्चाओं में जाना नही चाहता हूँ विचार-विनिमय क्या कि आज का हमारा वेदमन्त्र, उच्चारण कर रहा था कि ब्रह्म रूद्रं ब्रह्मे कृतं लोकाः क्या सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने बेटा! इस संसार की रचना की, संसार की रचना करने के पश्चात, उसी मेरे देव ने मानो वेदों का ज्ञान और विज्ञान दिया वेदों का मानो जैसे माता, कन्या याग करती है, तो माता अपनी पुत्री को मानो गृह से कुछ उपहार दे करके मानो वह पति लोक को प्राप्त कराती है। और उसे कुछ पुष्पांजलियां देती है, कुछ मुद्राएं देती है, इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, आदि प्रभु ने, ब्रह्मा ने इस संसार को रचा। परन्तु रचने के पश्चात, यह वेद विद्या इसे प्रदान कर दी संसार में, और वेद की विद्या की प्रदान करके यह कहा चिन्तनं-चिन्तनं ब्रहे व्रता मानो हे मानव! वह वेद की विद्या इसे प्रदान कर दी। जैसे माता अपनी पुत्री को उपहार देती है, ऐसे ही इस संसार को उपहार के रूप में, प्रभु ने बेटा! यह वेद विद्या उसे प्रदान की समाज को, यह समाज इस विद्या में बेटा! परिणत हो रहा है, कोई मन्त्र के ऊपर बेटा! मुग्ध हो रहा है, कोई उसके अर्थ पर मुग्ध हो रहा हैं, मानो कोई लोकों की यात्रा करने में मुग्ध हो रहा है, तरंगों को जान करके वैज्ञानिक बन रहा है। मानो वह जो ज्ञान रूपी समुद्र हैं, जो आदि ब्रह्मा ने बेटा! सौगात के रूप में, अथवा पुत्री को दहेज के रूप में मानो वह जो वेद विद्या दी हैं, बेटा! वह अनुपम ज्ञान है। वह अनुपम विज्ञान हैं, जिसके ऊपर संसार का जितना भी विज्ञान हैं वह सब मानो रमण कर रहा है अथवा नृत्त कर रहा है। जैसे द्यौ लोक में, सूर्य प्रकाश कर रहा है, मानो वह प्रकाश मानव की अनन्तता में गति कर रहा हैं। मानो अपने में विराम कर देता है, मौन हो जाता है। परन्तु एक ऐसी उज्ज्वल ज्ञान सृष्टि के पिता ने बेटा! हमें प्रदान किया, जिस ज्ञान और विज्ञान को ले करके, मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता हैं, वह विद्या चाहे किसी भी रूप में विद्यमान हो, परन्तु वह प्रभु का दिया हुआ, उपहार है समाज के लिए, उपहार के रूप में यह प्रदान किया। मानो उसी के अन्तर्गत सम्वन्तसर आ जाते हैं, उसी के अन्तर्गत नाना गणना आ जाती हैं, उसी के अन्तर्गत यह ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु मानो गति कर रही हैं। अथवा नृत्त कर रही है।

वेदवाणी

एक मानव मन्त्रों का अध्ययन कर रहा है, बेटा! वह काल मुझे स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! हम अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत हो जाते थे, और पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न करते रहते थे, वे मानो उत्तर देते रहते थे, गान गाते थे प्रत्येक मानव के मानव की नस नाड़ियाँ बेटा! उसके साथ गति कर रही है बेटा! मन्त्रार्थ उच्चारण किया जा रहा था, मानव के मुखारबिन्दु में, जो नसों का मानो नाड़ियों का जो एक इन्द्र जाल की भांति, जो एक जाल का प्रदर्शन हो रहा है। मानो प्रत्येक नस नाड़ियाँ बेटा! वेदमन्त्र से गतियां करने लगती हैं संसार में जो वेद की विद्या, इसको मन्त्र कहते हैं। बेटा! संसार की कोई भी गौणिक भाषा हो, उस भाषा का जो प्रादुर्भाव से हुआ है, वह देव वाणी से हुआ, और देव वाणी में ही, मानो यह वेद भाषा निहित रहती है, जब मैं यह विचारता हूँ कि वायु मण्डल में जो तरंगों का प्रादुर्भाव हो रहा हैं, जो तरंगेंवाद गति कर रहा है, मानो उसके आँगन में एक वेदमन्त्र बेटा! मानो कटिबद्ध हो रहा हैं। तुमने यह जान लिया, नही। परन्तु और जानो जैसे श्वअनं दिव्यम ब्रह्मा मानो जैसे वेद ध्वनि हम उच्चारण करते है। उसके पश्चात याग में हम स्वाहा कह देते हैं।

मुझे स्मरण है पुत्रों! एक समय चाक्राणी के पिता थे उद्बुद्ध केतु मुनि महाराज उद्बुद्ध केतु ऋषि महाराज को वह

एक समय तमोगुण छा गया। तमोगुण छा जाने के पश्चात भक्ष्य अभक्ष्य का ज्ञान नही रहा। मानो शरीर उनका रूग्ण हो गया, त्वचा में से मानो रक्त बाह्य जगत को चलने प्रारम्भ हो गया तो उस समय उद्बुद्ध केतु ऋषि महाराज ने यह विचारा अब मैं क्या करूं? तो संकेतवत केतु ऋषि महाराज के द्वार पर पंहुचे। संकेतवत ऋषि महाराज, वेदों के मन्त्रों को जानते थे, यागों को जानते थे, परन्तु देखो, जब वह उनके द्वार पर पंहुचे तो उद्बुद्ध केतु ऋषि बोले कि महाराज! यह मेरा शरीर रूग्ण हो गया है। रूग्णात्वनं ब्रह्मे वर्णा प्रह्वास्ते ते अब मैं मेरा मानो यह रूग्ण मेरे हो गया है मैं मानो इसका उपचार चाहता हूँ। तो बेटा! देखो, उपचार होने लगा। उन्होंने कहा यह उपचारं श्वंधनसे वह वेद के मर्म को जानते थे, परन्तु वेद के मर्म को जानने वाला, आयुष्मति कहलाता है। उसे आयुष्मति कहते हैं। आयुष्मति का अभिप्रायः यह होता है, क्या वह आयु के देने वाला होता है। उन्होंने मुनिवरों! देखो, वेदमन्त्रों की ध्वनियों का नाना प्रकार से उच्चारण किया। वेदज्ञ ध्वनि उच्चारण करने लगे, परन्तु उनके चित्त में प्रसन्नता होने लगी। उसके पश्चात उनके यहाँ आश्रम में, एक त्रिकोण यज्ञशाला थी। उस त्रिकोण यज्ञशाला में, उसे प्रदान कर दिया। उन्होने बेटा! उस त्रिकोण यज्ञशाला का साकल्य मुनिवरों! उद्बुद्ध केतु को प्रदान कर दी, मुझे कुछ स्मरण है, मानो उन्होंने वह साकल्य वनों में से एकत्रित किया। सम्भवा रूद्र भवे तस्त्वां उद्धबुद्धं धनस्त प्रवे लोकाः मेरे प्यारे! उन्होने गायत्री छन्दों का पठन-पाठन किया, मया वर्धा देवाः बुद्ध केतु ऋषि और दोनों का संवाद होने लगा। उन्होंने बेटा! भंयकर वनों से औषधियां ला करके, एक औषध का नाम होता है केनकेतु उसे अकेत कहते हैं भाषायामता में प्रतीत नही क्या कहते हैं। परन्तु अकेत कहते हैं उस अस्वेत को ला करके उस के पांचाग का उन्होंने मानो उसी वृक्ष की आकेत की समिधा, उसी के पत्र, उसी के पुष्प, उसी का पंचांग बना करके, उन्होंने साकल्य बनाया और उसी की समिधा का निर्माण किया। परन्तु देखो, बटकेश्वर की मानो दाड़ी को ले करके, उसकी गो घृत में मुनिवरों! देखो, समिधा भिगोन करते हुए, मानो देखो, आहुति दी। तीन समिधाओं का विधान, परम्परागतों से बेटा! एक यागों में बेटा! मानो प्रचलित रहा हैं। और उसमें गौणिक एक महान रहस्य भरा हुआ हैं। वह रहस्य इस प्रकार का है जिसमें मानो देखो, रहस्याणि गथप्रह्वा इन तीन से यह जगत की उत्पति है। तीन तीन से ही मानो देखो, यह जगत चल रहा है। तीन गुणों वाला, यह प्राणी है, प्राणी नृत्त कर रहा है, तीनों पदार्थ अनादि हो करके ब्रह्माण्ड चक्र चल रहा हैं, तो त्रिपादों को ले करके त्रि विद्याएं कहलाती हैं परन्तु देखो, किसी को मानो देखो, एक ऋणां ब्रह्मा उद्बुद्ध केतु ऋषि को उन्होंने याग कराने के लिए उन्होंने प्रणिपात कर दिया। उन्होंने याग किया, उसमें जटामासी, जालकेतु की जाल वृक्ष की समिधा, शमी की समिधा, मानो उसमें पलांगकागणी के कण और उस साकल्य में बेटा! उन्होंने ब्रह्मबूटी, शंख, धूनिका ब्रेणत मजिठ और त्रेतकेतु एक त्रिवासणा केतु औषध होती हैं, उनका सबका साकल्य बना करके, उन्होंने बेटा! नित्य प्रति याग कराया। जब पचास दिवस हो गएं नित्यप्रति प्रातःकालीन याग करते रहे तो बेटा! वह एक ही वेदमन्त्र से मानो गायत्राणी छन्द होता हैं, उस गायत्री छन्द से वह मानो ध्वनि से मानो वेदमन्त्रों का विशुद्ध रूप से, जब वेद ध्वनि करने लगे, और स्वाहा कहने लगे, तो बेटा! पचास दिवस में, बेटा! उनका वह रूग्ण शान्त हो गया। मानो उनका आहार जो रहता है, मानो जब तक याग चलता, उनका उपवास होता, और उपवास में वह क्या मानो देखो, जल में, जल को तपाते हैं और जल को तपा करके, उसमे तीन उपवाणिका आती है, जल में, मानो देखो, उस जल में ब्रह्म बूटी, शंख हुलिका, शंख ध्वनिका इन तीन औषधियों को उसमें तपाया जाता और देखो, उसमें वट वृक्ष की मानो देखो, दाड़ी की छालन्त उनके पत्र, उनके कुछ मानो देखो, फल इत्यादि, ले करके, इनको तपा करके पंचांग के रूप में पान करा करके, मुनिवरों! देखो, पचास दिवस में बेटा! उनका कौढ़ दूरी हो गया। क्योंकि पंचांग वर्णसुता अस्वन्त केतु मानो यह जो त्रिकोण यज्ञ का निर्माण किया जाता है, जैसे मानो देखो, वैद्यराज तीनों नस नाड़ियों का, तीनों तापों को, जैसे

हमारे शरीर में मानो पित अपना गति करता है, अग्नि तेज गति कर रहा है, मानो जैसे वायु और वायु के ऊपर मानो जल में तथोष्ठ कहते हैं। उन तीनों नाड़ी जब विशुद्ध रूप से मानो वह जब दृष्टिपात करता है, तीनों नाड़ियों के आधार पर, जैसे त्रिकोण यज्ञशाला का निर्माण होता है ऐसे ही तीनों नाड़ियाँ मानो देखो, त्रिकोण से गति करती हैं, जैसे त्रिकोण त्रिगुण हैं रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण इन तीन कोण से ही मानो देखो, याग किया जाता हैं। तीन गुणों वाला, तीन पदार्थों वाला क्योंकि जब उसकी अग्नि, मानव की अग्नि उस काल में त्रि जिह्वा कहलाती हैं। अग्नि की नाना प्रकार की जिह्वाएं होती हैं परन्तु यहाँ त्रि काल जिह्वा कहलाती हैं उस जिह्वा में आहुति देने से मानो त्वचा के रूग्ण से उसका समन्वय होता हैं।

हमारे यहाँ, परम्परागतों मे बेटा! जब मैं मानो पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत होता था, तो यह विद्याएं उस काल में परम्परागतों से नृत्त कर रही थी और यह यागमयी जो विद्या, रूग्ण को शान्त करने की थी, यह उस काल में कहलाती थी। परन्तु किसी मानव को यक्ष्मा रूग्ण होता हैं, यक्ष्मा के रूग्ण होने से, उसमें मानो देखो, अक्रमणं ब्रहे कुछ साकल्य होते हैं। जैसे जटामासी होती हैं, जैसे मानो देखो, शंख स्वादिनी होती हैं, मानो जैसे दालकेतु चीनकेताम होता है, जायफल विश्वानि होता हैं परन्तु नाग केसरी होती हैं, तृणकेतु होता है, शंख हुलि होती है, मानो जैसे नील कमल होता हैं, तो यह बहुत-सी औषधियां होती है जैसे लुग होता है लवांगिणी होता हैं मानो देखो, इन सब औषधियों को मिलान कराते हुए, इनमें अग्नि विश्राण, त्रिणान, शुद्धिना मानो औषधियों के द्वारा एक साकल्य बनाया जाता है। और विशुद्ध मानो देखो, अग्नि त्रिकोण यज्ञशाला में याग किया जाता हैं। किसी मानव को कितना यक्ष्मा रूग्ण हो तो परन्तु सौ दिवस याग करने से, उसका यक्ष्मा समाप्त हो जाता हैं।

तो परिणाम क्या है मानो देखो, हम इस विद्या को बहुत परम्परागतों से जानते हैं। आज तुम प्रश्न करते रहते हो, हम उतना अब जान नही पाते, क्योंकि वह समय था जब हम इसको क्रियात्मक कर्म किया करते थे। मानो देखो, बहुत समय हो गया, काल समाप्त हो गया, अन्तःकरण में बेटा! वह संस्कार, जब उद्बुद्ध हो जाते हैं, वाक् आने लगते हैं। परन्तु देखो, वह क्यों ऐसा है? इन रोगों में कौन से मन्त्रों का उच्चारण होना चाहिए, मन्त्र वह होना चाहिए, मानो जिससे उसके फुस फुसां वाणी से, उस फुस फुसां दोनों से उसका मन्त्र का समन्वय होना चाहिए बहुत से मन्त्र इस प्रकार के हैं पुत्र! जिन मन्त्रों का सम्बन्ध वाणी से, और फुस-फुस से होता हैं, कुछ मन्त्र ऐसे होते हैं, जिनका सम्बन्ध ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ी से हो करके, रीढ के साथे में उनकी ध्वनि का समन्वय होता हैं। मानो देखो, इसी प्रकार कुछ मन्त्र ऐसे होते हैं जो सर्वा अंगी होते हैं, मानो देखो, वह छन्दों का भेदन हैं, उन छन्दों के भेदन के साथ-साथ, हमें इन मन्त्रों का उच्चारण करते हैं, जैसे हमारी वाणी और फुस-फुस का सम्बन्ध हैं, त्वानां तुरुणाश्वप्रह्वा अस्वं भवितां दिव्यं गतप्प्रह्वे अस्वाकं मधु वंजन्म तो इन वाक्यों का जो समन्वय, यह छन्द बन गया। परन्तु इस छन्द का सम्बन्ध फुस-फुस और वाणी से रहता हैं। परन्तु देखो, नस-नाड़ियों से रहता है, कुछ समन्वय मन्त्र ऐसे होते हैं जिनका समन्वय मानव के शरीर में, उदर में जो नस नाड़ियाँ होती है, मानो उदर में जो अग्रहाण होता हैं, उदर में जो मानो देखो, एक नाड़ियों का एक विशाल, एक भवन बना हुआ होता है। उन नस नाड़ियों में मानो वह गति करती रहती हैं, वह गतियां होती रहती है, और वह जब गति करती है, तो मानो शरीर के अब्रहा भाग में, उदर में किसी भी प्रकार का रूग्ण हो, परन्तु मन्त्र को उच्चारण करते हैं जल की धाराओं के साथ में, हम उसको उच्चारण करते हैं, मानो उसमें अपनी विचारधाराओं की विद्युत देते हैं, और विद्युत दे करके उद्बुद्ध आभास प्रगट होने लगता हैं। तो मानो देखो, नाड़ियों का जो एक भवन होता है, उस भवन में किसी प्रकार का रूग्ण आ जाता है। तो वह मानो उससे विशुद्ध बन जाता है।

तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, यह विद्या परम्परागतों से ऋषि-मुनि के मस्तिष्कों में प्रायः नृत्त करती रही है, और

वह जो नृत्त होता रहा हैं, वह एक महानता में गति करता रहा हैं। तो इसी प्रकार आज का हमारा यह वाक् हमें यह कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आभा में रमण करते हुए, परमात्मा की उज्ज्वलता में रमण करके, अपने को महान पवित्र बनाना चाहते हैं। जिससे हमारा जीवन, एक आभा में प्रगट हो जाएं, एक आभा में परिणत हो जाएं, जिससे हमारे जीवन की धारा एक महान बन जाएं, तो मैं तुम्हें बेटा! यह उच्चारण कर रहा था, कि सृष्टि के पिता ने ब्रह्मा ने, यह संसार रूपी भवन का निर्माण किया है इस भवन को विचारने के लिए, हमें दर्शनों के अध्ययन की आवश्यकता परम्परगतों से बनी रही है। प्रत्येक मानव यही चाहता है, प्रत्येक मानव यह चाहता है, कि मेरा जीवन महान और मैं दर्शनों के गर्भ में चला जाऊं। बेटा! मानव को जाना चाहिए, परन्तु मैं इसका विरोधी नही हूँ, प्रत्येक मानव को जाना चाहिए, क्योंकि हमने बेटा! बहुत पुरातन काल में अनुसन्धान किया था। उस अनुसन्धान में, तो मैं किसी-किसी काल में चला जाता हूँ, तो बेटा! हृदय गद्-गद् हो जाता हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने जब ब्रह्मवेत्ता बनाया, तो मुझे औषधियों के पंचांगों का पान कराया। मानो देखो, दुग्ध के द्वारा कुछ औषधियों का पान करा करके मानो मेरे हृदय को विशुद्ध किया। मानो देखो, विचारों का यह जगत हैं, विचारों का यह भवन है, विचारों का यह गृह हैं, विचारों का ही मानो देखो, यह संसार विचारों का एक भव्य भवन बना हुआ हैं। बेटा! जब विचारों में जब विवाद उत्पन्न हो जाता हैं, इसी भवन में अग्नि प्रदीप्त हो जाती हैं विचारों में जब विशुद्धता रहती हैं, वही मुनिवरों! देखो, आनन्दमयी लहरें, आनन्दमयी तरंगें उत्पन्न हो जाती हैं। आनन्दमयी धाराएं उत्पन्न हो जाती है, जिनको अपने में ग्रहण करके बेटा! उस आभा में गति करने लगता है। आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना चाहता हूँ, इससे पूर्व शब्दों में मेरे पुत्र ने यह वर्णन किया, कि आधुनिक जो जगत हैं यह मानो देखो, विज्ञान आधुनिक काल का विज्ञान याग में लगा हुआ है और यह चाहता है कि कोई ऐसी औषध प्राप्त हो जाएं ऐसा क्रियाकलाप प्राप्त हो जाएं, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाएं। तो मेरे पुत्र ने यह वर्णन किया था कि संसार में याज्ञिक बनना चाहिए। प्रत्येक मानव जब याग करेगा, जहाँ भौतिक विज्ञानवेत्ता तरंगों को जान करके, इस तरंग रूपी याग करते हैं, एकत्रित करते हैं, उन पर मानो आक्रमण करके उनके कण-कण बिखेर देते हैं। मानो उससे वायुमण्डल अपवित्र हो जाता हैं। अब पवित्रता को चाहते हैं, क्या देखो, साकल्य को एकत्रित करके मानो घृत के द्वारा याग का प्रारम्भ करें, साकल्य के द्वारा, तो वायुमण्डल वास्तव में विचित्र बन जाएगा। मैंने बहुत पुरातन काल में बहुत औषधियों का वर्णन, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कराया, मानो देखो, हम भी प्रायः उस विज्ञान में रमण करते रहे हैं।

आज का हमारा वाक्, यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए महामना देव की महिमा को महानता मे परिण करते रहे तो मानव! तू मानवीयता आभा में रमण कर, मुझे स्मरण आता रहता है, हमारे यहाँ देखो, बहुत-सा विज्ञान और आध्यात्मिक और भौतिक मानो देखो, हमारे यहाँ, मेरी पुत्रियों का इतना सहयोग रहा है, इतना मेरी पुत्रियों का, माताओं का सहयोग रहा है, उन्होंने अपने जीवन को हूत कर दिया। हूत करने का अभिप्रायः, अपने जीवन को महानता में, इस प्रकार ला करके, ऐसे मार्ग पर ला करके स्थिर किया यहाँ मेरे पुत्रियों का जीवन एक भव्य महान बन करके वैज्ञानिक तथ्यों में रमण करने वाला, विचार उनके मस्तिष्कों से उद्बुद्ध हुआ मानो उद्बुद्ध होता रहा तो मानो ऐसी मेरी पुत्रियाँ सौभाग्यशाली होती हैं। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है, मैं ये चर्चाएं कल तुम्हें प्रगट करूंगा, मेरी कौन-कौन पुत्री ऐसी हुई, जिन्होंने मानो देखो, विज्ञान में, इतना महान सहकारिता को प्राप्त होती रही हैं। इस विज्ञान को ला करके, हम अपने में अपनेपन को प्राप्त करने वाले बनें, इसी प्रकार, हमारा जीवन, एक महानता में रमण करने वाला रहा हैं। बेटा! आज का विचार, अब हम समाप्त करने जा रहे हैं, शेष चर्चाएं तो मैं कल उच्चारण करूंगा, कल मैं महानन्द जी के कुछ प्रश्नों का उत्तर बनेगा उत्तर देंगें। आज का वाक्

यह समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवं दधि ब्रह्मा वाचन्नमा रथं आभ्यां गतौ सर्वा वसु रन्धिमना वाचन्नमत्वजा आभ्यां देवं गताः। ओ३म् सर्वेषु भद्रा श्वञ्जना दिव्यां गथं ब्रह्माः अच्छा भगवन्! आनन्द मंगल शान्ति

४ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०६ ०८ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। मानो वे परमपिता परमात्मा प्रतिभाषित कहलाए गएं हैं मानो इस ब्रह्माण्ड के, एक-एक, कण-कण में मानो वह चैतन्य देव दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस ब्रह्म की गाथा गा रहा हैं, जैसे मानो यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, बेटा! माता को सिद्ध कर रहा है, मानो यही माता की गाथा कहलाती है, ममत्वां देवाः वह ममतव को अपने में धारण कर रही है। बेटा! जैसे ब्रह्माण्ड की गाथा गाने वाली, यह पृथ्वी है। यह गाती ही रहती हैं। मानो ब्रह्म की गाथा गा रही है। ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। मेरे प्यारे! इस पृथ्वी के गर्भ में कोई वस्तु ऐसी नही है, जिसमें कोई न कोई वैज्ञानिक तथ्य न हो। वैज्ञानिक तथ्य हमें दृष्टिपात आते रहते हैं। मानो यह जो ब्रह्माण्ड की गाथा गाने वाली यह पृथ्वी है, यह पृथ्वी गान गाती रहती है, और इसके गर्भस्थल में, जो भी क्रियाकलाप हो रहा है मानो उस क्रियाकलाप को दृष्टिपात करने वाला, मानो अपने में यह स्वीकार कर रहा है। ब्रह्मण्डं ब्रह्मे कृत लोकाः क्या यह ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसमें नाना प्रकार का खाद्य और खनिज है, मानो यह ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत हो रही है इस ब्रह्माण्ड के मूल में मानो एक आभा नियुक्त हो रही है। यह संसार एक प्रकार का, क्रीड़ा कर रहा हैं। परन्तु इस पृथ्वी के गर्भ में ब्रह्माण्ड विद्यमान है, इसीलिए उसका यह पृथ्वी उद्घोष कर रही हैं। अथवा गान गा रही हैं। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है, ब्रह्म का वर्णन कर रहा है। तो यह एक-एक वेदमन्त्र के चिन्तन करने से, हमें यह प्रतीत होता है, क्या मानो यह जैसे ब्रह्मण्डं ब्रह्मा कृत लोकाः वेद का मन्त्र ही तो ब्रह्म की गाथा गा रहा है। और ब्रह्म की गाथा कैसे गा रहा हैं? वह वह कहाँ गाने के रूप में अपने को परिणत कर रहा हैं। गान गाया जा रहा हैं, गान को श्रवण करने वाला प्राणी है, उद्घोष हो रहा है, उद्घोष अपने में वह उद्घोष नही रहता।

विचार क्या है पुत्रों! कि प्रत्येक वेदमन्त्र के जब गर्भ में पंहुचोगें तो उसके गर्भ में ब्रह्माण्ड ही दृष्टिपात आयेगा वह गान गा रहा हैं, विशुद्ध रूपों से गान गा रहा है, निमटारा अपने में कर नही पा रहा है। तो मेरे पुत्रों! प्रत्येक वस्तु गान गा रही हैं। गृह अपनी आभा में गति कर रहा है। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें प्रगट करना नही चाहता हूँ। तो आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा हैं, मानो आज का हमारा वेदमन्त्र हमें कहीं, ऊर्ध्वा मार्ग पर ले जा रहा हैं, गायत्राणी छन्दों का पठन-पाठन हो रहा है, हृदय प्रफुल्लित हो रहा है समाज में एक महान क्रान्ति का एक संदेह बन रहा है। वह किसी भी रूप में हो, आध्यात्मिक रूप के आधार में हो, परन्तु उनमें भी नाना प्रकार के भेदन माने गएं हैं। जब मैं उन भेदनों की चर्चाएं करने लगता हूँ, तो ऐसा अनुभव होता हैं क्या यह संसार में अपने आभायित हो रहा है, अपने में अभ्यस्त हो रहा है, जिससे बेटा! संसार का ज्ञान, उसका विवेक, हमारे में परिणत हो जाएं। तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या है, क्या हम अपनी आभा में गति करते चले जाएं। वाचन्नमे ऋणो अस्तां यह वाचन्नमः कहलाता है

वेदमन्त्र का प्रभाव

पूज्य महानन्द जीः- भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ जैसे हम वेदज्ञ ध्वनि का गान गाते हैं क्या उसका मानवीय जीवन से क्या सम्बन्ध हैं? अज्ञान से क्या सम्बन्ध है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे पुत्र अश्वं ब्रह्वे वर्णास्सुताम् यह वाक् तो मैंने कई काल में प्रगट कराया था, परन्तु इसका उत्तर यह बन पाता है, कि वेदमन्त्र का जब हम उच्चारण करते हैं, तो जितना भी वेदमन्त्र हैं यह देव वाणी में कहलाता हैं, मानो इसको देव वाणी कहते हैं, देव वाणी का अभिप्रायः यह है, कि क्या, इसे देवता उद्घोष रूप में उदघोषित करते रहे हैं। रहा यह, कि हमारा वेदमन्त्र से क्या, जीवन का सम्बन्ध हैं? बेटा! मैं तो यह कहा करता हूँ कि संसार में सम्बन्ध ही चेतना से है। मानो देखो, सम्बन्ध ही एक उग्र रूप को धारण कर लेता है। तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या हैं, आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, प्रत्येक वेदमन्त्र का मानव के जीवन से सम्बन्ध है, जिस मन्त्र के आधार पर, हम अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों को उद्घोष करने लगते हैं। जैसे हमने वेदमन्त्र को उच्चारण किया, वाणी में पवित्रता आ जाती हैं। हृदयों में पवित्रता आ जाती है, आत्मा अपने लोक में प्रवेश कर जाता है। तो बेटा! परिणाम क्या है मानो हमारे जीवन का सम्बन्ध प्रत्येक मन्त्र से उसका समन्वय रहता हैं। मानव जो भी उच्चारण कर रहा हैं, गान गाया जा रहा हैं, परन्तु यह केवल आभा में कहलाने वाला एक विज्ञान है जिस विज्ञान को ले करके हम अपनी मानवीय दशा को महान बनाते हैं। परन्तु प्रत्येक वेदमन्त्र हमारे जीवन का साथी बना हुआ है, उसमें विकृतियां नही होती, परन्तु अपनी आभा में गति करने वाला हैं, जिसको मन्त्र कहते हैं, मन्त्रार्थ कहते हैं। मन्त्र का सम्बन्ध हैं मन से, मन से जो भी मानव कर्म करता हैं, वह महान और पवित्र बन जाता हैं। तो उसी का नाम एक कर्म ध्वनि बन गई। तो हे मेरे पुत्रां ब्रह्मा स्वस्तां ब्रह्मे मानो यह जो जितना भी क्रियाकलाप हो रहा है, यह सब प्रभु के आँगन में, प्रभु की महानता में, ओत-प्रोत रहने वाला हैं। परन्तु विचार क्या कह रह है? क्या जब हम वेदमन्त्रों की ध्वनि से, गान गाते हैं तो प्रत्येक नस नाड़ियाँ मानो उद्घोष करने लगती हैं। जब प्रत्येक नस-नाडियां मानो एक चित्रावली बन करके रह जाता है। सम्भवितां देवं गतं प्रमाणां ब्रह्मे लोकाः मेरे प्यारे! वह ब्रह्म औषध कहलाती है, जिसको धारण करने के पश्चात, मानव के जीवन में, एक मानवीयता के अंकुर उत्पन्न हो जाते हैं। क्योंकि परमपिता परमात्मा ने सीमा में बद्ध करते हुए, अभ्यस्त हो गया है। परन्तु जब यह प्रसंग आते हैं, कि हमारा जो जीवन हैं, उसका आयुर्वेद से सम्बन्ध होता है, आयु में हमें लगाता है, कि परन्तु ये वेदमन्त्र भी ये कहता है बलं ब्रहे वर्णभेतु मानो बलों को धारण करने वाला, वह मेरा चैतन्य देव कहलाता हैं। सम्भविता रूद्रो लोकाः यंचमा। मेरे प्यारे! प्रत्येक वेदमन्त्र को जो ध्वनि से गान रूप में गाते हैं, तो उदात्त, अनुदात्त में गाते रहते हैं। मेरे प्यारे! समय इतना नही है, कि जो मैं उन वाक्यों की पुनरूक्ति कर सकूं, विचार क्या है कि हम अपने में इतने महान मन्त्र को ले करके, क्योंकि मन से इसका समन्वय रहता हैं और मन को ही सीमा में लाना, मानो इसी का नाम मन्त्रणा कहलाया जाता है।

तो प्रत्येक वेदमन्त्र मानव के जीवन को महान बना देता है आज कोई भी वेदमन्त्र ले करके जब मानव अपने को ऊँचे स्वरों में ध्वनि रूप में, धन मन्त्र कृणात्वा मानो धनवति बना देता है, वायु में गतियां हो रही है, धाराएं चल रही है, उन तरंगों को धारण करने वाला, महापुरूष कहलाता हैं। परन्तु आज मैं बेटा! दूरी न चला जाऊं, विचारों से, क्या मानव को अपनी आभा में अभ्यस्त रहना चाहिए उन्हीं विचारों से मानव का कल्याण होता है। मेरे प्यारे! देखो, वाहन गति कर रहा है, अन्तरिक्ष में जा रहा है, परन्तु वह मन्त्रणा प्रथम कहलाती हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! जैसे कोई मानव शत्रु हैं और शत्रु को हम विजय करना चाहते हैं, तो ऐसा कोई मन्त्र हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ ऐसा मन्त्र उसका चिन्तन हैं, परन्तु वह चिन्तन महान होना चाहिए, उस चिन्तन में एक विशेषताएं होती है, जिससे वह अपने में अपनेपन को जाना जाता हैं। तो वेदमन्त्र कहता है क्या, शत्रु को विजय करना है, तो अजामेध याग करो। हम अपने आन्तरिक शत्रु समाप्त करना चाहते हैं, तो बाह्य शत्रुओं का अभाव

स्वतः हो जाता हैं। जैसे हम उच्चारण कर रहे हैं, ध्वनि रूप में अपने में वह पूर्णता को दृष्टिपात होता हैं। परन्तु वह अपनी आभा में शत्रुता को विजय करना चाहता हैं, विजय हो सकता है परोक्ष, अपरोक्ष रूप में, सत्य के द्वारा सर्वत्र कार्य हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! यह कैसा अनुपम ज्ञान हैं, जिसके ऊपर हम परम्परागतों से अनुसन्धान करते आए हैं, अजामेध याग का वर्णन जहाँ आता है वहाँ वह अन्वकृत कहलाता है। जिससे मुनिवरों! देखो, आन्तरिक शत्रु समाप्त हो जाएं, जब आन्तरिक शत्रु समाप्त होंगें तो बाह्य शत्रु भी समाप्त हो जाएंगें। तो प्रथम अपने आन्तरिक शत्रुओं को समाप्त करना है। मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें दूरी न ले जाऊं, सम्भवा गच्छं देवं ब्रहे ब्रह्मा वर्णसुते मेरे प्यारे! जब हम एक वाक् को उच्चारण करते हैं, तो नाना रश्मियों का जन्म हो जाता है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! जैसे कल आप पूर्व वाक्यों में उच्चारण कर रहे थे, औषधियों का कुछ यागों का कुछ चयन हो रहा था, परन्तु उन यागों के चयन को और जानना चाहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेवः- मुनिवरों! देखो, बेटा! तुम यह प्रश्न क्यों कर रहे हो? मेरे विचार में यह प्रसंग नही आ रहे हैं तुम्हारा मन्तव्य क्या हैं?

पूज्य महानन्द जीः- भगवन! मन्तव्य तो जानना ही होता हैं हम जानना चाहते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र तुमने यह जाना नही है।

पूज्य महानन्द जीः- क्या प्रभु! आज हम यह वर्तमान में जानना चाहते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- सम्भविता देवं भवने अस्ते वाचन्नमा ब्रह्मणे लोकाः आभ्यां गति ब्रह्मणा वृत्ति अस्तो मानो देखो, इसी प्रकार यह भव्यता कहलाती हैं। नाना प्रकार का स्वरूप औषध का हमारे हृदय में विद्यमान हैं। जिस हृदय रूपी गुफा में, हमारा जीवन सदैव नृत्त करता रहता है। इसी प्रकार हमें उन आभाओं में रमण करना है जिसमें जाने के पश्चात, हमारा जीवन प्रफुल्लित हो जाएं, प्रत्येक वेदमन्त्र ध्वनि से विशुद्ध रूप से वर्णन किया जाता हैं, तो उस मानव के बहुत से वेदमन्त्र हैं जो बहुत से रूग्णों में कर्म में बद्ध हो जाते हैं, कर्म में जब बद्ध हो जाते हैं, तो ध्वनियां चलने लगती हैं, धाराएं गति करने लगती हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! जैसे आपने इससे पूर्व काल में, एक याग को लिया, और याग का जो क्रियाकलाप चल रहा था, मानो आपने त्रिकोण याग को लिया, उसमें कुछ औषधियों का वर्णन किया तो क्या भगवन! इससे मानव में कुछ चेतना आती हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, चेतना तो आना ही है, क्योंकि उसमें याग होता हैं, उसमें सुगन्धदायक, पुष्टिवर्धक औषध होती हैं, वह अन्तरिक्ष में स्वाहा और शब्द के साथ में, वह कटिबद्ध हो करके, अन्तरिक्ष में लय हो जाती हैं। तो क्या यह प्रियता नही हैं?

पूज्य महानन्द जीः- हाँ भगवन! प्रियता तो हैं। परन्तु आयुर्वेद कुछ कहता है, आप कुछ उच्चारण कर रहे हैं इसकी संगति कैसे होगी?

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र संसार में जितना भी महान कर्म है, वह सर्वत्र ही आयुर्वेद हैं। वेद ज्ञान प्रकाश का आयु को ऊँचा बनाने का नाम आयुर्वेदा प्रह्वे उसे आयु का वेद कहते हैं। उसमें दो प्रसंग नही होते केवल एकोकीकरण होता हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! याग करना बहुत अनिवार्य हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, याग करना मानव का मौलिक कर्तव्य हैं। याग से मानव के जीवन में एक महानता आती है, मानव के जीवन की धाराएं परिवर्तित हो जाती हैं, जो इसीलिए मैं यह कहा करता हूँ कि प्रत्येक मानव को आयुर्वेदा ब्रह्मणे लोकां स्वस्ति रूद्रा मानव को प्रसन्न रहना चाहिए ज्ञान में प्रसन्न रहना चाहिए, क्योंकि ज्ञानयुक्त जो

प्रसन्नता है, वही मानव के जीवन का निर्माण करती हैं। और उसी से मानव एक महान बनता है। परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, बहुत से वाक् प्रगट किए, अब मेरे प्यारे! पुनः इसके ऊपर विचार-विनिमय किया जा सकता हैं। जिन विचारों को ले करके, मानव के जीवन में उद्बुद्धता होती है, महानता का जन्म हो जाता हैं। परन्तु उस मानव को अपने मार्ग को यथार्थ रूपों में अपना लेना चाहिए। तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या है। मैंने बहुत पुरातन काल की वार्त्ताएं मैंने प्रगट कराई हैं और वह वार्त्ता थी कि हम अपने में औषध वादी बनना चाहते हैं सम्भेत करना चाहते हैं जिससे जीवन एक रहस्यमयी बनता चला जाएं।

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या है? क्या हम अपने जीवन को एक महान धारावादी बनाना चाहते हैं, आयुर्वेद परम्परागतों से मानव के मस्तिष्कों में नृत्त करता रहा हैं। मेरी पुत्रियों के हृदयों में नृत्त करता रहा हैं। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र, कुछ और ही कह रहा है, सम्भवा शमं ब्रह्मे कृतं बहुसुस्ता बेटा! जब वेद का मन्त्र स्वरों से उच्चारण होता हैं, तो मानव की जितनी वाहक नाम की नाड़ियाँ हैं, ज्ञान युक्त होती, परन्तु उनके तन्तु भस्म हो जाते हैं। और वह द्वेषाग्नि के प्रचण्ड होते ही उस अग्नि में आदान प्रदान हो जाता हैं। परमाणुओं का आदान प्रदान भी होता रहता है। जैसे परमात्मा के जगत में, एक परमाणु, दूसरे परमाणु से संघर्ष कर रहा है। वह संघर्ष किस रूप में परिवर्तित होते हैं? मेरे प्यारे! यह महान गहन विषय बन जाता हैं। तो विचार-विनिमय क्या देखो, प्रत्येक मानव को विचार देना चाहिए, प्रत्येक मानव, उस आभा में रमण करना चाहिए, जिस आभा में रमण करने के पश्चात मानव अपने को महान और विचित्र अपने को अनुभव करता रहता हैं।

तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या है मैंने तुम्हें यह वर्णन कराया है, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देते हुए, क्या यह प्रत्येक मानव, अपनी-अपनी हवियों में प्रदान हैं। अपने को प्रदान कर रहा हैं। जिससे जीवन में एक महानता का दिग्दर्शन हो जाएं, चित्रावलियों में मानो देखो, चित्र विद्यमान हो जाएं, जिससे जीवन एक महान बन करके रहता है, जीवन की धाराएं, एक विचित्र बन करके, अपने में मानो देखो, ओत-प्रोत हो जाती हैं। प्रत्येक वेदमन्त्र का गाथा रूप में गान गाया जाता हैं। मुझे एक वेदमन्त्र आज स्मरण आ रहा है एक प्रसंग में वेदमन्त्र यह कहता है कि चित्रं दधश्वनां धनञ्जयं ब्रह्मे लोकां वसुस्वस्ता यंचमा ब्रह्मा लोकाः बेटा! वेदमन्त्र यह कहता है, कि मानव को अपने में अभ्यस्त हो जाना चाहिए, वेदमन्त्र यह कहा रहा हैं क्या, जब हम इस वेदमन्त्र को उच्चारण करके याग कर्म करते हैं, तो हमारे अन्तःकरण में पवित्रता आ जाती है, हमारे अन्तःकरण महान बन जाता है, परन्तु उस महान चिन्तन की आभा में, मानव जो अपने को ले जाता हैं तो विचित्र बन जाता है।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! मैं यह और जानना चाहता हूँ जैसे आपके आयुर्वेद में आपने भी आयुर्वेद का अध्ययन किया मुझे वह काल स्मरण है जब आयुर्वेद का आप अध्ययन करते थे परन्तु मैं यह जानना और चाहता हूँ क्या यह आयुर्वेद अपने में क्या-क्या कर सकता है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! यह जो आयुर्वेद है यह अपने सर्वत्र आभा में, मानव को परिणत करा सकता हैं। यह आयु का वेद कहलाता हैं, आयु उसकी बलवती जब हो जाती है प्रत्येक मानव संसार में जीवन चाहता है शरीर में किसी न किसी रूप में पदार्थ ले करके मानव के जीवन को, जीवन बनाता हैं जीवन देता हैं। इसी प्रकार हमारा जो आयुर्वेद है, यह आयु है, इसमें आयु विद्यमान है। इसीलिए आयु का वेद कहते हैं, आयु बलवती होती रहती हैं, इससे उच्चारण करने से इनमें जो औषध आती है, उनका पान करने से मानव का जीवन एक महान और पवित्र बन जाता हैं।

परन्तु मुझे स्मरण है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक समय एक वेदमन्त्र को ले करके आयु का वेदमन्त्र था उससे अपने अन्तःकरण के संस्कारों की गणना कर रहे थे, ये हमारा जो अन्तःकरण है जिसको चित्त कहते हैं, उस चित्त में

क्या-क्या तरंगें विद्यमान हैं, बेटा! उसके ऊपर ऋषि अपना चिन्तन कर रहा था और वेदमन्त्र अपने में आभा को प्राप्त हो रहा था तो विचार क्या हैं, विचारं ब्रह्मे प्रणप्रवा लोकं ब्रह्मे स्वस्त प्रह्वे वृत्ता क्योंकि अन्तःकरण को जानना ही मानव को आवागमन की परीधि से दूरी होना है, अपने को अभ्यस्त स्वीकार करना हैं। तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या, कि यह संसार गति कर रहा है आयु के आँगन में गति कर रहा है आयु कहते हैं वायु को वायु हृदय में प्रवेश हो जाती हैं हृदय ग्राही बना देती है समाज को तो मेरे पुत्रों! यह ऐसा ओब्राहण ज्ञान हैं जिसके ऊपर अध्ययन की आवश्यकता है चिन्तन और मनन का यह विषय बन जाता हैं। प्रत्येक वेदमन्त्र में मानो देखो, मन प्रथम आता हैं मन से गुथा हुआ ज्ञान है, मन उसको अपने में धारण करने लगता हैं, परन्तु देखो, जब मैं यह विचारता हूँ, कि आयुर्वेद कितना विशाल हैं, मानो देखो, यज्ञमान का रथ बन रहा है, रथ पर विद्यमान हो रहा हैं, और द्यौ लोक में वह रथ स्थिर हो जाता है। तो बेटा! रथ का अभिप्रायः यह है, रथ कहते हैं विचारों में जो क्रियाकलाप मानो यज्ञ के द्वारा हो गया है उस क्रियाकलाप को अपने में समन्वय करते रहना जब उसका समन्वय हो जाता है तो दृष्टिपात किया गया मानव का संसार में मूलन नही होता उसकी धाराओ में परिवर्तन हो जाता है, परन्तु विचार क्या कह रहा है हे परमपिता परमात्मन! तू हमारा कल्याण कर, जीवन की आभा में हमें परिणत कराता चल।

तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय यह है पुत्र! क्या जितना भी यह वेदमन्त्र मानव को आभा और तेज देता हैं वेदमन्त्र साकल्य के द्वारा जाता है, तो रूग्ण समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यदि वही मन्त्रार्थ स्वतन्त्र रूप से विचरण करता है, तो वही वह लय स्थिर हो जाते हैं। विचार-विनिमय यह, कि प्रत्येक वेदमन्त्र का अपना महत्व होता है उच्चारण करने का मानो देखो, विधान क्रियाकलाप होता है, विचित्र, उसी क्रियाकलाप को ले करके मानव अग्रणीय बनता हैं। तो विचार-विनिमय क्या हम बेटा! अपने में इतने पूर्णतव को प्राप्त हो जाएं, कि हमारा जीवन एक महान बन कर रह जाएं। तो मेरे प्यारे! विचारना यह है कि हम आयुर्वेद के उसी रूप से विचारना, जिससे मानव के अन्तःकरण के संस्कार की उद्बुद्धतता हो जाती है। परन्तु रहा यह वाक् की मानव को नाना प्रकार के देखो, उन्वाषण रूग्ण होते हैं, जिन्हे उन्वाषण कहते हैं, उन उन्वाषण विचारों पर हमें अनुसन्धान करना है, अनुसन्धान करते जीवन को महानता में परिणत करा देना है। यह बेटा! आज मैं तुम्हें यह वाक् इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हारा प्रसंग ऐसा हैं इस प्रसंग को ले करके मानव अपने जीवन को महान बना करके, सागर से पार ले जाता हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में एक वाक् कहा था, एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के द्वारा एक संकेत नामक एक ब्रह्मचारी आए संकेत ब्रह्मचारी ने कहा कि-प्रभु! मैं मगध राष्ट्र में गया था, और मगध राष्ट्र में मानो देखो, दो गन्धर्व विद्यमान थे, वह एक ऐसे रथ पर विद्यमान हो गएं जिस रथ पर विद्यमान हो करके, वह रथ मानो द्यौ लोक में प्रवेश करने वाला था। वह कौन-सा रथ है, जिस रथ को मानो देखो, रथ कहा जाता हैं मानो देखो, जब उन्होंने यह कहा कि वह रथ कौन-सा है? तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! प्राण अपान, और व्यान जब यह तीनों प्राण वायु एक सूत्र में आ जाते हैं, तो मानो एक रथ बन गया है। यज्ञमान उस रथ पर विद्यमान हो करके, वह अन्तरिक्ष में गति करता हैं, वायु गतं ब्रह्म गतप्रह्वे स्वस्त ब्रीहि स्वस्ता मानो देखो, वही किरणें कहलाता हैं। जिसको अपना करके मानव के जीवन में एक महानता की ज्वालायें मानव के हृदय में एक उग्रता उत्पन्न हो करके, मानो अपने में स्वतन्त्र स्वीकार करता हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो औषध विज्ञान हैं इसके ऊपर आपका कोई मन्तव्य?

पूज्यपाद गुरुदेवः- इसके ऊपर तो बेटा! हम कई काल में तुम्हे अपना विचार दे चुके हैं। तुम्हें यह प्रतीत है कि यह वन है, इस वन में तो मैं जाना नही चाहता हूँ। संक्षिप्त में, मैं सदैव परिचय देता रहता हूँ। कि मानव का जीवन का

सम्बन्ध मानो आयुर्वेद से रहता है जिसमें मैंने जनाया। मानव अपने में स्वतन्त्रता में और महानता में गति करता रहे, यही उसका आयुर्वेद अन्तःकरण को ऊँचा बना देता हैं, अन्तःकरण में बिन्दुओं की स्थिरता हो जाती है। वही बिन्दु आकाश में अन्तरिक्ष में और मानव के हृदय में प्रवेश हो जाता है हृदय अगम्य बन जाता हैं। वही हृदय से उद्बुद्ध हो करके लोकों की यात्रा करने लगता हैं। मानो देखो, यह प्राण, अपान और व्यान इन तीनों प्राणों को एक समन्वय आने से, मिलान होने से रथ बन जाता हैं और वह रथ कैसे मार्ग पर चलता है वह इतना सूक्ष्म मार्ग है, जो दृष्टिपात नही आ रहा हैं। रथ में विद्यमान हो करके, वही प्राश्रित से जो मानो देखो, जा करके, द्यौ लोक को प्रक्षित हो जाएं वह आदित्य लोकों में प्रवेश कर गएं, मानो इस उत्तर को पा करके, वेद के आचार्यों में प्रसन्नता आ गई, तो विचारना यह है कि हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र उस ब्रह्म की गाथा गा रहा हैं, उस प्रभु का अवमोलन कर रहा हैं, और हमें उसे अपने में धारण करा रहा है, जिससे जीवन पवित्र बन जाएं। मेरे प्यारे! मैं कहा चला गया हूँ, कौन-सी स्थली में चला गया मानो देखो, इसको रथ कैसे बनाया जाएं विचारना यह है कि रथ कैसे बनेगा? रथ का वर्णन तो आ गया परन्तु वह रथ क्या है? प्राण, अपान, व्यान ये तीनों प्राणों को एक सूत्र में लाना ही, मुनिवरों! देखो, अति मुक्ति कही जाती हैं। उस पर विद्यमान हो करके, मानव गति कर रहा है। तो मेरे पुत्रों! विचार क्या कह रहा है, क्या हम अपने में महान बनना चाहते हैं। मेरे प्यारे! मैं जब अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप पंहुचता था, वह चरणों में विद्यमान हो करके वह मानो अपने हृदय की वार्त्ता, आयुर्वेद की चर्चा करते थे वह यह कहा करते थे कि यह जो आयु का वेद हैं यह प्रकाशक है महान है इसी प्रकाश से आश्रित हो करके समाज अपना क्रियाकलाप कर रहा हैं। मेरे प्यारे! मैं कहाँ चला गया हूँ, विचार यह दे रहा हूँ पुत्र! तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर है। यह क्या प्रत्येक औषध मानव के मुखारबिन्दु में परिणत हो रही हैं, प्रत्येक औषध को एक आभा में रमण करा रहा हैं जब मैं यह विचारता हूँ कि प्रत्येक मानव उस आभा में गति कर रहा है, अपने को शोभनीय स्वीकार कर रहा हैं, मन्त्रार्थ आने गच्छतं देवाः लोकां हिरण्यं रथं ब्रह्मे लोकाः यह जो रथ है, यह द्यौ लोक को जाता है, मानव का, इस रथ पर विद्यमान हो करके, अन्तःकरण को जागरूक किया जाता हैं अग्नि का, अग्नि का ध्यान करता हुआ अग्न्याध्यान करके मानो नाना प्रकार के रूपों में परिणत हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा में ले जाना नही चाहता हूँ, मैं ऐसे वन में ले जाना नहीं चाहता हूं जो महान मार्ग प्राप्त न हो, विचार केवल यह देना और चाहता हूँ कि मानव के जीवन में एक महान धाराओं का जन्म होता रहता है, मानो देखो, जब भयंकर वनों में जा करके, मानव अपनी औषध को एकत्रित करता रहता है, अपने आहार को प्राप्त करता रहता हैं, मानव का जीवन, एक महान प्रफुल्लित हो करके, आनन्दित हो जाता है, अपने में वह सफलता को वह दृष्टिपात करता है इसी प्रकार मैं आज बेटा! देखो, मगध राष्ट्रों की चर्चा कर रहा था, वह कहता है मगध अपने में मानो देखो, यह आभा संसार में निहित रहनी चाहिए। अभ्यस्त होना ही मानव को अनिवार्य हैं। परन्तु देखो, जहाँ भी मैं यह विचारता हूँ आयु का वेद आयु आयुष्मान भी कहलाती हैं परन्तु देखो, मैं यह कहा करता हूँ क्या संसार में आयु को ऊर्ध्वा में गति बनाना ही जीवन हैं आयु की आभा में रमण कराना ही मानव का जीवन ऊँचा बनता हैं। परन्तु बहुत से जलों का पान किया जाता हैं बहुत से अग्नि के तपे हुए जल को पान करके मानव के जीवन में कुछ जीना अश्वन हो जाती है परन्तु वह महानता आने लगती हैं, निष्क्रियापन समाप्त हो जाता हैं, परन्तु जो मानव निष्क्रियापन को समाप्त करना नही चाहता वह मानव अपने में अधूरेपन को प्राप्त होता रहता हैं, उसका वह अधूरापन है उसमें वह अपने को यह स्वीकार करता हैं कि कुछ नही जान पाता परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ, कि प्रत्येक मानव अपनी आभा में गति करता हुआ, प्रत्येक वस्तु को जानता है जब मैं एक समय मुनिवरों! देखो, मुझे स्मरण है, जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत था, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कुछ औषधियों का पान कराया, जिन

यज्ञ और औषधि विज्ञान

औषधियों के पान करने से सर्प की भाषा, सर्प की मानो देखो, वाणी को भली भांति मानो देखो, उसको जान लेता हैं। मानो औषधि में श्वेतकेतु औषध कहलाती हैं, मानो जिसमें मृचिका है, त्रिजटा है, त्रिमासी हैं, त्रि सोमकेतु हैं, परन्तु इनको अग्नि में तपा करके पान किया जाता हैं, इनका रस अपने में धारण किया जाता है तो माना देखो, वह सर्पों की मृगराजों की वार्त्ता में मानो संलग्न हो करके उनकी वार्त्ता को जानने लगता हैं, और यह जानता कैसे है सुभव्यता, यह विचारता है कि मानो देखो, यह सर्प की वाणी हैं, वह वाणी क्या कह रही है इसके उदगम में, मानो जो रहस्य है उसको भी जानता है, एक मानो देखो, अश्व के मुखार बिन्दु से ही ब्रह्म का उपदेश होता रहता है।

तुम्हें यह प्रतीत होगा पुत्रों! एक समय मानो देखो, मानकृति नदी कहलाती थी जिसको रामेश्वरी गंगा कहते थे। परन्तु उसके तट पर एक समय चार पक्षी मानो देखो, ब्रह्म का उपदेश दे रहे थे अपने में ब्रह्म की भाषा चल रही थी उस ब्रह्म की भाषा को ऋषि-मुनि श्रवण कर रहे थे, श्रवण करते ही एक समय मार्कण्डेय जी से यह प्रश्न किया गया कि महाराज! यह कौन है जो इस प्रकार की भाषा में, इस प्रकार की आभा प्रगट कर रहे हैं, बटुक नाम के ऋषि के पुत्र हैं, यह पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गएं थे, मृत्यु को क्या प्राप्त हो गएं थे, एक समय मानो देखो, एक कवेचुक नाम के ऋषि थे कवेचुक ऋषि महाराज एक समय अनुसन्धान कर रहे थे अपनी आयु के ऊपर, उन ब्रह्मचारियों ने जा करके, ऋषि का अपमान किया। अपमान करके मानो देखो, उन्हें यह अप्रात में इनको परिणत कर दिया, कि वह चारों ब्रह्मचारी मानो देखो, पक्षी के गरूड़ के रूप में बन जाओ और वह मानो देखो, चारों पुत्र गरूड़ के रूप में मानो देखो, अपनी भाषायां प्रतिष्ठायां देवत्वां मानो देखो, वह अपना सत्संग कर रहे थें। ऋषि-मुनि उनके ब्रह्मज्ञान को प्रान करके, क्योंकि ऋषि-मुनि वह मानो देखो, प्रत्येक ब्रह्मचारी ग्रहणाम क्या स्वस्ते वह भाषायाम जो भी प्राणी भाषा का उन्मोदन कर रहा है उसको वह श्रवण कर रहा है, उसको अपने में धारण कर रहा हैं परन्तु उसको धारण करता मन्त्र का उच्चारण कर रहा है, मन्त्र का मानो देखो, प्रतिभाषित, मानव के जीवन पर उसकी प्रतिभा आ रही हैं, इसी प्रकार जब उन्होंने ये ऋषि-मुनियों ने मानो देखो, यह श्रवण किया तो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक मानव को, अपने जीवन में उन औषधियों का भी पान करना चाहिए, जिनका पान करने से मानो देखो, प्रत्येक मानव प्राणी की भाषायाम उसको प्रतिष्ठायाम स्वीकार करके, अपने में धारण करके अपने का मानो ऊर्ध्वा में उदमोदन करता रहे।

तो विचार-विनिमय क्या है पुत्रों! क्या मानो देखो, यहाँ प्रत्येक मानव इस प्रकार की औषध है क्या जिसको पान करने से हम पक्षियों का वार्त्ता भी जानते हैं, गरूड़ों की वार्त्ता भी जानते हैं। एक समय मुनिवरों! मुझे स्मरण है, चाक्राणी गार्गी के पिता का नाम सोमवृत्ति था। एक समय सोमवृत्ति महाराज भंयकर वन में कुछ औषधियों को एकत्रित करने के लिए जा पंहुचे, परन्तु देखो, कुछ औषधियां उन्हें ऐसी प्राप्त हुई, आयुर्वेद की दृष्टि से जिनको पान करने से मानव अपने को सुखद का अनुभव करता है, परन्तु जब वह पान करते रहे तो वहाँ मार्ग में मानो एक औषध होती है, जिसको मानो सिंहराज पान करता हैं और सिंह राज वह वन की औषध होती है, उसको क्यों पान करता हैं? जब वह रूग्ण हो जाता है। मानो देखो, रूग्ण होने पर, उस औषधि का पान करता है उस औषधि में यह विशेषता है क्या उसके पान करने से, सिंहराज जब पान करता है तो उसके रूग्ण शान्त हो जाते हैं। सिंह को कौन-सा रूग्ण होता हैं? यह एक विचारणीय प्रसंग आ गया, परन्तु सिंहराज को बहुत से रूग्ण होते हैं, एक रूग्ण उसे ऐसा होता है, जैसे मानो देखो, उसने किसी गन्द प्राणी का पान कर लिया हैं, और उस प्राणी को पान करके मानो देखो, उसके पान करने से ही एक त्रिकेत नामक एक रूग्ण होता हैं, जो सिंहराज को होता हैं। और वह हूणकेतु एक औषध होती हैं। हूणकेतु और हूणकेतु के साथ में एक औषध होती है जिसको त्रिकेतु कहते हैं, उन

दोनों का वह पान करता है, तो वह रूग्णा से रहित हो जाता हैं। मानो उसको रूग्णा नही हो पाता, इसी प्रकार ऐसी-ऐसी औषधियों का वह पान करता हैं तो उस औषधियों को ऋषि मानो सोमकृति पान करना चाहते हैं। तो वह भ्रमण करते हुए उन्हें औषधियां प्राप्त हुई, क्योंकि सिंहराज उन औषधियों को ले रहा था, पान कर रहा था वह निर्भय हो करके, सिंहराज के पास पंहुचे और सिंहराज से कहा हे मृगराज! हे सिंहराज मुझे तू इस औषध को पान करा। मानो उन्होंने इस औषध को नियुक्त कर दिया, वह औषध उनके आश्रम में तन्तु रूप में विराजमान थी उन्होंने एकत्रित किया और उसका औषधि का निरीक्षण किया मानो एक औषध होती है जिसको पान करने से मानव की रसना बहुत विशाल बन जाती है, मानव वाणी से रहित हो जाता है, तो रूग्णा हो गया उसी वृक्ष की उस वृक्ष का नाम है जटा कृति भानकेतु कृति घान वृक्ष होता है उसके पाचांग में कोई गुण हैं, तो उस की जड़ की आभा में कोई गुण है उसके तने में कुछ गुण है, परन्तु देखो, उसके पत्र को पान करो तो मानो की रसना विशाल बन जाती है, वाणी कुछ शब्द उच्चारण नही कर पाती, यदि उसके तने में जाओ, उसकी चमड़ी के पिछले भाग में, जो उसका मांस है, उसको पान करो तो मानव देखो, औषधियों से ज्यों का त्यों जिह्वा, अपने आसन पर चली जाती हैं, रूग्णा समाप्त हो जाता परन्तु उसकी जड़ के विभाग में जाओ, तो देखो, वह रसना है जो मानो आकुञ्चन को प्राप्त हो करके, शब्दों से रहित हो जाती हैं। उसी के मानो देखो, उसके फल को पान करने से पान करने से वही मानो देखो, जिह्वा अपने आंगन में आ जाती हैं। तो परिणाम क्या मेरे पुत्र मैंने बहुत-सी औषधियों का पुरातन काल में यह अनुभव किया था। परन्तु एक-एक वृक्ष में कितने गुण है, उसकी बकल में, उसके मांस में, मानो उसकी पतियों में, उसके फलों में मुनिवरों! देखो, उसकी जड़ की छालाकृतियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण हमें दृष्टिपात आते हैं।

तो मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में मानो देखो, इसके ऊपर बहुत-सा अनुसन्धान किया। आज मैं अनुसन्धान की चर्चा नहीं कर रहा हूँ विचार तुम्हें यह दे रहा हूँ, कि मानव के जीवन का सम्बन्ध, औषध से, एक औषध होती है जो हिमालय की कन्दराओं में, मानसरोवर के द्वार पर प्राप्त होती हैं, उसको जब वैद्यराज, उस औषध को ऋषि-मुनि आयुर्वेद के जानने वाले, जब उस औषध को मानो देखो, पृथ्वी से उसको उखाडते थे तो वेदमन्त्र का उच्चारण करते थे, वेदमन्त्र कहता था सम्भूविता सम्भवा यचतं देव प्रमाणं विश्वां ब्रहे गृणासति सुजन्म देवाः तो अब प्रसंग आता है कि वेदमन्त्र का उच्चारण क्यों करते हैं? क्योंकि वेदमन्त्र के साथ में वेद की ध्वनि देखो, मन की और वाणी और विचार मानो इससे रहने से वेदमन्त्र क्योंकि वेद ज्ञान है उदयानां वेदमन्त्र से उस औषधि का समन्वय रहता हैं सम्बन्ध है इसीलिए देखो, वेदमन्त्र ध्वनियां चल रही है, और औषधि को वह पृथ्वी में से अपने में धारण कर रहा हैं, धारण करने का परिणाम यह होता है कि उसको ला करके उसको खरल बनाता हैं और मुनिवरों! देखो, उस औषध के पान करने मानव छतीस प्रकार के प्राणियों की भाषा को वह भली भांति जानने लगता है मानो रूग्णा उसके शरीरों में नही रह पाता, विचार क्या है बेटा! मैं तुम्हें यह विचार इसीलिए दे रहा हूँ, क्या यह भयंकर वन में तुम मुझे ले गएं हो, इस भंयकर वन में मुझे जाना नही है। परन्तु यह औषधियों का विशाल वन है, पुत्र! मैं इस वन में जाना नही चाहता हूँ, परन्तु देखो, एक मानव अश्ववानम् कहलाता हैं परन्तु इसको धारण करने से, वह मानो देखो, जल की तरंगों में प्राप्त होता हैं समुद्रौं के तटो पर प्राप्त होता हैं, जिसको खरल करने से मानव पान करता है, पौष्टिक बन जाता हैं, सुदृढ़ बन जाता है, श्वंजनी औषधियों को पान करने से, वह अपने में मानो देखो, ज्ञान की वृद्धि की धारा होती है। तो इस प्रकार मेरे प्यारे! तुमने मुझे भंयकर वन में पंहुचा दिया है, वनों की भी मैं चर्चा करता रहूं परन्तु विचार-विनिमय क्या, आज का हमारा विचार क्या कहता है? कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उसके ज्ञान उसका विज्ञान इतना महान और विशाल कहलाता है पुत्र! क्या इसके ऊपर हम

कोई विशेष टिप्पणियाँ नही कर पाते। परन्तु इसको वर्णन ही कर सकते हैं परन्तु टिप्पणियाँ देना हमारा कर्तव्य नही है, परन्तु विचार क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की श्वंजनी की, रचना की औषधियों को बेटा! औषध स्वरूप में हम परिणत करते हैं मानो देखो, हम जितना वनस्पति विज्ञान हैं, जितना वनस्पति आचार है, वह हमारे जीवन के लिए आत्म तत्त्व कि लिए महान बन करके रहता हैं।

तो विचार क्या मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है क्या इस पृथ्वी के ऊपर यह नाना प्रकार की औषधियों का जन्म होता हैं, तो यह जो पृथ्वी है, यह ब्रह्म की गाथा गा रही हैं, यह ब्रह्म का वर्णन कर रही है, और यह कहती है कि मैं ब्रह्म हूँ, मैं ब्रह्मण्डम ब्रह्मा मैं ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही हूँ, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड अपनी आभा में व्यापक बन रहा है। तो विचारना यह है कि नाना प्रकार की तरंगों में बेटा! जो मानो परमाणु विचरण कर रहा हैं, उन तरंगेंवाद को जानना जान करके अपने में लेना ही बेटा! देखो, सर्वत्र विज्ञान कहलाता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर क्या प्रत्येक वेदमन्त्र जब हम मन्त्रणा करते हैं, उसके ऊपर अपने जीवन को आचरणित बनाते हैं, तो मानव का जीवन प्रभावति हो जाता है। मानव के जीवन में एक महानता आ जाती हैं, ज्ञान तन्तु स्पष्टीकरण हो जाते हैं, तो बेटा! इसीलिए मैं तुम्हें उच्चारण कर रहा हूँ, क्या हमारे यहाँ आयुर्वेद है, जीवन वेद है, इसीलिए हमारे यहाँ यह यौगिक आभा कहलाती हैं। ऐसी औषध विज्ञान में क्योंकि यह आहार सबसे प्रथम मनुष्य का जो आहार हैं, मानो प्राणी मात्र का जो आहार है, उसका वर्णन आता हैं, और वह विशाल वन है बेटा! विशाल वनों में आभायुक्त होता रहा हैं। तो मेरे प्यारे! आज का विचार कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, नाना प्रकार के औषध विज्ञान को और हमारे जीवन में जो प्रत्येक शब्द का जो प्रतिभाषित हो रहा हैं। जैसे शब्द अशुद्ध है तो राष्ट्र अग्नि के मुख में चला जाता है, यदि शब्द में शुद्धवाद है, पवित्र वाद हैं, वैदिक वाद है, वही मुनिवरों! देखो, शान्ति प्रदायक कहलाता हैं। तो मानो देखो, शब्द अग्नि काण्ड बन करके रहता हैं, शब्द ही शीतलकाण्ड बन करके रहता हैं, शब्द में बेटा! मैं तुम्हे वाक् एक उच्चारण करूंगा, मानो हमारे यहाँ यही शब्द है, जो वैदिक साहित्य में आता हैं। क्या एक दीपावली गान होता है, एक मल्हार गान होता है, मानो देखो, हमारे यहाँ ऋषि-मुनि जब गान गाते रहते थे, एक समय बटकेश्वर ऋषि महाराज थे, जब वह गान गाते थे तो गान गाते-गाते मानो देखो, दीपावली बन जाती थी। अन्धकार में तो महाराजा नल मानो देखो, उनके शिष्य बने, बटकेश्वर ऋषि महाराज के शिष्य बने, और उन्होनें उस दीपावली राग को जानने का प्रयास किया। वह मानो देखो, उस राग को जानने वाले बने, वह वेद का एक मन्त्र है, और वेदमन्त्र की जो ध्वनि है, उस ध्वनि में ही मानो देखो, दीपावली राग बना। जब राग गाने लगे प्राणों का संयम गान को गाया जाता है, एक प्राण को संयम में लाते हैं, एक प्राण से गान गाते हैं। एक प्राण उसकी उसमें पुट लगाते हैं, जब गान गाते हैं, तो मानो देखो, अन्धकार छाया हुआ है, तो दीपावली बन जाती है। उसको दीपक राग कहते हैं। दीपक गान कहा जाता है। जो नल जानते थे, नल के द्वारा दीपावली जो उन्होंने बटकेश्वर ऋषि महाराज अंगिरस से उन्होंने इस विद्या का पान किया, तो जब वह गान गाते थे आनन्दित हो करके तो देखो, नगरों के दीप बन जाते थें। दीप मानो प्रकाश में आ जाते थे, परिणाम क्या मानो देखो, एक चाक्राणी गार्गी का बेटा! तुमने दृष्टिपात किया होगा मानो चाक्राणी गार्गी एक समय अपने पूज्य गुरुदेव शोनत्वर ऋषि महाराज के द्वार पर मानो उनसे चरणों में ओत-प्रोत हा गई, वह वेदमन्त्रों का गान गा रहे थे, जब गान गा रहे थे तो मोहिनी गान गा रहे थे, मानो देखो, उसके पश्चात वह मल्हार गान बन गया, उस मोहिनी राग का मल्हार गान बन गया वह जब गान गाने लगी तो मध्य रात्रि में मानो देखो, मेघों की उपज हुई, और मेघों की उपज से मानो धीमी-धीमी वृष्टि हो गई। उसमें स्नानं मानो करने से मानव का जीवन एक शान्ति प्रदायक बन गया। विचार क्या मुनिवरों! देखो, यह शब्द की

प्रतिभा हैं, शब्दों को सिद्ध किया जाता हैं। इन शब्दों के ऊपर अनुसन्धान किया जाता है, शब्द एक ऐसा शब्द है, जिससे मानो देखो, राष्ट्र अग्नि का काण्ड बन जाता हैं। महाभारत का काल बेटा! तुमने दृष्टिपात किया होगा महाभारत के काल में एक ही शब्द ने देखो, अग्नि प्रदीप्त कर दी थी, वह शब्द था जो महाराजा द्रुपद ने महाराज द्रोण को प्रगट किया था वह शब्द वह था एक शब्द वह था जो इन्द्रप्रस्थ में मानो देखो, वह द्रोपदी ने महाराज दुर्योधन को कहा था, वह दोनों शब्दों का मिलान हो करके मानो वह राष्ट्र की अग्नि बन करके रही मानो देखो, संसार एक अग्नि का काण्ड बन गया। राष्ट्र अग्नि का काण्ड बन गया, परिवार समाप्त हो गया, परिणाम यह है कि मुनिवरों! यह शब्द है जो मानव को अग्नि के मुखारबिन्दु में ले जाता हैं। जब वह ध्वनि प्रचण्डतव में हम प्रगट करते हैं, विशुद्ध रूपों से जब वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हैं। तो उनका एक प्रतिभा बनती है, वही उनके परमाणु बनते हैं, वह मानव के जीवन पर छा जाते हैं, और मुनिवरों! देखो, स्वर ध्वनि पवित्र बन जाती हैं, तो मैं उच्चारण कर रहा हूँ, क्या प्रत्येक वेदमन्त्र जैसे हमारे इस मानव शरीर में शरीर रूपी यज्ञशाला के मुनिवरों! देखो, चौबीस पात्र कहलाते हैं, और चौबीस पात्रों में चौबीस अक्षरों का गायत्राणी छन्द कहलाता हैं, जब गायत्राणी छन्द को शुद्ध रूप में हम उच्चारण करते हैं, तो मानो देखो, उसके उच्चारण करते-करते हमारे शरीरों में ऐसे परमाणुओं की जागरूकता हो जाती हैं, कि हमारा जो हमारा बुद्धि जो केन्द्र हैं वह पवित्र बन जाता हैं। बुद्धि का केन्द्र पवित्र बन करके हमारे यहाँ ईश्वर की महिमा को उसके विज्ञान को हम भली भांति जानने लगते हैं।

तो बेटा! मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ कि यह जो मन्त्र हैं, शब्द है, यह शक्ति है, इस शक्ति को हमें धारण करना है। परन्तु देखो, अग्नि उच्चारण करने से अग्न्याध्यान करते हैं, इसी वेदमन्त्र को ले करके दीपक राग बनता है। इसी शब्द को ले करके अग्निष्टोम याग बनता है, तो बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, मैं तुम्हें यह परिचय देने आया हूँ, क्या प्रत्येक मानव को इस आभा में इस विज्ञान के ऊपर अधिपथ्य होना चाहिए। जिससे देखो, जीवन की धाराएं एक से एक बन करके महान बन करके रहें।

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! जैसे ब्रह्म की गाथा गा रहा है। ऐसी पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार पुत्र माता की गाथा गा रहा हैं, और गाथा का वर्णन बेटा! समय आयेगा मैं करता रहूँगा, आज का वाक् समाप्त, समय मिलेगा मैं शेष चर्चांए तुम्हें कल प्रगट करूंगा। अब वेदमन्त्रों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् दधिमां देवं रथश्चां गता आभ्यां रूद्रा मनु आ पा गताहाम् ओ३म् ब्रह्म मणा देवं मया सर्वं भद्राः अच्छा भगवन्! आज्ञा

५ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान ०७ ०८ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! (पुस्तक से) आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने जिन वेदमन्त्रों पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र में उस मनोहर वेद की महिमा का अथवा उसका विज्ञान निहित है। प्रत्येक वेदमन्त्र में इन लोक-लोकान्तरों की आभाएं आती रहती हैं। लोक-लोकान्तरों में कौन-सा तत्त्व कहाँ पर किस लोक में प्रधानता में रहता है। यह सर्वत्र विद्याएं सर्वत्र अनुभूतियां हमें वैदिकता में प्राप्त होती है। एक-एक वेदमन्त्र में हमें दृष्टिपात हो रही है। आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि बहुत अनुसन्धान और गम्भीर मुद्रा में परिणत होते रहे हैं।

एक वेदमन्त्र उनके समीप विद्यमान है, परन्तु उसी वेदमन्त्र से यह संसार की आभा परिणत हो रहे हैं जिसमें हमें यह ज्ञान होता है कि जो मानवीयतव है, वह विचारों में निहित रहता है। बहुत पुरातन काल हुआ जब यहाँ विराजमान हो करके और अपनी ध्वनि में प्रायः विचारने लगते थे और उस ध्वनि को अपने में और ध्वनि के साक्षात रूप का आभास हमें वायुमण्डल में दृष्टिपात आता था क्योंकि मुनि अपने में बहुत गम्भीर चिन्तन किया करते थे। क्योंकि पिण्ड और ब्रह्माण्ड की दोनों की प्रायः वह कल्पना करते रहे हैं। उस कल्पना में एक काल्पनिक नही नाना प्रकार की कल्पना की वार्त्ताओं को साकार रूप देते रहे हैं बेटा! आज मैं तुम्हें बहुत-सी विज्ञान की वार्त्ताएं प्रकट कराने के लिए नही कुछ परिचय देना है, कि-प्रभु! का ज्ञान कितना अनन्तमयी है।

मेरे पुत्र! मुझे कई काल में तुम औषधियों में ले गएं हो उन विद्याओं में ले गएं हो जिन विद्याओं के ऊपर ऋषि-मुनियों ने बहुत अनुसन्धान किया एक नेवलकेतु ऋषि भी हुए और नेवला एक रमण करने वाला सर्पराज से संग्राम करता है। वह जो सर्प से संग्राम करता है, तो सर्प का जब संग्राम होता है, तो वह जब स्वीकार करता है कि तू संग्राम करता हुआ थकित हो गया है, अथवा इसका विष तुझे व्यापने वाला है, तो वह गुड़केतुक नामक एक औषध होती है। उस औषधि को पान करके, उसकी सुगन्धि ले करके वह पुनः सर्पराज से संग्राम करता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि वह जो गुड़केतुक नाम की औषधि है। वह गुड़वञ्ज्नी है, तो उसका पान करने से सर्प का विष नही व्यापता। यह सिद्ध हुआ तो उससे हमें इन औषधियों के ऊपर अनुसन्धान करना हैं। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र में जहाँ ब्रह्म की विद्याएं हैं, वही लोको की विद्या भी हैं, जहाँ योग विद्या है, वहाँ बेटा! व्यवहार भानु भी है। उसमें विद्यमान है जो एक-एक वेदमन्त्र के विभाजन करने से यह सर्वत्र आभाओं का जन्म होता हुआ दृष्टिपात होता है। औषधि विज्ञान का तो एक वन है। उस वन में जाने के लिए बहत सा मन बनाना पड़ता है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया था कि हम औषधि का पान करते रहते हैं। परन्तु मानव को अपने आहार में परिवर्तन लाना होता है। व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा यदि हम परमात्मा की सृष्टि को हम साक्षात्कार दृष्टिपात करना चाहते हैं। तो हमें अपने जीवन को बहुत सूक्ष्म और गम्भीर मुद्रा में ले जाना होगा। यदि गम्भीर मुद्रा नही है। तो हम प्रभु के उस संसार को प्रभु के राष्ट्र को हम दृष्टिपात नही कर सकेंगें।

देखो, जब मैं बुद्धि के ऊपर बल देता रहता हूँ, तो पुरातन काल में ऋषि-मुनि जब माताओं के संसर्ग में रहे हैं। तो माता उन औषधियों का लेपन करती थी गर्भ में रहने वाले बाल्य के ऊपर उस औषधि की तरंग प्रवेश होती चली जाती थी। तो विचारना क्या है प्रत्येक औषधि का अपने में बहुत महत्व माना गया है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में वर्णन किया था हमारे यहाँ जब भी किसी बाल्य की उत्पति होती तो उस समय एक याग करते थे। उसको

सोमेतकेतु याग कहते थे। सोमेतकेतु याग में यह विशेषता है कि उन समिधाओं को ला करके याग करता है जिससे जिस प्रकार का रोग शरीर में हो रूग्ण हो उस रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता था जो बाल्य के लिए होता था, मैं इस क्षेत्र में जाना नही चाहता हूँ। यह जो यह तो यागों के क्षेत्र है। विशाल क्षेत्र है। परन्तु विचार यह मैं देने जा रहा था कि संसार में जिस विद्या का हम जानना चाहते हैं। उस विद्या के ऊपर हमारा चिन्तन और मनन गम्भीर होना चाहिए यदि गम्भीर चिन्तन नही है मनन ऊँचा नही हैं। तो विद्या में अधूरापन आ जाता है।

वैद्यराज सुधन्वा

मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हे यह निर्णय देते हुए कहा था बेटा! आज मैं तुम्हें विशेषता में नही ले जाऊंगा। मुझे स्मरण आता रहता है कि अश्विनी कुमार जो वैद्यराज थे, वे भी औषधि विज्ञान में शामिल थे, विशेषज्ञ कहलाते थे, जब राम और रावण का युद्ध हो रहा था, तो युद्ध होते समय महाराज इन्द्र से रावण के पुत्र मेघनाथ के द्वारा एक शक्ति थी और वह शक्ति क्या थी, एक यन्त्र था शकतानकेतु यन्त्र था, जिस यन्त्र के प्रहार करने से जिस नाम को कह कर के उसका प्रहार कर दिया जाता तो वह मानव मूर्छित हो जाता और उस परमाणुवाद में उस शक्ति में यह विशेषता थी कि जब तक सूर्य उदय न हो तब तक आत्मा का ह्रस नही होता था और जहाँ सूर्य उदय हुआ शक्ति के साथ उसका प्राणान्त हो जाता परन्तु देखो, यन्त्र में यह विशेषता थी सूर्य की आभा में गति करने वाला प्राण शक्ति होता है। आत्म तत्त्व होता है। तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा कुछ स्मरण है कि जब उस शक्ति का पान किया तो महाराजा विभीषण ने यह कहा राम से कि महाराज! यदि लक्ष्मण को विशुद्ध बनाना है तो महाराज सुधन्वा को लाया जाएं, सुधन्वा वैद्यराज बड़े विशेषज्ञ है। तो महाराजा सुधन्वा के लिए हनुमान से प्रार्थना की गई कि हनुमान सुधन्वा को उनके गृह से ले आओ, गृह से ला करके लक्ष्मण को दृष्टिपात कराया। महाराजा सुधन्वा ने वैद्यराज की सुगन्ध दे दी और आभा से कहा यह गिरिकेश्वर नामक एक पर्वत है। उस पर्वत पर एक औषधि होती है। जिसका नाम गुडनवी है, और गुडनवी नामक औषध के साथ में एक दीपवली शानवेशन औषधि कहलाती है। उन दोनों औषधियों को ला करके उनका पिपाद बना करके यदि लक्ष्मण को प्रदान की जाएगी, सूर्य उदय से पहले तो इसके प्राणान्त नहीं होंगे।

तो मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है कि महाराज! हनुमान को यह कार्य सौंपा और एक वाहन दिया गया, वे गिरीकेश्वर नामक पर्वत पर पंहुचे तो वहाँ उस औषधि की उन्होंने जो उसकी रूप रेखा वर्णन की थी वह रात्रि के काल में दीपावली की भांति प्रकाशवती थी। परन्तु देखो, वह औषधि गिरि नामक पर्वत पर क्यों और पर्वतों पर नही थी, परन्तु उन्होंने क्या विचारा कि मुझे तो भान नही हो रहा है उन्होंने नाना औषधियों को एकत्रित करके अपने बलिष्ठ बल से बहुत अधिक संख्या में वह नाना औषधियों को लाए, नाना जितनी औषधियां थी। उनको चुनौती प्रदान की और वह अपने वाहन में ले करके लंका में सूर्य उदय होने से पूर्व ही उस औषधि को लाए और सुधन्वा से कहा- कि महाराज! मुझे तो ये औषधि प्राप्त हुई है, ये अब आप इसमें से औषधि चुन लीजिए। जिसको लक्ष्मण को प्रदान करनी है। महाराजा सुधन्वा ने वह औषधि चुन करके चुनौती प्रदान करके लक्ष्मण को प्रदान की लक्ष्मण पर यन्त्र का मूर्च्छा का जो प्रभाव था वह समाप्त हो गया। समाप्त होने के पश्चात वे वार्त्ता युक्त हो करके अपने में वार्त्ता प्रकट करने लगे। यह औषधि विज्ञान बहुत परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है। और नृत्य करना भी चाहिए।

महाराज सुधन्वा ने अपनी एक पोथी का निर्माण किया था, जिस पोथी में उन्होंने लगभग कई सहस्रों औषधियाँ उसमें नियुक्त की, उनके रोगों के आधार पर। तो इसीलिए मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ, कि संसार में जितना भी यह औषधि विज्ञान है। यह परम्परागतों से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में महानृत्य करता रहा है। इसमें प्राण शक्ति

है, प्राण वर्धक है, परन्तु इनकी प्राणों की आभा को जानना है। औषधि की आवश्यकता वहीं होती है। जहाँ शरीर में प्राण नही रहता प्राण न रहने से प्राण शक्ति उन औषधियों के द्वारा प्रदान करते हैं। उसे देना प्रारम्भ करते हैं। यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण भी हुआ है जिन यन्त्रों से प्रहार करने से दस-दस दिवस तक मूर्छित होना, परन्तु उन औषधियों का पान भी किया गया जो मूर्च्छा से जो परमाणु मृतक हो गएं थे, उनमें जीवन शक्ति प्रदान हो गई। प्राण शक्ति का उनमें संचार हो गया तो वह संसार में उसी प्रकार ज्यों के त्यों बने रहे। तो इस प्रकार ये औषधि विज्ञान मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मुझे प्रगट कराते रहे हैं। कुछ हमने भी ऋषियों की सहायता से इस विज्ञान को जानने का प्रयास किया है। प्रत्येक वेदमन्त्र में औषधि विज्ञान निहित रहा है। मैंने बहुत पुरातन काल में यह कहा था संसार में एक चिकित्सा नही रही हैं। परम्परागतों से बहुत-सी चिकित्सा रही है। महर्षि भारद्वाज मुनि जहाँ विज्ञान में पारायण थे। वहाँ उन्होंने प्राण चिकित्सा को बहुत महत्व दिया है।

प्राण चिकित्सा

एक हमारे यहाँ प्राण चिकित्सा भी कहलायी गई है। इस प्रकार प्राण के जो भाग होते हैं। उन प्राणों को उसी प्रकार से हम वायु को शनै-शनै लेते हैं। वायु को शनै-शनै त्यागते हैं। वायु को एक स्वर से ले करके उसी स्वर से भी हम उसका अनुपात में ले करके उसका संचार भी करते हैं। यह औषधि विज्ञान से प्राण चिकित्सा एक महान चिकित्सा के रूप में महापुरूषों ने स्वीकार की है। इस चिकित्सा का सम्बन्ध ब्रह्मवर्चो से रहता है। तो पुत्र! मैं विशेष चर्चा में नही ले जा रहा हूँ। यह प्राण चिकित्सा हमारे यहाँ बहुत ऊर्ध्वा में गति करती रही है।

कुरुणी चिकित्सा

आज मैं तुम्हें यह वाक्य उच्चारण करने वाला हूँ कि कई समय हो गएं हैं। विज्ञान की वार्त्ताएं प्रगट करते हुए औषधि विज्ञान में नाना औषधि विज्ञान की वार्त्ता है। एक हमारे यहाँ कुरुणी नामक चिकित्सा होती है। यह कुरुणी नाम विद्या ऐसी होती है जिसमें जल से उपचार किया जाता है जल से पिपाद बनाएं जाते हैं जल के द्वारा उसे पान किया जाता है उसमें कुछ औषधियों का निदान भी किया जाता है। तो बेटा! यह बहुत प्रकार से चिकित्सा होती रही है मैं आज इस सम्बन्ध में जाना नही चाहता हूँ क्योंकि यह आभामय गतियों में रमण करती है रमण करने वाला यह विज्ञान है पुत्रों! मैं आज तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ सुधन्वा ने और अश्विनी कुमारों ने दोनों ने इस विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान किया है, मुझे भी इसका बहुत-सा भान है। जैसे हमारे यहाँ महात्मा दधीचि हुए, तो महात्मा दधीचि को भी इसका बहुत ज्ञान था। महात्मा दधीचि के जीवन में यह कहा जाता है कि जब महाराजा इन्द्र ने महात्मा दधीचि के ऊपरले भाग कण्ठ से दूरी कर दिया। उनके मस्तिष्क को ज्यों का त्यों औषधियों से नियुक्त कर दिया तो दधीचि के सम्बन्ध यह कहा जाता है। जब बकासुर का यह युद्ध हुआ बकासुर के द्वारा तो महात्मा दधीचि के शरीर की अस्थियों का एक वज्र बना। उस वज्र से बकासुर पर प्रहार किया गया। उस समय देवताओं की रक्षा हुई तो देवताओं की रक्षा क्या कामधेनु जो गौ थी। उस कामधेनु गौ के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि इन्द्र ने जब महात्मा दधीचि की अस्थियों को लिया तो कामधेनु ने उसका जो माँस था, चर्म था, उसको गऊ ने आहार कर लिया, अपनी जिह्वा के द्वारा उसे त्रीत करते-करते वह केवल अस्थियां रह गयीं उसका वज्र बना। परन्तु देखो, उस वज्र से बकासुर का हृस हुआ। परन्तु देखो, वह गौ क्या थी विचाना यह है कि वह गौ क्या थी वह गोदन्ती एक औषधि कहलाती जाती है। गोदन्ती औषधि होती है, उसको गौ घृति भी कहते हैं। परन्तु देखो, मांस और चर्म क्या है? वह क्या है? मांस और चर्म हमारे यहाँ एक वृक्ष होता है। जिसका नाम दधीचि वृक्ष होता है जो हिमालय की कन्दराओं में होता है। परन्तु वह मानसरोवर के द्वारा होता है। वह जो गोदन्ती है। उसमें यह विशेषता है देखो, गोदन्ती, शैलखण्डा, शैलभूनि इन तीनों औषधियों को पान करा इन तीनों औषधियों को पान

करा करके उस वृक्ष के ऊपर लेपन करते हैं। तो उसका मांस और उसका चर्म है, वह अपने आप ही वृक्ष से देरी हो जाता है। जब वह दूरी हो जाता है। जब वह दूरी होता है। तो उसका हम पात बनाते हैं। जब उसका पात बनाते हैं। तो देवता जब संघर्ष में आते हैं, देवता कौन हैं? मेरे प्यारे! यहाँ अश्विनी कुमारों ने लेखनीबद्ध करते हुए कहा है कि जो इन्द्र है, वह आत्मा है वह इन्द्र उस गोदन्ती को अपने में ज्ञान के द्वारा ग्रहण करता हुआ उस समय बकासुर को नष्ट करता है, बकासुर कौन है? बकासुर इस मानव शरीर में एक बकासुर नाम का एक रोग होता है। वह बकासुर कौन-सा रोग है? उसे हम मृगी कहते हैं। वह बकासुर होता है, और देवता अस्वस्थ हो जाते हैं। जिसको हम असाध्य रोगों में परिणत कहते हैं। उस रोग में जब बकासुर आता है। तो मानव से निद्रा दूरी चली जाती है। निद्रा नहीं आती तो उसको हम बकासुर नामक रोग कहते हैं। तो देवता ह्रस हो जाते हैं। उस समय इन्द्र की विवेचना चलती है। वह वृक्ष के समीप जाते हैं। वृक्ष चर्म लेते है। उसका मांस लेते हैं, और गोदन्ती, हरीति, श्वेत्ताम् इन औषधियों को ले करके पात बना करके उसके मस्तिष्क पर लेपन करते हैं। संसार में यह जो गौ नाम का पशु है। यह मांस का भक्षण नही करता है। इसीलिए यह युक्ति यहाँ लग नही पाती। तो इसीलिए पुत्र! मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ कि यहाँ आयुर्वेद विज्ञान में औषधि विज्ञान में नाना प्रकार की युक्तियां होती है। नाना प्रकार की युक्तियों से भरित होता है। तो मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ। पुत्र पर्वतों में बहुत-सी औषधियों का अनुपात होता है। अनुभास होता है। जिनको तीव्र इच्छा होती है। उनके स्वप्न में औषधियां आ करके अपने-अपने गुणों का वर्णन करने लगती हैं। जब तीव्र इच्छा होती है। किसी भी कार्य में मुझे स्मरण है। जब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप को धारण किया उन्होंने अमृत को देवताओं को देना प्रारम्भ किया तो मोहिनी स्वरूप उनके मस्तिष्कों में प्रत्येक औषधि उनको अपने गुणों की वार्त्ता प्रगट किया करती थी। अश्विनी कुमारों के जो गुरु थे, सोमकेतु ऋषि महाराज वह जहाँ विज्ञान में पारायण थे। वहाँ वह औषधि विज्ञान में जब वह निद्रा में तल्लीन होते जितनी निद्रा आती, उतनी आती परन्तु स्वप्न में आने प्रारम्भ हो जाते थे। उस स्वप्न में प्रत्येक औषधि अपना गुण वर्णन करने लगती थी। क्योंकि आत्मा इस शरीर में भास रहा है। उसमें उसकी छाया बन रही है। तो जिस भी विषय को विशेषज्ञ बनना चाहता है। उसमें उसे जब तीव्रता आ जाती है। तीव्रता का परिणाम यह होता है कि वह उसको अपने में भासने लगता है। वह उसी में भासने लगती है। वह गुण उसमें आने प्रारम्भ हो जाते हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में यह वर्णन करते हुए कहा था।

एक समय बेटा! देखो,हम ऋषि-मुनियों की एक सभा महात्मा त्रेणकेतु महाराज के यहाँ होनी थी उसमें जब सब ऋषियों का एक समूह एकत्रित हुआ तो उसमें यह हुआ कि यह जो संसार है। यह जो मृत्यु से घिरा हुआ है। वह मृत्यु से कैसे पार हो। तो यह विचार-विनिमय ऋषि मुनियों की सभा में हुआ जैसे राजा जनक की सभा में यह प्रसंग आते रहे हैं मृत्यु से घिरे हुए समाज को मृत्यु से दूरी करना है। तो ऋषियों ने यह कहा कि एक ही कण्ठ से कि जो संसार को मुक्त बनाना है। तो प्रत्येक मानव की इच्छा बलवती होनी चाहिए। तीव्र इच्छा के बलवती होने पर रूग्णों का ह्रस हो जाता है। रूग्ण नही रहते। मानसिक चिन्तन को सुन्दर होना चाहिए, मानसिक चिन्तन उस काल में ऊँचा होगा, जब प्रत्येक गृह में परमपिता परमात्मा की चर्चाएं होती रहेंगी। उसके उदगार होते रहेंगें। दर्शनों की भाषा में दार्शनिक विचार शब्द रूप में चित्रों के रूप में गृहों में रमण करते रहेंगें। तो वे गृह उस मृत्यु से मानसिक चिन्तन के रूग्णों से मानव दूरी होता रहता है। ऋषि मुनियों को मानसिक दुखद क्यों नही होता था, उसके मूल में उनका चिन्तन विशुद्ध होता था परन्तु विशुद्ध चिन्तन से मानसिक चिन्तन महान बन जाता है। मानसिक रूग्ण बन करके नही रहता तो विचार विनिमय क्या पुत्रों! आज मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ, कि नाना प्रकार की विचारधारा से क्योंकि याग का हमारे यहाँ प्रधानता क्यों दी गई है परम्परागतों से ऋषि मुनियों ने

यज्ञ और औषधि विज्ञान

जितनी महाता यागों को दी है। इतनी किसी और क्रियाकलाप को नही दी। जितना महत्व समाज ने इसको दिया इसके मूल में रहस्य है, और वह रहस्य क्या है? कि इसमें जो सुगन्धि का रहस्य है, सुगन्धि में चित्र का रहस्य है। चित्र के साथ में जो शब्दों का रहस्य है। जिस स्थली पर याग कर्म होता है तो उसमें उस मानव के चित्र विशुद्ध वेदमन्त्रों की धाराएं गति करती रहती है। उससे उस गृह का वायुमण्डल पवित्र होता है। वायुमण्डल के पवित्र होने पर वेदमन्त्र की धारा शुद्ध होनी चाहिए। महान होनी चाहिए। ऋषि-मुनियों ने बहुत महत्व दिया बहुतायात में दिया है कि कर्म करना है, तो याग करो, पुत्र उत्पन्न हो पुत्रियाँ उत्पन्न हों जब याग होना चाहिए। पुत्र ही कामना हो तो याग करना चाहिएं प्रथम विचारों का बनाना होता है, यह औषधि हमारे यहाँ सबसे महत्वदायक मानी गई है और जो साकल्य की जो धाराएं बनती हैं, वह विशुद्ध होती हैं, और उन धाराओं में औषधि होती है, उन औषधियों की धारा याग कर्म करना याज्ञिक के लिए महापवित्र कहलाता है। उन यागों को इसीलिए कि ये विज्ञान का प्रतीक माना गया है। विज्ञान की धाराओं में इसका महत्व रहा है।

नाना प्राणियों को अपने रूग्ण की औषधियों का ज्ञान

संसार में नाना प्रकार की औषधियों को ले करके उस औषधि विज्ञान के सम्बन्ध में अपने विचार दे रहा था मुझे स्मरण आता रहता है, बहुत से पक्षी है, बहुत से प्राणी है। जो अपनी-अपनी औषधियों को स्वतः जानते हैं। प्रभु का ऐसा विज्ञान है। इसके ऊपर अनुसन्धान किया जैसे मैंने नेवलकेतु की वार्त्ता प्रगट की इसी प्रकार वानर नामक प्राणी होता है। जब वह प्राणी सर्प की मृत्यु करता है, तो सर्प की मृत्यु करता हुआ एक औषधि वह भी जानता है। वह विषकर्णी नामक औषधि होती है। वह विषकर्णी नामक को वह लाता है, उसे पान करता है। वह भी विषों को हृस करने वाली है। इसी प्रकार यह जो सर्प है यह वायुमण्डल से ऐसे परमाणुओं को सींचता रहता है। जिसमें विष व्यापक रहता है, परन्तु वास्तव में प्रभु की महिमा इतनी विशुद्ध इतनी विचारणीय है, जिसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया जाता है। सूर्य की किरण है, वह विष को भी ले करके चलती है अमृत को ले करके भी चलती है। परन्तु देखो, सुगन्धि को भी चलती है। विष ले करके जो किरणें चली है। उन किरणों के विषों को जितने भी संसार के विषैले प्राणी है, वह प्राणी उन किरणों से उन्हीं परमाणुओं को अपने में धारण कर लेते हैं। अपने में सींच लेते हैं। वह विष कितना लाभप्रद है। आज जितने विषैले प्राणी है। उनमें कितना लाभ है। वह अपने रोगों की औषधि स्वतः जानते हैं। यदि विषधारी को रोग हो गया है, तो वह पृथ्वी के गर्भ में जाते हैं, अपने बिल में जाते हैं, और बिल में जा करके पृथ्वी के आँगन में एक ऐसी परमाणु धारणा शक्ति है, उसे पान करता है। तो वह स्वस्थ होता चला जाता है। इसी प्रकार हमारे यहाँ प्राणी जिसे गणेश का वाहन कहते हैं। गणेश की सवारी कहते हैं। उसे चूव्हेनकेतु यत्र भी कहते हैं परन्तु जब यह विचारा जाता है कि वह पृथ्वी में बिल बनाता है, एक प्राणी भी होता है। जैसे यान होता है। चूव्हेनकेतु एक प्राणी भी होता है। जो सर्पों के लिए बिल का निर्माण करता है। उसका गृह बनाता है। परन्तु उसी में जो कुछ भी वह अपने शरीरों से जो बाल बनते हैं। वे सर्प का आहार बन जाता है, यदि वह आहार नही बनेगा उसका आहार उसका औषधि नही बनेगा तो प्राणी श्वास नही ले सकता।

तो यह अपने में देखो, कितना विशाल विज्ञान है बेटा! इस विज्ञान पर मानव को विचार-विनिमय करना चाहिए सर्प जितने प्राणियों को जन्म देता है। उनमें से सौ प्राणियों में से एक प्राणी को त्याग करके वह निन्यानवें प्राणियों को आहार कर जाता है। वह आहार क्यों कर लेता है, अपना भोजन क्यों कर लेता है। संसार में ऐसा प्राणी कोई नही हैं, जो अपने पुत्रों! को आहार बना लें परन्तु सर्प बनाता है। वह क्योंकि वह विषधर है। विष पान करने वाले को ज्ञान का माध्यम नही होता, उसमें ज्ञान की सूक्ष्मता हो जाती है। उसके मस्तिष्क के ज्ञान के तो तन्तु होते वह न रह करके ममता तो होती है। परन्तु ममता के साथ कठोरता होती है। उस कठोरता में रहस्य भरा हुआ है।

यज्ञ और औषधि विज्ञान

परमात्मा की आभा में वह क्या रहस्य है, उन्हें पान नही करेगा तो पृथ्वी पर दूसरा प्राणी भी जन्म नही ले सकता। देखो, यह परम्परगतों से प्रभु ने इस सृष्टि का नियम बनाया है। यह आभा में उज्ज्वलता में रमण करने वाला सिद्धान्त हैं।

तो मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें यह निर्णय करा रहा हूँ कि संसार में अपनी-अपनी औषधियों को प्रत्येक प्राणी जानता है। एक नही अनेक प्राणी इस प्रकार के हैं। अपनी-अपनी औषधि को जैसे श्वान होता है श्वान अपने में औषधि युक्त इतना होता है, यदि इसे वमन करना हो तो अपने उदर को शुद्ध बनाना हो तो दोबेतकेतु औषधि होती है इस दोबेतकेतु औषधि को पान करता है। तो वमन कर देता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि वह अपने रूग्णों की औषधि को स्वतः जानते हैं। इसी प्रकार मेरे पुत्रों! जितने प्राणी है, इस संसार में प्रत्येक प्राणी अपनी-अपनी औषधि को जानता है। तो उन औषधियों को आहार वह मानव भी करता रहता है। उन्हें जानता है इसी प्रकार वह अपने में महान बना करता है।

सूर्य चिकित्सा

तो विचित्रता बेटा! क्या है कि हे मानव! यह सब प्राणी जानते हैं, मानव भी अपने रूग्णों की औषधि को जानता है। परन्तु वह अपनी रसना के इतना धूर्तपन में आ जाता है कि अपनी औषधि को अपने से दूरी कर देता है, परिणाम क्या है? देखो, शरीर में किसी भी प्रकार का रूग्ण हो सूर्य की किरण इस प्रकार की है। जो मानव के रूग्णों को शान्त कर देती है हमारे यहाँ सूर्य चिकित्सा भी विशेष रही है, जैसे प्राण चिकित्सा है, औषधि चिकित्सा है। इसी प्रकार सूर्य चिकित्सा भी विशाल रही है। सूर्य चिकित्सा में बड़े विशेषज्ञ हुए है। जिन्होंने सूर्य की किरणों से रूग्ण को शान्त करना प्रारम्भ किया, जल पिपादों को बनाया जाता है, जल को पांच रंगों वाला जल तपाया जाता है। सप्त-सप्त दिवस सूर्य की किरणों में तपता रहता है। जल तपने के पश्चात उसका मर्दन किया जाता है। कोई पान करता है। तो भिन्न-भिन्न प्रकार के रूग्णों में वह अपने कार्यवत् आता है।

तो बेटा! मैं बहुत दूरी न चला जाऊं यह एक बहुत भयंकर वन है, जिसमें आज तुम मुझे ले गएं हो बहुत पुरातन काल में इस वन में हम भ्रमण करते रहते थे न प्रतीत मुझे तुम इतने समय के पश्चात भ्रमण क्यों करा रहे हो, इसको मैं जान नही पा रहा हूँ। विचार केवल यह है कि संसार में यह विज्ञान एक विशाल ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों मानवीय धाराओं में गति करता रहा हैं। तो हमारी आज की धारा क्या कह रही है कि हम अपने में वैज्ञानिक बनें अपने में औषधि को जानने वाले बनें मानव के शरीर में मानव की औषधि निहित रहती है। मानव की धाराओं में या बाह्य जगत में भी रहती है। हमें नाना प्रकार की आभा में रमण करना चाहिए।

पूज्य महानन्द जीः- महानन्द जी भगवन! कुछ औषधि इस प्रकार की होती हैं जिन औषधियों से जैसे मानव के श्वास की गति तीव्र हो जाती हैं और तीव्रता को समानता में लाने के लिए कौन-सी औषधि आपके यहाँ विशेष मानी जाती हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! हमारे यहाँ बहुत-सी औषधि इस प्रकार की सूर्य चिकित्सा में भी हैं, प्राण चिकित्सा में भी हैं, इसमें हम तुनिकेतु, स्वञ्जनी, धृष्टतानी, चनकेतु, चुरिणाम इन सब औषधियों का पिपाद बनाके पान करने से श्वास की गति सामान्य बन जाती है।

पूज्य महानन्द जीः- तो भगवन! आधुनिक रूपों में हम इन्हें क्या कह सकते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हम आधुनिक नामों की चर्चा नही कर रहे हैं आधुनिकता को हम नही जान पाते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तुनिकेतु तो तुलसा बन गयी, और सोमकेतु चरश्वति बन गई, मुनकेतु मुनक्का बन गया, श्वञ्जनी काली चरी-चरी अश्वांग बन गई इस प्रकार की शुद्ध औषधियां यह बन करके पिपाद बनाया जाता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हां ऐसा होगा

पूज्य महानन्द जीः- तो भगवन! इन औषधियों का पान करने से मानव के श्वास की गति विशुद्ध बन जाती है इसको तपाना।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हां अग्नि में तपाना जल अग्नि की पुटों में यह बनता है इसका रस बनता है।

पूज्य महानन्द जीः- तो प्रभु! यह प्राण चिकित्सा आपने वर्णन किया है यह प्राण चिकित्सा आधुनिक जगत में वर्तमान में तो नही है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- वर्तमान में हो या न हो प्राण चिकित्सा हमारे यहाँ बहुत पुरातन काल में बहुत काल तक रही है। वर्तमान में भी यह चिकित्सा होती है। पुत्र यह तो परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में रहा है परन्तु यह प्राण चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा है यह बहुत महत्व की चिकित्सा मानी गई है। आज मैं इन वाक्यों में विशेष जाना नही चाहता।

विचार क्या चल रहा था सुधन्वा की वार्त्ता चल रही थी सुधन्वा और महात्मा भुंजु, महात्मा भुंजु के पुत्र जो अश्विनी कुमार थे वह इस औषधि विद्या को बहुत प्रकाश में लाए। सुधन्वा ने भी इस सम्बन्ध में बहुत अनुसन्धान किया और पार्थिव तत्त्व की जो औषधि थी उनका विशेष रूप से जानने का प्रयास किया। तो इसीलिए यह विज्ञान परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्कों में गति करता रहा है। क्योंकि इन औषधियों को जानने से संसार की नाना औषधियों को जान करके वैद्यराजों की उपाधियों को प्राप्त करते रहे हैं। वैद्यराज बनते हैं। नाड़ी छेदन विज्ञान और नाड़ी विज्ञान और चक्षु विज्ञान उन दोनों को दृष्टिपात करने से उन दोनों की प्रतीति होती है। जैसे नेत्रों से नेत्रों का मिलान हुआ तो उनके नेत्रों से यह प्रतीत होता है, नेत्रों में हरित वर्ण, पीत वर्ण, और लोहित वर्ण और रात्रि वर्ण ये तीन प्रकार के वर्णन नेत्रों से प्रतीत होते हैं। यदि हरित वर्ण होता हो तो जानो कि उसे उदर में विशुद्धता नही हैं, और हरित वर्ण में पीत वर्ण प्रतीत होती हो कि उसका धातु पिपाद उपस्थ के द्वारा बह रहा है। वह शुद्ध नही हो रहा है। जिसका रात्रि वर्ण होता है उसकी अस्थियां जो हैं, ऊर्ध्वा में गति कर रही हैं तो इस प्रकार के गुणों का निदान भी परम्परा से हमारे यहाँ माना गया है। इस प्रकार का विज्ञान परम्परा से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में रहा है।

तो बेटा! इन वन में मैं आज जाना नही चाहता हूँ, यह विशाल वन है। तुमने मुझे वन में पंहुचाया है। वेदमन्त्र आते रहेंगें उनकी व्याख्यां करेंगें। आज का विचार तो हम समाप्त करने ही जा रहे हैं, विचार यह कि हम अपने में महान और पवित्र बनने के लिए तत्पर रहें। परन्तु तुमने यह जाना दधीचि नाम के ऋषि भी है। एक दधीचि नामक वृक्ष भी होता है। दधीचि पर्वतों को भी कहते हैं, परन्तु जो मैंने व्याख्या की आज विचारने से प्रीतत होता है। तो यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। इसके पश्चात यह वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।

६ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १७ १२ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने जिन वेदमन्त्रों पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं जो मानो इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत हैं, जिसका ज्ञान और विज्ञान नितान्तर माना गया हैं। क्योंकि उसके ज्ञान और विज्ञान की कोई सीमा नही है, न उसके ज्ञान और विज्ञान को कोई सीमा बद्ध कर सका हैं। क्योंकि वह सर्वत्र एक एक कण-कण में व्याप्त है। आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा था, ब्रह्मा अग्नं ब्रह्मणा वर्णो अस्सुता मानो वह जो अग्नि हैं, जिसे हम ब्रह्माग्नि कहते हैं। मानो वह ब्रह्माग्नि बन करके, इस संसार को प्रकाश में लाती हैं। क्योंकि ब्रह्माग्नि का जब समन्वय, इस जड़वत से होता है तो अपने परमाणु गति करने लगते हैं, तो मानो उन्हीं परमाणुओं का यह जगत है, उन्हीं परमाणुओं से बेटा! यह सर्वत्र लोक-लोकान्तर हमें दृष्टिपात आ रहे हैं। इन्हीं परमाणओं की धाराओं को ले करके, यह प्राण स्वरूप बेटा! आभा में गति करने लगता है मानो यही है ब्रह्मग्नि जो यज्ञमान के हृदय में प्रदीप्त हो जाती है, मानो उस हृदय में से सुन्दर-सुन्दर तरंगों का निकास होने लगता है तो मेरे प्यारे! देखो, यही अग्नि हैं जो काष्ठों में रह करके यज्ञशाला में बेटा! अपनी आभा को जन्म देती हैं वेद का मन्त्र कहता है ब्रह्मा अग्नं ब्रह्मणां अस्सुतं देवाः हे अग्ने! तू प्रकाश है तू प्रकाश के देने वाली हैं मानो तू प्रकाश में रमण करा देती हैं प्रत्येक प्राणी मात्र, एक प्रकाशमयी बन रहा है। चाहे वह प्राणी किसी भी मण्डल में गति करने वाला हो, परन्तु वह एक अनुपम प्रकाश दे रही है उसी प्रकाश को ले करके, मानव प्रकाशित हो रहा हैं, और उस प्रकाश की आभा में गति करता हुआ, प्रकाशित होता हुआ, वह अपने में स्वतः प्रकाशित हो जाता है। तो विचार-विनिमय क्या, वह जो ब्रह्माग्नि है, जो यज्ञशाला में प्रदीप्त हो रही हैं, प्रकाश दे रही हैं जिस प्रकाश में मानव प्रकाशित हो रहा है। उस अग्नि का नाम ब्रह्मा है, उस अग्नि का नाम ही मानो देखो, धारा है। वही अग्नि बेटा! द्यौ में प्रकाशित हो जाती है। वही अग्नि मानो आदित्य में प्रकाश रूप बन करके, वह अग्नि खनिजों का भण्डार बन करके पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो जाती हैं।

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हमें विचारना चाहिए कि हम अग्नि के ऊपर अनुसन्धान करने वाले बनें, उस अग्नि के ऊपर जो अग्न्याध्यान यज्ञमान अपनी भावनाओं को चेताता हुआ और यज्ञशाला में बेटा! याग कर्म करता है। अग्नि का अग्न्याधान करता हैं, ये शब्द से अग्न्याधान, मानो देखो, अग्नि का धान करके अग्नि प्रकाश दे देती हैं। इसीलिए प्रत्येक मानव को ध्यानावस्थित हो करके प्रभु का दिग्दर्शन करना चाहिए जैसे यज्ञमान मानो अग्न्याधान करता हुआ, अग्नि को प्रकाशित करता हैं और अग्नि को त्रिकोण बना देता है मानो त्रिकोण अग्नि को बना करके और वह त्रिकोण बन करके सप्तजिह्वा वाली अग्नि, मेरे प्यारे! देखो, मानव को प्रकाश देती हैं, तो इसीलिए प्रत्येक प्राणी को अग्न्याधान करना चाहिए। अग्न्याधान है, क्योंकि यह अग्नि का ध्यान करने मात्र से अग्नि का प्रकाश हो जाता हैं। बेटा! देखो, हृदय रूपी अग्नि का, और बाह्य अग्नि का दोनों का समन्वय हो जाता हैं। जब दोनों का समन्वय हो गया, तो बेटा! देखो, अग्नि अपने प्रकाश में आ गई। वह मानो देखो, कैसी सुन्दर अग्नि, जो काष्ठ में रहने वाली थी, जो अग्नि मानव के नेत्र में रहने वाली जो अग्नि, मानो द्यौ लोक में रहने वाली अग्नि, वह अग्नि बेटा! प्रकाश में आ गई। यज्ञमान उसका ध्यान करते हुए, प्रकाश में आ जाता हैं।

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या कि हमे अग्न्याधान करना चाहिए। इससे पूर्व शब्दों में, हम बेटा! अग्नि की विशेषताओं का क्या, हम त्रि वर्धा की चर्चा कर रहे थे क्या यह जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड हैं यह मानो त्रिकोण दृष्टिपात

आता हैं। गुडाकार में दृष्टिपात आता हैं। परन्तु इसी प्रकार मानव शरीर की जो रचना है, अथवा इस ब्रह्माण्ड की जो रचना हैं वह त्रिकोण वर्धक मानी गई हैं। क्योंकि तीनों गुण एक ऐसे व्याप्य रूपों से मानो गति करते रहते हैं कि तीनों गुणों का उनको ध्यानावस्थित करना हैं क्योंकि उनमें सतोगुण की प्रतिभा और सतोगुण की आभा को जन्म देना हैं उनमें सतोगुण की आभा का जब जन्म हो जाता हैं। तो वही सतोगुणी आभा बन करके मानव के जीवन की एक पवित्र अग्नि बन करके रहती हैं।

तो मेरे प्यारे! मैं इससे पूर्व काल में तुम्हें बहुत-सी चर्चाएं कर रहे थे, आज वेद के सम्बन्ध में त्रिकोण याग की चर्चा हो रही थी, हमारे यहाँ आयुर्वेद परम्परागतों से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में नृत्त करता रहा हैं, और ऋषि-मुनि नाना औषधियों का साकल्य मानो बना करके अग्नि में बहुत से जलों में औषधियों का प्रदान करना, उनको तपाया जाता है उनको खरल किया जाता है। परन्तु उनको रसों में परिवर्तित कर दिया जाता है। तो मेरे प्यारे! वह आयु के लिए, रूग्णों के लिए, भी एक औषध बन करके रहती हैं। वही वनस्पति को बेटा! पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान थी, वही अग्नि मुनिवरों! देखो, बुद्धिमानो के द्वार पर आ करके, बेटा! आयु की मानो वह एक औषध बन गई। आयु की औषध बन जाती है।

जैसे बेटा! मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में निर्णय किया था राजा रावण के यहाँ एक सुधन्वा नामक एक वैद्यराज हुए हैं, राजा रावण के यहाँ एक सुधन्वा एक प्रकार के विशाल मानो वैद्यराज थे, कि जब वह निन्द्रा में तल्लीन थे, और स्वप्नवत में आ जाते, तो भिन्न-भिन्न, नाना रूप में औषधियां आ करके, बेटा! उनके अपने गुणों का वर्णन करती रही और उन गुणों को धारण करने वाले, मानो देखो, सुधन्वा नामक वैद्यराज थे, जो मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार की भयंकर वनों में से औषधियों को लाना, इनमें विचार करना करना, कि कौन-सी औषध में अग्नि प्रधान है कौन-सी औषध में जल तत्त्व प्रधान है कौन-सी औषध में पृथ्वी है। मानो देखो, यह तीन प्रकार के परमाणु होते हैं तीन प्रकार के परमाणु औषधियों से ले करके, और तत्त्वों तक मुनिवरों! चले जाते और तत्त्वों में जा करके, वही परमाणु तीन के परमाणु बन करके वह विज्ञान की तरंगें बन करके रहती हैं, आयुर्वेद से भी आयु की औषध बन करके रहती हैं। मेरे प्यारे! वही तीन रूपों में गति करने वाला, योगियों के लिए बेटा! देखो, वह त्रि गुण बन करके, और तीनों को एक सूत्र में ला करके मानो उसको योग सिद्धता प्राप्त हो जाती हैं। तो परिणाम क्या मानो देखो, एक ही औषध है, एक ही स्वरूप है, एक ही परमाणुवाद हैं। वही परमाणु जब जल में मिश्रित हो करके, अंकुर रूपों में आ करके, बेटा! देखो, वृक्षों का मानो रूप धारण कर लेता हैं, नाना औषधियों के रूपों को धारण कर लेता हैं। वही मेरे पुत्रों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में, वही मानो देखो, रस जा रहा है चन्द्रमा से, वही मेरे प्यारे! देखो, आदित्य से प्रकाश जा रहा हैं। वह पृथ्वी के गर्भ में बेटा! देखो, मानो धातुओं के रूप में वह खनिजों के रूप में प्रवेश करता है और वह प्रवेश करता हुआ मानो देखो, उससे मानव औषधियों का मानो रसों का मिलान करके पृथ्वी के गर्भ के रजों को ले करके उनका मिलान करते हैं। उनमें मानो देखो, अग्नि तत्त्व और वायु और अग्नि की विशेषता को उनमें मानो देखो, अपने में धारण करते रहते हैं। ध्यानावस्थित हो जाते हैं तो महाराज सुधन्वा नामक जो वैद्यराज थे, बेटा! उनका जीवन कितना महान और विचित्र रहा हैं।

जीवनी धारा औषध

परन्तु देखो, वह पर्वत था, त्रिवास नाम का एक पर्वत था, उस पर्वत पर जा करके बेटा! सुधन्वा औषधियों का निदान करते थे, परन्तु उस पर विद्यमान होते थें एक औषध हिमालय के गर्भ में, हिमालय की गोद में होती हैं, जो मानो देखो, जब प्रकाश नही होता, चन्द्रमा और सूर्यों का प्रकाश नही होता, तो वह औषधि अपने में प्रकाशित रहती है, अपने में प्रकाशित उस औषध का नाम मुनिवरों! देखो, जीवनी धारा कहते हैं, उस जीवनी धारा को जो

मानो जान लेता है उस जीवनी धारा में ये गुण होते हैं मानो देखो, किसी भी प्रकार का रूग्ण हो, यदि उसे अग्नि में तपा करके, जलों का पिपाद बना करके, बेटा! देखो, उसको पान कराया जाता है तो मुनिवरों! देखो, वह औषधि विज्ञान के आधार पर, मानो देखो, वह अपने में मानो देखो, रूग्णि को प्रकाशित कर देती हैं, और उसको चेतना में प्राण की धारा प्रदान कर देती हैं। क्योंकि वास्तव में हमारे यहां सुधन्वा नामक वैद्यराज का एक सिद्धान्त रहा हैं क्या रूग्ण जो होते हैं, हमारे शरीरों में तीन प्रकार के दोषारोपण होते हैं। तीन प्रकार के कुपित होते हैं, मानो देखो, जैसे हम तेज पित त्रोण कहते हैं, मानो जिसे वायु रोहण कहते हैं और तृतीय मानो देखो, जल स्थान जिसको क्वावासिनी कहते हैं, मानो यह तीन प्रकार से नसों का निदान किया जाता हैं। जब मानो देखो, नस नाड़ियों का, तीन प्रकार से निदान किया जाता हैं, तो उसी निदान को ले करके, औषधियों को एकत्रित करता है वैद्यराज, यदि मानो देखो, पित्त की प्रधानता है तो शीतलता में परिणत रहें, मानो देखो, इसी प्रकार सुधन्वा नामक वैद्यराज जो थे वह मानो देखो, त्रिकोण याग भी करते थे जैसे मैंने पुरातन काल में कहा था त्रिकोण याग जब करते थे तो उस त्रिकोण याग में मानो देखो, यदि किसी को जल की प्रधानता हैं तो मानो देखो, त्रि एक वृक्ष होता हैं, एक शमी वृक्ष होता हैं एक स्वान्धनी वृक्ष होता हैं मानो इनकी समिधा ले करके और वह अग्न्याध्यान करते थे और रूग्ण के द्वारा मानो देखो, उन औषधियों में एक अपामार्ग कहानी किन्तनी और देखो, शैलखण्डा, शिव लिंगी, त्रि केतु, स्वाम्भानु, त्रिकाणत और देखो, इसमें सोन्धी और त्रि कोण वाली वाचकेतु मेरे पुत्रों! देखो, ये सब औषधियों को एकत्रित करके, और उसमें मानो देखो, याग करते थे। जब वह याग करते थे, तो रूग्ण मानो देखो, यक्ष्मा जैसा रूग्ण भी, उससे शान्त होता रहता था। क्योंकि वह याग करते, और उन्हीं औषधियों का पिपाद बना करके, उसमें कुछ औषधियां और मिश्रण होती है। जैसे शानः बिन्धनी, स्वस्याय म्, सत्यानाशकेतु मानो देखो, उन औषधियों को ले करके, इनका पिपाद बना करके जल में, इनको तपा करके इनका रस बनाया जाता है। रस बना करके मानो देखो, उसका मधु के द्वारा, उसका पान कराया जाता हैं। और त्रिकोण में, वह याग कर्म करता है, जब वह याग कराते रहते थे, तो रूग्ण उनका शान्त हो जाता था। रूग्ण होते ही नही थे, क्योंकि श्वास के द्वारा, वह याग की तरंगें जाना, और श्वास के द्वारा देखो, उन औषधियों का भक्षण करना, तो मानो देखो, वह रूग्णों से दूरी होता रहा हैं। मुझे ऐसा वह काल स्मरण आता रहता हैं मानो सुधन्वा नामक, जो वैद्य थे उनको औषधियां बहुत-सी स्मरण थी, उन औषधियों का भेस्यानं ब्रह्मणे।

पूज्य महानन्द जीः- प्रभु! उनका जो नामोकरण हैं, आधुनिक काल में उनका नामोकरण का परिर्वतन हो रहा हैं। परन्तु उनके नामों का जैसे परिवर्तन है, तो उनके नामों का विशुद्ध आधुनिक समय में उनके नामों का वर्णन नही कर सकते।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! उनके नामों का करण, तो नाम तो एक ही रूप में रहते हैं, रहा यह कि आधुनिक जगत में मानो उनके नामों का परिवर्तन भाषान्तर के रूपों में हो रहा हो, क्योंकि बहुत समय-समय पर अपनी भाषाओं का परिवर्तन होता रहा हैं। परन्तु रहा यह कि इन औषधियों का नामोकरण, मुझे तो इतना स्मरण नही हैं। परन्तु रहा यह सम्भो क्योंकि औषधियों का विशाल भण्डार है कुछ औषधियां ऐसी हैं जो जानकारी में आ सकती हैं कुछ औषध ऐसी होती है, मानो जिन औषधियों का हम नामोकरण भी हम नही जान पाते, जैसे हमारे यहाँ देखो, मजीठ हैं, मजीठ वृक्ष एक सौ छतीस प्रकार का होता हैं परन्तु देखो, उनमें बहुत से गुणान्तर भी होते रहे है तो यह जो औषधियों का यह तो विशाल वन है पुत्रों! मैं तो उतना उच्चारण कर रहा हूँ, जितना मानव के कार्यवश में आ रहा हैं। जिससे मानव के रूग्णों को सान्त्वना को प्राप्त हो जाएं, मैं इतनी विशेषता तुम्हें देने नही आया हूँ।

विचार यह है कि मानो देखो, सुधन्वा की चर्चा कर रहा हूँ, सुधन्वा जब मानो औषधियों से वार्त्ता प्रगट करते थे,

उनके द्वारा मानो देखो, वेद की पोथी विद्यमान रहती वेद का मन्त्र स्मरण रहता, जैसे अपामार्ग है पुत्रों! अपामार्ग भी बारह प्रकार का होता हैं। मानो देखो, वह जो बारह प्रकार का अपामार्ग है, उसमें उसी प्रकार के गुण भी होते हैं, तो एक-एक औषध की नाना उसमें जातीयता होती हैं, उन जातयीता के आधार पर, उनके गुणों का वर्णन होता रहता है। परन्तु रहा यह कि हमारे यहाँ बहुत-सी औषध इस प्रकार, क्योंकि मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, कि राजा रावण के यहाँ जो यह कुम्भकरण जी की मैंने चर्चाएं की थी, महाराज कुम्भकरण जी आयुर्वेद के बहुत से मर्म को जानते थे, क्योंकि आयुर्वेद और विज्ञान मानो देखो, इन दोनों की सन्तुलना होती हैं, समय-समय पर होती रही हैं, क्योंकि जैसे हमारे यहाँ सुधन्वा का वर्णन आता हैं, जैसे हमारे यहाँ, यह जो दसो इन्द्रियाँ हैं, दसों इन्द्रियों में जितनी तरंगें होती है, जितने प्रकार की देखो, औषधियों का निदान भी होता है। परन्तु देखो, यहां हमारे ऋषि-मुनियों में विशेषता यही रहती है कि ब्रह्माण्ड को और पिण्ड को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया। दोनों की कल्पना भी, इसी प्रकार की गई हैं। जैसे ब्रह्माण्ड है, उसी प्रकार इस पिण्ड में भी प्रतिक्रियाएं होती रहती है। मानो पिण्ड में भी, उसी प्रकार क्रियाकलाप होता रहता हैं। ऐसे पिण्ड और ब्रह्माण्ड की कल्पना, आचार्यों में बहुत परम्परागतों से बेटा! विचित्रतव मानी गई हैं। परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नही, कल मेरे प्यारे महानन्द जी अपने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करेंगें क्योंकि मैं इस सम्बन्ध में इतना विशेषकर इतना नही जानता।

विभिन्न धाराओं में याग का चलन

विचार केवल यह है कि यह जो पीपल का वृक्ष है, पीपल भी बारह प्रकार का होता हैं, मानो बारह प्रकार के पीपल के वृक्ष में, उसी प्रकार की उसकी रसायन होती हैं, परन्तु इसी प्रकार जैसे वट वृक्ष हैं, जैसे यह तो आधुनिक नामों को तुमने मुझे वर्णन कराया था उसी आधार पर मानो यह विचार धारा प्रारम्भ हो रही हैं। विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, जैसे हमारे यहाँ त्रि कोण त्रिवर्धा माना जाता हैं। त्रिवर्धा में क्योंकि मानव की विचारधारा भी मानो देखो, तीन प्रकार की विचारधारा होती हैं, रहा यह है कि याग की चर्चाएं, कि याग त्रिवर्धा में त्रिकोण क्यों होना चाहिए? त्रिकोण याग केवल इसीलिए ही नही कि औषध विज्ञान के लिए, यह त्रि कोण तो यह जो ब्रह्माण्ड की रचना है, जैसे मुनिवरों! प्रभु ने मानो देखो, पृथ्वी के आँगन में जल की रचना की, यह भी त्रिकोण कहलाता हैं। इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड जो गति करता है, तो यह त्रि कोण को ले करके गति करता है जैसे रज तम सत है यह भी त्रिकोण में रहता है यह भी देखो, उत्पति का एक मूल रहस्यतम मानो देखो, उसका उद्घाटन होता रहता हैं तो विचार-विनिमय क्या यह जो त्रिकोण, हमारे यहाँ क्योंकि ब्रह्माण्ड की रचना भी त्रिकोण में मानी गई है, त्रिकोण में मानी जाने से मानो देखो, उसमें सम्भों स्वाति कृतं ब्रह्मा मानो देखो, ब्रह्मा ने ऐसी कुछ क्रियाएं की हैं, जिससे बेटा! यह ब्रह्माण्ड ऐसा ही दृष्टिपात आता हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ जैसे त्रिकोण है, त्रिकोण जो याग है, वह वैद्यराजों को चला गया, चतुष कोण जो याग है, मानो वह राष्ट्र को चला गया, वाजपेयी याग जो है, वह समाज को चला गया, परन्तु विष्णु याग जो वह मानो देखो, ऋषि-मुनियों को चला गया मेरे पुत्रों! इसी प्रकार हमारे यहाँ देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराओं में यागों का चलन होता रहा हैं। परन्तु जब अश्वमेध याग किया जाता है, तो अश्वमेध याग भी, त्रि कोण कहलाता है, उसमें त्रिकोण की भावना मानों अश्वमेध याग की होती हैं क्योंकि तीन प्रकार का जो ताप होता है, तीन प्रकार के तापों को शान्त करने के लिए त्रिकोण याग का मानो देखो, विधान माना गया हैं, हमारे यहाँ, मुझे स्मरण आता रहता है, महाराजा दक्ष के यहाँ, एक याग हुआ था किसी काल में, बहुत पुरातन काल में हुआ था, मानो देखो, महाराजा दक्ष के यहाँ जब याग हुआ तो, वह त्रि कोण याग हुआ था। महाराज दक्ष के हृदय में, यह कामना जागी, कि मेरा राष्ट्र सुन्दर बनें। परन्तु जब वहाँ पूजन की विवेचना आई, पूजन की चर्चाएं आई, तो मानो देखो, पूजन में उन्होंने जब पूजा की तो मानो देखो, उसमें प्रभु

की पूजा करने के पश्चात मानो देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण इनके सामान्य मानो एक रूप बनाई, रूप बना करके, इन तीनों देवतव के रूपों में उनमें त्रिकोण याग का, अपने में एक विधित किया और त्रिकोण याग की रचना की। रचना करने के पश्चात उसमें याग हुआ, और जब याग हुआ तो ब्रह्मा ने मानो देखो, उस याग में, मेरे पुत्रों! देखो, उद्गान गाया और गा करके वह स्वयं उदगात बने। ब्रह्मा बन करके उदगेत केतु गाने लगे, तो मानो देखो, जब वह याग हुआ तो राष्ट्र में शान्ति की स्थापना हुई।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! हमने कुछ ऐसा श्रवण किया है कि जो महाराज शिव की जो पत्नी सती थी उसने अपने प्राणों को त्याग दिया था। ऐसा कहा जाता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! ऐसा आता होगा, मुझे तो इसका कोई भान नही हैं। कि उसने अपने शरीर को त्याग दिया हो ऐसा मानो कहीं आता नही।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! हमने ऐसा श्रवण किया हैं क्या महाराजा दक्ष के यहाँ मानो बिना आज्ञा के पति से बिना के उसके वह याग में पंहुची और जब शिव जी का पूजन नही दृष्टिपात किया तो उन्होंने अपने शरीर को अग्नि में त्याग दिया। यह कहाँ तक यथार्थतम हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! ऐसा इतना वह काल इतना पामरों का काल तो नही था मानो यह तो पामरों के काल की चर्चाएं हैं। कि वास्तव में जब शिव नाम हमारे यहाँ बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, क्योंकि शिव नाम परमात्मा का भी है, शिव नाम राजा का भी हैं और वह जो सती जो संसार में राजा की कन्या, राजा के यहाँ पंहुची, परन्तु राजा के पूजन होने का तो प्रसंग ही नही बनता, जब राजा के यहाँ, राजा के पूजन का प्रश्न नही बनता, वहाँ विजेता का तो प्रसंग बनता है क्या वह राजा अश्वमेध याग नही चाहता, उसे प्रसन्नता से, ज्ञान के द्वारा, उसे विजेता बनाओ, या उसे मानो देखो, उसे हम अच्छी प्रकार से अस्वान करें, और उसका आह्वान करके उसे विजेता बनाएं उसे विजय करके, उसके पश्चात वह याग करने का अधिकार राष्ट्र को होता है, और राष्ट्र भी इसीलिए याग करता है, क्योंकि अश्व जो राजा के यहाँ प्रजा है, पशु धन है, उसमें हर प्रकार की शान्ति हो जाएं, इस प्रकार वह याग करता हैं, रहा यह है कि वहाँ राजा के पूजन का प्रसंग नही आता मानो तो अप्रणं ब्रहे।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! इस वाक् को हम मिथ्या स्वीकार कर लें।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! मैं यह नही कहता हूँ कि तुम मिथ्या उच्चारण करो, परन्तु प्रायः हमारी दृष्टि में ऐसा वर्णन नही आया, क्या उसने याग में अपने शरीर को हूत कर दिया हो, याग में हूत करने प्रसंग यहाँ कदापि नही बनता, क्योंकि वह हिंसा होती है और किसी याग में जाने के पश्चात, किसी के याग को अपमान में आ करके उसको विध्वंस कर देना, यह कोई बुद्धिमानता नही होती। परन्तु देखो, इसलिए मेरे विचार हमारे विचार में तो मुनिवरों! देखो, ऐसा कहीं देखो, विधान आता नही। परन्तु देखो, ऐसी कोई गाथा भी नही आती।

परन्तु यह है यहाँ तो तो गाथा मुझे आई हैं, क्या वह बिना क्या मानो देखो, शिव ने कहा कि तुम महाराजा दक्ष के यहाँ न जाओ। तो उन्होंने आज्ञा का उल्लंघन किया और यह कहा कि मैं तो अवश्य जाऊंगी क्योंकि वह मेरे पिता हैं, उन्होंने कहा बिना निमन्त्रण के किसी पिता के गृह में भी प्रवेश करना चाहिए। मानो यह याग है उन्होंने जब ऐसा कहा तो उन्होंने वह स्वीकार नही किया, वहाँ से सति अपने पिता के यहाँ पंहुची और पिता के यहाँ जा करके, मानो वह याग को दृष्टिपात किया, वहाँ देवताओं के पूजन का प्रसंग ही नही बन पाता, क्योंकि देवता राजा नही होते देवता वह होते हैं, जो देते हैं, जैसे बुद्धिमान होते हैं, वह देवता है, पितर जन है, वह देवता हैं, मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि है, वह देवता हैं, देवता में सूर्य चन्द्रमा इत्यादि हैं। ये देवता कहलाते हैं परन्तु जब यह देवता है तो यहाँ उस पूजन का प्रसंग नही बन पाता। मानो जैसे शिव नाम परमात्मा का तो वो भी देवता है ब्रह्म नाम

परमात्मा का है, वह भी देवता है। विष्णु नाम परमात्मा का है, वह भी देवता है। परन्तु देवता की प्रसंग की परिभाषा में यह है जो मानो देखो, हमारे में गुणों का वर्णन करते हैं वह सब देवता कहलाते हैं। परन्तु रहा यह कि यह सब पामरों का वचन है, कोई देवी जा करके बिना आज्ञा के पंहुची और वह जा करके उसकी आज्ञा को समाप्त कर दे यह कहीं बेटा! ऐसा कर्मकाण्ड की पद्धति में, या साहित्य में प्राप्त नही होता। इतना ही प्रायः प्राप्त होता है क्या मानो देखो, वह हिमाचल के यहाँ देवी जैसे पंहुची उनकी पुत्री थी, उनका वहाँ मानो आदर भी हुआ मानो देखो, वह किसी कारण वश, उन्होंने उनका कोई कुशलता न जानने के कारण, मानो देखो, उसका अपना अपमान उन्होंने स्वीकार किया, उस अपमान को ले करके वह अपने आश्रम में चली आई, ऐसा तो कहीं आता है साहित्य में, परन्तु ऐसा नही आता क्या, उन्होंने अपने शरीर को त्याग दिया हो, और जैसा तुम उच्चारण कर रहे थे, महाराजा शिव उसे लिए हुए मानो देखो, सर्वत्र पृथ्वी पर भ्रमण किया हो जो ऐसा नही आता। क्योंकि ऐसा आने से यह पामरों का कर्तव्य है, यह मानो महापुरूषों का कार्य नही होता। इसी प्रकार मानो देखो, ब्रह्मणाता जब हम ऐसा बेटा! स्मरण आता रहा है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह वाक् हम मिथ्या स्वीकार कर लें।

पूज्यपाद गुरुदेवः- जब बेटा! मैं इस वाक् को तो नही कह रहा हूँ कि तुम मिथ्या उच्चारण करो परन्तु तुम यह स्वीकार करो, कि जो है मैं उसे उच्चारण कर रहा हूँ। परन्तु गाथाएं आती रहती है, परन्तु ऐसा नही मानो यह आलांकारिक चर्चाएं तो हो सकती है, और अलंकार में यह हो सकता है, याग कहते हैं, इस मानो देखो, शुभ कर्मों का नाम याग माना गया हैं, जितना भी यह संसार रूपी कर्म और क्रियाकलाप हो रहा है, यह सर्वत्र एक याग रूप में माना है और याग का जो स्वामीतव करने वाला है, वह शिव है। शिव नाम यहाँ परमात्मा का हैं। परन्तु क्योंकि शिव नाम संकल्प का हैं, जब एक मानव संकल्प करता है, शिवं संकल्पां ब्रह्मे वर्णा मानो देखो, जब शिव संकल्प करता है, सुन्दर संकल्प करता है, उस संकल्प को ले करके वह मानो देखो, सर्वत्र भू मण्डल में मानो देखो, पतिभा बन करके प्रभु की एक आभा बन करके सुप्रेरणा बन करके मुनिवरों! देखो, सबके हृदयों को पवित्र बना सकती हैं। ऐसा तो मानो देखो, अलंकार की विवेचना में आता रहता है। परन्तु कहीं साहित्य देखो, इतिहास और देखो, साहित्यिक आभाओं में ऐसा कही गाथाओं में वर्णन नही आता।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! ये आधुनिक काल का समाज इस प्रकार की वार्त्ता स्वीकार करता है क्या शिव उसे लिए हुए भ्रमण किया, और जहाँ-जहाँ मानो देखो, उस अग्नि में प्रवेश हुई जहाँ-जहाँ उसके अंग जाते रहे, उसी अंगों की पूजा का विधान आधुनिक जगत में बना हुआ हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! बना हुआ होगा, परन्तु प्रायः देखो, ऐसा नही, क्योंकि देवी नाम हमारे यहाँ देवी नाम प्रकृति को कहते हैं, देवी नाम प्रकृति को, जैसे प्राणियों की जैसी प्रकृति होती हैं, जैसा वायुमण्डल होता है, मानो जैसे आचार्यों की पद्धति बन जाती है उसी प्रकार, वहाँ उस प्रकार का पूजन होना प्रारम्भ हो जाता है। उसी प्रकार के पूजनों में यदि रूढ़ि नही आती, तो वह पूजन बन करके रहता हैं, और यदि उनमें रूढ़ियाँ आ जाती है, तो वह रूढ़ियाँ राष्ट्र के लिए वह हानिप्रद बन जाती हैं। समाज के लिए हानिप्रद बन जाती है। तो इसीलिए हमारे विचारों में तो प्रायः ऐसा बेटा! आता हैं मानो देखो, दो प्रकार से गाथाओं का वर्णन किया जाता हैं वैदिक साहित्य में आलांकारिक रूपों से और देखो, बाह्य जगत में साहित्यिक रूपों से, साहित्यिक और देखो, आलांकारिक रूपों में, जो दोनों में अन्तर्द्वन्द्व आ जाता हैं, जैसे हमारे यहाँ, देखो, बाह्य जगत में विष्णु नाम राजा को कहा हैं, वह विष्णु याग करता हैं, विष्णु एक याग भी होता हैं। विष्णु कहते है। पालन करने वाले को, माता में विशेषकर मानो देखो, विष्णु की प्रवृत्ति होती हैं। माता जब पालन करती है, बालक का तो विष्णु बन करके करती हैं, क्योंकि वह जो

विष्णु है, उसका स्वभाव है, नम्रता और नम्रता से बालक का सतोगुण से पालन किया जाता हैं। यदि माता के हृदय में सतोगुण नही हैं, मानो तो वह बालक का पालन नही कर सकती, जब बालक का पालन नही कर सकती, तो मानो देखो, वह माता नही कहलाती। तो इसीलिए देखो, माता को विष्णु कहते हैं, राजा का नाम भी विष्णु हैं, तो इसीलिए यहाँ विष्णु याग का भी मानो देखो, विधान आया हैं, विष्णु याग कौन करता है? जो शान्ति और पालन के लिए होता हैं। जैसे माता अपने बालक का पालन कर रही है, और पालन करते मानो वह सतोगुण में जाना चाहती है तो सतोगुण ही सतोगुण मानो देखो, बालक को देखो, रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण तीनों गुणों में आ करके उसका पालन करती है। यदि तीनों गुण माता में प्रायः प्राप्त होते हैं, सतोगुण भी होता है, रजोगुण भी होता हैं, और तमोगुण भी होता है। क्योंकि रजोगुण, तमोगुण में उत्पति हैं सतोगुण में पालन है और रजोगुण से शासन हैं। मानो देखो, बालक को अनुशासन में लाने के लिए रजोगुण की आवश्यकता रहती है, और पालन करने के लिए सतोगुण की आवश्यकता हैं। परन्तु सतोगुण में भी पालन करने के लिए, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण मानो देखो, सभी कार्यों में आते हैं इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, माता मे तीनों गुण दृष्टिपात आते हैं जैसे राजा के राष्ट्र में भी तीनों गुण दृष्टिपात होते हैं परन्तु देखो, राजा में सतोगुण पालन, रजोगुण शासन और मानो देखो, तमोगुण में आ करके मानो देखो, वह अपने असुतों में रमण करता हैं ये तीनों गुण राजा में भी क्योंकि तीनों गुण नही होंगे, हम पालन और एक दूसरे की वार्त्ता को हम प्रगट नही कर सकते। इसी प्रकार हमें विचारना है कि हम मानो देखो, विष्णु याग करना चाहते हैं, उस विष्णु याग का अभिप्रायः यह है कि हम वायुमण्डल में, हम एक हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में विष्णु सूक्त आता है। तो विष्णु सूक्त के द्वारा देखो, वह ब्राह्मण याग करता है, राजा याग कराता है, यज्ञमान बन करके, माता यही चाहती है, तो माता भी विष्णु याग करती हैं। मानो देखो, उस याग से, यह होता है विष्णु सूक्त का पठन-पाठन होता हैं, और क्योंकि वह पालन करने के सूक्त है, मन्त्र हैं, उनका उच्चारण हो करके वह विष्णु याग कहलाता है। इसी प्रकार हमारे यहाँ देखो, विष्णु याग का भी वर्णन है, देखो, रजोगुण को प्रजा को अनुशासन में लाने के लिए, मानो देखो, रूद्र याग होते हैं। इसी प्रकार ये नाना प्रकार के यागों का चलन हमारे यहाँ यह परम्परागतों से माना हैं, जैसे हमारे यहाँ विज्ञान को जानने के लिए वाजपेयी याग की आवश्यकता है, वैज्ञानिक जन, विद्यमान हो करके वाजपेयी याग करते हैं, वाजपेयी याग में मानो देखो, कृषक देखो, पृथ्वी का जो विज्ञान है, पृथ्वी का जो क्रियाकलाप हो रहा है, जैसे मानो देखो, उसमें कहीं भूमि उष्ण है, कहीं भूमि मानो शीतल है कहीं भूमि किसी प्रकार की है, तो इस प्रकार की मानो देखो, विद्याएं मानो देखो, वैज्ञानिकों को और कृषकों के समीप होनी चाहिएं। कि जहाँ जिस प्रकार की वह पृथ्वी है, मानो देखो, प्रथा उसी, प्रकार के अन्न की उत्पति करना, और उसके गर्भ में जानना है, कि कौन-सा तत्त्व प्रधान हैं, मानो देखो, पृथ्वी में जहाँ शीतलता होती हैं वहाँ कौन-सी धातु, कितनी दूरी पर, मानो देखो, हो सकती हैं, उसी के तरंगे आ करके अन्नाद में विद्यमान होती है, जैसे मानो तन्दुल होता हैं, तो उस तन्दुल जहाँ जलाशय वाली भूमि में प्रवेश किया जाता है, तो उसमें से पार्थिकता विशेषकर उत्पन्न होती है, उसमें शीतलता हैं, उसमें पार्थिकता हैं, मानो देखो, उसमें वायु शेषणी अन्नाद कहलाता हैं, इससे यह सिद्ध हुआ है, कि जल का जितना पिपाद हैं उससे मानो देखो, दस योजन या पांच योजन के निचले भाग में वह मानो वह खनिज तुम्हें प्राप्त हो सकता हैं।

तो इस प्रकार का वैज्ञानिक होना चाहिए, तो वह हमारे यहाँ उसको हमारे यहाँ रूद्र याग के देखो, वाजपेयी यागों में प्राप्त होती है वाजपेयी यागों में यह विचारना की, यह जो तरंगें जा रही है यह कहाँ जा रही है? मानो देखो, यह तरंगें कौन से लोक में क्या-क्या कार्य करती है, वह वैज्ञानिक जन उसके समीप होने चाहिए। तो वाजपेयी याग विज्ञान का याग है जिसके ऊपर देखो, वैज्ञानिक अनुसन्धान करते रहते हैं हमारे यहाँ कोई नवीन वाक् नही है, ये

परम्परागतों का वाक् है, वाजपेयी में तो साकल्य विशेष होते हैं वाजपेयी याग में मानो कुछ औषधियां विशेष होती है, जिनके द्वारा वो वायुमण्डल को बनाते हैं, उसी प्रकार से मस्तिष्कों में देखो, परमाणु जा करके उसका निदान करते है। उसके ऊपर अनुसन्धान करते हैं, तो इसी प्रकार, हमारे यहाँ पुत्रों! इस प्रकार के यागों का अभिप्रायः परम्परागतों से माना गया है मैं रूढ़ियों में नही ले जा रहा हूँ, यागों की व्यापकवाद की चर्चा प्रगट करने जा रहा हूँ, परन्तु किसी भी याग में, हमारे वैदिक साहित्य में बेटा! हिंसा नही होती। हिंसा से रहित याग कहलाए जाते हैं। मानो देखो, उस वाजपेयी याग में, बैल का किस प्रकार हम पालन करें? किस प्रकार उसको मानो कार्य वाहक दें? मानो इस प्रकार का वर्णन वाजपेयी याग में हैं, गऊओं का कैसे पालन हो? गऊ किस प्रकार की हों? गऊओं को किस प्रकार का विशाल स्वरूप दिया जा सकता है, जो राष्ट्र का कार्य होता है, तो इस प्रकार के मानो देखो, पशु विशेषज्ञ वैज्ञानिक हो इस प्रकार के यागों का चलन, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, माना गया हैं। परन्तु रहा यह है, कि हमारे यहाँ अश्वमेध याग का वर्णन अश्वमेध याग परम्परगतों से राजाओं की प्रतिक्रियाओं में होते रहे हैं। क्योंकि अश्व नाम राजा हैं, और मेध नाम प्रजा का है, दोनों को एक सूत्र में लाने के लिए, और राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए वह याग प्रायः होते रहते हैं। परन्तु देखो, वेद का ऐसा विज्ञान है, कि कोई वस्तु ऐसी नही है, जो वेद में उसको क्रिया में जाने का प्रयास न किया हो। प्रत्येक प्रतिक्रिया होती रही है, वह ज्ञान में, विज्ञान मैं आभा में गृणियों में बेटा! देखो, मानव के मस्तिष्कों में ज्ञान विज्ञान परम्परगतों से ही नृत्त करता रहा है। परन्तु देखो, मानव जो इसके ऊपर अनुसन्धान करता हैं अनुसन्धानात्मक दृष्टि से उसको अपने में क्रियात्मक लाने का प्रयास करता है, तो वह क्रिया में आ करके, राष्ट्र के बहुत प्रबल सम्पदा बन करके रहती हैं। परन्तु देखो, इसके ऊपर, बहुत परम्परागतों से अनुसन्धान होता रहा हैं। मेरी दशा बेटा! पुनः मानो देखो, दूसरे रूपों में परिणत हो गई हैं विचार-विनिमय क्या है? मानो देखो, मैं उच्चारण कर रहा था, सुधन्वा नामक वैद्य की चर्चाएं, वैद्य राजों की चर्चा तो मेरे प्यारे! अनुसन्धानवेत्ता बनना, यह मानव की एक मौलिक हृदय अगम्मयी मानो एक धारा हैं, यह उस हृदय की मानो देखो, तरंगें उद्बुद्ध हो करके आती हैं। विचार-विनिमय क्या है? मुनिवरों! देखो, हमें उन वाक्यों पर बारम्बार विचार करना चाहिए, कि हमारें यहाँ यागों में क्या-क्या है, इसकी चर्चांए मेरे प्यारे महानन्द जी, अपनी भूमिका में प्रगट करेंगें। आज वाक् केवल इतना तुम्हें केवल इतना परिचय कराने चला हूँ, कि हमें परिचय करना चाहिए, यागों में और देखो, साहित्यिक चर्चाओं में, हमें अपने साहित्य को ऊँचा बनाना, महान बनाना यह प्रायः हमारा एक कर्तव्य कहलाया जाता है। मेरे प्यारे महानन्द जी किसी काल में इनके हृदय में नाना प्रकार की तरंगें उत्पन्न होती रही है, उन तरंगों का मानो एक विशाल रूप बन करके, हमारे समीप आता है, तो हम भी यह उच्चारण करते हैं कि यह समाज यह संसार कैसा बन रहा हैं? संसार की प्रतिक्रिया कैसी बन रही हैं? यह मेरे पुत्र! कल विशेषता में कल अपने विचारों का प्रगट करेंगें। मैं सुधन्वा के बहुत से क्रियाकलापों की चर्चा बहुत से रूप में प्रगट करूंगा। आज का वाक् केवल क्या कि मैंने एक सुन्दर भूमिका बनाई हैं, परिचय देने के लिए, यह परिचय मेरे पुत्र महानन्द जी प्रगट करेंगें, आधुनिक काल पूर्व काल दोनों का समन्वय कर सकेंगें क्योंकि वैद्यराजों की प्रतिभाषिता, परम्परागतों से बड़ी विचित्र रही है, और औषधि विज्ञान एक मानव के मस्तिष्क में बड़ा विशाल बन करके रहा है। इस औषध विज्ञान को हम मानो देखो, पूर्ण रूपेण कोई भी अब तक नही जान सका हैं परन्तु जितना जाना है उसके ऊपर प्रकाश अवश्य प्रगट करेंगें, बेटा! आज का विचार यह क्या कह रहा है, आज की धाराएं यह क्या कह रही है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उस ब्रह्म को ब्रह्मग्नि में परिणत करते हुए, यह ब्रह्माग्नि है जो यागों में परिणत हो करके, मानव के हृदयों से, जिनका समन्वय रहता हैं, मानव के हृदय से बेटा! एक-एक धारा बड़ी विचित्र बन करके रहती है। बेटा! विचार-विनिमय क्या, कि परम्परागतों से ही, बेटा! देखो, जो भी कुछ

जाना है, जिस मानव ने, वह अपने हृदय से भिन्न हो करके कुछ नही जाना है इस पर हम समय-समय पर चर्चा करते रहते हैं, चाहे वह यौगिक विषय हो, चाहे वैज्ञानिक हो, चाहे परमाणुवाद हो किसी भी प्रकार विषय हो, परन्तु वह अपने हृदय अगम्य ज्योति में होता हैं, और उस ज्योति को चेताने की आवश्यकता हैं, जब प्राण और मन की धुक-धुकी लगती हैं, तो हृदय ज्योति जागरूक हो जाती हैं उसमें यह जो तरंगें उत्पन्न होती हैं, उन तरंगों को मानो अपने में देखो, उसको कार्य रूप दे करके, उस बाह्य जगत बन जाता है। कुछ आन्तरिक जगत बन जाता हैं। मानो देखो, कुछ अगम्य नेति में परिणत हो जाता है। ये है बेटा! आज का वाक्, तो समय मिलेगा, तो देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी अपने व्यापक रूप से वह कुछ ना कुछ प्रगट करेंगें। आज का वाक् हमारा समाप्त हो रहा है। चर्चाएं आज भी बेटा! देखो, उन विचारों की भूमिका बनाई है विचार भूमिका बनाने में बहुत समय लगता हैं आज का विचार समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा, इसके पश्चात यह वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् तनु मां हृदाः यशश्चां गतं आभ्यां ऋषि मन्था माणं दधि ब्रह्मा वायु गताहं मनो ब्रह्ममनश्चां दधि ग्राहाणां त्वा माणं आ पाहाम् ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया सर्व भद्रा मनो।

७ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १८ १२ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणागान गाया जाता है। अथवा उसका जो ज्ञान और विज्ञान हैं, मानो उसका प्रायः वर्णन आता रहता है प्रत्येक वेदमन्त्र के अध्ययन करने से, ऐसा प्रतीत होता है, जैसे एक-एक वेदमन्त्र में, सर्वत्र सृष्टि का वर्णन हो, मानो एक-एक परमाणुवाद, जो अपने में गाथा गा रहा हैं, मानो उस गाथा में सर्वत्र ब्रह्माण्ड का ज्ञान और विज्ञान विद्यमान रहता हैं। हमारे यहाँ जब मन्त्रों की ध्वनियां होती हैं, तो मानो उस ध्वनि में भी कोई विज्ञान है, उस ध्वनि में भी उच्चारण करने के कुछ प्रकार हैं, मानो वह प्रकार भी वैज्ञानिक तथ्यों से, जब विचार-विनिमय करते हैं, तो उसमें कुछ तरंगें ऐसी होती है, जो अशुद्ध तरंगों को निगल जाती है। और अपनी पवित्रता वह जो ध्वनि रूप में है, वह अपनी पवित्रता का प्रायः प्रदर्शन करती रहती हैं। मानो इसी प्रकार, आचार्यों ने इसके ऊपर बहुत-सी टिप्पणियाँ की बहुत-सा विचार दिया हैं, उन्होनें सार्वभौम एक विचार दिया, कि संसार में मानव की ऐसी ध्वनि होनी चाहिए, ऐसा व्यवहार होना चाहिए, जिस व्यवहार में वाणी का संतुलन बना रहे, और वाणी वह ब्रह्म की गाथा ही गाती रहे। मानो देखो, ब्रह्म की जो गाथा है, ब्रह्म का जो व्यापक वर्णन हैं, वह प्रायः एक-एक ध्वनि के गर्भ परिणत होने से हैं, परन्तु जब इसके ऊपर हम विचार-विनिमय करते हैं, तो वह मुनिवरों! हम उस क्षेत्रों में चले जाते हैं, जहाँ ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके, मानो अपनी ध्वनियां में रमण करते रहे हैं, और वायुमण्डल, मानो जो व्यापकता में रमण कर रहा है, उसके ऊपर प्रायः चिन्तन और मनन करते रहे हैं। और मनन करने के पश्चात, वह विज्ञान की, उस महान गम्भीर तरंगों में, तरंगित हो गएं है, जिन तरंगों को जानने के पश्चात, विज्ञान में कोई और शेष नही रहता। परन्तु आगे आध्यात्मिकवाद तरंगों के रूप में जो बिखरा हुआ हैं मानो उस तरंगों के रूप में बिखरा हुआ जो आध्यात्मिकवाद हैं, उसको वह पुनः एकत्रित करने का प्रयास करते हैं, और उसे एकत्रित करने के पश्चात, वह मानो परमात्मा की एक-एक कृतिका में, ऐसी पवित्र धारा में, परिणत हो जाते हैं। जहाँ मुनिवरों! देखो, मानव की इन्द्रियों का विषय मौन हो जाता हैं। वहाँ इन्द्रियों का विषय नही रह पाता इन्द्रियों का विषय मौन रह करके नेति का प्रतिपादन होता हैं।

तो आध्यात्मिकवाद एक अगम्यमयी ज्योति मानी जाती है। वह अगम्यमयी धारा मानी जाती हैं, जिसके ऊपर ऋषि-मुनि परम्परागतों से, प्रायः अनुसन्धान करते रहे हैं, परन्तु आज का हमारा विचार आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ प्रेरणा दे रहा है, और वह प्रेरणा क्या है? मानो अग्नि अपने प्रकाश में प्रकाशित होती है और वह अग्नि मानो पूर्व आभा से, दक्षिणाय को वह परिणत होती है। दक्षिणाय से अपृत होती हुई, वह मानो देखो, वरुण बन करके इस, ब्रह्माण्ड और मानव समाज और प्राणी मात्र के लिए, एक भण्डार रूप में परिणत होती हुई, मानो वरुण के रूप में परिणत हो जाती हैं। वही धारा, उत्तरायण में सोम बन करके, मेरे प्यारे! वह सोम की वृष्टि कर देती हैं। सोम की वृष्टि होने के पश्चात मानो देखो, पालना के क्षेत्र में ध्रुवा गति बन जाती है, ध्रुवा गति हौने के पश्चात मानो उसका ऊर्ध्वा मुख बन करके, वह ऊर्ध्वा में गति करने लगता है।

कवच

तो विचार क्या हुआ मानो, वही आभा में गति करने वाली तरंगें, पूर्व दिशा से, दक्षिण को गति की और पश्चिम में जा करके, उसकी गति मानो भण्डार के रूप में बन गई, वही गति मेरे पुत्रों! सोम बन करके, वृष्टि रूप में परिणत

हो गई। तो वह सोम की गतियां बन गई हैं, वह सोम बन गया। तो मेरे प्यारे! देखो, ऊर्ध्वा में मानो ऊर्ध्वा गति भण्डारं अति अस्ति स्थिरता और विस्तृत हो करके मेरे प्यारे! देखो, सोम बन गई वृष्टि रूपों में परिणत हो जाती हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ वेद की विद्या को जानने के लिए, प्रत्येक मानव को प्रयत्नशील रहना है। वेद की विद्या बेटा! बड़ी विचित्र है, मानो वेद की विद्या ऐसी है, जो कवच के रूप में ऋषि-मुनि इसको धारण करते हैं, कवच के रूप में कवच उसे कहते हैं, जैसे बेटा! देखो, एक क्षत्रिय संग्राम में जाता हैं, और वह कवच को धारण कर लेता है, जिससे शत्रु के अस्त्र शस्त्र का प्रहार न हो। इसी प्रकार हमारे यहाँ मानो देखो, इन आभाओं में बेटा! इसको कवच को धारण किया जाता है ऋषि-मुनि इसके कवच को धारण करके, वह उनके द्वारा उनकी बुद्धि प्रखर हो जाती है, बुद्धि में सोम की वृष्टि होने लगती हैं, कवच को धारण करने वाला, बेटा! देखो, इस संसार में बेटा! देखो, किसी प्रकार का उसे मानो देखो, त्रास नही होता। इस कवच को धारण करने वाला मानो बेटा! अपने में किसी प्राणी से प्राणी का भय उसे नही होता। वह मानो देखो, वह कर्णा स्वस्तियों से रहित हो जाता हैं। कटुता से रहित हो जाता है। मृत्यु से रहित हो जाता हैं। मृत्यु उसका आयतन बन करके बेटा! देखो, मृत्यु के गृह में, प्रवेश कर जाता है।

तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, मैं इस सन्दर्भ में तुम्हें गम्भीर क्षेत्रों में नही ले जा रहा हूँ गम्भीर वाक्यों में भी नही ले जा रहा हूँ पुत्रों! विचार यह है, कि हम सदैव मानो देखो, इन कवचों को धारण करने वाले बनें। याज्ञिक पुरूष जब याग के कवच को धारण कर लेता है, तो वह त्रि विद्या का मानो अनुसन्धान वेत्ता बन जाता हैं, वह जब कवच को धारण कर लेता है, ज्ञान के, अग्न्याधान हो रहा है, अग्नि मेरे हृदय में प्रदीप्त हो रही हैं, अग्नि के द्वारा याग हो रहा है, मानो समिधा प्रकाश दे रही है, इसी प्रकार मानव की जो नाना प्रकार की जो प्रवृत्तियां है, सु प्रवृत्ति, समिधा बन करके मुनिवरों! देखो, हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो देखो, वह समिधा बन करके देखो, प्रदीप्त हो करके हृदय को उज्ज्वल बना रही हैं। मानो देखो, उस अग्नि के लिए, हमें सदैव आचमन करना है, उस अग्नि को अपने समीप लाने के लिए, अग्नि हमारे हृदयों में प्रवेश हो करके, हम जब अग्न्याधान करते हैं, बाह्य जगत में, इसी प्रकार हम देखो, आन्तरिक जगत में हृदय रूपी यज्ञशाला में भी अग्याधान करते हैं। अग्न्याधान की विवेचना, बेटा! हम इससे पूर्व काल में प्रगट करा रहा था कि अग्न्याधान करने वाला मानव मानो देखो, मृत्यु से रहित हो जाता हैं। उसे मृत्यु का भय नही होता, क्योंकि वह लोकों का विजय करने वाला बन जाता हैं। लोक प्रिय हो जाता है। मेरे प्यारे! लोक प्रिय कौन होता है? जो सु ऊर्ध्वा में कर्म करने वाला हैं। मेरे प्यारे! लोक प्रिय कौन बनता है? जो लोक में मानो पापों से रहित हो जाता है। वह लोक प्रिय बन जाता हैं। लौकिक कौन होता है? जो मुनिवरों! देखो, लोक को अपना आयतन बना करके उसमें वास कर लेता है और वास करके मुनिवरों! देखो, उसका क्रियाकलाप स्वतः ही होता रहता हैं। तो वह लोक विजयी बन जाता है। लोक हित बन जाता है। तो इसीलिए मुनिवरों! देखो, वह हमें, मानो देखो, उस अग्नि के समीप जाना है, जिस अग्नि को धारण करने के पश्चात, मानव की प्रवृत्तियों में एक महानता की ओजस्वी आभा में, मानव प्रायः रमण करने लगता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, हमें, नाना प्रकार के इस विज्ञान के सूत्र को धारण करना है। जिस विज्ञान के सूत्र को धारण करने के पश्चात, मानो देखो, संसार को विजय करने वाला, विजयवेत्ता बन जाता है, जिससे मुनिवरों! देखो, हम सदैव अपनी महानता के ऊपर अपने विषय को हम चिन्तनीय बनाएं आभा में रमण कराते रहे।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने बहुत पुरातन काल में, इससे पूर्व काल में भी यह चर्चा कर रहे थे क्योंकि इनके हृदय में एक वेदना है, वह वेदना मानो इस प्रकार की वेदना है, जिस वेदना के ऊपर मानव, बहुत अनुसन्धान करता हैं, परम्परागतों से करता रहा है, करता रहेगा, तो आज मैं देखो, विशेष विवेचना न देता हुआ अपने पुत्र से विशेष यह

भव्य अस्तो वह अपने उदगार, उदगम वाणी का प्रदर्शन करें, वाचन में सम्भवा वाचन में रूद्रा, वाचन में गच्छं ब्रह्मा।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवंम स्वस्ति वर्णो ब्रह्मा वाचन्नम्प्रजां देवाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी अमृतमयी एक वर्षा कर रहे थे, जिस अमृत को पान करने के पश्चात, मानव के द्वारा शेष कर्म नही रहता, वह ऊर्ध्वा में प्राप्त होता हुआ, अपना अवर्चनीय अपने को बना लेता है, अवर्चनीय वह विषय होता हैं, जिसका मानव वर्णन नही कर सकता, उसको अवर्चनीय कहते हैं, मानो जिस विद्या के ऊपर अध्ययन करता-करता मानव अन्तिम छोर पर चला जाता हैं, और उसके पश्चात वह नेति-नेति का प्रतिपादन करता हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अभी-अभी मानो देखो, ऐसी वार्त्ता प्रगट कर रहे थे, जो अग्नि से ले करके, पूर्व दिशा से ले करके, वह मानो देखो, ऊर्ध्वा और ध्रुवा और वह उदीची की और प्रतीची का वर्णन कर रहे थे, इसका वैदिक साहित्य में बड़ा वर्णन आता है। हमारे आचार्यों ने उन्हीं वाक्यों को ले करके मानव को संध्या के सूत्र में परिणत कर दिया हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत काल पूर्व, अपने संध्यामयी वर्णन करते हुए मानो जिसका वर्णन पूज्यपाद गुरुदेव कल भी प्रगट करेंगें। परन्तु आज तो केवल मैं इतना उच्चारण करने के लिए आया हूँ, क्या पूज्यपाद गुरुदेव मानो देखो, ऐसे कवच का वर्णन कर रहे थे, जिस कवच को भक्त अपने में धारण करता हुआ, देवी कवच को मानो देखो, अपने में धारण करता हुआ, देवतव को प्राप्त हो जाता है। जैसे हमारे यहाँ, यह वैदिक कवच, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन किया। आधुनिक काल में मानो एक दैविक कवच भी माना गया हैं। दैवी सम्पदा वालों की आभा में रमण करते हुए उन कवचों को धारण करते हैं। वह कवच एक ही प्रकार है जो हमारे वैदिक साहित्य में आता रहा है, जहाँ वैदिक साहित्य में देवताओं का वर्णन है, वहाँ वैदिक साहित्य में देवियों का भी वर्णन हैं। देवी सम्पदा वालों का भी वर्णन हैं। मानो देखो, देवी किसे कहते हैं, देवी एक सम्पदा होती है, वह देवी एक प्रवृत्ति होती हैं देवी, जो प्रवृत्तियां मानव के हृदयों से उत्पन्न होती हैं, उन देवी प्रवृत्तियों को लाने के लिए मानो उन प्रवृत्तियों में ज्ञान और विज्ञान हैं, उसके ऊपर मानो अनुसन्धान और उसके कवच को धारण करते हैं, उस कवच के धारण करने से मानो उसी के अनुसार अपने आचरणों को बनाते हैं। उन आचरणों को बना करके, वह उस देवी कवच को धारण करके, मानो देखो, वह मां दुर्गा और काली की गोद में चले जाते हैं। मानो देखो, दुर्गा किसे कहते हैं? पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा है जो दुर्गणों को हनन करने वाली हैं। मानो देखो, काली किसे कहते हैं? काली मानो देखो, काली कलालि रात्रि को कहते हैं रात्रि की गोद में मानो पाप को त्याग करके निन्द्रा की गोद में चला जाता हैं, उसे कालि कराली कहते हैं। जो पापों को त्याग करके, मानो वह सुखद के आँगन में प्रवेश करता हैं, जैसे मानो सुषुप्ति में जाने के पश्चात, मानो वह अपने को आनन्द अनुभव करता हैं और वह जब सुषुप्ति में जाता है, इस संसार को त्याग करके, तो पाप को त्याग करके जाता है। वह पाप को त्याग करके जा रहा हैं, आ रहा है, तो मानो अपने को आनन्द अनुभव कर रहा हैं। इसी प्रकार यह देवी सम्पदा वाले, अपने कवचों को धारण करते है। मानो धारण करके काल रात्रि की गोद में चले जाते हैं, वह करालो हैं, मानो देखो, वह काली मां के रूप में परिणत रहती हैं, और मां दुर्गा के रूप में, शैलखण्डा के रूप में, ब्रह्मचारिणी के रूप में, मानो वह त्रिचण्डा के रूप में, वह देखो, नाना प्रकार के रूपों में वर्णन होती रहती है। उसी कवच को धारण करना, उस विद्या को जानना, मानो देखो, मृत्यु से पार होने वाले कवच है।

विचार विनिमय क्या इसी प्रकार, मैं इस वेद के आँगन में जाने के लिए नही आया हूँ। इसी आभा को अज्ञानता, रात्रि के सम्बन्ध में मानो देखो, इन कवचों के सम्बन्ध में इस समाज में अज्ञानता की तरंगों का उद्बुद्ध हुआ, वेद की पवित्र विद्या और धाराओं को न जान करके मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई काल से मानो यागों का वर्णन कर रहे थे,

यज्ञ और औषधि विज्ञान

हमारे यहाँ जैसे यागों का चलन हैं, यागों के चलन में जैसे मानो त्रिकोण याग की विवेचना कर रहे थे, चतुष कोण के यागों की चर्चाएं भी, प्रायः आती रहती हैं। मानो देखो, इसी प्रकार उन यागों की आभा में, मानो देखो, वह मानो देखो, एक विशाल, अपने स्वार्थ के रूप को धारण कर लिया। मानो देखो, अपनी त्वचा का, अपनी रसना का, एक विषय बनाया, रसना का विषय बना करके, यागों में जैसे वाजपेयी याग है, वाजपेयी याग में बैल की बलि देना मानो देखो, अजा में बकरी की बलि देना, गो मेध याग में गो की बलि देना, मानो देखो, देवी याग में और भी नाना प्रकार के देखो, हिंसा प्रवृत्तियों को लाना, यह केवल रसना का एक स्वादन बन गया यह कोई देखो, देवी सम्पदा नही होती। मानो देवी सम्पदा में हिंसा नही होती, तो यह जब मानो अहिंसा परमोधर्म होता हैं, तो हिंसा का यह विचार कहाँ से आ गया? यह विचार कहाँ से बलवती हो गया है मानो रहा यह वाक् मानो इन यागों के द्वारा नाना प्रकार के अश्वमेध में मानो देखो, घोड़े की बलि देने लगे, अश्व की बलि का वर्णन मानो देखो, उसी प्रकार का, जो प्रभु का विज्ञान और ज्ञान तो इतना भोला है, कि इतना विचित्र है, कि इस विषय पर मानो अपना चिन्तन करना, प्रारम्भ कर देता है। उसी चिन्तन में, वह लग जाता है, उसी चिन्तन में लग करके मानो देखो, इसके ऊपर वह इतना तल्लीन हो जाता हैं, कि उसका कोई मानो देखो, उसे मार्ग आगे चल करके प्राप्त नही होता, वह अनन्तता में दृष्टिपात आने लगता हैं, कोई भी विषय हो संसार का, उसमें सबमें अनन्तता प्राप्त होती है। क्योंकि वह चेतना से उसका अन्तिम जो छोर हैं, वह चेतना है, और चेतना का जब वर्णन आता है, तो बेटा! अवर्चनीय विषय बन जाता है। हे पुत्रों! भवा सम्भवा ते ब्रह्मा पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा था, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अमृत की जब वृष्टि करते हैं, मानो यागों का चयन यागों का चयन, करने लगते हैं।

रहा यह है कि मानो देखो, उसी पर मैं अपने विषय पर जाना चाहता हूँ, हमारा विषय यह कि राजा रावण के यहाँ जो सुधन्वा नामक जो वैद्यराज थे, वह त्रिकोण यागों की चर्चाएं करते रहते थे, मानो उनका याग का एक विषय रहा है, और वह विषय क्या रहा हैं? क्या औषध विज्ञान को जानना, औषधियों को जानना, यह औषधि किस-किस रूपों में, कौन-कौन से रूग्ण में मानो वह कार्यवत होती है। इसी प्रकार मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न भी किए थे, आज भी मैं उन प्रश्न को करने वाला था, परन्तु देखो, हमारा ही एक ऐसा विचित्र विषय बन गया हैं, जैसे अश्विनी कुमार है मानो देखो, उनका आयुर्वेद में देखो, बड़ा अध्ययन रहा हैं, हमारे यहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जहाँ जहाँ ब्रह्म विद्या में पारायण होते थे, वहाँ उनका मानो देखो, औषध विज्ञान बड़ा विचित्र रहा है, मानो देखो, जहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों में पारायण रहे हैं यागों की भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याओं में संलग्न रहे हैं, वहाँ उनका मानो देखो, औषध विज्ञान के ऊपर बड़ा अधिपथ्य रहा हैं, रहा यह कि आधुनिक काल में, उन औषधियों के नामोकरण का, मानो देखो, विचार प्राप्त नही होता। मैंने बहुत पुरातन काल में, पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया था, परन्तु देखो, जहाँ इतना व्यापक विज्ञान, आयुर्वेद के सम्बन्ध में मैं नही जानता, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, इस विज्ञान को जानते हैं। परन्तु औषधियों का नामोकरण तो मानव को प्राप्त होता हैं, परन्तु मानव की प्रवृत्ति यह है कि मानव उनको जानने में तत्पर नही होता, मानव का अनुसन्धान नही रहा हैं।

पीपल वृक्ष का पंचांग

मुझे स्मरण है कि हमारे आचार्यों ने पुरातन काल में बहुत-सा अनुसन्धान किया, ब्रह्म के सम्बन्ध में, एक-एक अंग को ले करके, उन्होने ब्रह्म के सम्बन्ध में, बहुत-सी उड़ाने उड़ी है परन्तु देखो, औषधियों के, एक-एक अंकुर को ले करके, उसकी नाना प्रकार की जातीयता के वृक्षों को, और वनस्पतियों को जानने का, उन्होंने प्रयास किया है।

मुझे वह काल स्मरण है, जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो देखो, महात्मा दधीचि के अंग संग विद्यमान हो करके, और वह मानो देखो, औषध विज्ञान के सम्बन्ध में औषधियों के ऊपर अनुसन्धान करते रहे हैं, औषधियों का विज्ञान इतना विशाल विज्ञान है।

वृक्षों के पुरातन नाम

जैसे मानो देखो, मैं आधुनिक नामों की जैसे वर्णन कर रहा हूँ जैसे मानो यह पीपल का वृक्ष हैं पीपल के नामों को इसको सोमध्वनक नामों का वृक्ष उच्चारण करते थे परन्तु पीपल का जो वृक्ष है इसमें सर्वत्र मानो देखो, बहुत से गुणों का वर्णन हैं, हमारे ऋषि-मुनि जिस काल में, मानो देखो, ध्यानावस्थित होने के लिए संसार से उपराम होने का, विलासता के क्षेत्रों से वह मानो देखो, सान्त्वना के, देवी सम्प्रदा के मार्ग को, जब प्राप्त होते रहे, तो उस समय पीपल के पंचांगों को ले करके, मानो देखो, पीपल की देखो, नीचे की तली, और देखो, उसका पतलांग उसका मांस उसके पत्र उसके फल मानो देखो, समकालीन ले करके अग्नि में जब उसका पात बनाया जाता हैं मानो देखो, उसको प्रातःकालीन सूर्य उदय होने के साथ, जैसे सूर्य की किरण उदय होती है, उसी प्रकार मानो देखो, अग्नि में कुछ तपा हुआ, उसको पान करने से मानव के हृदय मे शान्ति की स्थापना होती हैं। मानव देवी सम्पदा, एक विचित्र धारा से उत्पन्न होती हैं।

इसी प्रकार मानो जैसे वट वृक्ष हैं, वट वृक्ष के हमारे यहाँ, बड़ा वर्णन आता है वट वृक्ष को हमारे यहाँ श्वंधनी कहते हैं मानो देखो, वट वृक्ष में यह विशेषता हैं उसके दुग्ध को मानो आहार करना चाहिए, उसके दुग्ध को आहार करते हुए मिष्ठान मधु के साथ में मानो देखो, उसी की औषधियों के द्वारा वह मानो देखो, दैनिक याग में परिणत हो करके मानो उसकी ही समिधा के द्वारा याग कर्म करने वाला हो। और गो के घृत गऊ के दुग्ध से जब वह आहार करेगा वह उसका आहार उसका पान भी करें, उसी के द्वारा तीव्र अग्नि के द्वारा मानो वह उसके द्वारा याग करे, और उसमें मानो देखो, कृतिकी, हुंकानिका और देखो, शैलखण्डा और देखो, जैसे आधुनिक काल में मानो सहदेवी है, सामभूनिका है, जो आधुनिक नामों में मानो देखो, हमारे यहाँ, अपामार्ग के रूप में परिणत किया जाता हैं। इसी प्रकार मानो जैसे हमारे यहाँ त्रिकोण, अग्रणात कहते हैं, आधुनिक काल में उसको गोखरू नाम से पुकारा जाता हैं। मानो देखो, उसको ले करके, इन सब औषधियों का एक साकल्य बना करके, उसमें मिष्ठान का मिश्रण करके, उसके द्वारा याग करने से, मानव का देखो, जब इस प्रकार हम श्रद्धा पूर्वक हम याग करते हैं तो मानव का जो रक्त का विकार हैं, वह कितना ही मानो देखो, विषाक्त हो रक्त के विकारों के लिए मानो देखो, उसकी आहुति देने से मानव के कोढ़ के रूग्ण भी मानो देखो, दूरी हो जाते हैं। उनका याग लगभग एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रह करके, उस मानो देखो, याग को करना चाहिए।

इसी प्रकार जैसे मानो देखो, हम बिल्व के आहार को करने से बिल्व की समिधा बनाने से उसके पत्र और उसकी छाल ले करके, और उसमें मानो देखो, चिरायता ले करके सोमकृतिका एक औषध होती है, पांच प्रकार की धूब होती हैं, उन धूब को ले करके, उसमें सोमफूलिका एक औषध होती हैं, उसे ले करके उसके द्वारा मानो देखो, उसी के रस बना करके, उसमें मानो देखो, जैसे हमारे यहाँ सुत्वान एक औषध होती हैं, सुत्वान औषध आधुनिक नाम भी उसका सुत्वान कहते हैं परन्तु देखो, तुलसा के रस को ले करके मानो देखो, उसमें मिश्रण करा करके गो घृत गो दुग्ध के आहार करने से मानो देखो, अग्नि में तीव्र अग्नि में बिल्व की अग्नियों का आधान करते हुए ध्यान करके इसी प्रकार के वनस्पति को ले करके चूर्ण बना करके उसका आहार करने वाला वह तो उसका मानो किसी प्रकार का मस्तिष्क में किसी भी प्रकार का विकार हो, परन्तु वह मानो देखो, मृग मानो देखो, एक रूग्ण होता हैं, जिसको मस्तिष्क में निन्द्रा उसकी नही रह पाती, ऐसे याग करने से ऐसे मानो देखो, व्रत पूर्वक देखो, वैद्यराज भी

इतन विशेषज्ञ हो, उसी प्रकार का पूर्णता की चूर्ण पान कराए और मानो देखो, एक वर्ष के पश्चात उसके मस्तिष्क में मानो शुद्धिकरण हो जाता हैं।

तो परिणाम क्या है? मानो देखो, इस प्रकार के क्योंकि इस प्रकार ऋषि-मुनियों ने क्यों ऐसा माना है, यह सुधन्वा नामक वैद्य ने माना है। क्योंकि सुधन्वा ने मानो जिस समय देखो, लक्ष्मण को मूर्छा आई, लक्ष्मण को मूर्छा आई थी, त्रेता के काल में, जब राम और रावण का संग्राम हो रहा था, तो महाराजा मेघनाथ ने जो मानो देखो, त्रिपुरी के राजा थे, उन्होंने जब शक्ति का प्रहार किया ऐसे अस्त्र का प्रहार किया क्या नस नाड़ियों में जितनी प्राण शक्ति थी, वह शून्य गति को प्राप्त हो गई। मानो उसको मूर्छा के रूप में मानो देखो, निष्क्रिया बन गएं तो उस समय उनकी जब मानो एक गोष्ठी हुई, एक देखो, स्थान जिसें महाराज जामवन्त और देखो, महाराज सम्पाति और राजा रावण के विधाता मानो देखो, विभीषण इत्यादियों की एक सभा हुई, जिसमें महाराजा हनुमान इत्यादि सब एकत्रित हुए, एकत्रित होने के पश्चात जब सुधन्वा को लाया गया, तो सुधन्वा ने यह कहा क्या, मैं इन औषधियों को तुम मार्ग से लाओ, और मानो देखो, यह त्रास नामक वन हैं, पर्वत है, इस पर एक औषध है, वह अपने में स्वतः प्रकाशित हो रही हैं। उस प्रकाशित होने वाली औषधि को लाया जाएं, तो उसके पश्चात हनुमान ऐसा था जो अपने वाहनों में विद्यमान हो करके, गति उन्होंने की। और सुधन्वा ने मानो देखो, क्रील की चूर्णांग ले करके और पीपल के बक्ल को ले करके, और उसकी समिधा ले करके, मानो देखो, उन्होंने लक्ष्मण के प्रति याग प्रारम्भ किया, वह याग करने लगे, उसमें मानो कुछ औषध ऐसी जैसे लवंग होता हैं, जैसे कच्छवान होता है, कचिंद होता हैं, और देखो, मजीठ होता है, चिरायता होता है, और जैसे कचिकरद होती हैं, और देखो, इसमें चन्दन की समिधा ले करके, और तीव्र अग्नि के द्वारा, जब वह देखो, उन्होंने याग प्रारम्भ किया। याग चलता रहा, परन्तु देखो, हनुमान जी उस औषध को ले करके, मानो देखो, प्रातःकालीन आ गएं उन्होंने यह कहा था कि यदि सूर्य उदय होने से पूर्व यह औषध आ गई मानो सूर्य उदय होने से पूर्व दी गई तो इनके मानो देखो, प्राण द्वितीय आ सकते हैं, अन्यथा इनके प्राणों की कोई भी रक्षा नही कर सकता। मानो देखो, उन्होंने उसका याग किया, और याग करके, उस औषधि को ला करके, उसका खरल बना करके, अग्नि में तपा करके और देखो, उसको कुछ मानो देखो, उसको यज्ञ में कुछ मानो देखो, उसका धुम्र बना, और देखो, कुछ उनको प्राप्त कराई, तो देखो, वह मूर्छा जागरूक हुई।

परिणाम क्या मानो देखो, यह विद्या वैद्यराज के द्वारा होती है, वैद्यराज इसको अच्छी प्रकार जानते हैं, इसी प्रकार मैं इस सम्बन्ध में देखो, विशेष चर्चा नही नही यह प्रश्न होगा साधारण समाज के हृदयों में क्या याग को इस प्रकार रूग्णों के साथ में क्यों इसको कटिबद्ध किया हैं? इसीलिए किया है, क्या यह जो अग्नि हैं, इस अग्नि में बहुत से गुण होते हैं, और क्योंकि अग्नि में भेदन शक्ति बहुत होती हैं, और वह भेदन शक्ति मानो देखो, औषधियों का भेदन कर देती हैं, और वह सूक्ष्म प्राण के साथ में मानो देखो, अन्तर्शरीर में प्रवेश कर जाती हैं, जैसे मानो कुछ वैद्यराज ऐसी औषधियों का पिपाद बनाते हैं, क्या वह नस्य के द्वारा मानो वह सर्व शरीर में प्रवेश करा देते हैं, इसी प्रकार प्राचीन काल में उस काल में मानो देखो, इस प्रकार का विधान था, कि अग्न्याधान किया, अग्नि में मानो उसको देखो, तपाने से, सूक्ष्म परमाणु अग्नि देखो, उसके श्वास के द्वारा अन्तर में प्रवेश करा देती हैं, अन्तर में प्रवेश करा करके उसको औषधि को पान करा करके, प्राण उसका भक्षण करता हैं। श्वास ले करके प्राण मानो देखो, सूक्ष्म परमाणु को, अपने में प्रवेश करता है, अपान को जा करके वह शुद्ध रूप बना देता हैं। अपान से जब होता है, तो समान प्राण में वह आहार करता हैं वह वहाँ समान में प्रवेश करके, व्यान और उदान को दे करके वह पुनः प्राण शक्ति शरीर में एक विशुद्ध रूप को धारण करके, मानव के रूग्णों को शान्त कर देती है। मानो देखो, याग को, यह तो अपने-अपने कालों में भिन्न-भिन्न प्रकार की चिकित्सा रही हैं, आधुनिक काल का जो चिकित्सक है, जब मैं

यज्ञ और औषधि विज्ञान

आधुनिक काल के चिकित्सक को लेता हूँ, आधुनिक काल का चिकित्सक मानो देखो, अधूरेपन में परिणत हो रहा है, उसमें मुझे अधूरापन इसीलिए प्रतीत हो रहा है, क्या मानो देखो, रूग्णों की औषधियों का उन्हें पूर्णतव ज्ञान नही होता। जब रूग्णों का पूर्णतव क्योंकि वनस्पतियों में महान शक्ति होती हैं, वनस्पति तो मानो देखो, विशेष रूप से मानो देखो, कुछ धाराएं इस प्रकार की हैं, जो वनस्पति विज्ञान को मानो देखो, अपने से दूरी करना चाहता हैं। वह हो नही पाता परन्तु करना चाहता हैं, वह मानो देखो, जीवों के मांस इत्यादियों के अंगों को ले करके और प्राणी के अंग को देखो, शोधन करना चाहता है, हो नही पाता। इसी प्रकार आधुनिक काल का विज्ञान हैं, मानो देखो, उस औषध विज्ञान के ऊपर वह अपने में अधूरेपन में इसीलिए है, क्योंकि वह आयु के वेद को आयु की वनस्पतियों को इस वृक्ष स्थावर जो सृष्टि है, यह अनन्तवत मानी गई हैं। यह जो अथर्व वेदां ब्रह्मा अथर्व वेद मानो देखो, ऋषि-मुनियों ने जब त्रिविद्या का वर्णन हुआ क्या वेद में त्रि विद्या हैं। त्रि मानो देखो, ज्ञान, कर्म, उपासना हैं तो यह विज्ञान का औषध विज्ञान ले करके मानो देखो, उसी में से मन्त्र ले करके अथर्वा के रूप में मानो देखो, इसके बहते हुए वह औषध विज्ञान और मानो देखो, शारीरिक चिकित्सा के सम्बन्ध में मानो देखो, उसका प्रावधान किया और उसको ले करके आचार्यों ने मानो उसके ऊपर अनुसन्धान किया इसी प्रकार देखो, जितना भी यह खनिज विद्या है, खनिज पदार्थ हैं, इसमंइ भी विज्ञान हैं मानो देखो, इसको एक-एक बहुत सूक्ष्म-सूक्ष्म प्राण शक्ति जो इसमें नृत्त कर रही है, इस प्राण शक्ति को उन्होंने लाने का प्रयास किया है।

इसी प्रकार पुरातन काल की वार्त्ता हैं मानो देखो, आधुनिक कालों में चर्चा कर रहा हूँ, उस काल में देखो, एक विशाल, एक वैज्ञानिक यन्त्र होते हैं उनमें देखो, इसके रस को तपाया जाता हैं, और उस रसों को ले करके मानो देखो, वैज्ञानिक यन्त्रों में भी क्रियाकलाप और मानव के शरीर में भी वही क्रियाकलाप होता रहता है। परन्तु आधुनिक काल में प्रायः यह विद्या नही है, मैंने ऐसा पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया हैं, क्या मानो देखो, यह हमारे यहाँ वनस्पति विज्ञान हैं, इसी प्रकार हमारे यहाँ प्राण का विज्ञान हैं, एक प्राण चिकित्सा हमारे यहाँ पुरातन काल में होती रही है। प्राण चिकित्सा का यहाँ यह है क्या एक सूर्य प्राणायाम हैं, एक चन्द्र प्राणायाम है, एक खेचरी प्राणायाम हैं, एक मानो देखो, कटुप्रणाति प्राणायाम कहलाता है। एक मानो देखो, भस्त्रिका प्राणायाम हैं, एक त्रिकात नामक प्राणायाम है, नाना प्रकार के प्राणों से देखो, चिकित्सा होती रही हैं, जैसे मानव के शरीर में मानो देखो, उदर में किसी प्रकार का रूग्ण है, मानो वायु का प्रकोप हो गया है, वहाँ अग्नि को लाना है, अग्नि को कैसे लाया जाएगा अग्नि के द्वारा प्राण शक्ति को लाना हैं तो वहाँ सूर्य प्राणायाम किया जाता हैं। मानो देखो, यदि मानव को यक्ष्मा हो गया है, यक्ष्मा हो जाने के पश्चात मानो देखो, उसे धीमा-धीमा प्राणायाम सूर्य प्राणायाम करना हैं, धीमा-धीमा करना है, चन्द्रमा प्राणायाम की उसमें पुट लगानी हैं, कुम्भक को रेचक को उसमें साधना की आभा में कृत करना है। तो देखो, एक वर्ष के पश्चात यक्ष्मा का रूग्ण समाप्त हो जाता हैं परन्तु देखो, इसी प्रकार मैं प्राण चिकित्सा के सम्बन्ध में, पूज्यपाद बहुत जानते हैं मैं उनके समीप ऐसे-ऐसे वाक् उच्चारण कर रहा हूँ, जैसे सूर्य के समीप मानो एक सूक्ष्म सा अग्नि का प्रकाश हो। रहा हो मानो देखो, प्राण चिकित्सा के सम्बन्ध में, इनकी बहुत-सी, पचास पचास वर्षों की साधना इस प्रकार की जो प्राणायाम के द्वारा, रूग्णों को शान्त किया जाता हैं। परन्तु देखो, जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से प्रार्थना करूंगा, तो देखो, आधुनिक काल में, मैं इसीलिए प्रार्थना नही करता, क्योंकि आधुनिक काल में श्रवण करने वाले इस प्रकार के क्रियाशील प्राणी नही प्राप्त होते। परन्तु देखो, मैं विज्ञान की बहुत-सी चर्चायें अस्त्रों-शस्त्रों की प्रतिक्रियाएं, इसीलिए वर्णन नही कराता, क्योंकि आधुनिक काल में उनके नामोकरण में मानो देखो, परिवर्तन हो रहा हैं। वह इसी प्रकार मैं मानो देखो, अपने में पूज्यपाद गुरुदेव का बड़ा प्यारा और सुन्दरतव में आज्ञा का पालन करने वाला शिष्यतव रहा हूँ परन्तु देखो, मैं सदैव इनसे प्रार्थना करता

रहता हूँ आधुनिक काल में देखो, प्राण चिकित्सा के जानने वाले, वैद्यराजों की सूक्ष्मता है। याज्ञिक पुरूषों के द्वारा याग के द्वारा रूग्णों को आहारों के द्वारा शान्त कराने वाले वैद्यराजों की बहुत सूक्ष्मता है, परन्तु देखो, सूक्ष्मता यह क्या एक ईकाई मैं उच्चारण कर दूं, तो अति शयोक्ति नही होगी। परन्तु जहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन करते हुए मानो देखो, बहुत से वाक् मानो देखो, बहुत-सी चिकित्सा का वर्णन किया हैं।

मानो आज मैंने देखो, कुछ वृक्षों का वर्णन किया हैं इसी प्रकार देखो, अनेको अनेक एक अम्बिका वृक्ष होता हैं अम्बिका वृक्ष के फल को, पतों को देखो, उसकी जड़िका को उसके मांस और बक्क को ले करके जब मानो देखो, उसकी चमड़ी को ले करके उसका पात बनाया जाता हैं पात बना करके मानो देखो, उसको हम प्रातःकालीन, सांयकालीन मानो देखो, उसे अग्नि में तपा करके, जब उसका पान करते हैं तो मानो देखो, जैसे हमारे शरीर में देखो, त्रि अस्वेत नस नाड़ियों को जितने रूग्ण हैं परन्तु वह समाप्त हो जाते हैं इसी प्रकार मैं प्राण की आभा में ले जाना नही चाहता हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेव मुझे कई काल में यह वर्णन करते रहते हैं, कि तुम्हारा विषय मानो देखो, विषय अधूरेपन में रहता हैं। मैं यह कहा करता हूँ, मैं पूज्यपाद गुरुदेव से क्या आधुनिक काल कांचकेतु औषध का मिलान करते हैं, कांच केतक औषध उसे कहते हैं जो मानो देखो, एक पुष्क नामक वृक्ष होता है, उसका फल होता हैं, जब उसको हम लेते हैं उसको अग्नि में पात बनाते हैं और उसका पान करते हैं तो मानो देखो, शरीर सर्व अंगों का रूग्ण समाप्त हो जाता हैं। इसी प्रकार मानो देखो, किसी काल में, पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा जब मैं किसी काल में जब साधना करता था, तो साधना के क्षेत्र में परन्तु देखो, एक औषधि आती थी, कुछ औषधि है जैसे हमारे यहाँ शंख हुलि हैं, शंख कितिका हैं, मानो केसवानी हैं, कुष्कलंगी है, और कुशंग हैं, चन्दन है चन्दन के साथ में लोमांक्षी हैं मानो देखो, अस्वता मानो देखो, उसका पिपात बना करके, शीतल जल में इसको मस्तिष्क के ऊपर मानो देखो, एक रात्रि और एक दिवस जिसमें तीन समय, इसका लेपन करने से मानव के शरीर में किसी प्रकार का क्रोध की विशेष मात्रा उत्पन्न हो जाएं, अनायास विनाशकारक जो क्रोध हैं, और कामना है, विनाशकारक मानो उसके मस्तिष्क पर लेपन करने से मानो देखो, सान्त्वना होती हैं मानो देखो, इस प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव लेपनों के द्वारा, साधना कराते रहे हैं। परन्तु देखो, यह आधुनिक काल में भी, प्रायः यह औषधियां प्राप्त हो जाती है। आधुनिक काल में इनके नामोकरण को जानते हैं, मैं भी उच्चारण कर रहा हूँ, परन्तु देखो, इनको कौन देखो, मार्गों में पर्वतों में हिमालय की कन्दराओं में यह औषधियां प्राप्त होती रही हैं। परन्तु देखो, इनको जानने के लिए, मानव को बहुत, विज्ञान की आवश्यकता हैं। मानो देखो, हम यदि समाज को सुखी बनान चाहते हैं, आनन्दित बनाना चाहते हैं, मेरे पूज्यपाद कल इसके ऊपर उच्चारण कर रहे थे, कि भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन, हमारे यहाँ होता रहा हैं। भिन्न-भिन्न जैसे अश्वमेध याग, प्रजा को सुखी बनाने के लिए, आनन्दित बनाने के लिए, अजामेध याग, मानो देखो, अजा विजय होने के लिए, अपने इन्द्रियों पर विजय हों, अपने राष्ट्र में विजयी बन करके रहें परन्तु देखो, इस प्रकार के यागों का चलन हमारे यहाँ, परम्परागतों से होता रहा है।

इसी प्रकार मैं उच्चारण कर रहा हूँ। महाराजा सुधन्वा नामक जो वैद्यराज थे, मानो देखो, उस काल में, याग के द्वारा, याग के द्वारा आहार के द्वारा दोनों से मानो देखो, औषधियों का प्रहार किया जाता था। और प्रहार करने से मानो देखो, वह औषध विज्ञान अपने में मानो महान रहा है। मुझे स्मरण आता रहता है क्या, देखो, जो अश्विनी कुमार, जब महात्मा दधीचि के द्वारा ब्रह्म विद्या को पान करने को गएं थे मानो देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने तो इतना कह करके हमें मानो अनसुना कर दिया क्या सुसन्धनं ब्रीहि मानो उन्होंने अश्व के मस्तिष्क से ब्रह्म विद्या को पान किया, और इन्द्र ने जब उनके कण्ठ के भाग को दूरी कर दिया। तो मानो देखो, उस समय वह स्वस्तं ब्रहे वह

उन्होंने देखो, वास्तविक उनके कण्ठ को ज्यों का त्यों मानो देखो, औषधियों का पिपाद बनाया। तो वह कौन-सी औषध इस प्रकार की होती हैं, आधुनिक काल में प्रायः निघण्टु इत्यादियों में, उनका नामोकरण प्राप्त नही होता, क्योंकि उस काल में मानो कुछ औषधियां निघण्टु इत्यादियों से लुप्त हो गई हैं। वह मानो देखो, औषधियां हैं, भी तो मानो देखो, उनका पात बनाना नही जानते, परन्तु देखो, जब अश्विनी कुमारों के अग्रणीयों ने, जब महात्मा दधीचि के कण्ठ को भाग दूरी कर दिया तो अश्विनी कुमारों ने मानो देखो, भंयकर वन से एक बेल होती हैं, जिसको हमारे यहाँ ब्रह्म भूषणी कहते हैं, एक ब्रह्म बूटी होती हैं, एक ब्रह्म भूषणी होती हैं मानो उसके कटवा पत्र होते हैं, उसके फल ला करके उसके मानो पत्रों को ला करके, और उसको अग्नि में तपाया, उसके पश्चात मानो देखो, एक औषध होती है कन्दकोतकेतु, कन्दकोतकेतु प्रायः उसको सर्प विशेषकर पान करता है। मानो देखो, उस बेल को ला करके एक हडांगकेतु बेल होती हैं जो प्रायः भंयकर वनों में मानो देखो, सुधन्वा नामक एक वृक्ष होता हैं जो उसके ऊपर उस बेल का प्रहार रहता हैं उस बेल को लाया गया, उसको हरकेतु बेल कहते हैं। परन्तु देखो, एक शवज्ञानकेतु केतु श्वज्ञान वृणियां होती हैं, जो मानो देखो, उसके सूक्ष्म-सूक्ष्म एक कटि अस्वान होता हैं उसके पत्रों को ला करके, और उनको ला करके सबको अग्नि मे तपा करके, उसमे लौंगहिलीका और देखो, उसमें सत्यकेतु अपामार्ग की, देखो, जड़िका, इनको ले करके, अग्नि में तपाया, अग्नि में तपा करके, मानो देखो, उसका पिपाद बना करके, मानो देखो, उसके ऊपर ज्यों का त्यों मस्तिष्क स्थिर करके, उसको ज्यों का त्यों लेपन किया उसी को पान कराया तो मानो देखो, कुछ ही समय में वह मानो वह विशुद्ध रूपों में परिणत हो जाती हैं।

तो इस प्रकार की औषध जो प्रायः नाम आते भी है, तो उनको जानते नही, जानते भी मानो देखो, कुछ नामोकरण भी उनके लुप्त हो गएं हैं। इस प्रकार परन्तु देखो, आयुर्वेद का विशाल वन हैं, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे भी, इस वन में भ्रमण करा दिया है। मानो पूज्यपाद गुरुदेव तो इन वनों में बड़े ही रहते हैं, परन्तु मुझे आज इसमें परिणत करा दिया। मैं भी इसमें भ्रमण करने लगा हूँ, अब मुझे एक औषध मैं जानता हूँ, दूसरी औषध मुझे स्मरण आ रही हैं। मानो देखो, मस्तिष्क के श्वधानम् ब्रह्मा जैसे मानव को कासकतन नामक एक रूग्ण होता हैं और वह रूग्ण ऐसा होता है क्या एक-एक त्वचा में मानो देखो, किष्कियां हो जाती हैं, वह फोड़े के रूप में परिणत हो जाता हैं, यदि उससे वह मानव दूषित वातावरण में यदि उसका अंग भंग हो गया हैं उसकी कोई औषध नही है। परन्तु देखो, आयुर्वेद उसकी औषधि कह रहा हैं वेद कह रहा है उसकी औषधि क्या है मानो देखो, उसकी औषध सूत्रिका एक बेल होती है जो प्रायः हिमालय में प्राप्त होती है, मानो वह सूत्रिका को ला करके और उसमें अपामार्ग का सर्वांग ले करके और देखो, उसमें जिसको हमारे शिवलिंगी को लिया जाता हैं, तो मानो देखो, उसको ले करके, उसका पात बना करके, यदि उसके ऊपर मर्दन किया जाएं और उसको पान कराया जाएं, उन्ही औषधियों के द्वारा याग कराया जाएं, तो वह मानो छह माह में शुद्ध रूप में बन सकता हैं।

इसी प्रकार जैसे बहुत-सी प्रायः माता इस प्रकार की होती हैं जिनको मानो देखो, ऐसे रूग्ण होते हैं जिनके द्वारा देखो, पुत्रानां हीनां स्वस्ति ब्रह्मा अस्वान बहुत-सी प्रायः माता इस प्रकार की होती हैं परन्तु देखो, उनके लिए बहुत-सी औषध ऐसी होती हैं जिनके स्नान करने से और याग करने से उनको मानो देखो, पुत्र की इच्छा पूर्ण हो जाती हैं। तो मैं इस वन में जाना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय क्या है मानो देखो, यह औषधियों का विशाल वन हैं, मैं अब अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाने जा रहा हूँ, क्योंकि यह सामर्थ्य उन्हीं महापुरूषों में होते हैं, जो उनके ऊपर अनुसन्धान करते हैं। लगे रहते हैं। मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के ऊँचे आसन होते हैं। देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के चिकित्सा के सम्बन्ध में मानो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव वर्णन कराते रहते हैं। परन्तु देखो, आज मैं विशेषता में ले जाने के लिए नही आया हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण करने आया हूँ, कुछ परिचय देने आया

था, वह परिचय दिया है। पूज्यपाद गुरुदेव तो इसका वर्णन करते ही रहेंगें। क्योंकि यह त्रिपुरी में याग करने की आभा से, इन्होंने अपने प्रकरण को लिया हैं। जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही हैं, वहाँ का वह याज्ञिक पुरूष मानो देखो, एक याग कर रहा है, वह त्रि कोण में याग कर रहा हैं, जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार मानो हृदय में उपजते रहते हैं, वह त्रिकोण यागों का चलन, जो आधुनिक काल में, उस याग का चलन नही है। उस याग का चलन मानो देखो, बहुत पूर्व काल में देखो, वह लुप्त हो गया हैं। उसके लुप्त होने का कारण, यह क्या मानो देखो, वह वैद्यराज के न रहने से दूसरे विधर्मी धर्मों का मानो आक्रमण होने से कुछ यागों की प्रथा वाममार्ग के होने से, हिंसक प्राणी यागों में, जब हिंसा करने लगे, तो मानो देखो, याग की प्रथा मानो लुप्त हो गई जैसे विष्णु याग और देखो, विष्णु याग करते हैं विष्णु जो याग होता हैं वह पंच कोणों में होता है पंच कोणों में विष्णु याग होता हैं, क्योंकि देखो, वह पालन करने का नम्रता का का याग है उसे मानो देखो, विष्णु याग कहते हैं पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में वर्णन कराया है उस पंच कोण के याग का भी आधुनिक जगत में नही हैं परन्तु देखो, इसी प्रकार देखो, हमारे यहाँ सप्तकोणों का विधान, रूद्र याग में माना गया हैं। मानो उसमें सात कलशों का देखो, व्यवसाय माना गया हैं, सात कलश होने चाहिए, मानो देखो, यदि उसमें राजा करे, तों मानो देखो, स्वर्ण के पात्र होने चाहिएं, श्रवण के कलश होने चाहिए और रूद्र याग में मानो देखो, छतीस प्रकार का साकल्य एकत्रित करके, मानो देखो, गो घृत और दुग्ध मानो देखो, काली जो गऊ होती है श्यामा जिसे कहते हैं, रात्रि के वर्ण की गाय का देखो, गो घृत होना चाहिए, और देखो, श्वेत वर्ण वाली का देखो, जैसे जिसका सम्बन्ध चन्द्रमा से होता हैं, उसको गो घृत लिया जाएं, उसका दुग्ध लिया जाएं, बहुत-सी गऊएं मानो देखो, गौर वर्ण की होती हैं, उसमें स्वर्ण की आभा होती हैं, उसके घृत को लिया जाएं, सात प्रकार की जातीयता की देखो, गाय होती हैं, उनके मानो गो घृत के द्वारा राजा मानो देखो, रूद्र याग करे। रूद्र याग से उसका राष्ट्र विजय बनता है, समाज में अनुशासन आता है, मानो देखो, समाज में एक प्रतिभा बनती है। आधुनिक काल का राजा इस प्रकार के यागों में परिणत नही होना चाहता है। क्योंकि विधर्मियों का आक्रमण हैं, विधर्मीयों का आचरण है, विधर्मियों का मानो देखो, उनकी निन्दा से देखो, आज का मानव देखो, भयभीत हो करके, मानो देखो, अपने क्रियाकलाप को त्याग रहा हैं। इस प्रकार मैं इनमें नही जाना चाहता हूँ कि पूज्यपाद गुरुदेव यह कहेंगें कि तुम कटुता उच्चारण कर रहे हो, परन्तु मैं केवल इतना उच्चारण कर रहा हूँ, क्या राष्ट्र जब तक उस कर्म काण्ड की पद्धतियों को नही अपनाता, राष्ट्र में शान्ति की स्थापना नही हो सकती। परन्तु देखो, यहाँ धर्म एकोकी वचन है, वह वेद में है, वेद नाम प्रकाश का हैं, ज्ञान प्रकाश को कहते हैं, ज्ञान होना चाहिए। विवेक होना चाहिए। परन्तु देखो, उसी का नाम धर्म है, यह नाना धर्मों को आधुनिक काल का समाज अपना कर नाना धर्म कहता है। धर्म जब एक है, तो नाना धर्म क्यों कहता हैं? नाना धर्म इसीलिए कहता है क्योंकि मानो देखो, द्रव्य की आभा में द्रव्य की लोलुपता में मानो देखो, अपने को स्वीकार कर रहा हैं। मानो देखो, वह इसीलिए कह रहा है जब धर्म एक है तो नाना धर्म नही हो सकते इसी प्रकार मैं विवेचना विशेष देना नही चाहता हूँ, पूज्यपाद से आज्ञा पांऊगा। पूज्यपाद गुरुदेव मानो देखो, आगे की चर्चाएं तो पूज्यपाद गुरुदेव तो प्रगट करेंगें, मैं इस वनों में जाने के लिए मानो योग्य नही हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव समीप कल मैं गुरुदेव से प्रार्थना करूंगा कि वह जो प्राण चिकित्सा की चर्चाएं हैं, और कुछ और चर्चाए है, वह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कल प्रगट करेंगें। हमने कुछ अनुसन्धानत्मक कुछ चर्चाएं की हैं, मानो देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे इसका पूज्यपाद गुरुदेव ही वर्णन करते रहते हैं। आज का यह वाक् समाप्त अब पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने बहुत-सी नवीन, चर्चाएं की हैं। कुछ चर्चाएं बड़ी अनुसन्धान युक्त हैं, अनुसन्धान का विषय है, परन्तु इसके ऊपर राष्ट्रीयता, विशेषकर बलवती होनी चाहिए,

क्योंकि यह अनुसन्धान का विषय, परमात्मा का विज्ञान हैं, वेद के कुछ मन्त्र, इस प्रकार के है जो मन्त्रों में इसीलिए विद्या नई नही हैं, परन्तु देखो, ऊपर मानव को अनुसन्धान करना हैं, हमारा भी यह विचार आता रहता हैं, इन विचारों में, मानो हम संलग्न हो करके, वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं। कल दोनो की कुछ चर्चाएं, उत्तर प्रश्नों के रूपों में हो सकेंगी, आज का विचार समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा। ओ३म् ब्रह्म भू रेवं आभ्यां ऋषि वन्धनाः वाचन्न रथा मां ब्रीहिशष्यां गायन्ताः मारणं भद्रा श्वञ्जना माहं ऋषि गताः आभ्यां रूद्रो भागश्चमा रथं ......।

८ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १९ १२ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का, पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का, परमपिता परमात्मा की महिमा का, गुणगान गाया जाता है। क्योंकि इस ब्रह्माण्ड में मानो वह चेतना अपना कार्य कर रही हैं, जिस चेतना में यह ब्रह्माण्ड मानो चेतनित हो रहा हैं। क्योंकि जड़वत और चेतनता में दोनो में रत्त रहने वाला वह ब्रह्म है। मानो वह महिमावादी है, जिसकी प्रतिभा, इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में ओत-प्रोत है। मानो जिसके ऊपर, मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है, क्योंकि अनुसन्धान की प्रवृत्ति मानव में होनी चाहिए क्योंकि अनुसन्धान एक सूक्ष्मतम से, व्यापकता में ले जाने का नाम है, कोई भी मानव अनुसन्धान करता हैं, वह या तो मुनिवरों! उसके जड़वत को अपनाता हैं, या मानो देखो, पूर्णासतं उसको अपनाता हैं। मानो उसको अपनाता हुआ, पूर्ण कृतियों को अपना करके, वह मुनिवरों! देखो, जड़वत में आता है, और यदि जड़वत को अपनाता है, तो मुनिवरों! देखो, वह सूक्ष्म रहस्य को, मेरे पुत्रों! वह जड़तव में ले जा करके, वह सूक्ष्मतम बनाता हैं। कोई भी प्राणी इस संसार में हो, कोई भी अनुसन्धान करने वाला हो, परन्तु उसकी अनुसन्धानमयी प्रवृत्ति रहनी ही चाहिए उसकी अनुसन्धान जो प्रवृत्ति है वही मानो उसको जड़वत से चेतना में ले जाती है। क्योंकि चेतना में रत्त रहना ही, अपनी चेतना को जानना, मानो सर्वोपरि वास्तविकता है विज्ञान की एक महान धारा और व्यापकता में रत्त रहना। तो मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में, हमने तुम्हें निर्णय कराते हुए कहा था कि मानव को अनुसन्धान करना है, सबसे प्रथम अपनी प्रवृत्तियों के ऊपर अनुसन्धान करना है। उसके पश्चात वह बाह्य जगत में वह प्रवेश करता है, तो बाह्य प्रवृत्तियों के ऊपर अनुसन्धान करता हुआ, वह मानो देखो, उसे आभा में ले जाता है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही मानो अनुसन्धान की प्रवृत्तियों में, मानव रत्त रह जाता हैं।

तो विचार-विनिमय यह कि हमारा वेद का मन्त्र, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है, उस प्रेरणा का जो स्रोत है, वह मानव का हृदय हैं उस मानव के हृदय में मानो देखो, ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु समाहित रहती हैं, जिस ब्रह्माण्ड की तरंगों में, तरंगित होता हुआ, अपने हृदय में रत्त रहता हुआ अपने में भावित हो जाता है। तो विचार-विनिमय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की प्रतिभा, अथवा उसकी महानता को अपनाने का प्रयास करें, और उसकी महानता के ऊपर अनुसन्धान अपने हृदय, अगम्यी ज्योति को ले जाते हुए, अपने में मानो अनुसन्धानित होना है। और अपनी मानो जड़वत से, चेतना को अपने जीवन को मानो चेतना में रत्त रहना हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह हमारा वेद का मानो नाना प्रकार की प्रेरणा का स्रोत वेद का मन्त्र बना हुआ हैं। जैसे मुनिवरों! देखो, मेरे पुत्र ने, इससे पूर्व काल में मानो बहुत से वाक् इन्होंने प्रगट किए हैं जैसा इन्होंने यागों के सम्बन्ध में, अपनी विवेचना प्रगट की हैं, मानो याग के सम्बन्ध में नाना प्रकार के यागों का चलन, नाना प्रकार के रुग्णों का सम्बन्ध मेरे पुत्रों! देखो, इसकी आभा में रहता है। परन्तु देखो, जहाँ प्राण शक्ति को, हम संचालित करते हैं उसे मानो देखो, प्राण की देखो, एक धारा में रमण कराते हैं, तो नाना प्रकार की औषधियों का, एक विषय बन जाता है। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में, निर्णय देते हुए कहा था, कि हमारे यहां सम्भवितां ब्रह्मणं लोकां वस्तो वाचन्नमा देवत्यां लोकाः हिरण्यमयी रथाः मेरे पुत्रों! देखो, हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है, कि हमारे यहाँ, प्राण के संचार के लिए, नाना प्रकार के रूपों में, यह मानव गति करता रहा है, मानो जैसे हमारे यहाँ, मानो देखो, एक साधना का स्रोत हैं, एक स्रोत नाना प्रकार के रूग्णों का है, जब हम मानो देखो, प्राण स्रोत हम देखो, एक साधना

के श्रोत्रों में ले जाते हैं, तो साधना के श्रोत्रों में प्राण की एक कृतिका को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास करते हैं। सूत्रों में, जब प्राण मानो सूत्र में जब सूत्रित हो जाता है, तो उसी सूत्र को उसी सूत्र में रत्त रहने से मेरे प्यारे! देखो, उस आभा में रमण करने वाला है मानो उसी सूत्र को हमें विचारना है, जिसके ऊपर मानो अपने में साधना में परिणत हो जाता है। जब यज्ञमान मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में विद्यमान होता है, तो याग से पूर्व अपने को साधक बनाता है। मुझे बहुत पुरातन काल की वार्त्ताएं, स्मरण आने लगती हैं, यज्ञमान अपने को साधक बनाता है, साधक बना करके उन औषधियों का पान करता हैं। जिन औषधियों में स्थूलता, मानो सूक्ष्म होती हैं, और सूक्ष्म तरंगें, उसमें विशेष होती हैं। जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में, यागों के सम्बन्ध में, मानो क्रियात्मक अपने जीवन को ले जाते हुए कहा था, क्या यज्ञमान जब मानो यज्ञशाला में पूर्वामुख हो करके विद्यमान होता है, तो मानो देखो, अपने में प्रथम भूमिका बनाता हैं, अपने चरित्र की भूमिका को बनाता है, अपने आहार की भूमिका को बनाता हैं, मानो वह पदार्थों का वह पान नही करना, जिन पदार्थों में वासना की तरंगें ओत-प्रोत हैं, जिन तरंगों में मस्तिष्क का सन्तुलन मानो देखो, मस्तिष्क को अभ्रत करने वाला हो, एक वह पदार्थ नही होना चाहिए, जिससे मानव को मानो देखो, मानव को शून्य गति में ले जाने वाला हो, इस प्रकार के यज्ञमान को प्रथम यह नियमावली बनानी होती हैं।

मैंने बहुत पुरातन काल में, बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं, जिस काल में मानो देखो, महाराजा त्रि वर्धा बहु ब्रह्म लोकाः मानो देखो, महाराज रावण के वैद्यराज सुधन्वा जब याग कर्म करते थे तो उन यागों में, उस साकल्य को प्रदान करना जिस साकल्यों से बुद्धि के, ज्ञान के तन्तु का स्पष्टीकरण हो जाएं। मानो ज्ञान के तन्तु, एक स्पष्ट रूपों में आ जाएं, क्योंकि यह जो मानव का मस्तिष्क है, मानव के मस्तिष्क के अग्र भाग में मानो ईंगला, पिंगला, सुषुम्ना नाम की नाड़ी कहलाती हैं, उन नाड़ियों में से बहुत-सी सूक्ष्म नाडियां मानो ज्ञानवाहक बन करके नाड़ी देखो, ब्रह्मरन्ध्र के वेश को गति करती हैं जब ब्रह्मरन्ध्र के वेश को वह नाड़ियाँ गति करती है तो उनका सम्बन्ध मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र से होता हुआ, पिपाद स्थान से होता हुआ, मानो देखो, परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है परोक्ष रूप में, उसके मानो देखो, नाड़ी मानो उससे समन्वय होता हैं। उन नाड़ियों का समन्वय होते हुए, जैसे हमारे यहाँ पुरातन काल में, प्रसंग आता रहता हैं, क्या वह जो हम आहुति देते हैं, जैसे वेद का मन्त्र आया है, बृहस्पति को देवता बना करके उसका साकल्य और उसकी अग्नि में आहुति देते हैं, अग्नि उस आहुति की तरंगों को मानो देखो, बृहस्पति लोक में पंहुचा देती हैं, उसी तरंगों को, वह ध्रुव मण्डल में पंहुचा देती है, उसी तरंगों को, वह आदित्य लोक में पंहुचा देती हैं। उन्ही तरंगों को चन्द्रमा के देश में पंहुचा देती है। परिणाम यह होता हैं, क्या वह जब वह वाहक नाड़ियो का ऊर्ध्वा मुख बन करके, मानो देखो, ज्ञान के क्षेत्र में, जब वह प्रवेश करता है, तो मानो वह जो नस नाड़ियों का समूह होता है, वह उसी लोक का होता है, और उसी लोक में वह पुनः उसको प्राप्त होती रहती हैं। मानो देखो, इसीलिए, वह विज्ञान हमारे यहाँ, यह विज्ञान एक परम्परागतों में एक मान्य रहा है, जब वेद की हम तरंगों में प्रवेश करते रहे हैं।

वह काल मुझे स्मरण आता रहा है जब पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में, विद्यमान हो करके नाना प्रकार की औषधियों का पान करते हुए, मानो देखो, जब पुत्रों भवा सम्भवो जब महानन्द जी का वह समय आया था, जब वह साधना के क्षेत्र में पंहुचे तो सर्पकेतनी नामक एक औषध होती हैं, सर्प केतनी नामक जो औषध होती हैं, उसका आसन बना करके और मानो देखो, उस आसन पर विद्यमान हो करके, वह साधना के क्षेत्र में, मानो वह साधना के क्षेत्र में जब प्रवेश होता हैं, तो मन की जो चंचलता है, वह एकाग्र हो जाती है। एकाग्र हो करके मानो देखो, उस औषधि को सर्पराज मानो उस औषध को स्पर्श नही करता, स्पर्श न करने से उसमें प्राण शक्ति,

विशेषकर होती हैं। मानो देखो, पृथ्वी को वह विशेष कराता है। अपने में ग्रहण करती है। वह साधक के लिए मानो देखो, महान उपयोगी बनती हैं।

तो इसी प्रकार मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान वैदिक साहित्य में हमें प्रायः प्राप्त होता है, रहा यह कि हम मानो रूग्णों मं ओत-प्रोत हो गएं हैं मानो देखो, अपने अद्मा प्राण सुते मेरे पुत्र महानन्द जी ने बहुत से वृक्षों का वर्णन कराया हैं, परन्तु वह भी पुरातन काल में देखो, इनके ऊपर प्रायः अनुसन्धान होता रहा हैं। हमारे यहाँ, शिक्षा प्रणाली में मानो देखो, राजाओं का यह नियम होता था, प्रत्येक ब्रह्मचारी, प्रत्येक कन्या विद्यार्थी, छात्र छात्रिकाओं को वेद विद्यालय में प्रवेश करने के पश्चात मानो देखो, सर्वत्र प्रकार का ज्ञान विज्ञान का वर्णन उन्हें कराया जाता। मुझे स्मरण आता रहता है जब महाराज अश्वपति के यहाँ, वेद का विज्ञान मानो वेद की विद्या का अध्ययन अथवा कार्य करने का कुछ सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। तो मानो उस समय छात्र छात्रिकाओं को यह विद्या देना, यह आचार्य कर्तव्य है। क्या सबसे प्रथम वह शारीरिक विज्ञान के ऊपर अपने विवेचना करता है, यह शरीर क्या है, मानो देखो, यह शरीर के ऊपर मानो देखो, चौबीस खम्बो वाले, शरीर का वर्णन करता है सबसे प्रथम वह कहता है। क्या इस मानव शरीर में चौबीस खम्बे कहलाते हैं। मानो दस प्राण है, दस इन्द्रियाँ है, मन और बुद्धि चित्त अहंकार कहलाते हैं। परन्तु मन, बुद्धि, चित्त अहंकार, यह सर्वत्र अगम्य ज्योति कहलाती हैं इसी प्रकार इसके विज्ञान का वर्णन करना भी प्रायः क्या-क्या कार्य करता हैं, प्राण का जब योगी मिलान करता है, अपने में समाहित करता है, तो योगेश्वर बन करके ब्रह्माण्ड को अपने में मानो देखो, सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में रत्त हो जाता है। इसी प्रकार जब वह ब्रह्माण्ड में रत्त हो जाता हैं तो एक व्यान प्राण संस्कारों का केन्द्र हैं। यह ज्ञान कराना शरीरिक विज्ञान के ऊपर विवेचना देना इसके पश्चात मानो देखो, आयुर्वेद के ऊपर वह परिणात करते थे। हे ब्रह्मचारियों! आओ, मैं तुम्हें आयुर्वेद के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, मैं मानो देखो, एक रज से ले करके वह मानो भूमि में बहुत-सी प्रकार रज प्रकार की होती है, जिनको जल में मन्थन करने से बहुत से रूग्णों में मानो देखो, वह कार्य में आती है, जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में मानो वर्णन करते हुए कहा था कि नाभि से निचला जो भाग होता हैं, वह मानो देखो, पृथ्वी के जल से मन्थन किए हुए, मानो देखो, जिस स्थान पर मानो देखो, सदैव जल रहता हो, जल स्थली रहती हो मानो देखो, उस रज को ले करके मानो उसका पिण्ड बना करके नाभि प्रवेश में, उसको स्थिर करने से मानो देखो, उसमें जो उष्म सा अग्नि का प्रकोप आ गया हैं, या जल अग्नि में प्रवेश कर गया हैं, मानो देखो, उसके स्थिर करने से मानो देखो, उसमें शीतलता का क्षेत्र बन जाता हैं। शीतल क्षेत्र बन करके उसमे जो उष्णाता आ गई है, वह मानो देखो, वह समाप्त हो जाती हैं। इसी प्रकार, हमारे यहाँ ऐसा माना गया हैं, मानो देखो, बहुत से, ऐसे-ऐसे अप्रात ऐसी-ऐसी पृथ्वी की रज हैं, जिसमें मानो देखो, जल सदैव रहने वाला हैं, जल का मानो देखो, प्रारम्भ का भाग ले करके, मध्य का भाग ले करके, और उससे मानो देखो, तृतीय पदा में, ऊर्ध्वा में भाग लेने से, तीन समय की, रज लेने से उसको मानो देखो, जिस मानव को, बहुत-सा अस्वात हो गया हैं, मानो देखो, उसमें अग्नि का प्रकोप हो गया हैं, उस अग्नि के प्रकोप होने पर, मानो देखो, उसका लेपन करने से, उसमें कुछ इस प्रकार की और धातुओं का मिश्रण होता है, तो उसका लेपन करने से, उस मानव के शरीर में मानो देखो, अग्नि प्रवेश में, अग्नि की धाराओं में मानो वह प्रवेश प्रति कटिवस्त्र में प्राप्त हो जाता हैं, जब कटिवस्त्रा में, वह प्राप्त हो जाता है तो मानो उसकी धारा विचित्र बन जाती हैं, मानो देखो, उसके बहुत से रूग्ण समाप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार देखो, अग्नि के श्वंधनं, जिसमें अग्नि प्रवेश विशेष रहा हो, वहाँ का रज ले करके, उसे अग्नि में मन्थन करके मानो देखो, शीतकाल का समय हो, उसका मन्थन करने के पश्चात जल को उसमें मिश्रित करके जो मानो देखो, उसके ब्रह्मरन्ध्र के ऊर्ध्वा भाग में, प्रवेश करता है, तो मानो उसके मस्तिष्क की जो नस नाड़ियाँ हैं, वह ज्ञान वाहक

नाड़ियां में, मानो देखो, विशेषकर सहायक होता हैं। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में पुत्रों! विशेष चर्चा करने नही जा रहा हूँ।

पूज्य महानन्द जीः- क्या गुरुदेव जैसा पृथ्वी के रजों का वर्णन पीत वर्ण में भी आता हैं और गौर वर्ण में भी आता है और वह काला मानो देखो, कालिमा के वर्ण में भी आता है तो इसका आप क्या वर्णन करेंगें।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मानो देखो, जैसे पीत वर्ण रज का है उस रज का अग्नि में एक पिण्ड बनाया जाता हैं, जल में, और उसको अग्नि में तपाने के पश्चात, मानो उसको इतना खरल कर देना चाहिए, तो वह जितने भी यह दन्त रूग्ण है, इनका मानो देखो, इनका निदान इनसे हो जाता हैं। परिणाम यह इतना सूक्ष्म मानो देखो, उसका खरल होना चाहिए, क्या वह बहुत ही सूक्ष्मता में आ जाएं। इसी प्रकार जैसे यह मानो यह गौर वर्ण की हैं, गौर वर्ण को ले करके, जब उसमें मानो देखो, बहुत से परमाणु इस प्रकार के हैं जो पीत वर्ण के होते हैं, वह उसके द्वार पर नही आते, इसी प्रकार हमारे यहाँ बहुत से, इस प्रकार के रूग्ण वाले, मानो परमाणु उत्पन्न हो जाते हैं, वह उसको शान्त कर देती हैं। इसी प्रकार देखो, जैसे हमारे यहाँ कालिमा वर्ण की मानो जो रज होती हैं, उसको भी उसका पिण्ड बना करके, उसको भिन्न-भिन्न देखो, अंगों में प्रवेश किया जाता है। नेत्रों के ऊपरले भाग में, जैसे कण्ठ के निचरले भाग में, जैसे नाभि के निचले भाग में, मानो देखो, मानव के पश्चिम भाग में भी उसका आवेदन होता है। तो उसको प्रवेश करने से मानो देखो, कुछ घड़ी रहने से, उसमें बहुत से रूग्णों का जैसे अग्नि क्योंकि तीन प्रकार के जो दोषारोपण होते हैं उनमें मानो देखो, वह सहायक बना करते है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो रज हैं, क्योंकि जिस रज में, मानो श्वंधनं नाना प्रकार की औषधियों का निदान, हिमालय की कन्दराओं में होता रहा है, वहाँ का रज ले करके भी कुछ कार्यवत हो सकते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, पुत्र! ऐसा हमारे यहाँ माना गया हैं हमारे यहाँ यह माना है कि शन्ध्य, कृतिकां और श्वेत्ता ये मानो देखो, तीन वर्ण की औषध होती हैं, ये तीन वर्णों की जो औषध है मानो देखो, इन्हीं के द्वारा, मानो वह लेपन करने से, मस्तिष्क में तो मस्तिष्क की नस नाडियां सूक्ष्म शीतलता को प्राप्त होती रहती हैं। जो परन्तु मैं तुम्हें वही ले जाना चाहता हूँ, मानो देखो, यह जो सबसे प्रथम, मैं उच्चारण कर रहा था, इस प्रकार के मानो शिक्षा विद्यालयों में, मानो शिक्षा का विधान होना चाहिए, जिससे देखो, ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी मानो कोई भी हो छात्र छात्रिका उसे आयुर्वेद का ज्ञान होने लगे, उसके पश्चात वनस्पति विज्ञान में ले जाएं, वनस्पति विज्ञान में, जितनी भी औषधियां है मानो देखो, उन वृक्षों का वर्णन करना वृक्षों का ज्ञान होना, वृक्षों के ज्ञान होने पर, मानो देखो, उसकी प्रत्येक अंग का ज्ञान होना, यह आयुर्वेदाचार्यों की पृथा एक भूमिका मानी गई हैं, जैसा हमारे यहाँ विद्यालयों में, इस प्रकार की शिक्षा का विधान किया गया है। माता को विशेषकर, मानो छात्रिकाओं को विशेषकर, आयुर्वेद की प्रतिभा मानो आयुर्वेद का ज्ञान होना चाहिए, जिससे वह बालक का अपने गर्भाशय में सुन्दर रूपों से देखो, उसका निर्माण कर सके, क्योंकि निर्माण करने वाला, रचना करने वाला, प्रभु हैं, भावना और पुट देने वाली माता होती है। ऐसा हमारे आयुर्वेद आचार्यों ने माना है आयुर्वेदाचार्य कहते हैं कि-प्रभु! तो अंगों का निर्माण करता है, परन्तु अंगों में जो पुट देता है, वह माता देती हैं। जैसे औषधियां भिन्न-भिन्न प्रकार की स्थिर है, जैसे हमें स्वर्ण की स्वर्ण को हमें अग्नि में तपा करके, स्वर्ण को हमें शुद्ध रूप बनाना हैं। परन्तु जैसे पारे का शुद्ध रूप बनाना है, मानो जैसे गन्धिका को, उसमें मिश्रण कराना हैं। तो उनकी जो पुट देने वाला है वह वैद्यराज होता है। तो इसी प्रकार माता जो होती है, वह वैद्यराज की भांति होती है। वह मानो माता उस बालक के संस्कारों में पुट प्रदान करती रहती हैं, पुट देती रहती है। जो माता प्रायः भक्ष्य अभक्ष्य पदार्थों का विचार नही करती मानो देखो, वह अपने जीवन में वह एक पामर प्रवृत्ति को जन्म दे रही हैं, जो माता मानो देखो, अपने शरीर को दूसरे के रक्तों से

पान करना चाहती है, उदर की रसना के स्वादिष्ट पदार्थों में प्रवेश करना चाहती हैं, मानो वह बाल्यों को आगे सन्तति आने वालां को मानो विष प्रदान कर रही हैं। इसी प्रकार हमारे यहाँ ऐसा विचारको ने माना हैं। परम्परागतों से यह विचारधारा मानवीय मस्तिष्कों में, आयुर्वेदाचार्यों के मस्तिष्कों में रही है। मानो आयुर्वेदाचार्यों ने देखो, उन्हें पुट दी हैं, जिन पुटों को मस्तिष्क की आभा में गति कराया जाता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या भगवन! माता पुट कैसे देती हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! यह पुट इस प्रकार देती है जैसे प्रथम माह का प्रारम्भ हुआ, प्रथम माह का, द्वितीय माह का जैसे प्रारम्भ हुआ, तो उस समय कुछ औषधियों का पान, विचारों को सन्तुलित बनाया जाता हैं। परन्तु देखो, तृतीय माह में, उसकी मानो देखो, रसों का परिपक्व बनना, उससे देखो, शीतली प्राणायाम करना, रेचिका प्राणायाम करना, दोनों को करने से क्योंकि परमाणुओं में पुष्टिवाद आ जाता है। तो पुष्टिका आने के पश्चात, मानो देखो, उसके जब चतुर्थ माह होता हैं, तो अंगों का व्यवसाय जाता है, निर्माण हो जाता है। निर्माण होने से उसकी निर्माणधारा के जन्म होने पर मानो देखो, माता को तीखें-तीक्ष्ण पदार्थों का पान नही करना चाहिए, शीतल पदार्थ होने चाहिए, पुष्टिकारक हो, बुद्धिवर्धक हों, देखो, राग द्वेष से रहित होने वाले शब्द हों, जिससे मानो देखो, उस भूमिका में आदि का बन करके मानो देखो, उसमें पौष्टिक उत्पति हो सकती हैं। इसी प्रकार प्रत्येक माह का, माह की पृट होती है, नवें माह में मानो देखो, प्रभु का स्मरण करना, प्रभु के विज्ञान को विचारना, प्रभु के ज्ञान, विज्ञान की धाराओं पर जाना, कैसे उड़ान उड़नी है? कैसे योगेश्वर बनना हैं? कैसे मानो देखो, योगेश्वर की उड़ान उड़ना हैं। इस प्रकार माता को, अपने विचारों को बनाना हैं, बनाने के पश्चात, वह माता पुट देती रहती हैं, देने के पश्चात मानो देखो, वह बालक रूग्ण में प्राप्त नही होता। बहुत से रूग्ण इस प्रकार के होते हैं, जो माता के गर्भस्थल में उन परमाणुओं का जन्म हो जाता हैं। परन्तु देखो, तीखे पदार्थ पान करने से माता के शरीरों में मानो देखो, उसकी भूमिका बन जाती है। उसके पश्चात जब वह बालक बाह्य जगत में आता है, कुछ मानो देखो, मध्य आयु में वह आया वह रूग्ण जागरूक हो जाते हैं, वह मानो अपने परमाणुओं को सहकारी बना लेते हैं। कुछ मानो देखो, वृद्ध काल में, कुछ मध्य रूपी रेखा में परिणत हो करके मानो अंग भंग हो जाते हैं।

परिणाम क्या हैं मानो देखो, इस प्रकार की यह विद्या हमें वैदिक साहित्य में आयुर्वेद में हमें प्राप्त होती हैं परन्तु देखो, माता को वनस्पतियों का विज्ञान होना चाहिए। मुझे स्मरण है, मानो देखो, हमारे यहाँ बहुत-सी माता, इस प्रकार की हुई हैं जिन्होंने देखो, इस वनस्पति विज्ञान को व्यापक रूपों से जाना हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो आधुनिक जो जगत हैं यह जो आयुर्वेद का विज्ञान हैं, यह हिंसा पर आधारित है, कुछ वनस्पतियों पर आधारित हैं तो क्या इसमें हिंसा नही होनी चाहिए?

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र कहीं-कहीं हिंसा का भी मानो देखो, वर्णन आता है, कहीं-कहीं आता है, ऐसा व्यापक रूप से नही हैं। परन्तु वह कहीं आता है, परन्तु जब विचारकों ने उसके ऊपर अनुसन्धान किया हैं, तो वह भी अधूरेपन में परिणत हो गया, वह पूर्ण रूपेण नही होता जैसे हमारे यहाँ एक ऋषि हुए हैं, जिनका नाम रोहिणी केतु नामक ऋषि थे, वह उद्दालक गोत्रीय कहलाते थे। उन्होंने एक समय, वनस्पति विज्ञान के ऊपर और वह हिंसा प्रवृत्ति में परिणत हो गएं तो हिंसा प्रवृत्ति में उनकी एक धारा यह बनी क्या जैसे एक मानो पखेरू है, क्या प्राणी है, वह वन में रहता है, नाना प्रकार की वनस्पतियों को मानो वह पान करता हैं, यदि उसके रक्त में उस वनस्पति का रस आ गया हैं, तो उसके रस को पान कर लेना चाहिए। परन्तु उसका प्राणान्त हो जाएं, इसके रस को ले लिया जाएं, उस रस से मानो उसमें बलवती आ जाएगी, प्रायः मानो देखो, यह उनका यह सिद्धान्त रहा, उन्होंने बहुत से प्राणियों को पुरातन काल में देखो, उन्होंने निर्जीव किए, और उनके रसों को ले करके मानो देखो, प्राणों की रक्षा

करने में, वह सिद्ध हो गएं परन्तु देखो, ऐसा प्रायः प्राप्त होता है। परन्तु आयुर्वेद यह कहता है वनस्पति विज्ञान यह कहता है, जैसे मानो सर्पकेतु औषध है, यदि उसके रस को ले लिया जाएं, तो सर्प को नष्ट करने से प्राणों को लेने से भी रस को लिया जाता हैं, उसकी अस्थियों को खरल करके मानो देखो, चूर्ण बना दिया जाता हैं, तो मानो देखो, जो उसमें विशेष गुण होते हैं, सर्पकेतु नामक औषध में होते हैं। मानो देखो, उसके रस को विशेषकर पचास गुणा, लाभप्रद मानो देखो, उससे लगभग उससे औषधियों का गुण होता हैं। मानो उसको पान करने से, मानव के देखो, नाना रूग्ण समाप्त हो जाते हैं। जो सर्प के रस को लेने से, बहुत से रूग्णों की उत्पति हो जाती हैं। परन्तु देखो, बहुत से रूग्ण शान्त होते हैं। सर्पकेतु औषध मानो पचीस प्रकार की होती हैं। पचीस प्रकार की औषधियों का रस लेने से मानो देखो, जो श्वातम जो विष होता हैं, वह उन औषधियों से समाप्त हो जाता हैं। परिमणाम उसका यह होता है क्या वह औषध मानो देखो, वन में प्राप्त होती हैं, उस औषधि का जहो रंग रूप होता हैं वह कालिमा पर होता हैं देखो, जिस प्रकार सर्प भूमि पर गति करता हैं इसी प्रकार मानो उसका जाल बन जाता हैं, उसकी यह ग्रीत कहलाई जाती है, परन्तु देखो, इसके ऊपर मैं विशेष नही विवेचना देने नही आया हूँ मानो देखो, एक-एक औषध के बहुत से, गुणों का वर्णन आता रहता हैं। परिणाम क्या है? कहीं यह श्रवण किया होगा, क्या हमारे यहाँ यह भी एक धारा अनुसन्धान की रही हैं क्या हिंसा के विश्वास करने वालों ने, हिंसा के ऊपर रूग्णों को देखो, समाप्त किया हैं। परन्तु जो रूग्ण हिंसा से समाप्त हो सकते हैं, परन्तु वही रूग्ण मानो देखो, औषधियों से जा सकते हैं जैसे हमारे यहाँ ब्रमनकृति होती हैं, उसको खरल करने से, उसको हम पान करने से बहुत से रूग्ण समाप्त होते हैं। परन्तु देखो, जो हिंसा से कार्यों में नही आ पाते, परन्तु देखो, मैं इस विषय को गम्भीर न ले जाता हुआ, विचार-विनिमय यह कि विद्यालयों में, इस प्रकार की शिक्षा प्रत्येक मानव ब्रह्मचारियों के मस्तिष्कों में मानो वर्णित करा देनी चाहिए, जिससे उनका जीवन महानता में परिणत होता हुआ, अनुसन्धानित होता हुआ अनुसन्धान करने वाले हों। इसी प्रकार, जब इस प्रकार का विज्ञान किसी काल में पुत्र! हमारे यहाँ रहा हैं परन्तु देखो, वह काल कितना महान हैं।

पूज्य महानन्द जीः- पूज्यपाद! इसमें तो कोई सन्देश नही है यह काल भगवान राम के काल में भी रहा हैं, यह काल लंकापुरी में रावण के काल में भी रहा हैं, यह ऐसा विज्ञान का काल मानो देखो, सतोयुग के कालों में भी रहा हैं मध्यकालीन द्वापर के प्रारम्भ में भी इस प्रकार की बहुत-सी औषधियां रही हैं, जिससे देखो, यह संसार स्वर्ग के तुल्य बना हैं। देखो, रूढ़ियों का, रूढ़ियों का न होना यह मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान की सबसे महान सफलता कहलाई जाती हैं। हमारे यहाँ वैदिक विज्ञान में यह माना गया है। अब तो भगवन! जैसा आपने औषधियों का वर्णन किया है, इस प्रकार के विज्ञान की अनुसन्धान की, आधुनिक जगत में हो तो रहा हैं परन्तु मानो जो हम अध्ययन करते हैं, उसके निचले भाग में आधुनिक जगत का विज्ञान चला जाता हैं। परन्तु देखो, जहाँ जो औषध विज्ञान का अनुकरण है, यह नाना प्रकार की विज्ञान में धारा परिणत हो रही हैं, क्या इसको भगवन! मैंने आप को कल नही उच्चारण किया परन्तु मैंने आधुनिक जगत में इस प्रकार की बहुत-सी औषधियों का निरूपण हो रहा हैं। औषधियों का जागरूक भी हो रहा हैं। जो हिंसा के ऊपर आधारित हैं। परन्तु वनस्पति विज्ञान को वह यह कहते हैं कि यह वृद्ध हो गया हैं, परन्तु आपके कथनानुसार जब हम उन विचारों पर जाना चाहते हैं। वह वृद्ध नही हो गया है, विचारक वृद्ध हो गएं हैं, परन्तु विचार वृद्ध नही हुआ हैं। इसीलिए देखो, यह जो विज्ञान औषध है, यह औषध वृद्ध नही हुआ हैं, परन्तु देखो, उस पर विचार-विनिमय करने वाले वृद्ध हो गएं हैं और वृद्ध होने से उसकी वृद्धावस्था का परिणाम यह है कि यह संसार रसातल को चला जा रहा हैं, वह जो देखो, अकस्मात आधुनिक जगत का जो युवक समाज है, मेरी जो पुत्र पुत्रियाँ है, मानो देखो, उनके देखो, एक जीवन में एक कुठाराघात था

मानो देखो, उनके जीवन का आयुर्वेद का वैज्ञानिक कर रहा हैं उनके आहार और व्यवहारों में, इस प्रकार की मानो देखो, इस प्रकार का आहार बना दिया हैं। जिससे देखो, आधुनिक काल का युवक रसातल को चला जा रहा हैं। मानो देखो, उस आहार से न तो विचार बनते हैं, न इस आहार से मानो प्रीति बनती हैं, न उस आहार से मानो राष्ट्रीयता का विचार रहा है, उसमें एक स्वार्थवाद की परता परिणत हो रही हैं। जो मानो संसार में दूसरों के रक्तों को पान करने वाला है, उनमें प्रायः स्वार्थता की प्रतिभा उत्पन्न हो जाती हैं और वह जो स्वार्थवाद आ जाता हैं, वह समाज के लिए, गृह के लिए, राष्ट्र के लिए मानो देखो, घातक बन करके रहता हैं। उससे यह संदेह बना रहता हैं, क्या राष्ट्र में कहीं रक्त भरी क्रान्ति न आ जाएं, जिससे मानो देखो, स्वार्थ जब बलवती हो जाता हैं, द्रव्य के ऊपर ही समाज का जीवन निर्धारित हो जाता हैं।

तो मानो प्रायः ऐसा प्रतीत होता हैं, भगवन! क्या यह समाज रक्त के मार्ग को मानो देखो, अग्नि के मार्ग को अपना रहा है, मानो देखो, मुझे आज के वैज्ञानिकों पर आश्चर्य तो आता है, चाहे वह आयुर्वेद का वैज्ञानिक हो, चाहे वह परमाणुवाद का वैज्ञानिक हो, चाहे वह मानो देखो, अनुसन्धानवेत्ता हो, चाहे वह देखो, राष्ट्र व्यवसाय बन रहा हैं, जिस काल में भी भगवन! आपको तो अनुभव हैं, बहुत समय को मैंने भी आपकी कृपा से दृष्टिपात किया है। परन्तु देखो, जिस भी काल में राष्ट्र व्यवसायी बन गया हैं, राष्ट्र में द्रव्य की लोलुपता आ गई हैं, उसी काल में क्योंकि देखो, जब राष्ट्र लोलुपता में, द्रव्य की लोलुपतता में आ जाता है, व्यवसायी बन जाता हैं उस काल में देखो, व्यवसायी जो प्राणी होता हैं, उसे अपने द्रव्य से होता है समाज कही चला जाओ, मानो देखो, उसे द्रव्य चाहिए, समाज के चरित्र के ऊपर उसका विचार-विनिमय नही होता जिसके लिए राष्ट्र का निर्माण हुआ हैं जैसे मानो देखो, आधुनिक जगत के समाज में, राष्ट्र में सुरापान की प्रवृत्ति को मानो देखो, असुर प्रवृत्ति को समाप्त करना चाहिए, वहाँ असुर प्रवृत्ति का जन्म दिया जा रहा है। असुर प्रवृत्तियों को जन्म देने से ऐसा प्रतीत होता है, क्या असुर प्रवृत्ति बलवती हो जाएगी। क्योंकि एक आत्म चेतना मानव शरीर में अपना कार्य कर रही हैं आत्म चेतना की जो क्षुधा लगी हुई है, मानो उससे प्राणी दूरी नही जा पाता, परन्तु देखो, सुरापान करने वाला मानो देखो, राष्ट्र के लिए यह राजा ही इसका देखो, दोषी कहलाया जाता हैं। मेरे तत्त्वाधान में तो ऐसा प्रतीत होता हैं, जैसा राष्ट्र कलह बन रहा हैं राष्ट्र ही दोषी है क्योंकि राष्ट्र में व्यवसाय होने से वह ऐसे तत्त्वों का जन्म देता है समाज को मानो देखो, जिससे समाज में रक्तोमयी देखो, उसका जीवन बन जाएं रक्तोमयी देखो, क्रान्ति देखो, आ जाएं और पद की लोलुपता के लिए, वह समाज में मानो देखो, असुरी प्रवृत्ति का, एक द्यौतक बना हुआ हैं, परन्तु जब मैं इन विचारों के ऊपर भगवन! विचार करता हूँ, तत्वयुक्त हो करके व्यवसाय के ऊपर विचार-विनिमय करता हूँ तो आश्चर्यचकित मुझे ये समाज प्रतीत होता हैं इसमें मानो मेरी पुत्रियाँ हैं, मेरा युवक समाज है परन्तु देखो, इसके ऊपर हमारा विचित्र बनने वाले हैं, भावी आने वाला समाज भी इसके ऊपर निर्धारित होता है, और देखो, राष्ट्र देखो, इसके ऊपर कुठाराघात कर रहा हैं। वह कुठाराघात क्यों कर रहा हैं? क्योंकि उसके सुरापान की आहार की, प्रवृत्तियों में, समाज को ले जा रहा हैं।

मुझे स्मरण आता रहता है जिस काल में महाराजा दुर्वासा की पतिका थी महाराजा दुर्वासा विज्ञान के मानो द्यौतक कहलाए जाते थे वह जहाँ से मानो देखो, हमारी आकाशवाणी जा रही हैं पृथ्वी मण्डल पर मानो देखो, वह महाराज दुर्योधन के पूज्य गुरु होते थे उनके द्वारा मानो क्रोध की मात्रा तो थी, परन्तु देखो, उनका विज्ञान बड़ा सार्थक कहलाया जाता था। आज उन व्यक्तियों ने, उसी भूमि पर मानो देखो, सम्प्रदायी प्रवृत्तियों का देखो, वह मानो द्यौतक बन रहा हैं इसका कारण क्या है कि राष्ट्र में स्वार्थवाद हैं, स्वार्थवाद के कारण देखो, धर्म की, एक रूढ़ि एक ईकाई बन करके, मानव मानव का भक्षण हो रहा हैं। यह क्या है? इसके गर्भ में मुझे क्या प्रतीत होता

हैं। मैं इसके ऊपर भी जाना नही चाहता हूँ, परन्तु जहाँ महापुरूषों की पतिका रहती थी भगवान कृष्ण का जीवन एक व्यापकवाद में रमण करता रहा हैं, मानो एक जिस समाज ने जिस मानो देखो, राजाओं ने यहाँ देखो, द्वितीय राष्ट्रों से आ करके प्राणियों आश्रय दे दिया, आश्रय दे करके उसको मानो अपना स्वामी या अपना सेवक स्वीकार करके आश्रय दे करके उनके जीवन को बलवती बनाया। आधुनिक जगत मानो इस मानो देखो, सूक्ष्म रूढ़ियों के आंगन में जब जा करके मानो कहाँ चला गया हैं मानव मानव का भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा हैं एक दूसरी रूढ़ि, रूढ़ि को नष्ट करना चाहती हैं परन्तु वह नष्ट नही हो रही हैं मानो देखो, यह रूढ़ि कहती है हे मानव! तू मानो देखो, एक दूसरे के रक्त को पान मत कर परन्तु वह रूढ़ियाँ रक्त के पान करने के लिए तत्पर होने जा रही हैं तत्पर हो रही हैं, इसका दोषी कौन हैं? इसका दोषी राजा हैं। जो समाज को, अपने कर्तव्यवाद में लाने में, देखो, असफल ही मुझे दृष्टिपात होता हैं। मैं एक राष्ट्र की चर्चा नही कर रहा हूँ, संसार के देखो, पृथ्वी मण्डल के राष्ट्रों की चर्चा कर रहा हूँ, क्योंकि उनमें सबमें एक व्यवसाय स्वार्थ की प्रवृत्तियां उत्पन्न हो रही है इसी प्रकार देखो, जब इस प्रकार की धारा, गृह में, राष्ट्र में प्रव्रत्त हो जाती हैं, तो उस काल में देखो, रक्त भरी क्रान्ति का यह द्यौतक बन करके यह अपने में अशुद्धियों का परिणत करता हुआ, अपने में देखो, शान्त मुद्रा में विद्यमान हो जाता हैं।

तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आप औषध विज्ञान की चर्चा कर रहे हैं, मुझे आश्चर्य आता रहता हैं मैं आपसे प्रश्न करता रहता हूँ, आपकी मानो देखो, वार्त्ता को लाने के लिए मैं समाज को यह दृष्टिपात में लगा रहता हूँ, कि पूज्यपाद गुरुदेव के मुखारबिन्दु से ज्ञान की तरंगों का जन्म हो जाएं, जो तरंगें मानो देखो, उद्बुद्ध हो करके तरंगें मानो शान्त होती हैं, उन तरंगों को उद्बुद्ध करने के लिए मैं सदैव प्रार्थनाबद्ध करता रहता हूँ। हे मेरे पूज्यपाद! मुझे तो यह समाज ऐसा प्रतीत होता है, जैसा मानो इस चिकित्सा के गर्भ में, चिकित्सा को जानने वाले प्राणियों ने मानव के मांस को भक्षण करने की प्रवृत्तियों को जन्म दिया हैं, और जन्म देने से युवक समाज भ्रष्टता के आंगन में जा रहा हैं, मानव अपनी आभा में नही रहा है, अन्तरात्मा की हृदय की वार्त्ता को मानो वह शान्त करता रहता हैं, उपलब्ध होती है, वह उसे मानो शान्त करने के लिए तत्पर, शान्त करने में लगा हुआ हैं। जैसे हृदय से तो, प्रेरणा उत्पन्न होंगी, परन्तु देखो, उन प्रेरणाओं को दमन करने वाला, स्वार्थी, जैसे राजा अपने मे यह जानता है कि मानो देखो, मैं सुरापान की प्रवृत्ति, जो मैंने समाज मैं दी हैं, यह मेरे राष्ट्र के लिए विनाशकारक हैं, यह मेरा तो कर्तव्य नही हैं, परन्तु व्यवसाय होने से, स्वार्थ परता होने से, उन भावनाओं को वह दमन करता रहता हैं। दमनता की हुई निर्णायक आभाओं को अपनाता हुआ, वह समाज को रसातल के क्षेत्र में ले जाता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र हमारा यह विषय तो नही था जिस विषय के ऊपर तुमने अपना एक व्यक्तव्य दिया हैं। विचार-विनिमय यह चल रहा था कि हमारे यहाँ प्राण सत्ता को लाने के लिए हमें सदैव प्रयास करना है, प्राण सत्ता हमें कैसे प्राप्त होती है? औषधियों के द्वारा, आहार और व्यवहार के द्वारा, परन्तु देखो, उन औषध विज्ञान को लाने के लिए, हम औषध विज्ञान को भी नही अपनाते तो हमारे यहाँ चिकित्सा रही हैं, जिसको हम प्राण चिकित्सा कहते हैं। प्राण चिकित्सा का अभिप्रायः यह रहा है क्या प्राण को हमें लाना हैं, जिस स्थली पर प्राण अपना कार्य नही कर रहा हैं, उसे लाना है, उसे कैसे लाना है, कैसे मुद्रा के द्वारा, कैसी मुद्रा के द्वारा, रेचक के द्वारा, कुम्भक के द्वारा हमें देखो, वह प्राणायाम के द्वारा मानो देखो, उस प्राण को स्वतः अपने में पुनः लाने का पुनः प्रयास करना हैं, जिस प्रयास करने से, हमारा शरीर मानो देखो, पुनरूक्तियों से स्पष्टता के आँगन में प्रवेश होता हैं परन्तु देखो, श्वास प्राण की गतियों को हम वास्तव में अपान में समावेश करते हैं, हम अपान की धारा को, समान में समावेश कर देते हैं समान की धारा को, व्यान में समावेश करते हैं। व्यान की धारा को, हम उदान मे समावेश

करते हैं, इन पांचों प्राणों को एक दूसरे में समावेश करते हुए हम प्राणों को यह भी नही कर पा सकते तो औषध विज्ञान को प्रायः जानना है। परन्तु औषध विज्ञान को हमारे यहाँ, मानो याग के द्वारा यदि उसका नृत्त याग के द्वारा करते हैं, जैसे मैंने वर्णन किया था विष्णु याग है, रूद्र याग है, जैसे रूद्र याग की प्रतिभा आई है, रूद्र याग का मानो देखो, वर्णन आया है कि उसमें अपामार्ग और शैलखण्डा शैल कृतिभा श्वंधनी यह कुछ औषधियां ऐसी होती हैं, जिनका पान करने मानो देखो, जिनका साकल्य बनाया जाता हैं, जिनका पान करने से, मानो देखो, अग्नि में आहुति प्रदान की जाती हैं। उसका कोण भी उसी प्रकार का हो, जिस प्रकार की मानो वह रूग्ण हैं। जैसे रूग्ण है, रूग्ण हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं, कुछ रूग्ण त्रिकोण होते हैं, कुछ रूग्ण हमारे यहाँ चतुष कोण होते हैं, कुछ रूग्ण हमारे यहाँ पंच कोण होते हैं, कुछ रूग्ण हमारे यहाँ चौबीस कोण होते हैं, कुछ रूग्ण सत्रह कोण होते हैं, क्योंकि इसमें भी कोणों का वर्णन हैं। हमारे यहाँ यह मानो देखो, ऋषि-मुनियों ने समाधि के द्वारा, परिणत हो करके उन रूग्णों को मानो देखो, उनको निदान करने का प्रयास किया। जिसकी चर्चाएं, वैदिक साहित्य में प्रायः आती रहती है। क्या पुत्र देखो, जैसे हमारे यहाँ देखो, जैसे ताप का होना, मानो देखो, एक विशाल ताप का होना उसको चतुष कोणों वाला है, उसको पंचम कोण से कोई समन्वय नही हैं। परन्तु देखो, वह इसी प्रकार एक मानो विषम ज्वरिका होती हैं उसका सम्बन्ध त्रिकोण से कहलाया गया हैं, वह त्रिकोण में याग करने वाला याज्ञिक रूग्ण करने वाला याग करेगा, साकल्य उसी प्रकार हो तो मानो देखो, पान भी करे उसको मानो देखो, याग के द्वारा देखो, त्रिकोण में याग करें तो वह शान्त हो जाता हैं। इसी प्रकार जैसे सुन्ध नामक रूग्ण होता हैं मानो उसमें सोम रूद्रिका शैलखण्डा, शैलकृतिका मानो मांचकानी, कंचकेतु, चिरायनाभृ मानो देखो, उन औषधियों का पिपाद बना करके, अग्नि में तपा करके उसका रस बनाया जाएं, और मानो देखो, दुग्ध के द्वारा, आहार करने से, इसी प्रकार मानो देखो, उन औषधियों के द्वारा, हम याग भी करें, अग्निहोत्र करें, जिससे मानो देखो, उसके परमाणु वह श्वास के द्वारा आन्तरिक जगत मे जाएं, और देखो, उसका रस का पान करने से, जो अमास्य में मानो देखो, जो उसके उदर में जाने से मानो देखो, उसके रूग्णों को वह शान्त करने वाला हैं। इस प्रकार का यह मानो देखो, चिकित्सा का, जो एक हमारे यहाँ एक विधान है, ये बहुत परम्परा का है। त्रेता के काल में, सुधन्वा के काल का भी हैं। महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में भी और देखो, अयोध्या राष्ट्र में भी इसी प्रकार का एक चिकित्सा का मानो विधान एक चिकित्सा की प्रणाली रही हैं। इस चिकित्सा की प्रणाली में, मानो देखो, बहुत-सी आभाएं हैं, इसमें बहुत अनुसन्धान की आवश्यकता रहती है, कि त्रिकोण कैसा होता हैं? चतुष कोण रूग्ण देखो, कैसा होता है? इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान की आवश्यकता होती है। क्या पुत्र! देखो, इसका अनुसन्धान एक-एक प्राणी ने बेटा! वर्षों व्यतीत किया एक-एक देखो, एक-एक रूग्ण को जानने के लिए, कोणों का अभिप्रायः होता है, कोण किसे कहते हैं? मानो जो रूग्ण देखो, त्रि पादम ब्रीहि अस्तो देखो, कोणों का अभिप्रायः यह, जो परमाणुवाद बनता हैं, वह त्रिकोण जैसा बनता है। जैसे त्रिकोण है, मानो इस प्रकार का बनता है उसको उन परमाणुओं को शान्त करने के लिए, हमें उसी प्रकार की औषध को जानना होगा। उसी प्रकार के औषध का पिपाद बना करके, पान करने का प्रयास करना है परन्तु देखो, इस प्रकार का विज्ञान, यह परम्परागतों से रहा हैं, परन्तु देखो, यह चर्चाएं तो बेटा! हम इससे पूर्व काल में भी प्रगट करेंगें, आज का विचार-विनिमय क्या है? कि हम अपने में इतने सुगठित होने चाहिए, अपने मे हमारा विज्ञान एक आभा में रमण करना चाहिए जिससे हमारा जीवन मानो देखो, हमारा मस्तिष्क, उस कार्य के लिए हम रत्त हो जाएं, परन्तु देखो, ऐसा हमारे यहाँ, परम्परागतों से माना हैं, परन्तु देखो, प्रत्येक मानव को, अपनी धारा इस प्रकार की बनानी है, आहार की बनानी चाहिए जिससे देखो, उसके जीवन में देखो, एक पवित्रता की तरंगें आती हुई बुद्धि में सात्विकता हृदय में नम्रता और देखो, शरीर में मानो

देखो, इस प्रकार की तरंगों का उद्बुद्ध होना चाहिए। जिन तरंगों से हम दूसरों को महान बना सकें, स्वतः महान बन करके, इस सागर से पार हो जाएं, यह आज का वाक् अब हमारा समाप्त। अब शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। ओ३म् देवं गा ता यम सर्वा गतं आभ्यां गयाः ओ३म् सर्वाणि रथाः मां धेनु रथं आप्यां लोकं सर्वा रूद्रा प्राणां असु रन्धि मा ना यम सर्वाम् ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया सर्वं भद्रा।

९ प्रभु की अनन्तता २० १२ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव परमपिता परमात्मा की महिमा का, गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उसकी गाथा गा रहा है और वह गाता ही रहता है उसकी कोई सीमा नही हैं उस सीमा से बाह्य जहाँ मानव को उसकी सीमा दृष्टिपात आती है, वहाँ वो उसका अनन्त आयतन माना गया हैं। मानो वह सीमा नही हैं वह उसका आयतन है। और आयतन होने से उसका गान गाया जाता है।

तो इसी प्रकार हमारे मानवीय जीवन में उस अनन्तता की आभा दृष्टिपात आती है। क्योंकि मानव जिस भी विषय को लेता है और जब उस विषय को क्रियात्मकता में लाता हैं तो उसका एक अन्तिम छोर ऐसा आता है जहाँ मुनिवरों! उसकी प्रत्येक जो इन्द्रियाँ हैं मानव की, वे शान्त हो जाती हैं मानो देखो, उसमें नेति का प्रतिपादन आता हैं। संसार के किसी भी विषय को लिया जाएं, जैसे हमारा कई समय से, आयुर्वेद के सम्बन्ध में कुछ विचार चल रहा है परन्तु उसे हम पूर्ण रूपेण नही कह सकते, क्योंकि इतना वनस्पति विज्ञान है क्या उस विज्ञान के जब अन्तिम छोर पर जाते हैं, अन्तिम पर भी नही, जब हम मध्य में ही पंहुचते हैं तो हमारी इन्द्रियाँ मानो बिखर जाती है इन्द्रियों के चिन्तन करने का जो विषय है वह मौन हो जाता हैं। हमारे यहाँ जितने भी ऋषि-मुनि हुए हैं, वैज्ञानिक हुए हैं, वे किसी भी विज्ञान को ले करके चले हों, परन्तु वह अन्त में मौन हो गये। मौन क्यों हो गये? मौन इसीलिए हो जाते हैं क्योंकि वह जो परमपिता परमात्मा के जो विज्ञान का विषय है वह इतना अनन्तवत माना गया हैं, क्या मानव की वाणी, मानव की इन्द्रियाँ उस समय कार्य करने में, शून्यवत को प्राप्त हो जाती है।

हमारे यहाँ वैज्ञानिकों का जब प्रसंग आता है तो हृदय से तरगें उत्पन्न होती है, उन तरंगों का बाह्य जगत से समन्वय होता है और बाह्य जगत के विषयों को जो कार्यवाहक दिया जाता है, तो उस कार्य देने में ही तरंगों के ऊपर, अनुसन्धान प्राणी ने किया है, परन्त दूसरी तरंगें अनुसन्धान के लिए उपस्थित हो जाती हैं। जैसे एक मानव यह विषय ले करके चला है, कि मुझे एक बिन्दु को विचारना हैं मानो वह बिन्दु कौन-सा है, जिस बिन्दु से मानव के शरीर की रचना होती हैं अथवा यह ले लीजिए कि जितने भी संसार के जंगम प्राणी मात्र हैं, परन्तु उनके एक ही बिन्दु से उनकी एक ही रचना होती हैं परन्तु यदि उस बिन्दु के गर्भ में, उस बिन्दु के परमाणुवाद के ऊपर अनुसन्धान करने लगते हैं, तो कितना विशाल एक वृक्ष उत्पन्न हो जाता हैं और उस वृक्ष के ऊपर भी ओर अनुसन्धान करते हैं तो बेटा! मानव की वाणी मौन हो जाती है एक मानव सुदृष्टिपान कर रहा है तो उसमें धर्म की प्रतिभा, धर्म के ऊपर मुनिवरों! देखो, उसका गम्भीर अध्ययन हो गया हैं। तो नेत्रों में अनुपम शक्ति आ जाती हैं, नेत्रों में एक अनुपम तेज आ गया हैं जिस तेज के ऊपर चिन्तन करता हुआ प्राणी, अन्त में मौन हो जाता है।

जैसा मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय वायु गोत्र में एक ऋषि हुए हैं, वायु गोत्र के ऋषि श्वन्धानुकेतु श्वेत्तर ऋषि उन्हें कहते थे, श्वन्तेर ऋषि एक समय मानो कुछ ऋषियों के मध्य में विराजमान थे और ऋषियों के मध्य में विराजमान हो करके यह विराजने लगे कि जब मानव का यह शरीरान्त होता है, अथवा शरीर में से चेतना जाती हैं तो चेतना के साथ में उदान नाम का प्राण जाता हैं और उदान नाम के प्राण के साथ में जो चित्त का मण्डल है। चित्त का मण्डल किसे कहते हैं? जहाँ मानव के जीवन के जन्म-जन्मान्तरों की एक संस्कार धानी विद्यमान रहती है, उसमें संस्कार विद्यमान रहते हैं। संस्कारों की ओर परिभाषा ले लीजिए, जैसे वृद्ध काल में, एक

वृद्ध, उसे अपना मित्र प्राप्त हो जाएं, बाल्यकाल का, तो बाल्यकाल के संस्कार, बाल्यकाल का जीवन, वृद्धकाल के जीवन से उनका समन्वय हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वह मित्रता की वार्त्ता बाल्यकाल की करते हुए मग्न हो रहे हैं, तो उसे हमारे यहाँ चित्त का मण्डल कहते हैं। जहाँ वह बाल्य से वृद्धकाल तक, उनके संस्कार, जिस अन्तःकरण में विद्यमान होते है, उस अन्तःकरण का नाम चित्त कहा जाता है।

तो उन्होंने यह विचारा, कि मेरे जीवन में जो नाना प्रकार के संस्कार विद्यमान हैं परन्तु उन संस्कारों को मुझे जानना है, उन संस्कारों के ऊपर वह अपनी एक भूमिका बनाने लगे, विचारने लगे तो मानो उन्होंने प्राण की उपासना की और प्राण की उपासना करते हुए कहा हे प्राण स्वरूप! आ तू मेरे संस्कारों को समाप्त कर, जिससे मैं मोक्ष में चला जाऊं। हे प्राण! मैं सुख में जाना चाहता हूँ, मैं स्वर्ग बनाना चाहता हूँ गृह का, मैं अपने गृह का स्वर्ग बनाना चाहता हूँ, तू आ, मेरे में प्रवेश हो, और ज्ञान की प्रतिभा मैंरे में आ जाएं। तो देखो, ऋषि जब प्रार्थना करने लगा, तो उसे मानो एक अंकुर प्राप्त होने लगे, कि स्वर्ग किसे कहतें और मोक्ष किसे कहते हैं। तो दो अंकुर उसके समीप उपस्थित हो गये। परन्तु जब दोनां अंकुर उपस्थित हो गये, कि मोक्ष और स्वर्ग किसे कहते हैं?

तो वेद के ऋषि यह विचारने लगा, एक वेदमन्त्र को ले करके स्वर्गश्चं स्वर्गं ब्रह्मा स्वर्गा ब्रह्मे व्रतो देवस्ताः देवत्वां परन्तु वेद के ऋषि ने यह विचारा, कि स्वर्ग नाम तो उसे कहते हैं जहाँ एक दूसरा प्राणी, प्रसन्न रहने वाला हो, प्रसन्न चित्त रहने वाला हो, उसका नाम स्वर्ग है। मानो देखो, जैसे माता-पिता हैं, बाल्य हैं। एक दूसरी माता, माता और पिता मानो देखो, पति और पत्नी दोनो एक दूसरें में सन्तुष्ट हैं और गृह में रहने वाले, गृह में मानो उनके क्रियाकलापों से सन्तुष्ट हैं मानो देखो, किसी प्रकार की ऐषणा नही है, द्वेषता नही हैं, वह एक दूसरे में प्रसन्न है तो मानो देखो, उस प्रसन्नता का नाम स्वर्ग माना गया है। यह तो ऋषि ने स्वर्ग की परिभाषा की। अब मोक्ष की परिभाषा रह गई। मोक्ष तब तब प्राप्त नही होगा, जब तक चित्त में संस्कार विद्यमान रहते हैं। और संस्कार क्या हैं? उन तरंगों का नाम संस्कार हैं जिनमें नाना प्रकार के, संसार रूपी चित्र मानो देखो, चित्रित होते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जैसे मानव स्वप्न में जाता है, तो स्वप्न में वह राष्ट्रों की एक चित्रिका दृष्टिपात कर रहा है। तो चित्रिका कहाँ से आई है? ऋषि एकान्त स्थली में विचार रहा है कि यह चित्रिका कहाँ से प्राप्त हुई।

तो विचारा गया कि यह जो चित्र आए हैं, इस स्वप्न अवस्था में, यह अन्तःकरण में, जो संस्कार थे, उन संस्कारों का साकार रूप बन गया हैं। यह मन ऐसा विचित्र है, कि यह आत्मा के प्रकाश में, यह संसार की रचना, नवीन कर लेता हैं यह संसार की रचना कर लेता हैं, उस रचना के ही आश्रित हो करके, देखो, रचना के आश्रित अपने को बनाता हुआ, मानो संसार को दिग्दर्शन करने लगता हैं। परन्तु जब यह सुषुप्ति में अथवा स्वप्न को त्याग करके सुषुप्ति में, जाता हैं जागृत से सुषुप्ति में जाता है, तो पाप को त्याग कर चला जाता है और जब सुषुप्ति से संसार में आता है तो पुण्य को मानो पुण्यवान बन करके आता हैं। मेरे प्यारे! विचार क्या, मानो देखो, मानव कर्म करता हुआ, थकित हो जाता है उसमें शुभ, अशुभ दोनों ही कर्म होते हैं, परन्तु जब यह निन्द्रा की गोद में चला जाता है तो उस समय प्रातः से सांयकाल तक जो भी क्रियाकलाप किया इसने पाप और पुण्य का, उसको त्याग दिया और सुषुप्ति में चला गया। मन अपनी गाढ़ निन्द्रा में चला गया। यह मानो देखो, प्राण मन के साथ में गतिशील हो गया हैं और देखो, जब वह आनन्द से विश्राम में, निन्द्रित हो गया, जब वह जागरूक हुआ, तो उसे यह अनुभव हो गया कि मैं तो आनन्द में से आ रहा हूँ, मुझे ऐसा आनन्द आया है। मुझे संसार का भान नही रहा। तो विचार क्या हुआ, क्या मानो देखो, इसके ऊपर ऋषि चिन्तन करने लगा कि वह जो आनन्द हैं, उसी को प्राप्त करना है, जो पाप को त्याग करके आनन्द में प्रवेश कर जाता है मानो देखो, उसी आनन्द को लाना हैं वह आनन्द कुटुम्ब के स्वर्ग में प्राप्त नही हुआ हैं। वह कहाँ प्राप्त होगा? जब दो का मिलान होगा, जब दो वस्तु विच्छेदता को प्राप्त हो

जाती हैं, जब हम दर्शन के गर्भ में, दर्शनों के गर्भ में प्रवेश करते हैं, दर्शनों की आभा में स्वतः अपने शरीर का, मानव का, अपने का ही स्वतः दर्शन करते हैं। तो ऋषि यह कहता है क्या मानो वायु गोत्रीय अंगिरस कहता है, इसके ऊपर अनुसन्धान करता हुआ, इस निश्चय पर पंहुचा हूँ कि मोक्ष किसे कहते हैं? स्वर्ग तो विशेष सुख का नाम स्वर्ग है परन्तु मोक्ष क्या वस्तु हुई? तो मोक्ष के ऊपर उन्होंने विचार दिया कि यह जो प्राण हैं, जो पांच विभागों में मानव के शरीर में विभक्त हो रहा है यह कहीं दस रूपों में विभक्त दृष्टिपात हो रहा हैं, जैसे यह प्राण है मानो नाभि से ले करके मुखारबिन्दु तक मानो यह प्राण कहलाता हैं। उससे निचले भाग का नाम अपान कहलाया गया है। परन्तु इसी प्रकार प्राण और अपान की प्रतिभा एक अनुक्रमणिक बन करके, मानो एक विशेषता में परिणत हो गई। परिणत हो जाने के पश्चात मानो देखो, जो चित्त का मण्डल बना हुआ है, मन का क्षेत्र बना हुआ हैं मानो वह प्रकृति का मण्डल बना हुआ है। तो उस मन और प्राण दोनों को एक सूत्र में ला करके और आत्मा की छाया बन करके, आत्मा छाया के बिना नही, और छाया आत्मा के बिना नही। परन्तु देखो, उसी रूप में जब यह परमात्मा चेतनता में, अपने को स्वीकार करके परन्तु देखो, एकता, एक स्वरूप बन गया उसका नाम ऋषि ने, मोक्ष की परिभाषा की हैं। मोक्ष का आनन्द कहा है।

तो मानो देखो, आज मैं तुम्हें बेटा! मोक्ष की चर्चा तो देने नही आया, विचार क्या मानो देखो, आज का हमारा विचार, यह चल रहा हैं कि हम मुनिवरों! देखो, किसी भी विषय को लेते हैं तो मौन हो जाते हैं, कोई भी विषय संसार का हो, मानो देखो, चाहे वह एक कृतिका का विषय हो, चाहे, अनुकम्पका का विषय हो, चाहे आयुर्वेद का विषय हो, चाहे मोक्ष और आनन्द का विषय हो, किसी भी क्रिया में जब दर्शनों में हम तुम्हें ले जाएंगें, तो वह विषय एक अनन्तता में अन्तिम जो छोर है उसका, वह मानो देखो, नेति प्रतिपादित हो जाता हैं, वह नेति में उसकी प्रतिभाषिता चली जाती है। तो परिणाम क्या, मानो देखो, हमें यह विचारना हैं, हमें उस आभा में परिणत होना है, कि हम अपने को सुखद और आनन्द के उस मार्ग पर ले जाने के लिए आए हैं, हम उस आत्म तत्त्व को जानने के लिए आए हैं जो आत्म तत्त्व हमारे शरीर में प्रवेश हो रहा हैं। ज्ञान का एक पुंज बना हुआ हैं परन्तु देखो, क्रियाशील बना रहा है, प्रत्येक प्राणी उससे क्रियाशील हो रहा हैं, उसके क्रियात्मक जीवन को हमें पान करके, इस सागर से पार होने का प्रयास करना है।

परन्तु आज तो मैं इन गम्भीर क्षेत्रों में तुम्हें नही ले जा रहा हूँ। विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, मैं तुम्हें एक दशा में नही, द्वितीय दशा में ले जाना चाहता हूँ। जैसे आयुर्वेद का एक विषय है आयु का वेद है, आयु का प्रकाश है, हमें आयु के प्रकाश में जाना है। इसका अभिप्रायः है कि आयु का हमें प्रकाश देना हैं, आयु कहते हैं सुखद को, आयु कहते हैं जिसमें आनन्द हो, परन्तु देखो, वह आनन्द ही आनन्द में जो प्रकाश आता है उसका नाम वेद कहलाता है। तो आयु और वेद जैसे एक नाना प्रकार की औषधियां है, नाना प्रकार का एक वन है औषध का, एक विशाल वन हैं, स्थावर सृष्टि का, मानो चार प्रकार की सृष्टि मेरे पिता ने, सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न की थी, उन चारों सृष्टियों में मानो देखो, एक स्थावर सृष्टि हैं जिसमें मानो नाना सर्वत्र वनस्पति विज्ञान, उसी के सन्दर्भ में आते है परन्तु वह जो वनस्पति विज्ञान है वह अण्डज के रूप में भी कहीं-कहीं परिणत होता हैं, कहीं मानो देखो, वह जंगम रूपों में भी उसी की भांति दृष्टिपात आती हैं। परन्तु देखो, यह स्थावर सृष्टि, जंगम, अण्डज और उदभिज ये चारों सृष्टि एक दूसरे की सहायक बनी हुई हैं। परन्तु देखो, बहुत-सी सृष्टि ऐसी है जो उदभिज सृष्टि हैं, वह मानो देखो, स्थावर के गर्भ से जन्म लेती हैं मानो देखो, जल का, सोम की वृष्टि हुई और सोम से मानो देखो, तेज के, अग्नि के, दोनो के समन्वय होने से ही एक मानो उदभिज सृष्टि का जन्म हो जाता हैं। उदभिज सृष्टि का जन्म हो गया। मानो देखो, वह कहीं-कहीं वृक्षों के गर्भ में भी दृष्टिपात आती हैं, कहीं-कहीं वह जंगम सृष्टि के गर्भ में भी

प्राप्त होती है। परन्तु कहीं-कहीं वह अण्डज सृष्टि के आँगन में भी दृष्टिपात होती है। मानो देखो, इसी प्रकार एक दूसरे की सहायक, यह सृष्टि का चक्र चला हुआ हैं। एक दूसरे की सहायक बनी हुई हैं। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि हमारे यहाँ इस प्रकार के वैद्यराज हुए हैं, जिन्होंने अन्त में यह कहा कि हम सृष्टि की उस मानो क्रमणा से, हम कदापि दूरी नही हो सकते जहाँ जीव का भक्षण करने वाला हैं, जीव, जीव का भोग करने वाला हैं। मानो देखो, भोगवाद एक ऐसा विचित्र, एक क्षेत्र हैं इसमें मानो देखो, प्राणी, प्राणी का भक्षण कर रहा हैं और प्राणी, प्राणी का भक्षण करके अपने को जीवन शक्ति को ऊँचा बनाना चाहता हैं, ऊँचा बना रहा हैं, दृष्टिपात मानो दृष्टि आ रहा हैं वह अपने को जीवन को ऊँचा बना रहा हैं। परन्तु जैसे द्रव्यपति है, वह मानो देखो, द्रव्यहीन बना करके अपने को द्रव्यपति बना रहा हैं। जैसे मानो समुद्र में मछली हैं, वह सूक्ष्म मछलियों को आहार करके, प्रबल मछली बन रही हैं, विशाल मछलियां बन रही है, परन्तु देखो, जलचर उड़ने वाले, जिसमें अण्डज सृष्टि हैं, वह दूसरी अण्डजों को पान करके मानो अपने प्राणों की ऊर्ध्वा गति बनाना चाहता है। वह बलिष्ठ होना चाहता हैं, सिंहराज वनों में रहता हैं, परन्तु वह दूसरे प्राणियों का भक्षण करके अपने को ऊर्ध्वा, अपने को सिंह कहलाने का अधिकारी बन जाता हैं।

तो परिणाम क्या है, मानो देखो, यह जो सृष्टि हैं यह एक दूसरे की सहायक है और एक दूसरे को भक्षण करने वाली हैं, तो बड़ा विचित्र एक मानो ब्रह्माण्ड है, इस ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में मानो देखो, कुछ अण्डज सृष्टि में, इस प्रकार की देखो, किसी प्रकार की औषधि बनी हुई है, वह मानो आयुर्वेद आयु को देने वाला प्रकाश है, कहीं मानो देखो, जंगम सृष्टि में इस प्रकार की सृष्टि है जो जंगम प्राणियों को ही जीवन दे रही है, मानो देखो, जैसे गौ नाम का पशु है, वह नाना प्रकार का चरू पान करता हैं, और चरू के पान करने से मानव को दुग्ध दे रहा हैं। तो मानव उससे पौष्टिक बन रहा हैं मानो इसी प्रकार प्राणी प्राणी का ऐसा भक्षण देखो, ऐसा अपने में पालन करने में स्वतः ही एक मानो देखो, परमात्मा की अनुपम महिमा का अनुपम विचित्रता से यह ब्रह्माण्ड गति कर रहा है, क्या मुनिवरों! देखो, इसको जानने के लिए मानव को त्याग और तपस्या और मानो देखो, अध्ययन और परमात्मा की प्रतिभा की आवश्यकता रहती है।

जब मैं यह विचारता हूँ कि-प्रभु का विज्ञान कितना वनों में हैं, इतना विचित्रता में है क्या इसके ऊपर अध्ययन करने के लिए मानव को कितना मानो देखो, सुखाण होना, है जैसे यह सूर्य है, यह प्रकाश दे रहा हैं, परन्तु यह द्यौ से प्रकाश लेता हैं और दूसरों को प्रकाश दे रहा हैं। यह प्रकाश दे रहा है परन्तु देखो, वनस्पति पनप रही हैं, और देखो, वही प्रकाश जंगम सृष्टि में आ रहा हैं वही प्रकाश माता के गर्भ में जा रहा है माता का गर्भाशय बलवती हो रहा है, उसी प्रकाश को ले करके मानो देखो, सूर्य तपस्या करते हैं, ऐसे ऋषि हुए हैं, जो सूर्य नमस्कार करते हैं, सूर्य तप में चले जाते हैं उन किरणों में आभासित हो जाते हैं। मानो देखो, उसी सूर्य को वैज्ञानिक जन अपने मानो देखो, विज्ञानशाला का निर्माण करता हुआ, विज्ञान में रत्त रहता हैं और विज्ञान में मानो देखो, रत्त रह करके, वह देखो, सूर्य विद्या को अपने में धारण करता है सूर्य किरणों को ले करके वह एक मानो देखो, यन्त्रों में मानो उसकी किरणों को लेता हैं। और किरणों को ले करके मानो देखो, उससे यन्त्रों का निर्माण करता हैं। जैसा मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराते हुए कहा था, महाराजा हनुमान सूर्य विद्या को अच्छी प्रकार जानते थे, एक हनुमान ही नही थे मानो देखो, महाराजा गणेश जी भी इस सूर्य विद्या को पान करने वाले थे, यह सूर्य विद्या को गणेश जी ही नही मानो देखो, शिव भी इसको पान करते थे। महाराज शिव अपने आसन पर हिमालय पर रहते थे, परन्तु देखो, वह सूर्य की किरणों के साथ मानो देखो, वह किसी-किसी काल में, वह सूर्य की किरण के साथ मानो देखो, ऊर्ध्वा में गति भी करते थे, इतना मानो उनका विज्ञान, उनका आध्यात्मिकवाद

इतना विचित्र कहलाया गया।
परन्तु महाराज गणेश जी को मानो देखो, जब वह सूर्य आभा में विज्ञान की परिक्रमा करते थे, विज्ञान की जब परिक्रमा करते तो मानो देखो, सूर्य से नाना प्रकार की वह विद्युत को ले करके मानो देखो, एक समय मुझे स्मरण है क्या, उनका एक चुहेतक नामक एक यन्त्र था, उस यन्त्र में विराजमान हो करके, महाराज गणेश जी उस यन्त्र में विद्यमान हो करके एक समय मानो देखो, वह सूर्य की परिक्रमा करने लगे। क्योंकि देखो, उसमें सूर्य की किरणे थी मानो देखो, जो किरणें पृथ्वी में से मानो नाना प्रकार के सुपदार्थों को, शीतलता को ले करके अग्नि उष्णता को ले करके अपने में समहित हो रहा है मानो देखो, द्यौ से विद्युत ले करके मानो दिवस के रूप में वह सूर्य ही तो है जो प्रकाश दे रहा है। मानो देखो, वह दिवस के रूप में आता है इसी प्रकार मानो देखो, उनका विज्ञान इतना विशाल रहा, उनके यहाँ सूर्य की किरणों से विद्युत को एकत्रित करना उससे यन्त्रों का निर्माण करना, स्वतः वैज्ञानिक बनना और देखो, नाना लोक-लोकान्तरों की परिक्रमा करने वाले यन्त्रों का निर्माण करना।
तो बेटा! मैं उच्चारण यह कर रहा हूँ, तुम्हारे समीप, इस प्रकार का वह सूर्य मानो देखो, जंगम, स्थावर, उदभिज और देखो, इन अण्डज सृष्टियों को सबको प्रकाश देता हैं, सबको मानो देखो, ऊर्ध्वा में गति करा रहा है, तेज दे रहा है। माता के गर्भस्थल में, एक शिशु हैं हम जैसे शिशु जब माता के गर्भ में होते हैं, तो मानो देखो, वह जो सोम हैं, जिस सोम से संसार की उत्पति हैं, जिस सोम बिन्दु से मानो देखो, सूर्य इत्यादि नक्षत्रों की उत्पति हैं, वही सोम मानो देखो, बालक के माता के गर्भ में देखो, ध्रुवा में रहता है, ऊर्ध्वा में भी रहता हैं, दक्षिणाय और देखो, उत्तरायण में भी रहता हैं, वहां जल ही जल है वह शीतल नही होता है परन्तु देखो, सूर्य की वे किरणें एक त्रुकातक नाम की किरण होती हैं, जिस किरण का सम्बन्ध माता की नाभि से होता हुआ, उस बालक से, उस जल से होता है जिस जल से वह बालक, वह शिशु पनप रहा है। मानो देखो, बिन्दु, बिन्दु से रचना हैं।
बेटा! यह कैसा विज्ञान, कैसा विचित्रवाद है, मानो देखो, एक बिन्दु हैं और बिन्दु के आँगन में देखो, जल है और जल में वह बिन्दु मानो देखो, आकार रूप को धारण कर रहा है। वाह रे देव, वाह रे प्रभु, तू कितना विज्ञानमयी है। मानो देखो, पूर्वा में भी जल, उसका ओढ़न भी जल है, बिछौना भी जल है, मानो देखो, दोनों पांशे भी जल बने हुए हैं। जल ही जल है। उस बिन्दु में बेटा! कौन? एक बिन्दु हैं मानो देखो, जो वीरतव के रूप में, वह बिन्दु था वही बिन्दु है उस बिन्दु का मानो देखो, एक स्थूल बन रहा है और उसका ओढ़न क्या है? बेटा! ओढ़न भी जल है और देखो, पांशे भी जल है, आसन भी जल बना हुआ हैं परन्तु देखो, जल ही जल वह पनप रहा हैं वह उसी बिन्दु में पनप रहा है, कौन तपा रहा है कौन सहायक बन रहा है? बेटा! सूर्य की जो किरण आ रही है धीमी-धीमी परन्तु देखो, उस जल को वह उष्ण बना रही है जिससे देखो, वह जल उसका ओढ़न बन सके।
मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत में, माता को शरद काल आ गया है, मानो देखो, शरद आ गई हैं परन्तु सूर्य की किरण वही अपना कार्य कर रही है। मेरे प्यारे! देखो, उष्णता आ गई हैं भयंकर मानो देखो, अग्नि प्रवाहित हो गई हैं परन्तु वह सूर्य उतना ही प्रकाश दे रहा हैं, वह उतना ही उस जल को तपा रहा है जिससे जल में वह इतना उष्ण न हो जाएं कि बालक रसातल को चला जाएं। हे पुत्रों! यह कैसा विचित्र जगत हैं, मैं इसकी अनन्तता की चर्चा करता हूँ यह कैसी अनन्तता है। मानो देखो, वही जल का बिन्दु, वह जल में पनप रहा है। बेटा! कैसा, माता के गर्भ से मानो देखो, जरायुज में पनप रहा हैं, जरायुज बन रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, नौ माह, तब उसका ओढ़न क्या हैं? उसका बिछौना क्या है? उसके पांशे क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, वही जल बिन्दु हैं और जल बिन्दु में मानो देखो, सोम है, वह सोम की उपासना कर रहा हैं। सोम मानो देखो, कहीं समुद्रों से आता हैं, कहीं चन्द्रमा से आता है कहीं मानो देखो, सूर्य की किरणों से आता हैं, कहीं द्यौ से आता है कहीं मानो देखो, पृथ्वी से आता है। मेरे

प्यारे! देखो, वह सोम भिन्न-भिन्न रूपों में आ करके, मेरे प्यारे! देखो, वह पनपा रहा हैं। मेरे प्यारे! मैं प्रभु की इस महिमा में जाना नही चाहता हूँ, यह कैसा विचित्रवाद है, यह कैसा दर्शन हैं, मानो देखो, यदि हम अपनेपन का दर्शन करने लगें, तो विचित्रता दृष्टिपात आयेगी। इस नेति का बेटा! मैं वर्णन कर रहा था, क्या, इसके ऊपर चिन्तन करने वाला, बेटा! देखो, अन्त में मौन हो जाता है। विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! देखो, उस समय, उस माता जल के, सोम को देने के लिए नाना प्रकार की औषधियों का पान करती हैं और माता उसी बिन्दु से, प्रेरणा से, यह विचार रही हैं मेरे गर्भ में बालक पवित्र हो जाएं, मानो देखो, योगेश्वर बन जाएं, माता की भावना देखिये, हृदय के कैसे उदगार उत्पन्न हो रहे हैं। माता यह चाहती है कि मेरा बालक महान बने, मेरे मानो देखो, जो शिशु उत्पन्न हों, तो वह शिशु हो, वह मुनि की प्रवृत्ति वाला हो, परन्तु औषधियों का पान करती है, निन्द्रा में जागरूक रहती है। अनेक प्रकार के मानो देखो, उपाय करती रहती है, अनेक प्रकार की धाराओं में रमण करती हुई, माता अपने में चिन्तनीय बन रही है।

तो विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मैं इस विज्ञान की धाराओं में ले जाने नही आया हूँ, विचार-विनिमय केवल यह देने आया, क्या वह आदित्य है, बेटा! वह प्रकाश दे रहा हैं, वह शिशु को पनपा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जल में अपनी शक्ति दे करके, जल को मानो देखो, मृत्यु शक्ति दे करके, वरुण शक्ति दे करके जल की धाराओं का जन्म हो रहा हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह जो आदित्य सूर्य है, वह प्रकाश दे रहा हैं, परन्तु वह प्रकाश मेरे पुत्रों! देखो, यन्त्रों में प्रवेश हो करके, कोई वैज्ञानिक बेटा! देखो, सूर्य की परिक्रमा करा रहा हैं, कोई मानो उस विद्या को निगल करके, उसका अध्ययन करके मानो स्वतः अपने को प्रकाश में ले जाता हुआ, योगेश्वर की कल्पना कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, वह सूर्य प्रकाश, आदित्य से लेता है यहाँ अपनी छटिका को बिखेर देता हैं, उससे मानव कहता है देखो, सूर्य उदय हो गया है, सूर्य के उदय होने वाले को हम अपने में ग्रहण करने वाले बनें। बेटा! देखो, वैज्ञानिक जब ग्रहण करता हैं, तो विद्युत को एकत्रित कर लेता है, उससे यन्त्रों का निर्माण करता है।

मानो शक्ति का निर्माण करता हैं, राष्ट्र की आभा का जन्म देता है, परन्तु वह सूर्य की किरण भू-गर्भ वाला वैज्ञानिक बेटा! भू-गर्भ में चला जाता हैं, और भू-गर्भ में जा करके, कहीं जल को जान रहा है। यह जल वाहनों में, कार्यों में आता है। यही जल है मानो देखो, जो सोम बन करके, हमारे वाहन की उड़ान उड़ने वाला होगा, मानो वही सोम है जो मानो देखो, सूर्य की किरणों में बिन्दु बन करके मानो एक रत्न धातु बन गया है, रत्नों के रूप में आ गया है। वही बिन्दु परन्तु देखो, वह तेजोमयी बिन्दु बन गया। मेरे पुत्रों! देखो, विचार रहा हूँ क्या, मानो देखो, एक ही धारा में अनेकता में दृष्टिपात करने वाला मानव मौन हो जाता हैं। विचारता है कि मानो देखो, धर्म किसे कहते हैं? आगे मानव कहता है यह धर्म क्या है? मानव धर्म कहता है कि मानव के नेत्रों में हैं तो वहाँ सूर्य का प्रकाश आ रहा हैं एक मानव देखो, विद्युत का प्रकाश है, एक मानव को दृष्टिपान करने वाले चक्षु हैं परन्तु वहाँ से प्राण शक्ति जा रही हैं, वही प्राण जा रहा है, वही प्राण उसके रूप के, चित्र को ले करके नेत्रों में प्रवेश कर रहा हैं अरे, वाह तू देव कैसा रचयिता हैं मानो देखो, नेत्रों में कैसी महानता तूने प्रदान कर दी हैं, मानो वही प्राण शक्ति, नेत्रों से चली और रूप को ले करके हृदय में उसकी अवस्थिति बन गई है, वह रूप हृदय में समाहित कर दिया। देव! तेरी महिमा मानो देखो, मैं वर्णन कैसे कर सकूंगा, मानो देखो, मैं कितना अल्पज्ञता में परिणत हो गया हूँ मानो देखो, तेरी विचित्रता को, मानो देखो, वही तेरी प्राण शक्ति हैं जो मानो देखो, नेत्रों में प्रवेश कर रही है और नेत्र उस रूप को ले करके, तेरे हृदय में प्रवेश कर रहा है, वही रूप, वाणी के रूप में, शब्द के रूप में मानो शब्द बन करके और शब्द के साथ मे रूप बन करके मानो वह श्रोत्रों से समन्वय होता हुआ उसकी भी स्थिति मानव के हृदय में प्रवेश कर रही है।

मेरे प्यारे! मानो देखो, रसना के रसों को लिया जा रहा हैं रस लिया जा रहा है, यह रस कहाँ का हैं? रस के साथ में भी रस है और रस के साथ में भी रूप हैं, यह मैंने क्या पान किया है मैंने देखो, अमुक फल को पान किया हैं, परन्तु फल का आकार भी रसना के साथ है बेटा! रस के साथ है, उस स्वादन के साथ हैं और उसकी स्थिति कहाँ है? मानव के हृदय में हैं। तो बेटा! वह कैसा धर्म बन गया हैं, क्या उसे मैं धर्म कह सकता हूँ या तेरी प्रतिभा, तेरी आनन्दमयी विज्ञान की धारा कह सकता हूँ। विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! मानो देखो, उस सबकी स्थिति मानव के हृदय में प्रवेश हो गई हैं, पांचों धर्म समाहित रहता है, पांचों में धर्म है, धर्म के साथ में रूप है, धर्म के साथ में उसका क्रियाकलाप है, धर्म के साथ में बेटा! ब्रह्माण्ड का सर्वत्र चित्र देखो, दृष्टिपात हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! मैं कहा चला गया हूँ, मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ, मैं बिखरे पुष्पों को एकत्रित करने के लिए आ गया हूँ, बेटा! मैं उस महान देव की महिमा में मानो उसमें विभोर हो गया हूँ, क्या, तेरी विचित्रता कितनी महान है, मानो यह जो पामर प्रकार के प्राणी है, यह तेरी महिमा को नही विचार पाते मानो देखो, यह तेरा चिन्तन नही कर पाते, मानो देखो, ये अपने में अपने ऊर्ध्वा को स्वीकार करते हैं, अरे, प्राणी! तू परमात्मा की सृष्टि और परमात्मा के विज्ञान के आगे, तेरा विज्ञान, तेरी शक्ति मानो बहुत ही सूक्ष्मतम मानी गई है। आज जब तू तेरी प्रतिभा मानो देखो, प्रभु के विज्ञान से, जब तेरा समन्वय होगा, तेरे मस्तिष्क विज्ञान का समन्वय होगा तो आगे चल करके तुझे यह भान होगा, क्या, प्रभु तो बड़ा ही अनन्त हैं, मानो देखो, सूर्य की विद्या को अपनाने वाला बेटा! कौन? महाराजा गणेश जैसे मानो जो सूर्य की विद्या को अपना करके मानो सूर्य की किरणों के सरगम में उनमें सरगम को ले करके, लक्ष्मी का पूजन करते थे, लक्ष्मी का पूजन क्या है, लक्ष्मी कौन है? जो सरगम है। मानो देखो, सर्वत्र लक्ष्मी तो मानव की वाणी में प्रवेश कर जाती है, जब मानव की वाणी में विचित्रता आती है, जब वाणी में ज्ञान आ जाता हैं, तो ज्ञान का नाम ही लक्ष्मी माना गया हैं। इसीलिए ज्ञानी पुरूषों के वेद के प्रकाश में रत्त रहने वाल,े पुरूषों के, चरणों में बेटा! देखो, लक्ष्मी का वास रहता है, लक्ष्मी उनके चरणों में सदैव ओत-प्रोत रहती है, क्योंकि वह सत्य कहता हैं, वह लक्ष्मी के ऊर्ध्वा की चर्चा कर रहा हैं, वह लक्ष्मी के पति की चर्चा कर रहा हैं लक्ष्मी का पति कौन हैं? गणेश है। गणेश कौन है? परमात्मा हैं। जो मानव के प्रारम्भ में ही मानो देखो, श्री गणेश कहा जाता हैं। गणेश शिव जी के पुत्र का नाम भी हैं। वह मानो सरगम गाते थे, विज्ञान की धारा में, विज्ञान में धर्म है विज्ञान में मानो देखो, लक्ष्मी है वह उसका पूजन कर रहा हैं। पूजन क्या हैं? लक्ष्मी नाम प्रकृति का हैं उसकी तरंगों को गणना में ला रहा है उससे अणु परमाणुओं का निर्माण कर रहा हैं। मानो सूर्य में जाने वाले यन्त्रों का निर्माण कर रहा है तो मानो देखो, वह लक्ष्मी का पूजन कर रहा हैं, द्रव्य उसके साथ-साथ जा रहा है। मानो देखो, उसी में वह रत्त है।

तो मुनिवरों! देखो, विचार-विनिमय क्या हम मुनिवरों! देखो, सूर्य की उन महान किरणों को जानने के लिए आए हैं जहाँ नेति-नेति का प्रतिपादन हो जाता है। मानो देखो, वही सूर्य की नाना प्रकार की किरणें है, जो मानो देखो, इस संसार को दिवस के रूप में परिणत कर देती हैं, उन किरणों का न रहना ही, रात्रि का काल आ जाता हैं, उसे रात्रि काल कहते हैं उसे प्रातःकाल कहते हैं। मानो कालों की भी एक संज्ञा बन गई हैं वह बेटा! देखो, सूर्य की किरणें बन गई हैं। किरणों का न रहना रात्रि है, किरणों का आ जाना दिवस है, और वह दिवस वह रात्रि क्या है? बेटा! उसी से मानो फिर माह बन गया, उसी से वर्ष बन गया, उसी से सम्वतसर बन गया, उसी से मुनिवरों! देखो, ईकाई से ले करके मानो देखो, एकाम, दोकाम, मानो देखो, इसी से गणना उत्पन्न हो गई। तो देवा सम्भवा देवत्वं लोकाः वेद का मन्त्र क्या कहता है बेटा! क्या, उसी में ईकाई है, उसी में गणना है, उसी को मानव कहता है मेरी आयु इतने समय की हो गई है। बेटा! वह कौन बना रहा हैं, आयु का निर्माण कौन कर रहा है, कहाँ से हो

गया है सूर्य का प्रकाश आया किरण आ गई तो दिवस बन गया, किरण लुप्त हो गई, तो रात्रि बन गई रात्रि मानो देखो, पृथ्वी गति करती रहती हैं, और पृथ्वी के आँगन में सूर्य आ गया तो मानो देखो, अन्धकार हो गया और सूर्य पृथ्वी की आभा में आ गया तो वहाँ प्रकाश हो गया तो मानो देखो, उसी प्रकाश से यह संसार में मुनिवरों! देखो, ईकाई, दुहाई, मानो देखो, यह रात्रि और देखो, गणना बन गई, एक से ले करके मानो देखो, सौ तक की गणना बनी, एक से ले करके मानो देखो, नौ गणना बन गई, नौ से आगे कोई गणना ही नही होती मानो देखो, ईकाईयां होती रहती हैं, गणना बढ़ती रहती हैं। विचित्र बनती रहती है। परन्तु देखो, यह कैसा विज्ञान है इस विज्ञान को कौन बिखेर गया बेटा! कौन ऐसा वैज्ञानिक आया था, जो मानो देखो, नौ से आगे कोई गणना ही नही रही, मानो देखो, नौ से गणना ले करके बिन्दु बनते रहते हैं, ईकाईयां बनती रहती है, गणना देखो, लाखों, करोड़ो और पदमों तक चली जाती हैं गणना, अन्त में बेटा! गणना में जा करके भी नेति उच्चारण कर रहा हैं कहता है कि गणना ही नही रही आगे। तो मानो देखो, उसके पश्चात उन्होंने मानो देखो, ऋषियों ने समाधि में दृष्टिपात किया और गणना कहाँ तक चलेगी, उन्होंने मानो देखो, ब्रह्मा का एक वर्ष बना दिया, ब्रह्मा का कोई दिवस बना दिया, मानो देखो, चतुर्थ कालों का, देखो, इस सृष्टि में इकत्तर समय आना, इकत्तर समय समाप्त होना उसका एक (एक मन्वन्तर बना दिया और चौदह मन्वन्तरों की) ब्रह्मा की रात्रि बना दी उसको प्रलय काल बना दिया और मुनिवरों! देखो, जब यह संसार रचना में रहता है उसको प्रकाश में बना दिया। उसे प्रकाश में बना करके, उसका एक अहोरात्र बन गया। एक अहोरात्र बना, ऐसे अहोरात्रों का मानो देखो, ब्रह्मा का एक माह बन गया, ऐसे-ऐसे मानो देखो, ब्रह्म के सौ वर्ष बन करके देखो, बारह माह का एक वर्ष बना और मानो देखो, ऐसे सौ वर्ष बने, तो उतने समय तक, आचार्यां ने समाधि में कहा, इतना समय, जब जीवात्मा चित्त के संस्कारों को समाप्त कर देता हैं मानो वह कैवल्य रह जाता है, तो उस समय देखो, छाया के बिना आत्मा नही, आत्मा के बिना छाया नही। मानो देखो, वह प्रभु में समहित हो गये, उस काल तक आत्मा मोक्ष के लिए गणित कर दिया, तो बेटा! तुमने जान लिया मानो कितना विशाल यह विज्ञान हैं कितना विशाल एक महानता वाला जगत है। बेटा! तो इसको चिन्तन करने से यह प्रतीत हुआ बेटा! यह तो विशाल एक वन हैं और वन में मानो देखो, अपने को समेट लेना है और समेट करके एक चिन्तन में अपने को विषय बना लेना है चिन्तन का विषय बना करके और अपने संसार में कार्यवाहक करना हैं।

तो इसी प्रकार मानो देखो, यह जगत, यह आभा में रमण करने लगा, तो बेटा! देखो, यह कौन, परमपिता परमात्मा ने सूर्य को निर्धारित किया, इससे मानो देखो, गणना की उत्पति हुई, इसी प्रकार जहाँ भी, जिस भी लोक में जो लोक प्रकाश देता है वहाँ का वही सूर्य है। मानो देखो, वह सूर्य, उसी प्रकार की गणना है उसी प्रकार का सम्वतसर हैं। तो विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! क्या मानो देखो, यह प्रभु का कितना अनुपम, एक आभामयी जगत कहलाया गया हैं, परन्तु मैं उच्चारण कर रहा था तुम्हें, क्या जिस काल में जाओगे वहाँ अनन्त-अनन्त दृष्टिपात होएगा, और यह तुम्हें भान हो जाएगा, क्या यह संसार मानो अनन्तता में है। एकता में नही, एकता में अनेकता हैं और अनेकता में एकता का भान होता हैं और एकता के आगे मानो देखो, शून्य है, वहाँ नेति-नेति का प्रतिपादन हैं। मानो देखो, नेति-नेति कह करके, मानव मौन रहता है मानो देखो, इसी प्रकार जैसे ब्रह्मवर्चोसि है इसके ऊपर जब चिन्तन करने वाला, चिन्तन करता रहता है तो बेटा! उसमें विचित्र-विचित्र तरंगें उत्पन्न हो करके मानो देखो, अपने में विचित्र बनता रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार हमारा यह क्या कह रहा हैं तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा मानो हमारा विचार और हृदय से ही वैज्ञानिक बना है हृदय से योगी बना हैं मानो देखो, जितना धर्म है, वह भी मानव के हृदय में भासता रहता हैं। तो मानव की इन्द्रियों में हैं और इन्द्रियों में मानो एक विषय नही, अनन्त विषय हैं, अनन्त

धाराएं इसी गणना करने में मानव नेति-नेति मानो देखो, हम इन नेत्रों की ज्योतियों से, इस संसार का दिग्दर्शन कर रहे हैं बेटा! देखो, चित्रों पर, पटलों की मानो देखो, जैसे मानो देखो, प्रतिमा बन रही है चित्रावलियाँ बन रही है ऐसे ही मन चित्रावली बना रहा है और विभाजन कर रहा है और संसार का विभाजन कर रहा हैं। परन्तु देखो, प्राण संसार की क्रिया में लगा हुआ है, वह क्रिया दे रहा हैं, गति दे रहा है। परन्तु देखो, यह उन गतियों का विभाजन कर रहा हैं, वह कितने प्रकार की गति हैं, पुत्रों! क्या उन गतियों के ऊपर कोई मानव अब तक बेटा! सफलता को प्राप्त नही हुआ हैं। परन्तु देखो, अन्त में वह योगी बन गया, समाधिष्ट हो गया है। अन्त में बेटा! मौन हो गया। विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रां! आज का विचार, हमारा यह क्या कह रहा हैं कि हम प्रभु के विज्ञान में इतने रत्त हो जाएं, हमें प्रभु का विज्ञान, इतना अनन्तता में दृष्टिपात आता है, क्या जिसके ऊपर विचार-विनिमय करने से, हमारा जीवन एक महान बन जाता है। हम उन वाक्यों पर चिन्तन कुछ समय तक करें। समय पर करने के पश्चात उनमें देखों कौन-सी मानो देखो, तरंगें अमृत बन करके, आ करके अमृतमयी बना देती हैं, अमृतमयी बना करके मानव को एक महानता की आभा में परिणत करा देती हैं, धर्म और मानवीयता यह सब मानव के हृदय में समाहित रहते हैं, हृदय से इन्द्रियां में तरंगें आती हैं, उन तरंगों के विशुद्ध रूप का नाम धर्म हैं, वही कार्यवाहक बाह्य जगत में आता हैं वही मानो देखो, कार्य रूप दे करके क्रियात्मक बना करके, शारीरिक क्रियाकलाप में ले जा करके, उसका बाह्य जगत का निर्माण होता है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा।

पूज्य महानन्द जीः- भगवन! आपने औषधि विज्ञान को आज त्याग दिया।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! औषधि विज्ञान त्यागा नही, परन्तु यह भी उसी का एक अंग हैं उसका अंग नही, मैं यह उच्चारण कर सकता हूँ कि उसकी एक ऊपरी धारा हैं, जिससे औषध विज्ञान उसके नीचे रहता हैं, मैंने तुम्हें एक औषध विज्ञान ही नही, हृदय की अनुक्रमणिका, हृदय की एक धारा, एक वर्णन किया है। मानो देखो, यह ब्रह्म के ऊर्ध्वा स्वरूप का वर्णन किया है। जो प्रभु ने रचाया हैं परन्तु उस रचना के मूल में क्या-क्या है, क्या-क्या मानो देखो, एक प्राणी प्राणी का सहायक बना हैं वनस्पति भी इसी प्रकार एक-एक वनस्पति भी सहायक हैं, जिसके ऊपर कुछ चर्चाएं करेंगे, आज का विचार अब यह समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा इसके पश्चात यह वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् देवाः रथाः ग्राहणां त्वा माः नम रधियं ऋताः यशश्चां गृहिविपा मानन्दनरश्च मा देवं रताः। अच्छा भगवन्! आनन्द मंगलम्

१० यज्ञ एवं औषधि विज्ञान २१ १२ १९८२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चल जा रहे थे यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे महामना की महिमा का गुणगान गाया जाता है मानो जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा हैं उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में मानो वह प्रभु विद्यमान है उसका यह संसार एक आयतन के रूप में माना गया है अथवा उस ब्रह्म का यह गृह स्थली मानी गई है और उसका यह आयतन के रूप में मानो यह क्रियाशील हो रहा हैं प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप में जिसका मानो याग ही आयतन माना गया है, उस ब्रह्म का एक-एक वेदमन्त्र वर्णन करता रहता है। मानो वह जो ब्रह्म है, मानो जो इस मानो यज्ञोमयी गमन करने वाला हैं, यज्ञोमयी मानो देखो, उसकी आभा अपने में रत्त कर रही है। तो हम जब प्रभु की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं, तो मानो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे यह ब्रह्मणा हमारे प्रत्येक श्वासों की आभा में रमण कर रहा हैं ।जो हमारी प्रतिक्रियाएं चल रही है, उन सर्वत्र प्रतिक्रियाओं के मूल में वह महान देव दृष्टिपात आता है, जितना भी धर्म है, चाहे वह पदार्थों के रूप में हो, चाहे वह मानव की धारणा के रूप में हो, चाहे वह मानो हृदयाकाश, हृदय में रमण करने वाला हो, चाहे वह इन्द्रियों के कर्तव्य रूपों में रमण करने वाला हो, उस सर्वत्र आभा में, वह धर्म की प्रतिभा दृष्टिपात आती हैं। क्योंकि वह धर्म हैं, धर्म ही उसका आयतन माना गया है। इसीलिए धर्म और प्रभु कोई द्वितीय वस्तु नही। क्योंकि वह उनका आयतन है और कर्तव्यवाद के पालन करने का नाम धर्म वर्णन किया है। और यह कहा हैं वर्णन वेत्ताओं ने, क्या जितना भी मानव की मौलिक क्रियाएं हैं, चाहे वह मौलिक क्रिया द्यौ मण्डल हो रही है, चाहे वह मौलिक क्रियाएं अन्तरिक्ष में हो रही हैं, चाहे वह मौलिक क्रिया भू लोक में हो रही हैं, परन्तु चाहे वह विज्ञान के क्षेत्र में हो, चाहे वह आध्यात्मिक मूलक में हो, परन्तु देखो, वह जो सर्वत्र, जो क्रिया का स्रोत है, वह मानो एक ब्रह्म ही माना गया हैं। उस ब्रह्म की आभा, सर्वत्रता में ओत-प्रोत हो रही है।

मेरे प्यारे! विज्ञान क्योंकि जितना भी मैंने धर्म आभाएं प्रगट की है यह उसका स्थान है यह उसका आयतन माना गया हैं, आयतन का अभिप्रायः यह है, क्या उसका वह गृह हैं, उसमें वह वास कर रहा है उसमें वह प्रतिक्रियाएं चल रही हैं। जिस प्रतिक्रियाओं में वह रत्त हो रहा है।

तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! जो हमारे जीवन की मौलिक आभाएं हैं, उनके ऊपर मानव को सदैव चिन्तन करना चाहिए तो विचार-विनिमय क्या है? आज मेरे पुत्र मुझे कुछ प्रेरणा दे रहे हैं और वह प्रेरणा का स्रोत क्या है? इनकी कई समय से प्रेरणाएं चल रही हैं, और प्रेरणाएं क्या है? कि याग और आयुर्वेद दोनों का समन्वय करने के लिए मानो देखो, प्रत्येक प्रतिक्रियाओं में और इनके विचारों में मानो उनकी एक समन्वय करने की प्रवृत्तियों का आधान किया गया है। आज का हमारा यह वाक् हमारा वाक् यह कहता है कि मानव प्रत्येक मानव को आयुर्वेद की प्रतिक्रियाओं में रत्त रहना चाहिए। आयुर्वेद एक ऐसा वेद हैं, ऐसी मानो देखो, उसकी वेद का ऐसा एक भाग हैं जिसके ऊपर परम्परागतों से ही, मानव अनुसन्धान करता रहा हैं यह कोई नवीन वाक् नही है महाराजा अश्विनी कुमारों के काल में, राजा रावण के काल में, भगवान राम के काल से भी पूर्व काल में मानो इनके ऊपर प्रायः अनुसन्धान होता रहा है। और यह जो मानो वृक्षों का जितना भी विज्ञान है, स्थावर सृष्टि का उस स्थावर सृष्टि के विज्ञान में मानो देखो, सर्वत्र में आयुर्वेद आयु की प्रतिभा मानो ओत-प्रोत हो रही हैं।

मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था क्या प्रत्येक मानव एक विज्ञान के युग में प्रवेश करना

चाहता हैं विज्ञान के युग वाला भी आयुर्वेद की प्रतिभा को जानना चाहता है। आयुर्वेद मानो विज्ञानवेत्ता जो तरंगवाद में लगा हुआ है, तरंगों के द्वारा, यन्त्र के निर्माण में लगा हुआ हैं, वह भी अपनी आयु के लिए मानो अपने में प्रतिभाषित हो रहा हैं। और यह चिन्तन कर रहा है कि मेरी आयु दीर्घ होनी चाहिए, परन्तु जिन तथ्यों को वह जान रहा है, जिन तथ्यों में उनकी प्रतिभा निहित हैं परन्तु देखो, उसी का वह बना हुआ है, और यह कहता है कि मेरा आयु दीर्घ बने। परन्तु देखो, आयु कैसे दीर्घ बनेगा? जैसे एक मानव तरंगेवाद को जानना चाहता है, तरंगेंवाद में रमण करना चाहता है, परन्तु वह उन तरंगों को, वृक्षों के आहोरण के द्वारा मानो देखो, उनके द्वारा मानो, वृक्षों की आभाओं में, मानो देखो, वे तरंगें हो करके आ रही हैं, उन्ही तरंगों के द्वारा मानो देखो, गृह, उन्ही तरंगों से वायुमण्डल, उन्हीं तरंगों से यह पृथ्वी मण्डल, मानो देखो, सहकारिता में परिणत होते रहते हैं। जब एक मानव विज्ञान के युग में प्रवेश होता है, तो विज्ञान के युग में प्रवेश होने से, पूर्व, वह मानो अपने में ही विचार करने लगता है, कि वायुमण्डल को भी शुद्ध और पवित्र रहने देना हैं। परन्तु वायुमण्डल शुद्ध और पवित्र कैसे बनता हैं? यह हमारे यहाँ आचार्यों ने एक ही वाक् कहा है, क्या भिन्न-भिन्न प्रकार के घृत अस्सुत मानो श्रद्धा घृत इस श्रद्धा में घृत को माना हैं आचार्य कहते हैं कि श्रद्धा में घृत है तो वह जो श्रद्धा रूपी घृत हैं, उसके द्वारा मानो देखो, अग्न्याधान करेंगें। अग्नि में जब आहुति देते हैं, अग्नि का जब क्रियाकलाप, मानो प्रारम्भ होता है, उस क्रियाकलाप में, मेरे पुत्रों! देखो, याग में जो सुगन्ध है याग में जो तरंगेंवाद है उस तरंगेंवाद के द्वारा ही मेरे पुत्रों! देखो, वृक्ष मानो देखो, वृक्ष उदगम करने लगते हैं मानव उदगम करने लगता हैं मानो देखो, परिणत हो करके, मेरे पुत्रों! प्रत्येक प्राणी को लाभ प्रियता होती हैं।

विचार-विनिमय क्या हैं मानो देखो, यह जो स्थावर सृष्टि हैं, स्थावर सृष्टि में जो वनस्पति विज्ञान हैं, नाना प्रकार की वनस्पतियों को ले करके, उन्ही वनस्पतियों के द्वारा, वह अग्नि में प्रवेश करने से, अग्नि में जब प्रवेश होती है, तो वायु में उसकी मिश्रिता होती हैं, जब वायु में, वायु को अपने में प्राण अपने प्राण स्वरूप बन करके मानो देखो, उन तरंगों को ले करके, वह वायुमण्डल में जब प्रवेश करते है, तो प्राण शक्ति का संचार होता है। वह केवल सुगन्धि ही नही हैं, प्राण शक्ति का संचार है, प्रत्येक प्राणी सुगन्धि को चाहता हैं, उस सुगन्धि में अपना कोई मानो अपनी कोई प्रतिभा है, उस सुगन्ध को ले करके मानो जब वायु गति करती है तो अशुद्ध परमाणुओं को निगलती चली जाती है और शुद्ध परमाणुओं का वह संचार करती है मानो देखो, उसको प्रसारण करती है, उस परमाणु को वह भेदन कर देती है, भेदन करने के पश्चात उस भेदन किए हुए परमाणु को आचार्यों ने बेटा! बड़ा अनुसन्धान किया हैं, और एक यह महान प्रतिक्रियाएं रही हैं, जिन प्रतिक्रियाओं के आधार पर, मेरे पुत्रों! देखो, हमारे आचार्यों ने याग के कर्म को विशालता में परिणत किया है, राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए मानो देखो, याग की प्रतिभा हैं। माता-पिता यह चाहते हैं, कि हमारा गृह मानो देखो, पुत्रवान हो तो पुत्रवान भी एक प्रकार का वास्तव में याग हैं, परन्तु पुत्रवान होना भी याग है परन्तु देखो, उसकी प्रतिक्रियाएं, हमें दर्शनों में प्राप्त हो रही है। हमें अग्नि के आह्वान करने से परोक्ष रूप से और देखो, प्रत्यक्ष रूप से देखो, जब हम उस अग्नि का आधान करते हैं अग्नि के परमाणुओं को अग्नि भी मानो देखो, वायु के आश्रित रहती हैं। वायु नही होगी तो अग्नि भी नही होगी, तो इससे, यह सिद्ध हुआ तो क्या वह जो अग्नि का तेज है, वह जो अग्नि में प्राण शक्ति हैं वह प्राण शक्ति वायु का द्यौतक बना हुआ हैं वायु ही मानो देखो, उसको संचालित कर रही हैं, उसमें वह अग्नि वायु से प्राप्त हो रही है, और वायु बिना अवकाश के भ्रमण नही कर सकती। तो मानो देखो, वह जो परमाणुओं को ले करके, वायु गति कर रही है, वह वहाँ से कैसे वह मानो देखो, अग्नि के परमाणुओं को, अग्नि के मानो शून्य परमाणुओं को, प्राण शक्ति वायु प्रदान करती हैं अवकाश में जब वह गति करते हैं, तो बेटा! यह संसार गतिवान हमें दृष्टिपात होने लगता है।

यज्ञ और औषधि विज्ञान

तो विचार-विनिमय क्या मानो देखो, याग हमें यही कहता हैं, याग में भेदन शक्ति हैं याग में प्राण शक्ति हैं, याग में मेरे पुत्रों! देखो, महान एक प्रतिक्रियाएं हैं। जिसके ऊपर मानव, धर्म मानवीयता यौगिकता को अपने में धारण करता हुआ, इस सागर की प्रतिभा से, मानव पार हो जाता हैं। विचार-विनिमय क्या, मैं विशेष चर्चाएं प्रगट नही करूंगा। क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी भी कुछ दो शब्दों की विवेचना करेंगें आज का विचार केवल हमारा यह वेद कहता है, कि हम अपने में मानो देखो, सक्रिय बन करके, अग्न्याधान करें, अग्नि के ऊपर विचार-विनिमय करें, क्योंकि अग्नि के भिन्न-भिन्न स्वरूप है, जैसे हमारे यहाँ, देखो, गृह में शुद्ध, वायुमण्डल को, वायु मण्डल को बनाना, बाल्यों को ऊँची शिक्षा देना, मानो देखो, उनमें धर्म, मानवीयता, मानवता, सुसज्जिता सर्वत्र मानो देखो, बाल्यों के जो माता-पिता प्रदान कर देते हैं, तो वह अग्न्याधान कर रहे हैं, वह अग्नि का चयन कर रहे हैं, मानो वही अग्नि उनके जीवन के लिए, एक महान बन करके रहती हैं, मानो देखो, बाल्य उस अग्नि को प्रदीप्त कर रहे हैं। जो माता-पिता, उनसे चयन करा देते हैं, और वह याग हो रहा है, विचित्र याग माता कर रही हैं, विचित्र याग गृह पति कर रहा है मानो देखो, विचारों से वायुमण्डल पवित्र होते हैं, मानो देखो, विचारों से ही मानो देखो, यज्ञशाला में, जब आहुति देता है, वह स्वाहाः कहता है कि भगवन! मेरी वाणी पवित्र हो जाएं मेरी वाणी में सुभावना आ जाएं ऐसा वह मानव अपने में धारयामि बन करके मुनिवरों! देखो, वह महान बनता हैं। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्दों की विवेचना प्रगट करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् तनुगणानामि विश्वतं देवा अपवर्णां दिव्यां रथप्रह्वे वसु रन्धन ब्रह्मे लोकाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव समय-समय पर अपना एक अमूल्य समय ज्ञान की धाराओं में जो अर्पण होने वाला एक विचार हैं। मानो जिस विचारधारा को ले करके, हम अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाना चाहते हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उस विचार को वह स्वतः देते रहते हैं, क्योंकि उन विचारों में एक महान मौलिक एक भावना है, उन विचारों में एक मौलिक दिव्यता है, मानो दिव्यता के आगे, मैं अपना कोई व्यक्तव्य देने नही आया हूँ। विचार-विनिमय यह देने की आया हूँ, कि जिस स्थली पर हमारा मानो देखो, यह याग हो रहा है इस स्थली पर एक याग हो रहा हैं, उस याग का समापन, उस याग की प्रतिभा, मानो सम्पन्नता को प्राप्त हो रही हैं। मैं जब, मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न युक्त होता रहता हैं, जब मानो देखो, यागों के कुछ विचार, देने का सौभाग्य प्राप्त होता हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो मानो देखो, व्यापक यागों की चर्चा करते रहते हैं। आज भी वह एक मानो व्यापक यागों की चर्चा कर रहे थे। वह उच्चारण कर रहे थे कि सर्वत्र याग है अग्न्याधान करना, विचारों के यागों की मानो एक प्रतिभा दे रहे थे और उच्चारण कर रहे थे, कि मानव के विचार, पवित्र रहने चाहिए। मैं यह कहा करता हूँ, कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के बहुत से शब्द, मानो देखो, मार्मिक और देखो, उन शब्दों में मानो कुछ क्रियात्मक प्रतिभा दृष्टिपात आती हैं। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप विद्यमान होता तो प्रातःकालीन जब वह अग्न्याधान करते थे तो उस अग्न्याधान करने से मानो वायुमण्डल को पवित्र बनाने का प्रयास करते थे, अपनी वाणी को मानो देखो, एक आभा में आभायित करने का प्रयास करते थे।

ऐसा मुझे स्मरण है क्या मानो देखो, वैज्ञानिकों के मध्य में जब हम प्रवेश करते हैं, और वैज्ञानिकों के द्वार पर जाते हैं, तो उस समय पुरातन काल का विज्ञान हमारे यहाँ भारद्वाज का विज्ञान विचित्र माना गया है। भारद्वाज मुनि के विज्ञान से पूर्व हमारे यहाँ देखो, दद्दड़ गोत्र का जो विज्ञान था वह विचित्र माना गया है, आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों की वह पुट देते रहते थे, परन्तु जब विज्ञान के क्षेत्र में हम प्रवेश करते हैं। तो मुझे वह काल स्मरण आता जब भगवान कृष्ण प्रातःकाल में याग करते रहते थे, परन्तु यागों की परम्परा यागों का चलन परम्परागतों से रहा है, भगवान कृष्ण ने एक समय अपनी देवी रूक्मिणी से यह कहा क्या दिव्या से आओ, हम

कुछ अनुसन्धान करेंगें परन्तु उन्होंने अनुसन्धान करने के लिए तत्पर हुए जब वह अनुसन्धान करने लगे तो मानो नाना प्रकार के यागों का चयन उनके समीप आया नाना प्रकार का यागों का जो कर्मकाण्ड हैं। मानो देखो, उसकी जो क्रमणिका हैं वह मुझे स्मरण आई। स्मरण आते हुए उनके विचार-विनिमय करने लगे। तो वह मानो देखो, ऐसे-ऐसे याग देखो, त्रिवर्धा अस्सुते ऐसा कहीं शब्द आया। तो महाराजा कृष्ण ने यह कहा कि देवी! यह याग का मन्त्र वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा हैं तो वह बोली कि-प्रभु! ऐसा प्रतीत होता है कि यागां ब्रह्मणे त्रिवर्धसुतां ब्रह्मे मानो जैसे याग में त्रिवर्धा का वर्णन आ रहा था। उस त्रिवर्धा के लिए मानो ऐसा प्रतीत होता है, कि याग का यहाँ प्रकरण है, वह त्रिवर्धा में यह जो संसार है, यह तीनों के अन्तर्गत मानो देखो, गति कर रहा हैं। मूल में तीन है, तीनों के गर्भ में, मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड गति कर रहा है। यह तीन कौन है? रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण। इसी प्रकार मानो देखो, याग में, याग की मानो देखो, त्रिवर्धा होना चाहिए। त्रिकोण मानो देखो, यह याग हो रहा हैं। मेरा हृदय प्रसन्न है, परन्तु देखो, जैसे यह जो त्रिवर्धा याग हैं यह प्रायः मानो देखो, आयुर्वेद की दृष्टि से होता है, आयुर्वेद की दृष्टि पान करने वाले, जब पूज्यपाद गुरुदेव, महात्मा दधीचि का जीवन स्मरण आता है, वह आयुर्वेद के यहाँ, ब्रह्म विद्या में पारायण थे, वहाँ ब्रह्मविद्या को ले करके वह आयुर्वेद में भी मानो पारायण रहते थे। अश्विनी कुमारों ने मानो देखो, इस विद्या को और भी महान गम्भीर बनाया तो हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! तो मानो देखो, वह याग करते थे, वह त्रिकोण में याग करते थे, ब्रह्मवेत्ता भी मानो देखो, चतुषकोण को, त्रिकोण में परिवर्तित करते थे। हमारे यहाँ जब यज्ञशाला से मानो देखो, जब जल का प्रोक्षण होता है, तो वह भी मानो देखो, तीन ही आभा में होता है, जब समुद्र की रचना हुई समुद्र का भान हुआ तो वह भी मानो देखो, तीनों आभा में गति कर रहा है मानो देखो, जब इस संसार रूपी समुद्र का निर्माण हुआ। इस संसार रूपी समुद्र से पार होने के लिए, दैविक, दैविक आदिक, भौतिक मानो तीन तापों का निर्माण किया गया। तीन से ले करके यह संसार मानो देखो, त्रिवर्धा इसीलिए कहा जाता हैं। विचार क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इस कर्मकाण्ड को बहुत पुरातन में जानते थे आज तो मुझे बड़ा दुखद होता हैं जब मैं पूज्यपाद के जीवन को दृष्टिपात करता हूँ जहाँ वह नाना प्रकार यागों का चयन कराते रहते थे यागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभाएं होती थी परन्तु पूज्यपाद शून्यवत को प्राप्त होते रहते थे परिणाम क्या है मुनिवरों! देखो, मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ क्या जिस कर्मकाण्ड की पद्धति में मानव प्रवेश करना चाहता हैं उसी पद्धति से आचार्य को निमन्त्रित करना चाहिए। मानो वह आचार्य इस प्रकार के होने चाहिएं, राजा के राष्ट्र में तो विद्यालयों की आवश्यकता रहती हैं। परन्तु जहाँ ध्वनियों का प्रसारण होता हो, जहाँ ध्वनि होती हो, उस ध्वनि में रमण करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। विचार-विनिमय क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जैसा मानो देखो, त्रिकोण का याग हो रहा है, मैं बड़ा प्रसन्नयुक्त हूँ, बहुत पुरातन काल के पश्चात अथर्वा मानो देखो, मैंने दृष्टिपात किया यह मेरा भी सौभाग्य है। परन्तु सौभाग्य की कल्पना करता हूँ, चतुष कोणों का याग भी हमारे यहाँ, परम्परागतों से विचित्र हैं। इसी प्रकार चौबीस कोणों की मीमांसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने किसी किसी काल मे की हैं, हम भी उन वाक्यों पर चिन्तन और मनन करते रहते है, अनुसन्धान करते रहते हैं, तो वेद के कुछ मन्त्रों में इसी प्रकार के यागों का वर्णन है, परन्तु रहा विचार यह कि मैं आज यज्ञमान को देखो, आशीर्वाद क्या यज्ञमान के लिए मैं उच्चारण करने के लिए आया हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मानो देखो, वह गृह सौभाग्यशाली होता है, जिस गृह में याग होते हैं, द्रव्य के द्वारा देखो, द्रव्य का सदुपयोग किया जाता हैं, यज्ञमान आहुति दे रहा है, परन्तु देखो, आहुति का उसे कोई प्रतीत नही कहाँ जा रही है। हे यज्ञमान! ऐसा मानो देखो, परोक्ष में दान कर रहा हैं, परोक्ष में द्रव्य का सदुपयोग कर रहा हैं, क्या देवता उसे पान कर रहे हैं, उससे वृष्टि का और देखो, अशुद्ध परमाणुओं को निगलने की प्रतिभा बन रही हैं। मैं अभी-अभी उस काल में आपको प्रगट करा

रहा था आधुनिक काल का वर्तमान का जो वैज्ञानिक हैं, परन्तु वैज्ञानिकों को यह तृष्णा लगी हुई हैं, क्या यह जो समय चल रहा है, जो काल चल रहा है, इस काल में यदि बीस वर्ष तक इस प्रकार का काल चलता रहा तो मानव को श्वास लेने में मानो कठिनता होगी, आधुनिक काल का विज्ञान ऐसा कह रहा है, वह क्यों कह रहा हैं, वह इसीलिए कह रहा है कि पृथ्वी के खनिज को आज का वैज्ञानिक पृथ्वी के खनिज को मानो देखो, अणु और परमाणु के रूप में ले रहा है कुछ देखो, खनिजों का प्रदर्शन हो रहा हैं खनिजों का जो मानो देखो, एक नृत्त हो रहा हैं उससे यह सिद्ध हो रहा है, मुझे तो यह विशेषकर यह प्रतीत हो रही है पूज्यपाद गुरुदेव तो जाने या न जाने, परन्तु मुझे यह प्रतीत हो रहा है कि अग्नि मानो देखो, प्रदीप्त होने जा रही हैं। यह अग्नि शान्त होने वाली नही हैं। क्योंकि विचारों में एक दूसरे की प्रतिभा अधुरी है, मानो देखो, इसी प्रकार, आधुनिक काल का विज्ञान, यह कहता है क्या इस सूक्ष्म परमाणु को हम कैसे शान्त करें? इसका कौन-सा ऐसा नृत्त होना चाहिए, जिससे यह परमाणुवाद समाप्त हो, अशुद्ध परमाणुओं का विनाश होना ही बहुत अनिवार्य है। जब मानव देखो, यह विचार इस प्रकार के विचार ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में आचार्यों के मस्तिष्कों में आते रहते हैं, तो मानो देखो, इनका कोई न कोई मानो देखो, इनकी क्रिया में सान्त्वना होने का भी कोई न कोई मार्ग उसे प्राप्त होता है, और वह मार्ग क्या है, आधुनिक काल का विज्ञान यह कहता है, कि प्रदूषण आरोपण को हम कैसे समाप्त करें। परन्तु देखो, वेद के आचार्यों ने कहा है वेद के ऋषियों ने कहा है कि हम मानो उसे शान्त करना चाहते हैं तो वैज्ञानिक तथ्यों से यह प्राप्त हुआ क्या गो के घृत में गो के दुग्ध में मानो देखो, वह विशेषता मानी गई हैं, उसी के द्वारा जब मानव याग कर्म करता है, तो वह वायुमण्डल को पवित्र बनाता चला जाता है। एक-एक तरंगें सहस्रों तरंगों को निगलती चली जाती हैं वायुमण्डल एक पवित्र बनता जा रहा हैं।

तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, उसका यह है कि मानव के इस मानो देखो, शब्दों मैं एक पवित्रता की धारा का जन्म हो गया, मानवीयता की तरंगें मानो देखो, मानवता का निर्माण कर रही हैं। तो विचार-विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! मंगलम् ब्रह्मा देवत्वां लोकं ब्रह्मा वसुरन्धनं देवोतं देवा ब्रह्मा लोकास्ते मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत पुरातन काल मे यह वाक् कहा था क्या आधुनिक काल क्या, मैंने भी यह कहा था, कि आधुनिक काल मानो देखो, यह अनुभव कर रहा हैं, यह वैज्ञानिक, एक वैज्ञानिक कहता हैं कि गो के घृत में, यह कोई विशेषता मानी जाती है। कि गो घृत के द्वारा यदि अग्न्याधान हो, अग्नि में वह प्रवेश कराया जाएं, तो परमाणुवाद दूषित परमाणुवाद समाप्त हो सकता है। मानो देखो, इस प्रकार का वैज्ञानिकों को, यह याग का जीवन्त करना चाहिए। याग जैसे कर्मों को, गो घृत के द्वारा, याग होना चाहिए, गो घृत के द्वारा याग होना चाहिए, मानो देखो, गो रस के देखो, रस कहते हैं, दुग्ध को और देखो, जब दुग्ध और घृत के द्वारा याग होता है, तीव्र अग्नि के द्वारा आहुति दी जाती हैं, तो वह मानो देखो, शुद्ध और पवित्रता ले करके, वह अन्तरिक्ष में जब प्रवेश करते हैं, अन्तरिक्ष में जब उसका आभरण होता है, तो मानो देखो, वह आभा में युक्त होती हुई विज्ञान के दूषित वायुमण्डल को समाप्त करती चली जाती हैं। और वह मानो यशंजनं रथं ब्रहे कृताम् वह रथ बन करके मानो सूर्य को प्रसारण कर देता है, वह सुगन्धित हो करके, अपने यातायात अपने मार्ग को सुगन्धित बनाता है। तो परिणाम क्या हैं मेरा उच्चारण करने का क्या वैज्ञानिक इस आभा में लगे हुए है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, मुझे यह वर्णन कराते हुए कहा था कि अशुद्धवाद से मानव की प्रतिभा मानव की कान्ति समाप्त हो जाती हैं मानव की आभा नष्ट हो जाती हैं मानव मानो देखो, अपने को ग्रो अस्सतां मानो देखो, अपने को स्वीकार करने लगता है।

तो आओ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया, आज भी मुझे वर्णन करा रहे थे, परन्तु देखो, वह क्या? क्या मानव को अपने जीवन को ऊर्ध्वा बनाना चाहिए, ऊर्ध्वा की गति में ले जाना चाहिए, क्योंकि मैंने

यज्ञ और औषधि विज्ञान

बहुत पुरातन काल में बहुत से यागों का चयन किया है। बहुत से याग दृष्टिपात किए हैं। हमारे यह जो त्रिकोण याग जो मैं दृष्टिपात कर रहा हूँ, यह अथर्वा की प्रतिभा से प्राप्त होता है। क्योंकि अथर्वा ने आयुर्वेद का विज्ञान हैं परमात्मा का विज्ञान हैं उसी आयुर्वेद में मानो देखो, यह विज्ञान की प्रतिभा है, जब वेदों के एक-एक मन्त्र के ऊपर अनुसन्धान करने लगते हैं, अनुसन्धानित हो जाते हैं, तो एक एक वेदमन्त्र में मानो देखो, विज्ञान की कोई न कोई तरंगों का जन्म होता है, उन तरंगों को ले करके, उन तरंगों को प्रकाशित करके मानो देखो, उन तरंगों को ले करके अग्रणीय बनते हैं, अग्रणीय बन करके, ऐसा मुझे स्मरण आता है क्या अग्रणीय बनने वाला मानव समाज में प्रतिष्ठित होता हैं। और महान बन करके मानो उसकी महानता का प्रदर्शन होता हैं।

विचार-विनिमय क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने आपको यह वर्णन करा रहा हूँ कि मानो देखो, किस प्रकार का यह जीवन किस प्रकार की धाराओं में परिवर्तित हो रहा है परन्तु विचार-विनिमय क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो मुझे कई काल में प्रगट कराया कि आधुनिक जगत और पुरातन काल दोनों के विज्ञान का समन्वय होना चाहिए, दोनों के प्रकार के विज्ञान में इतनी एकता होनी चाहिए, जिससे संमाज में एक नवीन क्रान्ति आ जाएं, संसार में एक नवीन चिन्तन आ जाएं मानो देखो, उस जीवन को पान करके मानो मे सहर्ष अपने में ध्वनित हो गया। तो विचार-विनिमय क्या है हे मेरे पुत्रों! मैं दूरी न चला जाऊं विचार-विनिमय यह था, कि हम अपने में विद्यमान और देखो, यज्ञमान के लिए बारम्बार यह कह रहा हूँ कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का यह सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन की मानो देखो, मौलिकतांए मानो विचित्र बनती रहें जिससे जीवन में एक महानता की धारा उत्पन्न हो जाएं। आज जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता हूँ, कि विज्ञान, याग और विज्ञान की, मैं इनसे किसी काल में चर्चा करता हूँ, और यह कहता रहता हूँ, कि मानो देखो, यागों में इस प्रकार का विज्ञान, उस विज्ञान में विचारते-विचारते मानो एक व्यापक विज्ञान की धाराएं स्मरण आई, जिन व्यापक धाराओं को अपना करके, मानव अपने को महान और पवित्र बनाने का प्रयास करता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, आपको मैंने कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, आज मैं उस वर्णन को नही कर पाऊंगा, परन्तु विचारना हमारे लिए अनिवार्य है, कि हम किस विचार में संलग्न हो करके, समकालीन हो करके, समधाराओं को अपना करके मानो देखो, ग्रणानि असुतो दिव्यं ब्रह्मा अस्तो देव्तयां हिरण्यं मं ब्रह्मे असतो आस्वानि गच्छते ऐसा वेद का मन्त्र कहता है। मानव को अपने में सुदृढ़ बन करके अपने प्रभु की प्रतिभा उसकी मानो परिक्रमा, उसी का ज्ञान, उसी का विज्ञान, उसी की महानता, उसी की महानता को अपना करके मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मानव को अपने जीवन को सुन्दर बनाना चाहिए।

विचार-विनिमय क्या हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन की धारा महानता महानता में परिणत हो जाएं, तो मेरे ब्रहे पूज्यपाद को बारम्बार कोई न कोई नवीन वार्त्ता को ले करके आते हैं, परन्तु ब्रहे नवीनता को ले करके मानो अपने में ही जब प्रतिभाषित होता है तो देखो, ऐसा प्रीतीत होता है जैसे यह ज्ञाना स्वस्त ब्रह्मा यह ज्ञान से युक्त हो गया हैं। तो मानो इसी प्रकार मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि वैज्ञानिक जनों को आधुनिक काल का वैज्ञानिक, एक विचित्र हैं। परन्तु आधुनिक काल का विज्ञान, ऐसा विचित्र है, क्या रूढ़ियों में परिणत हो जाता है, इसे रूढ़ियों से पृथक रह करके, अपने जीवन में मौलिक धारा को अपनाता हुआ अपने जीवन को गति करने वाला बने। तो ऐसा मुझे दृष्टिपात आता रहता है अनुभव भी होता रहता है क्या प्रायः ऐसा जीवन भी किसी भी किसी काल में परिणत हो सकता हैं, परन्तु रहा यह सम्भूति ब्रह्मा भागं ब्रह्मे आप ज्ञान लोकाः हिरण्यम् रथा गतप्रमाणां मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में वर्णन कराते हुए कहा आज भी वह वर्णन करा रहे थे कि मानव को अपने में महान विचित्रता की गतियों में रमण करना चाहिए। जिससे मानव समाज ऊँचा बन जाएं, सभ्य समाज में एक महानता की गति उत्पन्न होती चली जाएं, विचार-विनिमय क्या हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव

मैं अधिक विचार-विनिमय दे नही पाऊंगा परन्तु देखो, विचारधारा यह क्या कह रही हैं मानव को अपने में इतना महान वैज्ञानिकता में, यन्त्रों में, जिन यन्त्रों से विनाश होता हैं और द्वितीय यन्त्र से सुखद प्राप्त होता है दोनो यन्त्रों को दोनो आपस में समावेश करना दोनो के विज्ञान की प्रतिक्रिया एक ही सूत्र में रमण करना मानो देखो, अहा समुद्राणि गच्छतं ब्रह्मे यह उसकी उपासना में रत्त हो जाएं, रत्त रहने के पश्चात वह अपने में सौभाग्यशाली अपने को स्वीकार करता है। तो इसीलिए मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं तो सूक्ष्म सा परिचय देने आया हूँ और वह परिचय क्या है? क्या आधुनिक काल का वैज्ञानिक इस पर लगा हुआ है कि कोई वस्तु ऐसी प्राप्त हो जाएं जिससे देखो, हमारा भी कल्याण हो और देखो, हम अपनी आभा में आभषित हो जाएं।

तो विचार-विनिमय क्या विचार-विनिमय यह है कि हम अपने में महान बन करके हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि तू अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग कर रहा हैं। आज वह मानव सौभाग्यशाली होता है, जो गृह का गृह के वायुमण्डल का परिवर्तित कर देता है। मानो वह गृह, वह गृह पति सौभाग्यशाली जो मानो देखो, समाज में महानता की ज्योति को लाता है। जो मानव बड़ा सौभाग्यशाली है, जो अपने गृह में मानो प्रदीप्त की हुई अग्नि को वह प्रदीप्त ही किए रहता है, उसका आचरण बना रहता है, उसकी प्रतिभा बनी रहती है, तो मानो देखो, वह सौभाग्शाली हैं, एक मानव वह सौभाग्यशाली है, जो आयुर्वेद में परिणत हो करके आयु को जानना चाहता हैं। आयु में रमण करना चाहता है, आयु को दीर्घ बनाना चाहता है, इसीलिए देखो, मृत्यु न चाहने वाले प्राणियों को नृततं किया तुम मानो देखो, अतिथि में अवृत हो जाओ। तो इसी प्रकार मानव के विचारों का एक वृक्ष बनता रहता हैं, मानव के विचारों की भिन्न भिन्न प्रकार की शाखाएं बनती रहती है। तो विचार-विनिमय क्या है आज का हमारा आज के वाक् क्या कह रहा है आज का यह वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा है मेरे अप्रहणा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा है क्या यही वेदमन्त्र है जो मानव को मुक्त कराता हैं जो मानव को मानो इस संसार सागर और मानो देखो, उस मार्ग को विचरण करता है, उस मार्ग को अपनाने के लिए हमें सदैव महान बनने की आवश्यकता है। विचित्र बनने की आवश्यकता है, जिससे ऐसा विचित्र अस्वां ब्रह्मा वह समाप्त भी हो सकता हैं, परन्तु आज का हमारा वाक् पूज्यपाद गुरुदेव की संरक्षणता में मैं उच्चारण कर रहा हूँ। हे यज्ञमान! तेरे जीवन की अखण्डता बनी रहे। विचित्रवाद बना रहे। तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, क्योंकि यदि द्रव्य का सदुपयोग नही होता, तो वही द्रव्य मानव के जीवन का भक्षण कर जाता हैं। मानव को विनाशता के क्षेत्रों पर ला देता हैं। मानव को मानो देखो, ऐसे क्षेत्र में ला देता है, जिनका कोई रहस्य नही होता, जिनमें कोई महानता प्राप्त नही होती, परन्तु देखो, यह सब एक आभामयी कहलाया जाता है। जिसके ऊपर मानव को परम्परगतों से विचार-विनिमय करना है।

आज का हमारा यह वाक् यह क्या कह रहा है, क्या हे यज्ञमान! हे होतागणों तुम यज्ञमान के लिए प्रार्थना कर रहे हो, और तुम अपने में मानो प्रार्थी हो कि तुम अपने जीवन को महान और पवित्र बनाने का भी प्रयास करो। आज का वाक् जो हमारा यह मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ने मेरे प्रश्नों के मानो बहुत से आयुर्वेद की मानो देखो, गुत्थियां स्पष्टीकरण हो सकती है। परन्तु वह समय आने वाला हैं, मेरे पूज्यपाद से जब मैं किसी काल में प्रार्थना करता हूँ, तो मेरे वाक् को वह स्वीकार कर ही लेते हैं। परन्तु देखो, जहाँ उत्तर प्रश्नावली देखो, यज्ञमानों के द्वारा नाना यज्ञमान तो कुछ ऐसे होते हैं, जिनकी पुरातन संस्कारों की प्रतिभा बनी हुई हैं। परन्तु उन संस्कारों की प्रतिभा से उनके संस्कार प्रायः उद्बुद्ध होते रहते हैं, उन संस्कारों से उद्बुद्ध होने से जीवन की धाराएं विचित्र बनती हैं। तो इसीलिए मैं परम्परागतों से पूज्यपाद गुरुदेव से प्रार्थी रहा हूँ, परन्तु अब मैं आज्ञा पाऊंगा, मुझे आज्ञा दें।

यज्ञ और औषधि विज्ञान

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने कुछ विचार दिए इनके विचारों में एक महानता एक मौलिकता तो रहती है, क्या वह कर्म और कर्तव्य के लिए मानव को बाध्य करते हैं। तो इनके विचारों में जो बाध्यता आती रहती हैं, मानो देखो, यह प्रार्थना की वह श्वेतकेतु धारा में रमण करने से मानव का जीवन सुन्दर बनता हैं। हमारे यहाँ ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके आयुर्वेद के क्षेत्रों में प्रवेश करते रहे हैं, आयुर्वेद के क्षेत्रों में जा करके मानो देखो, कुछ वनस्पतियों की वृक्षों की आहो वृत्तियों की मानो देखो, वह कण्ठों में माला धारण करते हैं। बहुत पुरातन काल में मानो देखो, ऋषि विभाण्डक मुनि महाराज एक समय वह जीवन की धाराओं में रमण कर रहे थे, और यह अपने में अनुभव करना चाहते थे कि हम वास्तव में उज्ज्वल और महानता को प्राप्त करें। तो उस समय वह आयुर्वेद की कुछ औषधियों को ले करके मानो मस्तिष्क पर लेपन करते थे, और कुछ औषधियों को ले करके मानो देखो, धागे में, एक धागा होता है कुंजिका का धागा, वह कुंजिका भी मानो वनस्पति हैं कुंजिका के धागे को ले करके उसमें वह विशुद्ध रूप से मनके पिरोएं जाते हैं, जिन मनकों में गायत्राणी है, जिन मनकों में वाणी का सन्तुलन है, जिस वाणी में कृतघ्नता नही हैं तो मानो ऐसा वह नृत्त बनाते रहते थे वह उन वृक्षों की माला जैसे हमारे यहाँ त्रिकेतुक नाम का वृक्ष होता है, जो हिमालय की कन्दराओं में प्राप्त होता है। उस वृक्ष की, हम एक अध्यात्मक मनका बनाते हैं उसको हम धारण करते हैं और धारण करके, वह मानव के लिए स्थिर हो जाता हैं उसकी चंचलता रसातल को जानी प्रारम्भ हो जाती है परन्तु जब उनकी वह रसातल को चली जाती है, रूग्णता, तो उन वृक्षों का इतना ऊर्ध्वा प्रभाव मानो देखो, एक माला से ही होता हैं। मेरी पुत्रियाँ जब मानो देखो, शृंगार में परिणत हो करके मानो देखो, पति लोकेशृंतां नमाः जब वह पति लोक को प्राप्त होती है, पति लोक को प्राप्त होने से पूर्व वह स्वर्ण के सुन्दर-सुन्दर आभूषणों को धारण किया जाता हैं। हमारे आयुर्वेद में इस मानो स्वर्ण की बड़ी महिमा, उन्होंने गाई, महिमा का वर्णन किया है। मैंने उस महिमा को मानो प्रायः श्रवण किया हैं उस महिमा में क्या होता है वृक्षंका ब्रह्मे वर्णसुता वह मानो अपने वृक्षों का श्वंजन्म बना करके माला को अपने में मानो कण्ठ में धारण किया जाएं, माताएं धारण करती हैं पुरूष धारण करते हैं उनको धारण करने से, वह जो हृदय के कटि प्रदेश है उस हृदय की स्वर्ण में मानो विद्युत हैं, उस विद्युत का प्रभाव मानो देखो, हृदय स्थली पर, उसकी प्रतिभाषित हो जाता हैं। तो विचार यह है, पुत्रों! क्या मानो आयुर्वेद का जो तुमने विषय लिया हैं वह बड़ा एक विचित्र है परन्तु इसके सम्बन्ध में, पुनः-पुनः विचार देते रहेंगें, आज का विचार यह है, कि हम अपने प्रभु की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस सागर से पार हो जाएं। मानो देखो, जैसा तुमने यागों का वर्णन किया था, त्रिकोण याग, पुत्र! हमारे काल में, पुरातन काल में मानो त्रिकोण यागों का व्यवधान था यह महाभारत काल के पश्चात मानो देखो, इसकी प्रतिभा लुप्त हो गई। तुम्हारे कथनानुसार हुई। परन्तु लुप्त क्यों हुई? क्योंकि उसके कर्मकाण्ड के पाण्डितव नही होता था।

पूज्य महानन्द जीः- प्रभु! पाण्डितव तो अब भी नही है आधुनिक जगत में अब भी पाण्डितव की सूक्ष्मता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- तो इसीलिए पुत्र देखो, उसका कर्मकाण्ड भी तो जानना चाहिए। तो कर्मकाण्ड मानो देखो, आधुनिक काल में जो वैदिक साहित्य में, उसमें जानना चाहिए, यह जो मानो जैसा (पुस्तक से) तुमने अथर्व का वर्णन किया हैं, अथर्ववेद के याग में भी प्रायः ऐसी ही दृष्टिपात आता है कि औषधियों का वर्णन है तो वहाँ उसमें वाजपेयी यागों का वर्णन भी हैं वाजपेयी याग की चर्चा हम किसी काल में प्रगट करेंगें जब मन्त्रों में इसका प्रकरण आयेगा। वाजपेयी याग भी औषधि काल से ही इनकी सहकारिता का वर्णन प्रायः आता रहा हे वाजपेयी याग का वर्णन करते हुए हमारे आचार्यों ने पांच कोणों का वर्णन किया है। परन्तु हम वैदिक साहित्य को दृष्टिपात करते हैं। तो जैसा तुमने अभी-अभी वर्णन किया था कि स्वर्ण इत्यादि वृक्षों की मालाओं का धारन करना यह भी हमें

अथर्ववेद से प्राप्त होता हैं।

हमारे यहाँ विद्याएं तीन है, ज्ञान, कर्म, उपासना है, ज्ञान, कर्म, उपसना के गर्भ में अथर्ववेद विद्यमान हैं। उसी में यागों का प्रकरण है, यागों का प्रकरण औषधि विज्ञान, आयुर्वेद का प्रवाह उसमें नृत्य रूपों में गति कर रहा है, इसी प्रकार हमें अपने जीवन को एक महान आभा में ले जाते हुए और जैसा तुमने कहा है यज्ञमान को मेरा हृदय भी प्रसन्नयुक्त हो करके हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि तेरा आहार पवित्रता जैसा पुत्र ने मुझे वर्णन करया है आहार और व्यवहार में पवित्रता आती रहे और द्रव्य का सदुपयोग करते हुए प्रीति पूर्वक अपने जीवन को व्यतीत करते हुए उसमें एक महता की ज्योति जागरूक हो जाएं। ऐसा मैं सदैव प्रार्थना करता रहता हूँ मैं बहुत परम्परागतों से यह प्रार्थना कटि वस्रों में वर्णन करता रहा हूँ जैसे महाराजा अश्वपति के यहाँ और भी नाना याग कराने का बहुत-सा सौभाग्य प्राप्त हुआ है उन यागों में सबसे प्रथम ब्रह्मा ही शोधन करता है यामान ही उसका प्राण है प्राण का शोधन औषध करती है और प्राणों का शोधन जब औषध करती है तो प्राण ही याग है प्राण ही यज्ञमान है।

हे यज्ञमान! तेरे जीवन में सदैव महानता विचित्रता और जन्म-जन्मान्तरों की जैसा मेरे पुत्र ने मुझे वर्णन कराया है जन्मों के संस्कारों की माला के सदृश्य एक कड़ी बन जाएं जिसके धारण करने से द्रव्य का सदुपययोग जिन गृहों में होता हैं वह गृह सौभाग्यशाली होते हैं जिन गृहों में द्रव्यों का दुरुपयोग होता है, वह गृह दुभार्गी होते हैं जिन राष्ट्रों में सदपुरूष रहते हैं वह राष्ट्र सौभाग्यशाली है जिस राष्ट्र में चरित्र और तरंगों के विकार उत्पन्न होते रहते हैं। वह राष्ट्र रक्तभरी क्रान्ति वाला कहलाता है। अब मैं अपने विचारों को समाप्त करने जा रहा हूँ मेरे पुत्र ने बहुत सुन्दर अपने वाक्या प्रगट किए हैं। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

११ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १४ १२ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव जो महा अस्वतियों में रमण करने वाला है मानो जिसका यह संसार एक महानता में रमण करता रहता है। नाना प्रकार के विज्ञान और नाना प्रकार की धाराओं में जो रत्त रहने वाला हैं मानो हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा है क्योंकि प्रत्येक मन्त्र कोई न कोई उस प्रभु की प्रतिभा का वर्णन कर रहा हैं जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, अनुसन्धान करता रहता है बहुत पुरातन काल हुआ जब ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके मानो उस प्रभु की महिमा का गुणगान गाते हुए और उसकी महती का वर्णन करते हुए अपने को महान और पवित्र बनाते रहे हैं क्योंकि हमारे यहाँ बहुत से ऋषि इस प्रकार के हुए हैं, जिन्होंने सूर्य की किरणों के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया है, क्योंकि सूर्य विज्ञान हमारे यहाँ, परम्परागतों से महान रहा है। सूर्य की जो नाना प्रकार की जो किरणें होती हैं, उनमें जो मानो एक परमाणुवाद विद्यमान रहता है, उसमें जो ऊर्ज्वा रहती हैं, उस ऊर्ज्वा से बेटा! अपने जीवन को आयु के रूप में परिवर्तित करते रहे हैं। क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों का इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान रहा हैं। जैसा मेरे पुत्र बारम्बार प्रेरित करते रहते हैं। आज भी आधुनिक जगत में इनकी कुछ प्रेरणाएं हैं। मानो इनके कुछ उदगार है। उन उदगारों के ऊपर हमारे यहाँ बहुत-सा अनुसन्धान होता रहा है। आज मैं पुत्रों! उस अनुसन्धान में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि अपनी महान आयु को ऊँचा बनाने के लिए मानो वह प्राण का शोधन करते रहे हैं प्राण की प्रतिभा को जानते रहे हैं क्योंकि मानव को प्राणेश्वर बनना भी बहुत अनिवार्य हैं। हमारे यहाँ नाना प्रकार के आयुष्मति को ऊँचा बनाने वाले, और उसके नृत्य और अनुसन्धान प्रायः करते रहे हैं। आज मैं उस अनुसन्धान बेला में नही जाना चाहता हूँ, मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे बारम्बार, यह प्रेरणा करते रहते हैं, कि आप आयु के ऊपर कोई विचार नही देते, मानो आयुर्वेद के सम्बन्ध में अपना कोई मन्तव्य नही देते, क्योंकि जब भी मन्तव्य देते हो, तो कहीं सुधन्वा वैद्य का वर्णन आता है, तो कही अश्विनी कुमारों का आता हैं, परन्तु आपका मन्तव्य कोई नही आ पाता, तो हमने बहुत पुरातन काल में अपने पुत्र से बहुत-सी वार्त्ताएं वर्णन की हैं, और बहुत परम्परागतों से भी, हम यह निर्णय देते रहे हैं, कि आयुर्वेद एक बहुत विशाल एक भयंकर, आयु का एक वन हैं, जिस वन में जाने के पश्चात मानव को, मार्ग को प्राप्त होना एक असम्भव हो जाता है। क्योंकि कुछ अनुसन्धान किया था आयुर्वेद के सम्बन्ध में। मानो हमने कुछ पिचासी वर्षों तक बहुत-सा अनुसन्धान किया, आयुर्वेद के सम्बन्ध में, आयु को दीर्घ बनाना हैं। आयु के सम्बन्ध में, प्रत्येक वनस्पतियों का जो आयु है, उसमें जो ऊर्ज्वा हैं उसमें जो एक परमाणुवाद आदान प्रदान हो रहा हैं, मानो उसको हमें जानने के लिए तत्पर रहना है। हमने बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था कि भिन्न प्रकार की औषधियों का आसन भी बनाया जाता हैं, जिस आसन पर मानो बुद्धिमान और पृथ्वी के परमाणुओं में गुरूतव में, एक विद्युत का संचार होता है, बहुत-सी औषध, इस प्रकार की होती है बहुत-सी मानो इस प्रकार की त्रिकाय होती हैं, जिसके ऊपर मानव विश्राम करता है पूजन करता है, और उस पूजन के ही माध्यम से उसे ऊर्ज्वा प्राप्त होती हैं। उसे एक शक्ति प्राप्त होती है। जिस शक्ति का समन्वय, मानो द्यौ और सूर्य से उसका सम्बन्ध हो जाता हैं। और बुद्धि महान और प्रखर बन जाती हैं। क्योंकि उसके पश्चात, वह आयु के जहाँ, प्राण के सूत्र को अपने में स्वीकार करता है, तो वहाँ भयंकर वनों में, वह मुनिवरों! देखो, वह अमृत को पान करने के लिए, अपने को औषधियों को एकत्रित करने

का प्रयास करता हैं। क्योंकि उसे अपनी आयु दीर्घ बनाना है, आयु में दीर्घता लानी है, और अपनी आहार और व्यवहार को ऊँचा बनाना चाहता हैं।

मेरे पुत्र तुम्हे प्रतीत होगा, जिस काल में तुम्हारा जीवन बाल्य काल का था मानो उस काल में एक सर्पगन्धा एक औषध को और उसमें एक त्रिकिट एक औषध के आसन को बनाया गया, जिसके ऊपर विद्यमान हो करके मानव ध्यानावस्थित होता हैं, और सर्प गन्धा औषध को पान मानो उस औषध में और भी कुछ अपृत औषधियों का मिश्रण करके, उसको पान कराना और देखो, यह जो पीपल और आसनी दोनों वृक्षों का एक पंचांग बना करके, उसे पान करना और आसन पर ध्यानावस्थित हो जाना, मानो उसकी ध्यानावस्थिति प्रबल और महानता में परिणत रही है, हमारे आयुर्वेदाचायों ने मानो कामदेव को विजय करने के लिए, उन्होंने मुनिवरों! देखो, बहुत-सा तप किया हैं, और उस प्रकार की औषध को पान किया हैं, जिस पंचांग को पान करने के पश्चात, उसमें प्राण को एक अद्रुत एक संचार हो जाता है। जिस संचार की प्रतिभा, एक मानवीयता नही, एक आयुर्वेदाचार्यों के समीप, विद्यमान हो करके, वह एक महानता में, और उसके अन्तःकरण की पवित्रता के लिए, परमपिता परमात्मा के अमूल्य जगत को जानने के लिए, वह उसमें बड़ी मानो सहयोगी रही हैं, सहकारिता में परिणत होता रहा हैं।

तो विचार-विनिमय क्या हैं मैं यह विचार दे रहा हूँ, मेरे पुत्र मुझे बहुत समय से यह बाध्य करते रहते हैं, विचार देने के लिए बाध्य करते रहते हैं परन्तु देखो, इन्हीं औषधियों को जान करके, मानव ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में भी रत्त होता रहा है। क्योंकि आध्यात्मिकवाद का सम्मिश्रण, भौतिक विज्ञान की विश्रमता में परिणत होता हुआ, यह विज्ञान मानव के समीप आ जाता है, तो विचारना यह कि आज हम अपनी महान देखो, उन उद्गारो को प्रगट कर रहे हैं, जब किसी काल में साधना के क्षेत्र में, साधना की प्रतिभा में रत्त रहते रहे हैं, आचार्यों की आज्ञा पा करके, विद्यालय से उपराम हो करके, भयंकर वनों में मानो देखो, अपृतो अपने को श्रोत्रियतों में परिणत करते रहे हैं, वहाँ नाना प्रकार के, मानो वृक्षों के पंचांगों का अनुभव करते हुए, उसका खार बना करके, और यागों का प्रचलन होता रहा क्योंकि आहुति देना उनसे परमाणुवाद की उदगारता परमाणु के उत्पन्न होने से मानो देखो, उसमें आदान और प्रदान की जो प्रतिभा मानो प्रतिभाषित रही है, उसके ऊपर बहुत-सा अनुसन्धान किया गया परन्तु वह आध्यात्मिकवाद में बड़ी सहायक बनी हैं।

सोमलता

विचार क्या है मानो देखो, आज मैं सोमलता के सम्बन्ध में, एक विचार देता रहा हूँ, कि देवता जन, सोम को पान करते रहे है सोमलताओं को पान करते रहे हैं मानो देखो, जटा वृत्तिका, त्रिजटन्धानु, शैलपुत्री, वाचकानी मेरे पुत्रों! देखो, इनको अग्नि में तपाया जाता हैं। एक सोमरस नामक एक औषध होती है मानो जो हिमालय की कन्दराओं में भयंकर वनों में प्राप्त होती है मुझे स्मरण आता रहा हैं। राजा रावण के विधाता, जो कुम्भकरण थे वह जब महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम से भयंकर वनों में पंहुचे तो मानो देखो, वह सोम का पान करते थे, महाराज कुम्भकरण के जीवन की यह विशेषता रही हैं, क्या वह ब्रह्मचारी सुकेता और महाराज कुम्भकरण दोनों हिमालय की कन्दराओं में विद्यमान हो करके वह मुञ्जकेश्वरी, शुकवाणी, मानो जो औषध होती है जो हिमालय की कन्दराओं में प्राप्त होती हैं उनका आसन बना करके, वह वृक्षों की वृत्तिका ला करके, उसका पिपाद बना करके अग्नि में तपाते रहे, उन आसनों पर विद्यमान हो करके, वह मानो देखो, विज्ञान की बहुत-सी अनुभूतियां उन्हें प्राप्त होती रही हैं। विज्ञान के बहुत से तथ्य, आध्यात्मिकवाद के बहुत से तथ्य, उन्हें प्राप्त होते रहे, परन्तु देखो, उन तथ्यों को ले करके, वह सोमलता को भी जानते थे, सोमलता का नामोकरण, हमारे यहाँ परम्परागतों से माना गया है। हमारे यहाँ क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और बहुत से ऋषि मानो इसका पान करते रहे हैं। सोमलता का पान सोमरस का पान, मानो

यज्ञ और औषधि विज्ञान

देखो, तपस्वी जन किया करते हैं। परम्परागतों से करते रहे हैं, सोमलता में कुछ औषधि होती है एक तो सोमलता मानो कई औषधियों का नामोकरण सोमलता के नामों से पुकारा जाता है। एक शिववाहिनी, एक औषध होती है एक जटा वृत्तिका होती है, एक शैलपुत्री होती हैं, एक शैलमृचिका होती है, मानो देखो, एक सोमभानु होती है, सोमभानु में यह विशेषता प्राप्त होती है, क्या वह हिमालय के मानो देखो, तट पर उनकी अस्सुतियों में प्राप्त होता है, उनकी विशेषताएं मानो देखो, वैद्यराजों को प्रतीत होती रही, मानो इन औषधियों को एकत्रित करके इनमें पीपल का पंचांग मिश्रित किया जाता है, एक जाल का पंचांग मिश्रित किया जाता हैं, एक कुमारी वृक्ष का भी पंचांग लिया जाता है उन पंचांगों को अग्नि में तपाते रहते हैं, अग्नि में तपा करके, मानो जल के मानो आधे विभाग को समाप्त करना है, और करके मानो देखो, यह सोमरस बन जाता है। सोमरस, उस काल में बनता है जिसको तपाने के पश्चात, मानो सूर्य की ऊर्ज्वा में वह मानो देखो, ऊर्ज्वा में, वृत्तिका मानो उसमें वह लगभग एक माह तक चालीस दिवस तक, उसकी किरणों, वह उसमें रत्त रहता हैं और रात्रि के काल में, मानो देखो, चन्द्रमा की देखो, जैसे कला होती है, ऐसी कलाओं का मानो सोम उसमें प्रवेश करता हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उसको ऋषिजन प्रायः पान करते रहे हैं, सोमलता का अभिप्रायः यह है, सोमरस की आभा में रत्त रहना है, लता कहते हैं, मानो जो स्वांवनी हो और पवित्रितिका हो, तो उसे सोम कहते हैं। लता कहते हैं कई औषधियों को ले करके उसका पिपाद खरल बना करके मानो उसको ही जल के रूप में लाया जाता है, तो प्रायः उसको सोम रस कहा जाता हैं। आज मैं सोमरस के सम्बन्ध में, क्योंकि ऋषि-मुनि प्रायः पान करते रहे हैं।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब मानो देखो, राजा दशरथ के यहाँ, पुत्रेष्टि याग हुआ था, राजा दशरथ के यहाँ, एक पुत्रेष्टि याग हुआ था, तो राजा दशरथ को छह माह तक यह सोमरस का पान कराया, सोमरस को देखो, वह प्रतिदिन यज्ञशाला की अग्नि में तपाया जाता, और उसको पान कराया जाता था, क्योंकि वह ऊर्ज्वा उनमें प्राप्त हो गई थी, जिससे सन्तानों उत्पति हो जाएं, तो वह ऊर्ज्वा सोमलता में होती हैं, क्योंकि उसमें सूर्य की किरणों की जो पुट लगा करती है, वह मानो देखो, औषध विज्ञान, प्रतिभा विज्ञान में, एक प्रतिभाषित बनी रहती हैं क्योंकि इस विज्ञान को जानते हुए, बहुत से वैद्यराज हुए हैं, जो मुझे स्मरण है, जिसके ऊपर बहुत-सा अनुसन्धान भी परम्परगतो से होता रहा है। तो मैं आज इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, केवल तुम्हें चर्चा तो मैं करता ही रहता हूँ, आज की चर्चाएं केवल यह है कि मानव को सोमरस पान करना चाहिए। योगीजन सोमरस का पान करते रहे हैं, वैद्यराज मानो देखो, अपनी दृष्टि से औषध विज्ञान से बुद्धि को प्रखर बना लेते हैं। बुद्धि को एक देखो, जी देखो, मेधावी बना करके वह नाना प्रकार के देखो, इस पृथ्वी विज्ञान औषध विज्ञान में अपने में बड़े सहयोगी, अपने में बड़े महान सिद्ध हुए हैं।

तो आज मैं विचार मानो देखो, अश्विनी कुमारों का जीवन, मुझे स्मरण है, परन्तु देखो, उन जीवनों में न जा करके, आज मैं तुम्हें यह चर्चा करने जा रहा हूँ, क्या देखो, यहाँ ब्रह्मचारी सुकेता और महाराज कुम्भकरण की विवेचनाएं चल रही हैं, वह मानो अपने मस्तिष्क पर नाना, सुभावनी औषधियों का लेपन करते ही वह विज्ञान की तरंगों में रत्त होते थे, तो वह विज्ञान मानव का मौखिक गुण रहा हैं आध्यात्मिक विज्ञान, मानव की आयु का वेद रहा है, आयु का प्रकाश रहा है, जिसके ऊपर मानव अनुसन्धान, अन्वेषण विज्ञान की ऊँची-ऊँची उड़ान उड़ता रहा हैं।

अग्नि प्रधान वृक्ष

यह मानव परम्परागतों से ही, मुझे स्मरण आता रहता है महाराज देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ, एक ब्रह्मचारी थे, जिनका नामोकरण यज्ञ भुनेश्वर उस ब्रह्मचारी का नामोकरण था, परन्तु वह ऋषि कुल में, उनका

जन्म हुआ और वह जिस समय, विद्या का अध्ययन करने लगे तो उन्होंने हिमालय की कन्दराओं में जा करके भयंकर वनों मे जा करके वह मानो देखो, कुछ औषधियों का पान करने लगे, जिन औषधियों में देखो, अग्नि तत्त्व प्रधान होता है, अग्नि तत्त्व प्रधान मानो देखो, वह पीपल के वृक्ष में भी होता हैं, अग्नि प्रधान मानो जाल वृक्ष में भी होता हैं, अग्नि प्रधान देखो, एक खुनगानी एक औषध होती है, उसमें भी प्राप्त होता हैं परन्तु एक त्रिजटा होती है, उसमें भी यह अग्नि तत्त्व प्रधान होता हैं। मानो सोमभू कांचवानी एक औषध होती हैं, उसमें भी अग्नि प्रधानता होती है, परन्तु देखो, उन औषधियों का पान कराते हुए वह अग्नि सूत्र को जानने में लगे हुए थे क्या हम अग्नि सूत्र जो रमण कर रहा हैं। मानो यह प्राण के रूप में है, अथवा यह प्रकाश के रूप में है, या यह मानो देखो, शक्ति ऊर्ज्वा के रूप में हैं। उसके ऊपर प्रायः अनुसन्धान करते रहें अन्वेषण होता रहा। परन्तु देखो, उन औषधियों का पान करते और लोक-लोकान्तरों को जानते रहे, विज्ञान की प्रतिभा में रमण करते रहें। परन्तु देखो, इस प्रकार का अग्नि तत्त्व वाला, जो अग्नि सूत्र में अपने को पिरोना जानता है, अपने को यह चाहता है कि मैं विज्ञान की उन महान तरंगों में रमण करना चाहता हूँ जिस विज्ञान में हमारे पूर्वज चले गएं हैं और जिसका आध्यात्मिक विज्ञान में, हम रत्त रह करके मानो देखो, यह औषधियां हमसे आत्मिक चर्चाएं करने वाली हैं। महात्मा सुधन्वा, वैद्यराज सुधन्वा से औषधियां मानो देखो, स्वप्न में वार्त्ताएं प्रगट करती थी, यह चर्चा तो मैं कल ही प्रगट करूंगा, क्या सुधन्वा से औषधि कैसे वार्त्ता प्रगट करती थी? कैसे अपने गुणों का वर्णन करती रहती थी? क्योंकि मानव के मस्तिष्कों में मानो देखो, इस प्रकार के अवशेष होते हैं, ऐसा अवरोध होता हैं क्या वही मानो देखो, तरंगों का आदान प्रदान करता हुआ उस मानव की बुद्धि, को एक महानता में परिणत कर देता हैं। तो विचार-विनिमय क्या हैं आज मैं तुम्हें दूरी न ले जाता हुआ यह उच्चारण कर रहा था याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ, नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे, और आहार उनका, ऐसा सूक्ष्म की आचार्य की आज्ञा का पालन करते हुए, वह मानो विशेषकर सोमरस का पान करते थे। सोमरस का पान करके, उस सोमरस में, एक जालिका कोनकेतु औषध होती है, उसका भी मानो उसमें मिश्रण किया जाता है, और उसको पान करने से, मानव के जीवन में एक बुद्धि का जो तत्त्व हैं, बुद्धि की जो एक कृतिका है वह जागरूक हो जाती हैं उसके जागरूक होने पर, मानव की मानवीयता, एक महानता में परिणत हो जाती हैं। जब मैं यह विचार-विनिमय, बहुत पुरातन काल में करता रहा हूँ, आज मैं विशेष विवेचना तुम्हें देना नही चाहता हूँ, मैं व्याख्याता नही हूँ, मैं परिचय देने के लिए चला आता हूँ, क्योंकि बहुत-सा अनुसन्धान किया गया है, विचारा गया है, उस विचार के लिए तो ही तो स्वरूप में अपने को पान करना हैं। मानो देखो, ऋषि-मुनि, इन औषधियों का सोम का पान करते हुए, वह योगाभ्यास करते थे, वह मानो देखो, यागों में वृत्ति बन करके, याग की प्रतिभा को जानते रहते थे, मानो देखो, इस प्रकार का सोमरस पान करने वाले यज्ञमान, अपनी आयु को ऊँचा बनाते हैं। अपने को दीर्घता में परिणत कर देते हैं, जिसके ऊपर मानव का नृत्त होता रहता हैं।

विचार-विनिमय होता रहा है मैंने बहुत पुरातन काल की वार्त्ता मेरे पुत्रों! तुम्हें प्रगट कराई, क्या मानो देखो, राजा दशरथ के यहाँ एक पुत्रेष्टि याग हुआ था, वह तुम्हें स्मरण भी होगा, उस याग में मानो देखो, ऐसे साकल्य को एकत्रित किया गया था, जो साकल्य, परमाणुवाद बन करके मानव के श्वासों और प्राण के साथ में वह परमाणु गति करने वाला हो, जिस परमाणु में मानो देखो, कुछ ऊर्ज्वा की शक्ति हो, ऐसा मानो देखो, साकल्य निर्माणित किया गया, उस साकल्य में दुध कृतिका, सोमलता, सोमभावृत्तिका, मेरे पुत्रों! देखो, उसमें जंगवृत्ति और श्वेकृत्तिका यह नाना देखो, औषधियों को एकत्रित किया जाता है, इन औषधियों के द्वारा, एक पुत्रदा वृक्ष होता है। उसके मानो देखो, उसके पांचों अंगों को लिया गया उसका मानो देखो, साकल्य बनाया गया, पीपल के पांचों अंगों को ले करके मानो देखो, एक पंचांग बनाया गया, वट वृक्ष के पंचांगों को ले करके, उसका मानो साकल्य बनाया गया,

और देखो, जाल वृक्ष के, पांचांग रूपों को ले करके, उसका पंचांग बनाया, उसको मानो साकल्य बनाया गया। और देखो, उसमें एक सोम ब्रीहि, वृत्तिका, तृणकेतु, सोम ब्रीहि, वाचन्कृतिका, श्वेलता, आनवाकि, श्वेभानु, मानो देखो, उसमें लगभग स्वम्भु और मृतिका यह नाना औषधियों को ला करके, साकल्य बना करके, उसमे देखो, वह कणकानिक एक औषध और होती हैं मानो देखो, उन सबके पंचांग अंगों को ले करके, जब साकल्य का निर्माण किया गया, मानो देखो, एक सुम्भानु एक औषध होती हैं, सुम्भानु औषध ले करके और चंद्रिका होती है, एक चन्द्रभानकेतु होती हैं, इन तीनों औषधियों का मानो देखो, कुछ तन्दुलों के द्वारा एक मानो गो घृत में, एक पिपाद बनता है जो पुत्रेष्टि याग में मानो देखो, वह यज्ञमान सपत्नी को पान कराया जाता हैं। और जो होताजन बनते हैं, उस याग में, उनको श्रीति एक श्रीति नामक एक औषध होती हैं श्रीत नामक एक औषध होती है जो भंयकर वनों में प्राप्त होती हैं, मानो एक तेजपत्र होता है, एक कालि धेनुका औषध होती हैं, मानो देखो, उनके पीपल के वृक्ष में इनका पांचाग बना करके, वह होताओं को प्रदान किया जाता हैं जिससे उनकी प्रवृत्ति चंचल न बन जाएं, शीतल बनी रहे वह मानो देखो, कामविजय करने वाले, औषधियों का पान करने वाले, होताजन यज्ञमान की कामना को पवित्र बनाते हैं। मानो देखो, उनमें ऊर्ज्वा की शक्ति आती हैं। परिणाम यह होता है, कि यज्ञमान मानो उस याग को करके, अपने को पुत्र वर्चोसि को प्राप्त करता है, इसी प्रकार मैं आज तुम्हें विशेष विवेचना देना नही चाहता हूँ, केवल मानो इन औषधियों का वर्णन, हमारे वैदिक साहित्य में, वैदिकता में प्राप्त होता हैं, और इसकी जो प्राप्ति होती है, हिमालय की कन्दराओं में मानो जल के तटों पर, जल की कृतिकाओं में यह रमण करता रहता है परन्तु इनको पान करें, और देखो, जैसे एक औषध का नाम हमारे यहाँ स्वाति कहते हैं, स्वाति जो औषध होती है, वह प्रायः पृथ्वी पर अस्वत नामों से होती है, परन्तु उसको कुछ आचार्य जन, मानो देखो, श्रुत भी कहते हैं, कुछ आचार्य जन, उसको कृतिका कहते हैं, परन्तु हमारे विचारों मंप वह मानो देखो, उस औषध का नामोकरण, हमारे यहाँ अखुण्डकेतु कहते हैं उस औषध में यह विशेषता होती है, मानो देखो, उन औषधियों का पिपाद बना करके, मानो पीपल के पंचांग में इसकी पुट लगाई जाएं, मानो देखो, इसके फलों की पुट और देखो, पीपल के प्रत्येक अंग को ले करके, जब उसका आंचल बनता है, अग्नि में तपाया जाता है। तो उसको पान करने से, जितने भी यक्ष्मा रोग होते है, मानो देखो, उनको वह शोधन कर देता हैं परिणाम क्या मैं तुम्हें आज औषध विज्ञान में जाना नही चाहता हूँ, परन्तु मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे बाध्य करते रहते हैं, और यह उच्चारण करते रहते हैं, कि कुछ तो उच्चारण कीजिए। मैंने यह तुम्हें वार्त्ताएं प्रगट की, अपना विचार दिया है, क्या हम अपने में औषध विज्ञानवेत्ता बन करके, और औषधियों के विज्ञान को हम जानते रहें, मानो जितने भी याग करने से, पुत्रवती को पुत्र देने वाले बनें, हम मानो देखो, हम अपने में औषध हमारे अपने गुणों का वर्णन करने वाली हमारे मस्तिष्कों में उसका भरण करने वाली मानो देखो, इसी प्रकार नाना प्रकार के औषध विज्ञान की चर्चाएं, बेटा! मैं शेष वार्त्ताएं कल तुम्हें प्रगट कर सकता हूँ, कल मानो देखो, सुधन्वा का विज्ञान, मुझे बडा प्रिय लगा करता हैं। क्योंकि महाराज! सुधन्वा का, बहुत अनुसन्धान रहा हैं, अश्विनी कुमारों का भी रहा है, इस सम्बन्ध में, कुछ चर्चाएं भी कल प्रगट करेंगें।

आज का विचार हमारा क्या है, क्या हम मानो देखो, नाना प्रकार की इस औषध विज्ञान के ऊपर, अपनी भूमिका बनाते हुए, अपने में मानो देखो, उस परमाणुवाद की रक्षा, परमाणुवाद को जानते हुए हम उस औषध विज्ञान के द्वारा, बेटा! विज्ञान की प्रतिभा, हमारे मस्तिष्कों में आती रही, ये चर्चाएं हम कल और प्रगट करेंगें आज का वाक् अब यह हमारा समाप्त होने जा रहा हैं। आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, कि हम परमपिता पिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए सोम रसों का पान करते हुए अपने में महान बनते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। संसार सागर से पार होना बहुत अनिवार्य हैं, यह संसार सागर क्या है? इसमें मान और अपमान की

झड़ियां लगी रहती हैं, इनसे उपराम होने का नाम परमात्मा को प्राप्त करना है, मानो इनके उपराम होना अपने आत्म तत्त्व को प्राप्त करना है। जिससे हमारा जीवन एक महानता में परिणत होता हुआ इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह आज का वाक् अब हमारा समाप्त होने जा रहा हैं, कल मुझे समय मिलेगा कल मैं सुधन्वा के वैद्यराज होने की उनके विज्ञान की चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, कुछ मानो जैसे आचार संहिता बनाई जाती है, इसी प्रकार एक विचारों की हम आचार अपने आचार संहिता हम कल के वाक्यों में बना सकेंगें। आज मैंने तुम्हें बेटा! भूमिका के रूप में कुछ वाक् प्रगट किए हैं, समय मिलेगा चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा अच्छा भगवन्! ओ३म् देवाः नमाः रथं आभ्यां गताः ऋषि वरुणा वरुणा ब्रह्मा तनु गायन्त्वा यौ सर्वा ओ३म् धेनु रुद्रा मनीषिणौ वृताः वाचन्नमाः ओ३म् श्वञ्जना मनु व्रायाहनम वृहि वाचन गृहिता रेवं सर्वां ओ३म् मधु मन्था वाचन्नमाः ब्रह्मा ओ३म् देवं मयाः सर्वेषु भद्राः मन्थन व्रत्यां दधि ब्रह्मा आनन्द मंगलम्।

१२ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १५ १२ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस उस महामना प्रभु की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि उस प्रभु का गुणगान गाना, उस प्रभु का अपने में सिञ्चन करना अपने को महान बनाना है, और उन समुद्रों में ले जाता है। जहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार का अन्वेषण करता रहा है। वह जो मेरा अतुल्य देव है। वह ऐसा एक महान पवित्रता में परितण कराने वाला है। जिससे मानव भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ान उड़ने लगता है। मानव का तो यह स्वभाव बना रहता है कि मैं भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ूं और यह जो दृष्टिपात आने वाला जगत है। इसके ज्ञान और विज्ञान में मैं रत्त हो जाऊं। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, प्रायः इस प्रकार की उड़ाने उड़ता रहा है।

आज मैं तुम्हें एक विचित्र ऐसी उड़ान उड़ने के लिए आया हूँ, जिसके ऊपर हम बहुत पुरातन काल में अनुसन्धान करते रहे हैं और नाना ऋषिवर अपने में अनुसन्धानित रहे हैं। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में अपना वाक्य प्रगट करते हुए कहा था कि यह जो प्रभु का अमूल्य जगत है। इसको प्रत्येक मानव अपने में निहार रहा है। वह ऐसा अनुपम है कि मानव अन्यत्र मेधावीर चिन्तन कर रहा है। परन्तु मौन हो रहा है। चिन्तन कर रहा है, जान रहा है, परन्तु अपने में मौन हो रहा है। क्योंकि मौन होना ही परमपिता परमात्मा के अगाध समुद्र में रत्त रहना है। हमारी कुछ चर्चाएं चल रही हैं। हमारे वैदिक साहित्य में यह आता रहता है कि मानव सदैव प्रेरणा का स्रोत है। यह प्रेरणा पाता रहता है, और अपने में ऊँची उड़ान उड़ता रहता है।

हमारे यहाँ ऐसे-ऐसे आयुर्वेदाचार्य हुए हैं। इस वनस्पति विज्ञान को जानने वाले ऊर्ध्ववेत्ता हुए हैं। जो अपने को ऊर्ध्वा में रमण कराने वाले हैं। मानव जब आयुर्वेद के मर्म को जानने लगता है। तो वह वृद्ध नही होता वह सदैव नवीन बना रहता है। आयुर्वेद को जानने वाला नवीन बना रहता है। उसके जीवन में अन्धकार नही आता। हमारे यहाँ ऐसा माना गया है कि अन्धकार आना ही मानव की मृत्यु है, और प्रकाश आना ही मानव का जीवन है। आधुनिक काल का तो मुझे इतना ज्ञान नही हैं। महाभारत काल से पूर्व काल कुछ त्रेता के काल इस प्रकार का हुआ है, जिस काल में आयुर्वेद के अनुसन्धानवेत्ता हुए। वह योगाभ्यास करते प्राण सूत्र को जानने के लिए प्राणत्व औषधियों को जानने का प्रयास करते रहे हैं। मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था कि राजा रावण के यहाँ एक सुधन्वा नाम वैद्यराज थ वह जब निद्रा की गोद में चले जाते तो औषधियां अपने गुणों का वर्णन करती रहती थी। अपने गुणों का वर्णन करना क्या है, जैसे अध्ययन की बेला में अध्ययन के गर्भ में जब वह अपने को ले जाता है, और निद्रा की गोद में चला जाता है। तो उसे स्वप्न आते हैं जो जिस चिन्तन से मानव अपनी शैय्या पर विश्राम कक्ष में विश्राम शिलावत् हो गया मानव जिस भी काल में स्वप्न में जाता है। तो वह जिन औषधियों को हम अध्ययन करते-करते मन उनके गुणों को वर्णन करता रहता है। वह अपने में गुणवादन होता रहता है।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब महर्षि च्यवन वृद्ध थे, वे एक समय तपस्या में परिणत हो गएं थे और जब वह तप करने लगे, तो उन्होंने प्राणायाम किया उन्हें प्राण की विशिष्ट क्रियाएं स्मरण थी। जब वह समाधिष्ट हो करके मन प्राण स्थली पर विद्यमान हो गएं, व्रतकेतु नामक राजा भ्रमण करते उनके आश्रम के निकट आकर विश्राम करने लगे, कुछ समय के उन्होनें वास किया। पुरातन काल के राजाओं का यह नियम रहा है कि राजा

अपने राष्ट्र में गमन करता है। वह प्रजा के लिए दुखद किसी प्रकार का अभद्र व्यवहार तो नही हो रहा है। परन्तु उसको साकार रूप में लाने के लिए भ्रमण करते थे अपने राष्ट्र में तो श्वेतकेतु नामक राजा भ्रमण करते हुए, अपने में स्थली ग्रहण की च्यवन ऋषि का आश्रम निकट था राजा अपने कुटुम्ब के साथ ही भ्रमण कर रहे थे। किसी-किसी काल में उनकी कन्या भ्रमण करती थी। जहाँ आसन लगाए हुए महर्षि च्यवन अपने में समाधिष्ट थे, तो पुत्री ने आक्रमण किया आक्रमण क्या चंचलता के कारण वश बाल्यकाल था वह अपने में कुछ तर्कश लिए हुए थी उन्होंने उनके नेत्रों के कृत किया और ऋषि नेत्रहीन हो गये। नेत्रहीन होने से राजा को यह प्रतीत हुआ कि तुम्हारी कन्या के हस्तों से यह क्रियाकलाप बन गया है। तो राजा भ्रमण करते हुए ऋषि के आसन पर पंहुचे ऋषि के चरणों को स्पर्श किया और उन्होंने क्षमा दान पाया।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों का हृदय तो प्रायः उदार होता है। क्योंकि च्यवन ऋषि को लगभग पच्चीस वर्ष हो गएं थे। तपस्या करते हुए वे तपों में थे आत्मा बलवान था शरीर जीर्ण हो गया था। जब शरीर जीर्ण हो गया तो राजा ने कहा-प्रभु! मैं आपकी आज्ञा का क्या पालन कर सकता हूँ। तो ऋषि ने कहा कि जिस कन्या ने मेरे अंग को भंग किया है, मैं उसको अपनी सेवा में लाना चाहता हूँ। तो राजा के लिए आश्चर्य उस कन्या ने भी कहा कि मैं इस ऋषि की सेवा करना चाहती हूँ। राजा ने यह वाक्य स्वीकार कर लिया। ऋषि जीर्ण ही अवस्था में अति कृश दशा में थे। महात्मा दधीचि हमारे यहाँ दो हुए हैं। इनका दधेच्चर ऋषि था, दधेच्चर ऋषि से उन्होंने कहा कि अश्विनी कुमारों को मेरे यहाँ लाया जाएं। वे वैद्यराज हैं, और अश्विनी कुमारों के जो गुरु थे सुकेवानुत ऋषि महाराज उनको लगभग ग्यारह सौ वर्ष हो गएं थे। आयुर्वेद का अध्ययन करते-करते ग्यारह सौ वर्षों का काल एक महान काल होता है। ग्यारह वर्षों का उनका आयुर्वेद का अनुभव था वह औषधियों को एकत्रित करते रहते थे उनके गुणों का कृतिकाएं अपने में धारण करते रहते थे।

तो मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि महर्षि च्यवन के द्वार पर जब यह सब ऋषिवर एकत्रित हुए तो वह हृदय ग्राही बना कि च्यवन ऋषि का आयु उस समय चार सौ चवालीस वर्ष का था तो शरीर तो जीर्ण होना ही था। दधेच्चर ऋषि ने कहा कि महाराज! क्या चाहते हैं? उन्होंने कहा अश्विनी कुमार आ गएं हैं। अश्विनी कुमारों ने ऋषि से आज्ञा पायी दण्डवत् करते हुए कहा कहिए भगवन! च्यवन ऋषि ने कहा कि मेरा शरीर जीर्ण हो गया है। मुझे इस शरीर के युवा होने के लिए कोई औषध आयुर्वेद में ऐसी कोई वनस्पति लायी जाएं, जिससे मेरा शरीर युवा हो जाएं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय भगवन! तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, कि अश्विनी कुमारों ने और उनके गुरु ने दोनों ने औषध का एकत्रित करने के लिए उनसे प्रार्थना की कि-प्रभु! हम आपके शरीर को युवा बना पाएं या ना हम तो यत्न कर रहे हैं। तो अश्विनी कुमारों ने भयंकर वनों से उन औषधियों को एकत्रित किया जिन औषधियों में शरीर के कल्प होने की एक क्रियात्मक सत्ता थी। प्राण वायु प्राण संचालन होना उन औषधियों को एकत्रित किया जिन औषधियों में शरीर के कल्प होने की एक क्रियात्मक सत्ता थी प्राण, वायु, प्राण का संचालन होना उन औषधियों में विशेष संचालन होना उन औषधियों को में विशेष होता है। तो अश्विनी कुमारों ने आसन बनाएं और भिन्न-भिन्न प्रकार के धातुओं की उन्होंने वृत्तियाँ बनायी, पिण्डिका और उनमें उन्होंने कुछ औषध को एकत्रित किया, एक औषध का नाम है, मृचिका, द्वितीय औषध का नाम है। खुण्डकेश्वर, तृतीय औषध का नाम है। भूनवृत्तिका, चतुर्थ औषधि का नाम शैलखण्डा है, और उसके पश्चात उन्होंने ब्रह्मकृतिका जी और शंखाहूलिका, शंखामालिका, शिवलिंगान इन सब औषधियों को एकत्रित किया और चूर्ण का रूप बनाया और अग्नि में तपाया अग्नि में तपा का उन्होंने सरीत नामक वृक्ष होता है। उसका पंचांग ले करके अग्नि में तपाया। इसी प्रकार उन्होंने जाल की शुनावांगिनी एक औषध होती है। जो जाल वृक्ष के निचले विभाग में होती है। अश्वना नामक एक औषध

होती है। जिसको अम्बिका रूप भी कहते हैं। इन औषधियों को ले करके उन्होंने पिपाद बनाया, पिपाद बना करके च्यवन ऋषि को पान कराना प्रारम्भ किया और राज कन्या से यह कहा कि हे पुत्री! हे ऋषियों तुम गायत्री माँ का जाप करते रहो, गायत्री छन्द है गायत्री जपन करते हुए तुम इसे प्रदान करो। ऋषि को पान कराने से अश्विनी कुमारों ने ब्रह्म का उपदेश जब महात्मा दधीचि से दधेच्चर ऋषि से पान किया था उन्हीं के द्वारा वह जहाँ ब्रह्म का ज्ञान था वहाँ आयुर्वेद को ऊर्ध्वा जानने वाले थे आयुर्वेद के सर्वत्र औषध को ले करके उन्होंने पिपाद बना करके च्यवन ऋषि को देना प्रारम्भ किया।

तो ऐसा कुछ प्रतीत है कि छह माह तक उन औषधियों का पान कराने से उनके शरीर में चेतना बलवती हो गई। एक वर्ष तक ब्रह्मवर्चोसि का पठन-पाठन करते हुए, गायत्री के द्वारा उस औषध का पान कराने से महर्षि च्यवन का जीवन युवा के तुल्य हो गया च्यवन ऋषि ने पुनः एक गोष्ठी की और ऋषियों से भी यह प्रार्थना की कि महाराज! इतना तो मैंनै जान लिया है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि मेरे शरीर का एक कल्प हो जाना चाहिए। ऋषियों ने कहा बहुत प्रिय प्रयत्न करेंगें। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनि हिमालय की कन्दराओं में चले गएं क्योंकि च्यवन ऋषि के जीवन के लिए ऋषि क्या नही कर सकते थे। वह भयंकर वनों में चले गएं वहाँ से उन औषधियों को उस सोमलता को उन्होंने लाने का उन्होंने प्रयास किया जिससे सोम का रस बनता है। जिससे सोम का पान कराया जाता है जैसे योगी जन प्राणायाम करते हुए ब्रह्मरन्ध्र में अपनी सुरीति को ले जाते हैं तो वहाँ चन्द्रमा से एक चन्द्रकेतु आसवान वृत्तिका एक नाड़ी होती है ब्रह्मरन्ध्र में और वह चन्द्रमा से उस रस का पान करते हैं सोम कहते हैं उस रस का योगीजन पान करके अपनी प्राण सिद्धियों को प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार हमारे यहाँ सोम नाम चन्द्रमा को कहते हैं, सोम नाम आपो को कहते हैं, सोम रस का पान करने वाला सोम में सुनीत नामक एक औषध होती है। जो हिमालय की कन्दराओं में प्राप्त होती हैं। उसको ऋषि जन जानते हैं, उसका जो सुगन्ध है, ऐसा होता है। जैसा लवंग का होता है एक सर्णीति नामक औषध होती है वह भी हिमालय में प्राप्त होती है जैसे सूक्ष्म दृष्टि वाले ऋषि को स्वर्ण में सुगन्धि आती है ऐसे ही इसमें सुगनि आती है वह सुगन्ध जैसे राजवृत्तिका एक औषध होती है उसमें सुगन्ध होती है। सुगन्ध वाली एक-एक औषध होती है जिसे भृंगी कहते हैं जो हिमालय में प्राप्त होती है उकसा पत्र जो है वह तीन मुख होता है उसकी तनें होती हैं उसका हो आकार बना हुआ होता है ऐसा होता है जैसे स्वाति नक्षत्रों में कृतिका का रूप होता है ऐसे इसका स्वरूप बन जाता है उसको ऋषि-मुनि लाते रहे हैं सोम रसों का पान कराते रहे हैं।

उस सोमरस को महात्मा दधीचि ने दधेच्चर ऋषि ने सुकेता ने इस सब ऋषि-मुनियों ने उस औषध को ला करके सोमरस का पान कराया एक औषध ऐसी होती है जो अमावस के साथ में उसमें पत्रिका आनी प्रारम्भ हो जाती है पूर्णिमा के दिवस उसकी पूर्ण बिलंग बन जाती है और वह पूर्ण माह के पश्चात प्रतिपदा से अमावस तक वह पत्रहीन हो जाती है उस औषध के पान करने वाला चन्द्रमा की षोडश कलाओं को जानने वाला बन जाता है उसका पान करने वाला पूर्णमासी पूर्णेष्टि याग करने वाला याज्ञिक बन करके इन षोडश कलाओं में रत्त रहने लगता है आज बेटा! तुम मुझे आयुर्वेद के समुद्र में ले आए हो मैं इसकी छह माह तक व्याख्या करूं तो हो नही पाएगी। केवल मैं तुम्हें इतना उच्चारण किए देता हूँ पुत्रों! कि मानव इन औषधियों को ला करके हमें सोम का पान करना चाहता है हमारे यहाँ सोम का पान ऋषि-मुनि ही किया करते हैं क्योंकि वह योगाभ्यासी होते हैं वह प्राण शक्ति का संचय करने वाले प्राण को अपने में धारण करने वाले प्राण को ऊर्ध्वा बनाने के लिए इन औषधियों का पान करते हैं अन्न भी प्राणवर्धक है प्राण के देने वाला है गो घृत, गो दुग्ध भी ये प्राणवर्धक है है सोम की औषधियों में यह महानता होती है कि यह प्रभु की विशेष देन है इस सोमरस को ऋषि-मुनि तपा करके पीपल के वृक्ष के

पंचांग बना करके वट वृक्ष का पंचांग ले करके, बेल वृक्ष का पंचांग ले करके उन औषधियों का मिश्रण करने से सोमरस बनता है इसको पान करने वाला दो वर्षों तक तो उसके शरीर का कल्प बन जाता है उसके शरीर में एक अवृत बन जाता है वह पुनः से युवा हो जाता है उसको हमारे यहाँ कल्प कहते हैं।

जैसे हमारे यहाँ गो दुग्ध के द्वारा भी कल्प किया जाता है जैसे अम्बिका वृक्ष के फल के द्वारा भी कल्प किया जाता है। ब्रह्मवर्चोसि बन करके गायत्री की पुट लगाने से भी एक कल्प बनता है इस प्रकार का कल्प करने वाला मानव आयुर्वेद के मर्म को जानता है आयुर्वेद की प्रतिभा को जानता है आयुर्वेद को जानने वाला मानव अपने में महान बन जाता है च्यवन ऋषि युवा बने और युवा होने पर उस कन्या से सन्तान का जन्म हुआ जितना नाम स्वाति और ब्रह्मचारी कवन्धि ये दो पुत्र हुए च्यवन ऋषि के, जो ब्रह्मवेत्ता भी रहे और उनके यहाँ स्वातिवर्णा नामक कन्या का जन्म हुआ था उसका नाम अरून्धती नियुक्त किया गया जो महर्षि वशिष्ठ के यहाँ वैज्ञानिक बन करके उनकी पत्नी के रूप में वास किया मैं ऋषि-मुनियों की चर्चा करने चला हूँ, जिन्होंने अपने को वृद्ध से युवा बना है, और पितर याग किय हैं अपने को महान बनाया है।

कहीं-कहीं ऐसा भी वर्णन प्राप्त होता है कि च्यवन ऋषि के यहाँ नाना आयुर्वेद के ऊपर एक विश्वविद्यालय का निर्माण कराया था राजा के द्वारा इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान होता रहा। मैं उस काल की चर्चा कर रहा हूँ। जिस काल में मानव योगी बनना चाह रहा है। आन्तरिक जगत में उनके हृदय में कामवासना ऊर्ज्वा को नष्ट करने की उनकी प्रवृत्ति बनी हुई है। वह देवियों से सहयोग की कामना चाहते हैं, और योगी भी बनना चाहते है। ये कैसे हो सकता है परन्तु इसका भी एक कल्प होता है, इसका भी क्रियाकलाप होता है। इसके ऊपर मानव योगी बनना चाहता है, क्योंकि वह ब्रह्म को अपने में धारण करना चाहता है। ब्रह्म को धारण किए बिना कोई मानव योगी नही बन सकता, क्योंकि ब्रह्म को वही धारण कर सकता है, जो ब्रह्मवर्चोसि बनता है। जिनकी प्रवृत्ति महान बन जाती है। महान प्रवृत्ति बनाने के लिए उन औषधियों का पान करना प्रारम्भ करें। जैसे मुझे बहुत एक धृष्ट बाल्य ये जो महानन्द जी हमारे समीप विद्यमान हैं। इनका बाल्यकाल का नाम सुलक्षण था, उदण्ड भी इनका नाम रहा है। जब ये किसी काल में ऋषियों के समीप आए तो इनके पिता का कथन था कि इनको महान योगेश्वर बनाया जाएं। इससे हम बहुत धृष्ट बन गएं हैं। तो उस समय इनके द्वारा सर्पगन्धा एक औषध होती है, सर्पकेतनी नामक एक औषध होती है। स्वाधी और सुलाशनी होती है, इन तीनों औषधियों के द्वारा एक आसन बनाया, उस आसन बना करके इनको रात्रि को विश्राम के लिए दिया गया, उस समय इनका आहार क्या दिया जाता था।

देखो, विलंग का पंचांग ले करके जल के सहित प्रदान किया जाता था। जब इनको ब्रह्म के चिन्तन के लिए कहते तो उत्तर देते कि मेरा मन ही कहीं चला जाता है। मन में वासना स्थान किए हुए है। संस्कारों का जन्म हो गया है। उस समय औषधियों का पान कराने से एक त्रीत नामक औषध होती है। जिसका पान पीपल के पंचांग की पुट लगाने से एक वृक्ष होता है। जिस वृक्ष का नाम मृचिका नामक वृक्ष होता है। इसका भी पंचांग बना करके, अग्नि में तपाना और एक स्वालित नाम का वृक्ष होता उसके पंचांग को ले करके एक ब्रह्मवर्चोसि वृक्ष होता है। जो हिमालय की कन्दराओं में पाया जाता है, इसी प्रकार शंखकोकलित नाम का एक वृक्ष होता है। इन सबके पंचांगों को ले करके अग्नि में तपा करके एक सौ एक दिवस तक उन पंचांगों का पान कराना लगभग एक वर्ष के पश्चात इनकी कामना का संस्कार समाप्त हो गया है। उसके पश्चात तपस्या के मार्ग पर यह मार्गवेत्ता बन गये। जीवन की प्रतिभा इतनी विचित्र हुई कि यह महानन्द जी बन गये। जीवन मुक्त की उपाधि को प्राप्त कर लिया, जीवन मुक्त वह होते हैं। जो अपनी संकल्प शक्ति से अपने शरीर को प्राप्त कर लें, और संकल्प विहिन हो करके शरीर अपने तत्त्वों में रमण कर जाएं। इस प्रकार के प्राणी जीवन मुक्त होते हैं। जीवन मुक्त उन्हें कहते हैं। जिनका आत्मा देवात्माओं में

भ्रमण करता है। संकल्प से वह वृद्ध बन जाएं। संकल्प से वह युवा बन जाएं। संकल्प से सुन्दरता में एक रूप बन करके अपने को महान बनायें इस प्रकार का जीवन मुक्त आत्मा होता है जो जीवन है वह मुक्त है। जिसका जीवन ही वही मुक्त है। विचारने से ही ऋषि-मुनियों का अध्ययन बहुत गम्भीर रहा है, इस गम्भीर अध्ययन के लिए मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है। कल्प भी होते हैं स्वाति भी होते हैं। वृद्ध से युवा भी होते हैं।

कल मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ प्रश्न करेंगें, इनके प्रश्नों का उत्तर दिया जाएगा, क्योंकि यह विषय बड़े गम्भीर और विचारणीय हमारी दृष्टि में माने गएं हैं। मैं आज तुम्हें उच्चारण कर रहा था, महर्षि च्यवन इत्यादि ऋषियों की चर्चा कर रहा था महर्षि च्यवन का जीवन बड़ा विचित्र रहा है। उस विचित्रता ने उन्हें वृद्ध से युवा बनाया उनका जब शरीरान्त हुआ, तो उनकी आयु दो हजार एक सौ बावन वर्ष की बन गई थी। ऋषि-मुनियों को एकत्रित कर अपनी इच्छा से उन्होंने शरीर को त्याग दिया था पत्नी वह जो राज कन्या थी वह लगभग दो सौ वर्ष तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए उनके समीप रही। उसके पश्चात वह भी जैसे सूर्य अस्ताचल को चला जाता है, उनका निधन हो गया, शरीर को त्यागा गया परन्तु च्यवन ऋषि ज्यों के त्यों आनन्द पूर्वक तपस्वी बने रहे, दो हजार एक सौ बावन वर्ष तक आयु बन करके गायत्री की गोद में जा कर अपना शरीर अन्त कर दिया था इसी प्रकार उनकी पत्नी का प्राणान्त किया इसी प्रकार निज इच्छा से अपने शरीर को त्यागा जा सकता है। यदि वह ब्रह्म का चिन्तन कर रहा है, यदि वह ब्रह्म औषधियों का पान कर रहा है, अपने को महान बनाने के लिए इस वनस्पति विज्ञान में जो रत्त रहने वाला है। उनका आयु दीर्घ बन जाता है। उनके आयु में बलवती हो जाती है।

ऐसे-ऐसे ऋषि आयुर्वेद के मर्म को जानने वाले थे, एक स्थली पर अश्विनी कुमार विद्यमान थे, वायु आयी तो उसमें ऐसी सुगन्ध आई वृक्षों में से उसको एकत्रित करते उन वृक्षों को जानने के लिए सुगन्ध के द्वारा वह सुगन्ध मस्तिष्क में जाते ही ज्ञान के जो तन्तु हैं। उनको जागरूक कर देती थी तो इससे उन्हें यह सिद्ध हुआ कि इस औषधि के द्वारा, कामधेनु गऊ के द्वारा याग किया जाएगा। तो मानव के मस्तिष्क में जो तन्तु हैं। उनका स्पष्टीकरण कर सकती है। इसी प्रकार हमारे यहाँ अश्विनी कुमार इस प्रकार के याज्ञिक भी हुए हैं। जो मानव वैज्ञानिक बनना चाहता है, विज्ञान से चित्रों का आह्वान करना चाहता है। तो वह शैलखण्डा, शैलपुष्पी, सोमकृतिका, बिलंगवाचिका, वंचकृति, अन्वेषण घोष, आसवतम्, तेजपत्र, तेजहूणि, अग्रेत, क्वाति, मिष्टानम्बृहि, वाचकेतु, इन औषधियों के द्वारा जो याग करता है। अपनी विज्ञानशाला में वह त्रिकोण में इन औषधियों के द्वारा याग करता है। तो उसमें ऐसी विशेषता आती है कि रूग्ण तो समाप्त हो जाता हैं, उनमें ऐसी विशेषता है कि शब्द के साथ जो चित्र गति करता है। उन चित्रावलियों का वैज्ञानिक अपने में निर्माण कर सकते हैं। इस प्रकार का जो आयुर्वेद का विज्ञान है, हमारे ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में सदैव नृत्य करता रहा है।

विचारना क्या है केवल कि हम आयु के मर्म को जाने उसके ऊपर अन्वेषण करें, अनुसन्धान करें वह भयंकर वनों में पर्वतों की कन्दराओं में वह कहीं प्राप्त होता है। तो आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ केवल यह विचार देने आया था कि इस प्रकार के औषध को पान करने से मानव जीवन मुक्त भी बन सकता है। वह अपनी इच्छा के अनुसार अपने शरीर का प्राणान्त कर सकता है। इन सोम औषधियों का सम्बन्ध, वनस्पति विज्ञान का सम्बन्ध सोमलताओं से होता है, सोमलताओं का सम्बन्ध सूर्य की किरणों से होता है। सूर्य की किरणों का सम्बन्ध द्यौ से होता है। द्यौ से ही अपने में ऊर्ज्वा को प्राप्त करके यह औषध शक्तिशाली बन करके मानव के जीवन का एक नृत्य बनती है। अब मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। मैं सुधन्वा की वार्त्ता को शान्त कर गया हूँ। उनकी चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

१३ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १६ १२ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है इस संसार का निर्माण करने वाले, इनका पालन करने वाले हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में परमपिता परमात्मा को विष्णु कहा जाता है, वह विष्णु ध्रुवा है, पालन करने वाला, नम्र रहता है, उसकी गति ध्रुवा में होती है इसीलिए विष्णु हमारा पालन करता है, वे परमपिता परमात्मा जो सतोमयी है, क्योंकि सत का पालन करने वाला ही विष्णु कहलाता है और उसकी गति ध्रुवा है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव अपने-अपने में विचित्र माना गया है, जिस प्रकार लोक-लोकान्तर अपने कक्ष में सुन्दर माना गए है और अपनी परीधि में वह परिणत रहता है, इसी प्रकार प्रत्येक, जितना भी वनस्पति विज्ञान है वह अपने में ध्रुवा कहलाता है अपने में महान है क्योंकि एक-दूसरे को स्थिर करने वाला है एक-दूसरे का सहायक बना हुआ है जो एक-दूसरे का सहायक बना हुआ है वही तो प्रभु की विचित्रता मानी जाती है।

हम सब वनस्पति विज्ञान में प्रवेश करते हैं तो वनस्पति विज्ञान में एक-दूसरे वनस्पतियों का सहायक बना हुआ है जैसे एक प्राणी दूसरे प्राणी का सहायक बना हुआ है जैसे ब्रह्माण्ड में एक लोक दूसरे लोक का सहायक बना हुआ। प्रत्येक आभा में ये संसार एक-दूसरे से सूत्र में पिरोया हुआ है ये वनस्पति विज्ञान इस नाते अपने में अद्वितीय माना गया है।

बहुत परम्परागतों की वार्त्ताएं स्मरण आती रहती हैं जहाँ मानव बहुत अनुसन्धान करता रहा है, प्रायः मानव उसको रूढ़ि कह करके उन्हें त्याग देता है वास्तव में वह रूढ़ि नहीं कहलाती उनकी जानकारी में केवल भिन्नता होती है और उनकी जानकारी में भिन्नता होने से वह केवल उन्हें रूढ़ि प्रतीत होने लगती है। हमारे यहाँ, यह भी दृष्टिपात किया गया है, कि बिना रूढ़ि के यह संसार और राष्ट्र की गतियां नही होती। परन्तु जहाँ श्रुति का प्रसंग आता है वहाँ रूढ़िवाद नही रहता वहाँ एक प्रपंच बन जाता है वह जो प्रपंच है वही समाज और मानवीयता के लिए हानिप्रद होता है अपने में अन्धकार कहलाता है वह प्रकाश नही कहलाता। इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ कह रहा है वेदमन्त्र मानव को देव बन करके हमारे अन्तर्हृदय को देवतव बनाने के लिए तत्पर हो रहा है। हमारा जो वेदमन्त्र है वह देवता बनाने की प्रेरणा दे रहा है। और हमें प्रेरित कर रहा है कि तुम देवता बनो।

मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें कुछ वनस्पति विज्ञान के सम्बन्ध में अपना कुछ मन्तव्य प्रगट किया, कि यह वनस्पति विज्ञान अपने में अद्वितीय रहा है महान रहा है परन्तु जहाँ ये वाक्य आता है कि हमारे यहाँ याज्ञिक पुरूष ने भी यागों के अनुसन्धान वेत्ताओं ने भी उन साकल्यों को, उन समिधाओं को एकत्रित करने का प्रयास किया है, जो चित्रावली बना करके मानव के चित्र को अन्तरिक्ष में अवकाश में अवकाशित करते रहे हैं मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, भारद्वाज मुनि का जीवन भी स्मरण है राजा रावण के यहाँ सुधन्वा नामक वैद्यराज थे उनक स्वप्रवत् औषधि आ करके अपने गुणों का वर्णन करती थी एक समय वह आयुर्वेद का अध्ययन करते-करते मृचिका औषधि के ऊपर अनुसन्धान कर रहे थे एक औषध का नाम है लक्ष्मणा हिमालय के पर्वतों में प्रायः इस औषधि का प्रायः नृत्य होता रहा है वह जब इन पर अनुसन्धान करते-करते निद्रा की गोद में चले गये, निद्रा से जैसे ही उपराम हुए तो वह लक्ष्मणा अपने गुणों का वर्णन करने लगी, स्वप्रवत् में वैद्यरारज को कह रही है कि हम त्रिपति वाली औषधियां हैं,

त्रिवर्धा वाली औषधियां हैं, हमारे में ये गुण है कि मानव शून्यता को प्राप्त हो गया है, उसको जीवन शक्ति प्रदान करने वाली है। तो वह लक्ष्मणा के अनुसन्धान में लगे रहे, उसे उन्होंने जान लिया। एक समय अश्विनी कुमार वैद्यराज सुधन्वा के द्वार पर पंहुचे, अपने विद्यालय में से अपने अनुसन्धान में से वह सुधन्वा के द्वार पर पंहुचे। सुधन्वा ने कहा, कहो अश्विनी कुमार! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा-प्रभु! हम इसीलिए आए हैं कि हमारे यहाँ लक्ष्मणा औषधि की आवश्यकता है। उसके ऊपर अन्वेषण कर रहे हैं सुधन्वा ने कहा उसके ऊपर मैं भी अन्वेषण कर रहा हूँ तो मुनिवरों! देखो, वो तीनों विद्यमान हो करके उसके ऊपर अनुसन्धान करने लगे। तो इसमें वो जीवन शक्ति थी कि वह मानव को मूर्च्छित हो गया है गतिहीन हो गया है जब उस औषध को, नेत्रों द्वारा, प्राण द्वारा उसमें जब उसको प्रदीप्त किया जाता है तो वह शून्यता से चेतना में परिवर्तित हो जाता है।

संजीवनी बूटि

देखो, कल्पों की चर्चा नही, केवल लक्ष्मणा में यह गुण होता है। तुम्हें यह प्रतीत होगा कि त्रेता के काल में रावण और राम का संग्राम हुआ था, तो मेघनाथ के अस्त्रों के प्रहार से लक्ष्मण शून्यगति को प्राप्त तो गएं थे, शून्यगति को प्राप्त हो जाने के पश्चात राम को बड़ा दुःख हुआ। परन्तु सुधन्वा वैद्य को लाया गया और सुधन्वा वैद्यराज ने उसके लक्षणों का का वर्णन करके हनुमान जी से कहा कि तुम, जाकर लक्ष्मणा औषध को लाओ। औषध को लेने के लिए जब गमन किया तो लक्ष्मणा में ये गुण था कि रात्रि काल में जब चन्द्रमा की कान्ति, जब औषध पर प्रहार करती तो उसमें चन्द्रमा जैसी कान्तियां उत्पन्न होती थी। हनुमान जी इसमें आश्चर्य में हो गएं कि मैं क्या करूं? बहुत-सी औषधियों का भाग अपने विज्ञान अस्त्रों पर स्थिर करके, वह लंका में प्रवेश हुए थे, सूर्य उदय होने से पूर्व। वह औषध रात्रि के काल में प्रदान की जाती है, उसका पान कराया जाता है, सूर्य उदय होने पर उसकी प्रतिभा इतनी नही रहती। शून्यता को, चेतनता में परिवर्तित करने वाली, शक्ति नही रहती, क्योंकि वह सूर्य की किरणों के गर्भ में, वह शक्ति निहित रहती है, रात्रि के काल मे वही कान्ति, सूर्य की चन्द्रमा में प्रवेश कर जाती है और चन्द्रमा की कान्ति उस औषध पर प्रहार करती है, और प्रकाशवान बन करके रूग्णों को शान्त करने वाली बन जाती है। तो इस वाक्य को इसीलिए प्रगट कर रहा हूँ, देखो, गुणों का वर्णन करने वाली औषधियां का, हम बहुत पुरातनकालों से प्रायः अनुसन्धान करते रहे है।

तो महाराज सुधन्वा इस प्रकार के आयुर्वेद के विज्ञान में रत्त रहते थे, इसी के ऊपर अश्विनी कुमारों ने, अपना अनुसन्धान किया, वह भी वैद्यराज थे। उन्होंने, जैसा हमने पूर्व काल में कहा था कि महर्षि च्यवन के यहाँ जा करके, उनके शरीर का कायाकल्प किया कई प्रकार की औषधियां इस प्रकार की हैं जिनसे कल्प का कल्पित होता है बहुत से वृक्ष इस प्रकार के पृथ्वी पर वनस्पति विज्ञान के आश्रित रहते हैं उनका जो आयु है लगभग पचास हजार वर्षों का, हजारों वर्षों का एक-एक वृक्ष का आयु होता है। इस प्रकार के वृक्ष का पंचांग पान करने से मानव की आयु में दीर्घता आ जाती है, उनके पंचांग के द्वारा ही जिनका रसों के द्वारा वह वृक्ष इतनी आयु को प्राप्त होता है। मैंने यह श्रवण किया है कि बरगद का जो वृक्ष होता है, ये जो वट वृक्ष इसकी आयु बड़ी दीर्घ होती है, इनका आयु कई-कई हजार वर्षों का होता है। उसके यदि पंचांग से दुग्ध पान किया जाएं तो मानव के शरीर का परिवर्तन हो सकता है। उसमें और भी नाना प्रकार की औषधियों का मिलन और चलन होता है।

औषध विज्ञान से पशु भाषा का बोध

तो आज मैं तुम्हें इसीलिए विचार ये देने के लिए आया हूँ कि मानव को उस औषध विज्ञान को जानने के लिए तत्पर रहना चाहिए, क्योंकि जैसे कांचाग्नि नामक एक औषध होती है, एक गुड़स्वन्धि औषध होती है जिसका दोनों का चूर्ण पान करने से छह माह के पान करने से, मानव अश्व की भाषा को भली भांति जान लेता है, एक औषधि

सर्पगन्धा है, सर्प कौचनि है, सप्रवृत्तिका है इन तीनों औषध बनाने से इनको चूर्ण से पान करना गो घृत का मिश्रण करके, इनका पान करने से सर्प की भाषा को मानव भली-भांति जान लेता है, और सर्प के गुणों का गुणवादन भी उस मानव में आना प्रारम्भ हो जाता है।

तुम्हें केवल यह परिचय देने आया हूँ कि यहाँ बहुत-सी नाना प्रकार की औषधियां है, जिनको पान करने से मानव महान बन जाता है, पवित्र बन जाता है, सर्पगन्धा औषधि के आसन से यदि योगेश्वर ये चाहता है, कि मैं ध्यानावस्थित हो जाऊं, तो ध्यानावस्थित हो करके, वह परमात्मा से अपना मिलान करने लगता है हमारे यहाँ ऐसे-ऐसे कुशा के आसनों पर विद्यमान हो करके नदियों के तटों पर विद्यमान हो करके, ऋषियों ने बहुत-सा अनुसन्धान प्रभु को निहारते हुए प्रभु से वार्त्ता प्रगट करते रहते थे। हमारे यहाँ नाना रूपों में, कुशा मानी जाती है। कुशा के आसन पर सर्प नही आ पाता, और कोई प्राणी उस अव्रत नही कर पाता तो आसन पवित्र माना गया है कुशा भी हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में बारह प्रकार की होती है। बारह प्रकार की कुशाओं को ले करके यदि उसको जल में तपाया जाता है। तपाने से उनका रस बनाया जाता है रस बना करके उसको जल की कृतिका बना करके जब खरल रह जाता है उसको मधु वर्णिता में पान करने से वह सर्प जैसे विषैले प्राणियों को विजय करने वाला बन जाता है।

बहुत-सा प्रायः इन औषधियों पर अनुसन्धान रहा है, ये बारह प्रकार की कुशा होती है, जिनको पान करने से बाहर माह में मानव की गतियां कुछ से कुछ बन जाती हैं, आज मैं तुम्हें आयुर्वेद विज्ञान में ले जाने के लिए आया हूँ, शरीर कल्प भी होता है, शरीरों का कल्प कुशाओं के द्वारा भी होता है, एक वृणि अम्बालिका औषधि होती है, जिसको वैदिक साहित्य में पुत्रदा भी कहते हैं। एक अशोक वाचिकेतु नामक वृक्ष होता है, उसमें जिस माता के पुत्र न होता हो इन वृक्षों की छाया में, इनके पंचांगों में छ माह तक ब्रह्मवर्चोसि का पालन करके गायत्री माँ की गोद में जाने से, इनके चूर्ण को पंचांगों को पान किया जाएं, तो जो अंगों सुरुतियां बन गई हैं तो वह पुत्रदा और वृत्तिका और अशोकिका, सान्धूनि इन चारों के पंचांगों का मिश्रण करके, पान करने से छ माह में वह माता पुत्र को उत्पन्न करने योग्य बन करके, वह पुत्रवती बन सकती है।

कृतिका में तुम्हें प्रतीत होगा, कि एक समय सोमभुक ऋषि महाराज थे, जो महर्षि श्वेतकेतु गोत्र में उत्पन्न हुए थे, उनको अंगिरस भी कहा जाता है, और अगस्त्य मुनि के पिता कहलाते थे, अगस्त्य मुनि की माता का नाम शकुन्तकेतु था, शकुन्तकेतु के हृदय में यह आशंका हो गई, कि तू पुत्रवती नही होगी। जब संस्कार को बहुत समय व्यतीत हो गया, तो एक समय दोनो ऋषि और ऋषि पत्नी भ्रमण करते हुए, महर्षि दधीचकेतु के द्वार पर पंहुचे। दधीचकेतु ने ऋषि पत्नी का आदर किया, कन्दमूल इत्यादि से उनका स्वागत किया तब उन्होंने दधीचकेतु ऋषि से कहा कि महाराज! हम सन्तान हीनं प्रतिक्रतामि उन्होंने कहा नही, तुम सन्तान हीन नही रहोगे, तुम तो तपस्वी हो ब्रह्मवर्चोसि कहलाते हो, ब्रह्म को विजय करने वाले हो, ब्रह्म में तुम्हारी निष्ठा रहती है, ऐसा कैसे हो सकता है? उनकी पत्नी बोली प्रभु! इस समय ऐसा ही प्रतीत होता है।

तो महाराज दधीचकेतु ने माता शकुन्तकेतु को इन औषधियों का पान कराया, उन्होंने छह माह तुम उसका पान किया, एक वर्ष तक पान ओर किया। तो उसके पश्चात उनके हृदय में वह परमाणु जागरूक हो गएं जिनमें पुत्र, पुत्रियों, सन्तानों को उत्पन्न करने की शक्ति होती है। उन्होंने इन औषधियों का पान करके गुड़केतकेतु नाम औषध होती है, उसका भी पान कराया और प्रातः काल शीतली प्राणायाम करके, शीतली प्राणायाम से सूर्य प्राणायाम से उसका समन्वय करते थे। एक चन्द्र प्राणायाम होता है, जो संकल्प मात्र से किया जाता है, इसके करने से उन औषधियों के पंचांगों को पान करने से, मुझे ऐसा स्मरण है कि वह पुत्रवती बनी और महात्मा अगस्त्य मुनि

महाराज का जन्म हुआ था। अगस्त्य मुनि महाराज जो इतने विवेकी थे इतने महान थे, कि वह आत्म तत्त्व को जानने वाले इस संसार रूपी समुद्र को विवेकी रूप से तिलांजलि देने वाले, इस प्रकार का उनका विवेक जागरूक हुआ। तो इस प्रकार माता-पिता के, इस प्रकार औषध विज्ञान के सम्बन्ध में मैंने तुम्हें बहुत से विचार पुरातन काल में भी दिए। तो विचार क्या, कि हमें इस प्रकार के औषधि-विज्ञान को जानना चाहिए।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब महात्मा दधीचि के यहाँ अश्विनी कुमारों ने ब्रह्म विद्या का पान किया था, और अश्व के मुखारबिन्दु से उन्होंने उस विद्या का पान किया और महात्मा दधीचि का कल्प किया। मुझे ऐसा स्मरण है कि उन्होंने बारह वर्षों तक उनको औषधियों का पान करके स्वयं गुड़वाचि औषधियों का पान करते, महात्मा दधीचि को भी वह औषधियों पान कराते थे। उस समय इन्द्र की यह घोषणा हो गई थी, कि मेरे राष्ट्र में जो अश्विनी कुमारों को ब्रह्म विद्या देगा, उसके मस्तिष्क को दूरी कर दिया जाएगा। ये घोषणा हो गई थी, पृथ्वी मण्डल पर, उन्होंने इसी घोषणा का उपचार किया, उन्होंने एक विज्ञानशाला बनायी और उसमें कुछ यन्त्रों का निर्माण किया, जो यन्त्र औषध विज्ञान में सहायक बनते हैं, और उन्हीं यन्त्रों में उन्होंने कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी करके, औषधियों में नियुक्त कर दिया, उन औषधियों का पिपाद बनाया।

देखो, शैलखण्डा नामक एक औषध है, एक मृचिका नामक औषध है, एक त्रेतकेतु है, एक खुण्डकर्णी है, एक सरितिका है, एक राज लक्ष्मी है, एक सरूति है, इनको जल में पिपाद बना कर अग्नि में तपाया, तपा करके इनका पिपाद बनाया, पिपाद बना करके महात्मा दधीचि के कण्ठ के ऊपरी भाग को, इस औषध के पिपाद में नियुक्त कर दिया था। नियुक्त करके उस विज्ञानमयी शाला में, जिसको हम आयुर्वेदशाला में प्रयोग करते रहे हैं, वह उसमें नियुक्त करके, वह औषधियों का पिपाद और अश्व का घृत ले करके उन्हें अपनी शाला में, इसको वृत रूप दे करके, कण्ठ को ऊपर स्थिर करने के पश्चात, वहाँ से वह जो भी उदगार देते थे वह ब्रह्म का उदगार चलता था, क्योंकि संस्कारों का जो उदगान है वह मानव के हृदय से होता है।

उद्गान जब होने लगा, तो वह उद्गान भावुक रूपों में भावात्मक महात्मा दधीचि, गुड़ नामक आव्रेत औषधियों के द्वारा उस उपदेश को वह पान करने लगे, उस उपदेश को पान करते रहे। तो इन्द्र को प्रतीत हुआ कि ब्रह्म विद्या का उपदेश चल रहा है। उन्होंने अपने अस्त्रों से अपने गणों के द्वारा उनके कण्ठ को दूरी करा दियां महात्मा अश्विनी कुमारों ने वही जो उनका कण्ठ का ऊपरला भाग जो यन्त्रों में विद्यमान था उसको ला करके कण्ठ ज्यों का त्यों स्थिर करने के पश्चात कुछ औषधियों का लेपन किया उनकी विज्ञानशाला में यन्त्र थे, उन यन्त्रों से उनको सृजित किया और सृजित करने से महात्मा दधीचि ज्यों के त्यों दधीचि बन गये, वह दधीचिवत बन गये। तो इसी प्रकार अश्विनी कुमारों का विज्ञान एक विशेष रहा है।

जहाँ अश्विनी कुमार ब्रह्मविद्या में पारायण थे, वहाँ आयुर्वेद में भी पारायण थे, और आयुर्वेद की कृतिका में पूर्ण कहलाते थे। तो उन्होंने महात्मा दधीचि को भयंकर वनों में जा करके, उस औषध को एकत्रित किया, पूर्णिमा के दिवस, जिसका एक भी पत्र पूर्णिमा के दिवस पत्रों का जन्म होता है उस औषध को ला करके उन्होंने सोमरस बनाया। सोमरस भी अग्नि में तपाया जाता है और सोमरसों में लगभग बीस वृक्षों का पंचांग ले करके अग्नि में तपाने से उसको पान करने से मानव की जो बुद्धि है, सूक्ष्म तन्तु हैं उनमें से बुद्धि का विकास और उन्हीं में से ज्ञान और विज्ञान की वाताओं का उद्बुद्ध होना स्वाभाविक हो जाता है, वह सोमरस इस प्रकार का है आयुर्वेद, आयु के वेद के पूर्ण रूपेण जानने लगता है, कौन से अंग को कैसे निर्माण होता है? कौन से अंग का कैसे निर्माणित किया जाता है ये सब पचांगों में विशेषता होती है। तो सोमरस का पान ऋषि करते हैं आयुर्वेदाचार्य करते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- भगवन्! ये जो सोमरस है, हमारे आधुनिक जगत में यह जो क्रो है इसको सोम कहते हैं।

यज्ञ और औषधि विज्ञान

पूज्यपाद गुरुदेवः- नही पुत्र! उसको सोम नही कहते, यह जो मानव को अमानव बना देता है मानव को अमानव बनाने वाला सोमरस नही कहा जाता।

पूज्य महानन्द जीः- भगवन्! कहीं ऐसा भी माना गया है कि महाराज शिव नाना औषधियों का पान करते थे और उससे वह समाधिष्ट होते थे, आधुनिक जगत में कुछ ऐसा कहते हैं कि वह भंगकृतियों में और धतूरे के रूप में रहते थे।

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र! ऐसा नही, जितनी भी यह औषधियां हैं, सोमरस में इनका कोई कार्य नही बन पाता, न ही उनका कोई क्रियाकलाप होता है ये तो अमानवता की वार्त्ता है, औषधि विज्ञान में जितनी भी वनस्पति है, ये सभी औषधि मानी गई है, इसमें जितना भी चेतनहीन हो, चाहे चेतना को देने वाला हो, वह सभी औषधि हैं, परन्तु उनकी एक मात्रा होती है और अपनी-अपनी मात्रा में वह अमृत है, और अमात्रा में वह विष बन करके मानव को अमानव बना देता है। परन्तु जितना भी ये वृक्षों से ले करके बड़े अवृत वृक्ष ले करके और वनस्पति, सूक्ष्म से सूक्ष्म से सब एक औषधि कहलाती है। इनमें बहुत-सी औषधि विषधर हैं, बहुत-सी औषधि इनमें विष नाशक है, जैसे ये पीपल का वृक्ष है, इसमें विष को नष्ट करने की शक्ति होती है, वट वृक्ष में बल वर्धक बनाने की प्रवृत्ति होती है। पुत्रदा, ब्रेणाका बुद्धिवर्धक तत्त्व होते हैं, तो इस प्रकार औषधियों को अपनी-अपनी मात्रा में पान करने से, वह मानव को साधक बना देती है।

पूज्य महानन्द जीः- भगवन! ये कैसे माना जाएं, कि मानव का जैसे निर्माण प्रभु ने माता के गर्भ में किया है कि इसका कायाकल्प कैसे हो सकता है? मानव अपनी आयु को इन औषधियों से कैसे ऊँचा बना सकता है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र! ये तो प्रायः परम्परागतों से ही माना गया है। कि माता के गर्भ स्थल में, जैसे प्रभु ने निर्माण किया है, तो वह निर्माण भी किसी तथ्य को ले कर किया है, और वह भी प्रकृति का एक तथ्य माना गया है, और वह तथ्य किसी न किसी औषधि में भी प्राप्त होता है ,किसी वृक्ष में भी उसकी प्रतिभा हमें प्राप्त होती है। तो जिसमें प्रतिभा प्राप्त होती है, उनके सूक्ष्म तन्तुओं को ले करके, उनका पिपाद बना करके, पान करने से औषिधयों में जो शीघ्र शक्ति का नष्ट करने वाली शक्ति अप्रात है उसे बल वर्धक बनाने के लिए उसे दीर्घता प्राप्त होती है।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! ये यथार्थ है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- ये तो दर्शन शास्त्र कहता है, वेद का मन्त्र भी इस प्रकार कहता है और भी नाना इस प्रकार के शब्द वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! मानव को ये सम्भव है कि पशु पक्षियों की वार्त्ता जान लेता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, प्रायः ऐसा है, क्योंकि वह जो प्रकृतिवाद पर जो मानव संयम कर लेता है, वह मानव जो भी प्रकृति के तत्त्वों से प्रकृत हो रहा है, उसकी भाषा उसके लिए सम्भव है। देखो, अहिंसा में जाने वाला प्राणी, अपनी प्रवृत्तियों को ऊँचा बनाकर निर्भयता लाता है, जब वह निसंकोच बन जाता है, तो वह प्राणी उसकी स्वतः रक्षा करते हैं, रक्षा कौन करता है? विषधर प्राणी भी अमृत की रक्षा करते हैं। ये सिद्धान्त हैं, प्रकृति का। जैसे देखो, अमृत बिखरा हुआ है उस अमृत की कौन रक्षा कर रहा है, सर्प रक्षा कर रहा है, जैसे वायुमण्डल है इस वायुमण्डल में परमाणु बिखरे हुए हैं, उसमें विषधर भी है, अमृत भी है, अमृत को मानव पान कर रहा है, विष वाला विष को पान कर रहा है, अमृत के परमाणुओं में विष का मिश्रण होता है, उसको विषैले प्राणी अपने मे संचय कर रहे हैं। अमृत की रक्षा हो रही है, विष को पान किया जा रहा है, विषधर प्राणी ही अमृत की रक्षा करते हैं।

तो यह उस मेरे प्रभु का विज्ञान इतना विशाल है, कि इसके ऊपर मानव अनुसन्धान करता ही रहता हैं, हमारे ऋषि बारह-बारह वर्षों तक इन वाक्यों को अनुसन्धान करते रहे हैं, अमृत विषैले प्राणी को परमाणुवाद को उसी के परिणत कर देता है। जहाँ वह परमाणु अपने में स्थिर होने वाला है। इस प्रकार का जो प्रभु का विज्ञान है विज्ञानमयी अनन्तमयी जगत है। इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान विचित्रता में होता रहा है, वैदिक साहित्य में इस विद्या का बहुत ही अपने में एक अनूठा रूप रहा है, जो ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! ये भी सम्भव है कि संसार में जो प्राणी है अपनी आयु को जैसे आपने पूर्व काल में कहा था कि च्यवन ऋषि का दो हजार एक सौ पचास वर्ष का आयु हुआ, उन्होंने औषधियों के पान से ही अपनी आयु को दीर्घ किया या कोई इसका विशेष कारण था?

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र! इसमें कोई विशेष कारण नही, केवल औषधियों का पान करने से, नाना वैद्यराजों ने ऋषि की रक्षा की रक्षा करने के पश्चात उन्हें इस योग्य बनाया गया कि वह अपना पुत्र याग कर सकें। बहुत-सा औषध इस प्रकार का होता है कि उसके पान करते-करते ही मानव का आयु विशाल बन जाता है कामना की प्रवृत्ति ही उत्पन्न नही होती, क्योंकि सबसे प्रथम मानव की शक्ति का व्यय होता है, एक ही मार्ग, इस शरीर में एक कामदेव से, जहाँ ऊर्ज्वा का क्षय होता है, ऊर्ज्वा का विनाश होता है जब उस ऊर्ज्वा की रक्षा में कटिबद्ध हुआ, वहाँ आयु में दीर्घता आनी प्रारम्भ हो जाती है। तुम्हें यह प्रतीत होगा, कि यहाँ बहुत से ऋषि हुए हैं, जिनका आयु बहुत दीर्घ रहा है, क्योंकि उन्होंने अपनी ऊर्ज्वा शक्ति को, वह ब्रह्मचर्य का, जो मार्ग है उस मार्ग से ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वागति बनाना ही आयु की दीर्घता है। औषधि विज्ञान इसमें इसीलिए सहायक बनता है कि उसमें इतने परमाणु होते हैं, जिससे वह प्राणी अपने प्राण की रक्षा कर सके, और प्राण का संचालन हो सके। जहाँ तक बलिष्ठ होने की वार्त्ता है, वह बलिष्ठ भी होता है और अपनी-अपनी सुयोग्यता को भी प्राप्त होता है परन्तु वह अपनी शक्ति को नष्ट न करे तो उसका आयु दीर्घ बन सकता है वह ब्रह्मवर्चोसि बन जाएं और ब्रह्मवर्चोसि बन करके ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है ब्रह्म की सृष्टि को अपने नीचे दबा लेता है।

जैसे हमारे यहाँ हिरणाप आदि का वर्णन आता है महात्मा दधीचि का वर्णन आता है इसी प्रकार प्रकृति को नीचे दबाने वाले बहुत से ऋषि हुए हैं दबा वही सकता है जो ब्रह्मवर्चोसि अपने जीवन को बना लेता है औषधि में यह परमाणु है क्योंकि औषधि में ब्रह्म है ब्रह्म का जो लक्षण है वह केवल चेतना है और चेतना के आश्रित होता हुआ वह गमन करत है चेतनाका सम्बन्ध प्रभु से रहता है कोई भी वैज्ञानिक हो वह दुग्ध को ले करके श्रद्धामयी घृत का निकास आ जाता है, घृत को अपने में लिया जाता है, और वह श्रद्धामयी जो घृत है वह याग कहलाता है तो जैसे घृत मन्थन किया जाता है, ऐसे ही जो औषधि विज्ञान वाले हैं और विज्ञान में वह प्राण की प्रतिक्रियाओं को जानते हैं। तो प्राण की प्रतिक्रिया से प्रकृति के स्वरूप में जो ब्रह्म का विज्ञान निहित रहता है प्रभु का जो विज्ञान औषधियों में नियुक्त रहता है उसको श्रद्धामयी घृत की भांति मन्थन करके वह उसको अपने में धारण करते हैं ब्रह्म का चिन्तन करते हैं ऊर्ज्वा को संचय करते हैं संचय करके ब्रह्म की सृष्टि को निहारते हैं आयु को दीर्घ बना लेते हैं तो इस प्रकार आयु दीर्घ होता है।

आयु की दीर्घता

आयु तीन प्रकार से नष्ट होती है ये जो संसार का चिन्तन है मायावाद का चिन्तन है, इससे जब मानव की घृणा हो जाती है, प्राणी को प्राणी से द्वेष की प्रतिभा बन जाती है अपने स्वार्थ के लिए अपनी कृतिका के लिए तो वह अपनी आयु को सूक्ष्म बना रहा है। जितना अपनी प्रवृत्तियों को समेट करके, जैसे हमारे यहाँ भगवान कृष्ण ने भी कहा है कि शब्द ध्वनि से जो भी मानव अपने आयु को दीर्घ बनाना चाहता है। अथवा प्रकृति को नीचे दबाना

चाहता है तो उसे दूसरों से घृणा और मायावाद के प्रपंच को आवश्यकता के अनुसार भोगने वाला, वह जानता है कि इसमें कोई रहस्य नही हैं वह प्रभु की सृष्टि को प्रभु के विज्ञान को निहारता हुआ, अपने में लय होकर घृणा से रहित हो जाता है। प्रभु के तत्त्वों से मिलान हो जाता है। तो उसकी आयु दीर्घ बन जाती है।

मुझे स्मरण आता रहता है हमारे यहाँ महर्षि विभाण्डक के पिता सुनुकान्त थे, सुनुकान्त ऋषि महाराज का आयु लगभग तीन हजार पांच सौ वर्ष का उनका आयु वना उनका आयु कैसे बना, मानो देखो, वह बाल्यकाल में ब्रह्मचर्य की ब्रह्म उपाधि बना करके वेद का अध्ययन करते हुए, प्रकाश में रत्त रहते थे, अन्धकार में नही जाते थे, तो उनका आयु दीर्घ बन गया। यहाँ आयु का कोई प्रमाण नही आयु किसकी होती है, ये बेटा! चिन्तन का विषय है, क्या शरीर की आयु मानी जाएं, अथवा श्वासों की आयु मानी जाएं, या भोगों की आयु मानी जाएं, ये एक बड़ा विचित्र नृत्य है इस संसार का हमारे विचार में तो भोगवाद से भी आयु का प्रसंग नही बनता, क्योंकि भोगवादी अपने में जब भोगों को जब समेट लेते हैं, तो आयु का प्रसंग समाप्त हो गया। यदि उसमें से यह माना जाएं कि श्वास से आयु की दीर्घता मानते है तो जब हम प्राणायाम करते हैं, समाधिष्ट हो जाते हैं, तो वहाँ भी आयु का प्रसंग समाप्त हो गया। परन्तु यदि यह माना जाएं कि भोगवाद में, वृत्तियों में रमण करना ही, आयु माना गया है आयु किस की होती है? क्या शरीर की आयु है, या हम आयु आत्मा की स्वीकार करें? आत्मा की कोई आयु नही होती, आत्मा एक चेतना है, वह सदैव रहने वाली है, मानो देखो, उसके सन्निधान से शरीर की प्रतिभा का निर्माण होता है, वह जिन औषधियों से निर्माण हुआ है, उन्हीं औषधियों के पिपाद को बना करके, पान किया जाएं, तो मानव निश्चित हो करके, प्रभु के ब्रह्माण्ड को प्रभु के विज्ञान को, वनस्पति विज्ञान को ले करके, आयुर्वेद में परिणत हो जाएं, तो आयु विचित्र बन जाती है। आयु महान बन जाती है।

आज मैं तुम्हें आध्यात्मिक और भौतिकवाद में नहीं ले जाना चाहता। विचार केवल इतना है कि हमारा जो जीवन है, उसका समन्वय प्रभु से रहता है क्योंकि प्रत्येक परमाणु में कोई न कोई चेतना है, चाहे वह वृक्षों में रहने वाला हो, वनस्पतियों में रहने वाला हो, चाहे वह परमाणु के रूप में हो, उनमें जीवन शक्ति है, उस जीवन शक्ति को संचय करने वाला, आयुर्वेदाचार्य बनता है, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बनता है, वह इन परमाणुओं को जिनसे शरीर का निर्माण हुआ है, इनकी आयु को दीर्घ भी बना सकता है, इसको न्यून भी कर सकता है और विशालता में भी परिणत हो जाता है। तो ये विचार हमारे यहाँ सार्वभौम माना गया है, इन विचारों को ले करके हम अपने जीवन को ऊँचा बनाते रहें।

आज मैं तुम्हें बहुत से आचार्यों की चर्चा कर रहा था, अश्विनी कुमारों की चर्चा कर रहा था, कहीं सुधन्वा की चर्चा कर रहा था, इन चर्चाओं के देने का अभिप्रायः यह, कि इन्होंने अपनी आयु को दीर्घ बनाया। राजा रावण से सुधन्वा का जीवन, सौ वर्ष ऊर्ध्वा का था सुधन्वा वैद्यराज के दो पुत्र थे, धनेतकेतु और सोमकेतु ये भी आयुर्वेद के मर्म को जानते थे। महाराजा सुधन्वा का आयु राजा रावण से आयु सौ वर्ष पूर्व आयु था महाराज रावण का जब निधन हुआ तो छह सौ वर्ष का उनका आयु था, तो इस प्रकार उनके आयु की दीर्घता मानी गयी। विचार विनिमय आज हम अपनी आयु को ऊँचा बनाते रहें संयमी बन कर अपनी आयु को महान बना सकते हैं।

तो ये आज का विचार बेटा! मैं देना नही चाहता हूं विचार तो बहुत ही विचित्र है आज में तुम्हें बहुत गम्भीर गहरे अगाध समुद्रों में ले गया परन्तु उनकी चर्चाएं शेष कल प्रगट करेंगें आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हमारा आयु कैसे ऊँचा बने हम अपने में कैसे महान बन सकते हैं मानो देखो, ये सूक्ष्म विचार दिए हैं बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित किया है समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

१४ यज्ञ एवं औषधि विज्ञान १७ १२ १९८३

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी मे उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन होता रहता है। अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान की विवेचनाएं होती रहती हैं, वे परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है। जितना भी संसार का ज्ञान है, अथवा विज्ञान है। वह उसी की एक प्रतिभा कहलाती है। जैसे सूर्य में से नाना प्रकार की किरणें उद्बुद्ध हुआ करती हैं, और वह प्रकाश का द्योतक कहलाती है। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा जो चैतन्य देव है। जो संसार का पालन करने वाला, जिसे वेद विष्णु के रूप से वर्णन कर रहा है। अथवा विष्णु कह रहा है। तो मुनिवरों! पालन करने वाला और उसका वह ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है।

आज हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते चले जाएं और उसकी जो महती है। उसका जो विज्ञान है। उसका जो ज्ञान है। उसको हम अपने में ग्रहण करते चले जाएं, क्योंकि पूजा का अभिप्रायः केवल यही माना गया है कि हम उसके गुणों को अपने में धारण करने वाले बनें, जिन गुणों से वे परमपिता परमात्मा इस जगत का पालन कर रहा है, निर्माणवेत्ता कहलाया गया है। ऐसा जो मेरा प्यारा प्रभु है। हम उसकी महती को अपने में धारण करते चले जाएं और विज्ञान के क्षेत्रों में अपने को वैज्ञानिक बनाते चले जाएं। ज्ञान के क्षेत्र में अपने को ज्ञानी बनाते चले जाएं।

आयु का जगत है, ये बड़ा विचित्र है, आयु का जो विश्लेषण आचार्यों ने किया वह बड़ा विचित्र है, देखो, आयु की कोई सीमा नही हैं, वह सीमाबद्ध नही हो पाती, क्योंकि आयु अपने में पूर्णता को प्राप्त होती रहती है। हमारे वैदिक साहित्य में आयु का अपना कोई अस्तित्व नह होता, वह तो मानव ने अपने में सीमाबद्ध करने को शब्द रचना कर ली। जब यह विचारा जाता है कि आयु की मृत्यु ही नही होती वह सदैव प्रकाश कहलाती है। अन्धकार उसके निकट नही आता तो वहाँ अन्धकार का प्रसंग न आने से वह सदैव जीवन बना रहता है। मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाता रहा हूँ। जहाँ मानव अपने में अनुसन्धान करने वाला बनता है अनुसन्धान करता रहता है। प्रत्येक वस्तु को मानव निहारता है, और उसकी जानकारी चाहता है। उसके अन्तिम तत्त्वों में रमण करना चाहता है। ऐसे ये महान पवित्र आनन्दमयी एक स्रोत माना गया है, जिसे परम्परा से ही मानव अपने में धारण करता चला आया है।

मेरे पुत्रों! मैं कुछ आयुर्वेद की चर्चाएं कर रहा था। आज का हमारा वेद पाठ विष्णु की विवेचना कर रहा है। वह जो विष्णु है। वह पालन करता है। जैसे माता अपने पुत्रों! का पालन करती है। वह भी विष्णु के रूप में कहलाती है। इसी प्रकार सूर्य प्रकाश देकर अन्धकार को धारण करता है, उसे भी विष्णु कहते हैं। औषधियों में भी विष्णुकर्णी औषधि कहलाती है विचार ये कि जो पालन करने वाला, सत्ता देने वाला है विष्णु कहलाता है, माता का नामोकरण भी विष्णु के रूपों में वर्णन होता रहा है, जब हम चिन्तन करते रहते हैं कि हम विष्णुमयी आभा को अपने में धारण करना चाहते हैं कि विष्णु एक याग बन करके रहता है, विष्णु केवल प्रकाश और पालन करने वाला एक याग बन करके रहता है। जो याग की प्रतिभा अपने में धारण करता है। वह याज्ञिक बन करके विष्णु उसको इस संसार रूपी सागर से पार ले जाता है। आज मैं विशेष विवेचना न करता हुआ केवल औषधि विज्ञान के सम्बन्ध में बहुत से वन के वन हैं। जिसके ऊपर मानव अध्ययन करता रहता है। नाना प्रकार की औषधियों के क्षेत्र में जाने से यह प्रतीत होता है कि यह इतना विशाल एक ऐसा वन है, कि जो मानव चला जाता है। उसे कोई

मार्ग प्राप्त नही होता, वह उस परिधि में अपने को ग्रहण कर लेता हैं। जब विशाल क्षेत्रों में प्रवेश करते हैं, भयंकर वनों में जाते हैं। औषधि के विशाल गम्भीर सागर में जाते हैं। जहाँ मानव को एक अनुभूति प्राप्त होती है। उसके मानवीय मस्तिष्क में एक आनन्दमयी स्रोत उत्पन्न हो जाता है। वह अपने में धारण करके इस सागर से पार होने की कामना करता है। सुधन्वा वैद्यराज के स्वप्न में औषधियां अपने गुणों का वर्णन करती रही हैं, और भी आयुर्वेद को जानने वाले आचार्य हुए हैं। जिन्होंने आयु को अच्छी प्रकार जानने का प्रयास किया है। आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, मेरे प्यारे महानन्द जी अपने कुछ विचार व्यक्त करेंगें, क्योंकि इनकी बड़ी प्रेरणा रहती है, ये बड़े उत्सुक रहते हैं कि मैं भी कुछ उच्चारण करूं।

पूज्य महानन्द जीः- मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मेरे भद्र ऋषि मण्डल, मेरे पूज्यपाद अभी-अभी कुछ विष्णु की विवेचना कर रहे थे। और आयुर्वेद की चर्चा भयंकर वनों में विचरण करते हुए एक अपने मौलिक गुणों में परिणात हो गएं हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने कई ऋषि-मुनियों की चर्चाएं की हैं।

आधुनिक काल के विवरण में, क्रिया और कायाकल्प के सम्बन्ध में भी शरीर की पुनरूक्ति होना भी इनकी विवेचना में आया। जब मैं ये विचारता रहता हूँ कि कथनी में और क्रियाकलाप दोनों में अन्तर्द्वन्द्व रहता है जैसा पूज्यपाद ने अभी-अभी कई कालों से वे क्रियाकलाप और कल्प में अपने को ले जाना चाहते थे, पुरातन काल के ऋषि-मुनियों की चर्चा और उनका क्रियाकलाप भी वर्णन किया है। आयु दीर्घ होने का भी इन्होंने प्रमाण युक्त वर्णन किया। विचार आता रहता है कि ये आधुनिक जगत पुरातन काल के आयुर्वेद पर जब मैं अध्ययन करता हूँ, तो एक बड़ा विचित्र जगत दृष्टिपात होता है। कुछ आयुर्वेदाचार्यों (मार्डन मैडिकल साईंस) ने हिंसा के ऊपर अपने विचारों को स्थिर किया और यह कहा कि मानव के प्राणियों के अंगों को ले कर हम रूग्णों को शान्त कर सकते हैं। ये भी असम्भव माना गया। हमारे यहाँ बहुत से आयुर्वेदाचार्य हुए है। उन्होंने भी हिंसा की विवेचना इतने रूपों से नही की जितनी आधुनिक जगत में हो रही हैं, जब मैं ये विचरता हूँ कि यह जो कुरीति बन गई है। ये जो मांसों का भक्षण किया जा रहा है। इसमें कोई तथ्य नही माना गया।

जब विचार आता है कि मानव शरीर तो अहिंसा परमोधर्मः की कल्पना करता है अहिंसा परमोधर्मः में मानव को ले जाता है। परन्तु मानव इसके पश्चात नाना अभक्ष्य पदार्थों को पान करता हुआ अपने को महान बनाना चाहता है। ये बड़ी असम्भव सी वार्त्ता मुझे दृष्टिपात आती रहती है। आज हमारी जिस स्थली पर आकाशवाणी जा रही है। हमारा आकाश मण्डल से शब्द लेता हुआ शरीर के माध्यम से संसार में यन्त्रों की भांति उसका प्रसारण होता रहता है। जब मैं विचारने लगता हूँ कि यह समाज आयुर्वेद के मर्म को जानने वाला क्या उदगान गा रहा है, वह कहता है कि मांस का भक्षण किया जाएं, नाना रूग्णों में जब यह ज्ञान नही होता कि नाना रूग्णों की औषधि ब्रिही होना चाहिए, औषध विज्ञान में भी अभद्र व्यवहार होना ही कृत कहलाता है। अभद्र व्यवहार मानव की प्रतिभा को नष्ट कर देता है, गृह के पुण्य समाप्त हो जाते हैं। इसीलिए हमारे आचार्यां ने अपने सामूहिक जीवन में यह वर्णन करते हुए कहा कि ये औषध विज्ञान एक विशालता में परिणात रहा है, ये नवीनता में नही, ये वर्तमान काल से ही ही नहीं, इसकी एक धारा चली आ रही है।

आधुनिक काल के आयुर्वेदाचार्यों (मार्डन एक्सपर्ट आफ मैडिकल साईंस) नाना रूपों में पशुओं की प्राणधारियों की बलि का वर्णन आ रहा है। मानव ने बलि के अर्थ को जाना नही बलि का अर्थ है। उसको अच्छी तरह जान लेना, उस पर न्यौछावर होना ही बलि कहलाती है। हमारे यहाँ जिस भी काल में, शतपथ तथा गोपथ ब्राह्मण इत्यादियों की विवेचना होती रहती है। जहाँ मानव ये विचारता है कि मैं इस रूग्ण से दूरी हो जाऊं तौ वैद्यराज (डाक्टर) अपने में संकीर्ण बन करके उसे दमन किए रहते है, जब मैं ये विचारने लगता हूँ, कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई

यज्ञ और औषधि विज्ञान

काल की महर्षि च्यवन ऋषि की चर्चाएं प्रगट कीं महात्मा दधीचि की चर्चाएं कीं अश्विनी कुमारों की चर्चाएं की है और राजा रावण के राष्ट्र में विशाल आयुर्वेदाचर्य थे उनका चिन्तन होता रहा है।

जब ये विचार आता है कि ये संसार किस गति को जा रहा है, तो मानव शून्यता को प्राप्त हो जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल बहुत-सी वार्त्ताएं प्रगट करायी है। महर्षि च्यवन का जीवन बड़ा विशिष्ट रहा है। वह अपने में अद्वितीय रहे हैं। उनका जीवन तपस्वियों में क्या आनन्द युक्त होता रहा है। आधुनिक काल के आचार्य ये कहते हैं महर्षि च्यवन ने च्यवन प्राश का निर्माण किया है। प्रायः ऐसा नही हैं। क्योंकि ये तो लोकोक्तियां हैं, ये कृतिकण्ठ कहलाती है। मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया और कहा कि ये सर्वत्र च्यवन ऋषि के सम्बन्ध मे जब प्रतिक्रियाएं आती है, तो उन्होंने अनुष्ठान किए हैं। परन्तु च्यवन प्राश औषध तो परम्परागतों से मानी गई है, क्योंकि इसमें अष्टवर्ग का वर्णन होता है। अष्ट वर्ग जहाँ प्राप्त हुआ, वहाँ औषध का कृत बन गया है। जब मैं च्यवन ऋषि की चर्चाएं अश्विनी कुमारों के माध्यम से उनके वाक्य जब स्मरण आते हैं, तो प्रायः एक विचित्र जगत बन जाता है। मैं यह कहता रहता हूँ, कि आधुनिक काल के आयुर्वेदाचार्य कहता है कि ये विज्ञान अब तक किसी ने नही जाना, वह कहता है कि आचार संहिता रूग्णों की हमने बनायी है। परन्तु जब ये विचार आता है कि आयुर्वेद तो पुरातजन काल में बड़ा विशिष्ट रहा है। महानता में ये विज्ञान नृत्य करता रहा है। जब मैं अश्विनी कुमारों के समीप अथवा यही कृतियों में, राजा रावण के राष्ट्र में सुधन्वा इत्यादि नाना प्रकार के वैद्यरज थे और भी नाना वैद्यराजों की चर्चाएं आती रहती हैं, उनमें सब ही इस संसार सागर से उपराम होने की चर्चा करते है।

मेरे पूज्यपाद ने कई काल में मुझे वर्णन कराते हुए कहा कि उनका आयु बड़ा दीर्घ बना है। आयु कैसे दीर्घ बनते हैं, ये क्रिया और कायाकल्पों से ही ऊँचे बनते हैं। जब शरीर रूपान्तर किया जाता है। शरीर के ऊपर नाना औषधियों का प्रहार किया जाता है। तो यह अपने में अद्वितीय बन कर धारा को प्राप्त कर लेता है। यहाँ नाना प्रकार के कल्पित मानव कहता है कि गौ के शरीरों पर भुज से आव्रण करना स्पर्श करना, तथा गौ की बलि का वर्णन आधुनिक काल के कल्प में आता है। आधुनिक जगत जब हस प्रकार का स्वीकार करता हे तो गौ का अभिप्रायः यहाँ आयुर्वेद में पशु का नही हैं। यहाँ गौ नाम इन्द्रियों का माना गया है। जब तक गौ अपने को बलिता में प्राप्त नही होती, मानव जब अपने में सुसज्जित नही होता, अपने अप्रात विचारों जब तक पूज्यपाद ने वर्णन कराया वह अपने में सफलता को प्राप्त नही होता। इस प्रकार का विज्ञान परम्परागतों से ही, माना गया है। परम्परागतों से ही, आयुर्वेद विचित्र शिखर पर रहा है यहाँ ऐसे-ऐसे आयुर्वेद के यन्त्र देखो, जो रूग्ण हैं, तो रूग्ण चित्रों को लिया जाता है तो वह चित्र बन करके वह रूग्ण बन करके किसी भी स्थली पर हो उसकी लेखनीबद्ध हो करके अमुक रूग्ण है, वह आयुर्वेदाचार्य के समीप आ जाता है। ऐसे-ऐसे यन्त्र हमारे यहाँ पुरातन काल में माने गएं हैं।

आधुनिक काल में यन्त्र इस प्रकार के नही हैं, क्योंकि आधुनिक काल का विज्ञान कुछ और कह रहा है। पुरातन काल का विज्ञान कुछ कह रहा है। पुरातन काल का विज्ञान ये कहता है कि यन्त्रों में मानव की वृत्तियों को जाना जाएं, शब्द की आभा से ही यन्त्रों में चित्र आकर उनके रूग्णों की प्रतिभा यन्त्रों में प्रवेश हो जाती थी। इस प्रकार का विज्ञान हे कि यन्त्र मानव का चित्र ले लेते हैं उन चित्रों के ऊपर अन्वेषण करते हैं। रूग्णों का अध्ययन हो जाता है। परन्तु जिस काल की मैं चर्चा कर रहा हूँ वह काल बड़ा भव्य और विचित्र रहा है। उसमें नाना प्रकार के रूग्णों की प्रतिभा न आ करके उसमें पवित्रता की धारा आ जाती है, और वह पवित्र धारा मानव को ओजस्वी बना करके यज्ञवेदी पर विद्यमान कर देती है।

आज जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग हो रहा है। उस याग की सम्पन्नता में मैं अपने

पूज्यपाद से आज्ञा पाता रहता हूँ कि-प्रभु! समय सारिणी प्रदान कीजिए, देखो, पूज्यपाद उसे प्रदान कर देते हैं। हे यज्ञमान! मैं सदैव अपनी कामना प्रगट करता रहता हूँ। हे यज्ञमान! तेरे ऊर्ध्वा में विचार होने चाहिए तू अपने में वाणी के श्रृंगार को अपनाने वाला बन, इस प्रकार की कामना के साथ मानव अपने में महान बनने की प्रेरणा करता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं आपको निर्णय दे रहा हूँ कि आधुनिक काल वर्तमान काल में एक याग सम्पन्न हुआ है। इसीलिए मैं अपने हृदय से अपनी वाणी से मेरा अन्तरात्मा ये कहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरे जीवन की आभा समाप्त न हो देखो, वो काल था किसी काल में जब आयुर्वेद के मर्म को जानने वाले राजस्थलियों पर विद्यमान होते थे, आज वो काल है, आयुर्वेद के ऊपर चिन्तन करने से स्मरण शक्ति ही कही दूरी चली जाती है। आयुर्वेद एक समुद्र है, इसमें एक-एक औषधि के ऊपर मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है। हे यज्ञमान! तू भी उन औषधियों को एकत्रित कर जिन औषधियों के द्वारा मानव का उत्थान होता है। जगत एक महानता में परिणत होता है। उस प्रवृत्ति को अपनाना ही हमारा कर्तव्य कहलाया गया है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह वर्णन कराया कि इस प्रकार की धाराओं को लाना ही विष्णु याग कहलाता है। हे यज्ञमान! हे ब्राह्मण तेरी वाणी में ओज बना रहे। यज्ञमान तेरा गृह सौभाग्यशाली है, जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता हो, जिस गृह में देवताओं का पूजन होता हो। वह मानव कितना सौभाग्यशाली है कितना महान है इसके ऊपर मानव को चिन्तन और मनन करता है। इसके सम्बन्ध में विचार करना है कि हमने अपने जीवन को किस धारा में परिणत कर देना है, किस आभा में ले जाना है। विज्ञान और आयुर्वेद ये परम्परागतों से विचित्र माना गया है। मैंने आयुर्वेद की चर्चा न करते हुए बहुत पुरातन काल हुआ पूज्यपाद को निर्णय कराया था कि समुद्र में एक ऐसी स्थली है क्या जहाँ प्राणी क्या यन्त्रवाद का एक परमाणु भी दृष्टिपात नही आता, वह समाप्त हो जाता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराया था बहुत पुरातन काल हुआ आधुनिक काज का प्राणी कुछ कह रहा है। परन्तु क्या इसके ऊपर मानव को चिन्तन करना है। इसी प्रकार मानव को अपने में चिन्तनीय बन करके अपने जीवन को मानवीयता में परिणत करना है। क्योंकि मानवता सर्वश्रेष्ठ कहलाती है। इसी प्रकार विचार आ रहा था कि जब मैं अपने पूज्यपाद से कहता हूँ कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, अखण्डता की विवेचना आती रहती है एक समय नही मैंने कई काल में यह वर्णन किया है, द्रव्य का सदुपयोग करना ही यज्ञमान का एक मौलिक गुण कहलाता है। दुरूपयोग में मानव के जीवन की प्रतिभा समाप्त नष्ट हो जाती है। आत्म बल जाता है। इसीलिए वह जो द्रव्य है, उसका सदुपयोग हो करके, हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, परन्तु इसी जीवन की धारा को ऊँचा बनाना प्रत्येक मान का कर्तव्य माना गया है। प्रत्येक मानव उस आभा में रत्त रहना चाहता है। जब हम ये विचारते रहते हैं कि हमारे जीवन में कुछ मौलिकता आनी चाहिए, विचित्रता आनी चाहिए, तो वह हमें प्रायः प्राप्त हो जाती है। हम उनसे गति में प्रतिभा को प्राप्त होते रहते हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में यह वर्णन करते हुए कहा है कि संसार एक विचित्र सागर ही नही हैं। ये अनुसन्धान शाला विद्यमान करके योगास्थलियों पर विद्यमान हो जाता है।

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया कि पुरातन काल का वैज्ञानिक, उनके यन्त्र, चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य आकर्षण शक्ति के मध्य मे यन्त्र विद्यमान हैं। न प्रतीत संसार में किस समय अग्नि प्रचण्ड हो जाएं, किस समय अग्नि का काण्ड बन सकता है। ये संसार क्योंकि विज्ञान है, वह नग्न है, क्योंकि विज्ञान नग्नता में प्राप्त होता रहता है। जहाँ मानव कर्तव्य से विहिन हो जाता है। कर्तव्यवाद नही रह पाता कर्तव्यवादों की कृतिका समाप्त हो जाती है। इसीलिए मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराते हुए कहा कि ये संसार बड़ा विचित्र है। इसकी विचित्रता

के ऊपर हमें मनन और चिन्तन करना है। विचार-विनिमय करना है जिससे मानव की धारा एक विचित्रता में परिणत हो जाती है।

मैं आज अपने पूज्यपाद गुरुदेच को परिचय कर रहा हूँ। क्योंकि गौ की आभा में आज का आयुर्वेद स्वीकार करता है कि गौ की मांस की कृतिका बनती है। परन्तु न बन करके और भी इस प्रकार की औषधि जो कृतिका बनती है। उस कृतिका के बनने से मानव के हृदय में शान्तवना की स्थापना नही आ पाती देखो, इस प्रकार का जो ज्ञान और विज्ञानमयी अनन्त वृत्ति कहलाता है, इसको हमने जानना है। मैं अपने पूज्यपाद से यह वर्णन करा रहा हूँ हे पूज्यपाद! आधुनिक काल का आयुर्वेदिक आचार्य कुछ कह रहा है वह कह रह है कि मैंने आयुर्वेद को जाना है। इससे पूर्वकाल में इतना शिखर पर नही था। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप विद्यमान हो करके यह कहा करता हूँ कि आयुर्वेद जबसे सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ है। ये आयुर्वेद चला आ रहा है, इसमें कोई शंका नही यह एक प्रकार की विडम्ना बन करके रहती है। जिसके ऊपर मानव चिन्तन और मनन करता रहता है। वह अनुपमता कहलाती है। इसमें किसी न किसी प्रकार की एक सार्थकता होती है। जिसको अपनाने से मानव का हृदय एक पवित्र वेदी पर गमन करने लगता है।

आज का विचार क्या कहता है कि यज्ञमान को अपने में भ्रमण कराते हुए एक सुन्दर मार्ग मानव को प्राप्त हो जाता है। जिस मार्ग के लिए परम्परगतों से प्रेरित होता रहता है। परन्तु हे मेरे देव यहाँ अग्निं ब्रह्मो वाचः पंच तन्मात्राओं को ले करके मानव जिस समय विज्ञान को ऊँचा बनाना है। वह मानव को रूग्णों से शून्यता की गति पर ले जाता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन कराता रहता हूँ। ऐसे-ऐसे लेपन जिनसे बुद्धि स्पष्ट हो जाती है। ऐसी-ऐसी औषधियां हैं। जिनके लेपन करने से संसार दृष्टिपात आ जाएं। यज्ञ के सम्बन्ध में ये याग विष्णु है, विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द आपने वर्णन किए हैं। द्यौ के रूप में रमण करने वाला ये परमाणुवाद अपने में तन्मात्रित बन करके इस सागर की आभा को स्पर्श करने लगता है। चन्द्रमा को स्पर्श कर जाएं तो चन्द्रमा का विभाजन भी हो सकता है। इस प्रकार की विज्ञान की धाराएं इस प्रकार का आयु का वृत हमारे यहाँ रहा है।

आधुनिक जगत तो ये स्वीकार करता है कि ये विज्ञान वर्तमान में ही आया है, हम ही लाए हैं। परन्तु ऐसा नही हैं, ये तो परम्परागतों से चल रहा है। आधुनिक काल का विज्ञान अभी तक उस विज्ञान के आगे नही आ पाया है। जो द्वापर या त्रेता के काल में जिस प्रकार का आयुर्वेद का विज्ञान था मानव के श्वासों की प्रवृत्तियों को चित्रण करके वैद्यराज ये कहा करते थे कि अमुक रूग्ण है। आधुनिक जगत में इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण नही हुआ है, जो श्वास की गति को ले करके रूग्णों को शान्त कर दे। पुरातन काल में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब अध्ययन करते थे तो इस प्रकार का विज्ञान था। इस प्रकार के विज्ञान में मानव को चेतना की अनूभूति होती है। चेतना का दर्शन होता है। चेतना की प्रतिभा में चैतन्य बन करके वह अपने में महान बन करके इस संसार सागर से पार हो जाता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं उस यज्ञमान के लिए आशीर्वाद अपनी वाणी उदगमता में करता हुआ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और जिस आयु की चर्चा करता हैं। वहाँ तेरी निष्ठा होनी चाहिए परन्तु वहाँ निष्ठित बन करके इस संसार सागर से पार होने का प्रयास कर। हे यज्ञमान! तू याग करता है तो अग्नि को देवता बना करके अपने को तेजस्वी बनाता है तू जल को आपो बना करके अपने को नम्र बनाना चाहता है। तो अग्नि का अग्न्याध्यान करके दूरिता को नष्ट करने के लिए यज्ञशाला में विद्यमान हुआ है। हे यज्ञमान! तेरी प्रत्येक इन्द्रिय पवित्र होते हुए इस सागर से पार होने की विवेचना करते हुए, अपनी आभा में महान बनता चला जाएं।

हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, तेरा याग प्रत्येक आभा में यागों का चलन होना चाहिए, याग

में महानता की ज्योति होनी चाहिए, जिससे महान बन करके उस ज्योति को अपने समीप ला करके उसे ऊँचा बनाया जा सकता है। विचित्रता में लाया जा सकता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से याचना करता रहता हूँ, मैं च्यवन ऋषि की चर्चा कर रहा था जिनका आयु दीर्घता में वर्णन किया है, आधुनिक काल सौ वर्षो का आयु ही बहुत कहा जाता है। पुरातन काल में राजाओं का छह सौ-छः सौ वर्षों का आयु रहा है। परन्तु जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने रावण की चर्चाएं की रावण के अपने में आभाहित होने की विवेचना प्रगट की है। जैसा अश्विनी कुमारों के यहाँ एक यन्त्र का निर्माण किसी काल में राजा रावण के यहाँ लंका में हुआ था उस यन्त्र से मानव के नेत्रों की ज्योति के कृत ले करके उनसे रूग्णों का ये प्रतीत कराया जा सकता था कि इस प्राणी को कौन-सा रूग्ण है। केवल नेत्रों की ज्योति से नेत्र देखो, चित्रों को ले करके गति करते हैं, चित्रों को ले करके आन्तरिक जगत में आते हैं। जैसे श्रोत शब्दों का आदान प्रदान करते रहते हैं। आदान प्रदान की जो प्रवृत्ति है। ये अकृत कहलाती है। सुन्धनर्म कहलाती है। इसके ऊपर मानव को बहुत अनुसन्धान करने की आवश्यकता रहती है। अश्विनी कुमारों के यन्त्रों से रूग्ण की प्रतीति हो जाती थी कौन-सा रूग्ण इसको है, नेत्रों से उसकी प्रतिहस्त क्रियाओं से निर्णय हो जाता है। कौन-सा रूग्ण है। उसका निदान किया जाता है। इस प्रकार का विज्ञान मानवीय मस्तिष्कों में, विज्ञानशाला में रत्त रहा है।

जब महर्षि च्यवन का अश्विनी कुमारों ने निदान किया तो इनके पिता आचार्य थे जिन्होंने आयुर्वेद का अध्ययन कराया था सुकति ऋषि। सुकृति ऋषि के यहाँ एक ऐसा यन्त्र था उनके आश्रम में, जिस यन्त्र से मानव के सर्वत्र अंग का चित्रण हो करके जहाँ रक्त जैसा गति कर रहा था उस यन्त्र में उस रक्त का उसी प्रकार का भ्रूण आना और उसके ऊपर निदान करना अश्विनी कुमारों का कर्तव्य बन गया था। अश्विनी कुमारों ने इस प्रकार का अनुसन्धान किया है, आयुर्वेद के ऊपर। आधुनिक काल का जो प्राणी है, वह कहता है मैं आयु को जानना चाहता हूँ। उन्होंने मांस भक्षण करने के लिए, मांस की प्रतीति करने के लिए आधुनिक जगत का वैद्य आधुनिक जगत का आयुर्वेदाचार्य आधुनिक जगत का जो अश्वतम करना चाहता है वह मांसों की विशेषता का वर्णन कर रहा है। पुरातन काल में वनस्पति विज्ञान को देखो, वृक्षों के ले करके उसके पंचांग उसकी हस्तक्रियाओं को ले करके रूग्ण को शान्त किया जाता था। आधुनिक काल का रूग्ण शान्त नही होता है। उस रूग्ण में रूग्ण की प्रतीती होती रहती है। जहाँ वृद्धपन आना नही था आधुनिक काल के वैद्यराज से रूग्ण शीघ्र आ जाता है। रूग्ण आ करके वृद्धपन आ जाता है। जहाँ औषधियों से वृद्धपन समाप्त होता है, आधुनिक औषधियों के द्वारा वृद्धपन शीघ्र आ जाता है। इतना भेदन आधुनिक जगत और वर्तमान काल मैं मैंने किया है।

पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कुछ अध्ययन किया है इस सम्बन्ध में परन्तु कुछ ऐसा भी अनुभव हुआ है च्यवन ऋषि को औषध देने से ही एक औषध ऐसी होती है, जिसको मेरे पूज्यपाद जानते हैं। उस औषधि का नामोकरण सरीति, आधुनिक काल में वह समुद्रों के तटों पर प्राप्त होती है। उस औषधि में ये विशेषता है कि जैसे मानव को पान करायी गयी, हृदय की गति हृदय का रूग्ण, उसकी प्रतिक्रिया भिन्नता में परिणत हो करके, वह मानव के रक्त में जिस प्रकार का कण गति कर रहा है। उस परमाणु को और यन्त्र विद्यमान है। उसमें परमाणुओं का चित्र आ करके एक-दूसरे परमाणु को निगल रहा है। अपने में संघर्ष समाप्त हो जाता है। जहाँ संघर्ष समाप्त हुआ परमाणु अपनी-अपनी स्थली पर आये, हृदय में शान्तना की स्थापना हुई, रक्त अपने आसन पर गति करने लगता है। तो रूग्ण नही रह पाता तो इस प्रकार की औषधि विज्ञान परम्परागतों से हमारे मानवीय मस्तिष्कों में आचार्यों की विज्ञानशालाओं में हमें दृष्टिपात हुआ है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में वर्णन कराया अश्विनी कुमारों और सुधन्वा का और भी इस प्रकार के

यज्ञ और औषधि विज्ञान

आयुर्वेदाचार्य इस संसार में हुए हैं, जो चन्द्रमा की किरणों से रूग्णों को समाप्त करते रहे हैं। इस प्रकार के आयुर्वेदाचार्य हुए जिन्होंने सूर्य की किरणों को ले करके जल को किरणों में तपाने से ही उसे रंग भेदन करने से सप्त हस्त क्रियाओं का वर्णन आयुर्वेद में प्राप्त होता है, आयुर्वेदाचार्यों के मस्तिष्कों में रहा है देखो, किरणें आयी हैं, जल को तपाया है। जल का शोधन किया है। उसमें कुछ औषधियों का मिश्रण किया, उसको देने से प्रथम द्वितीय इस प्रकार बारी-बारी उसको तपाया जाता है। हरित और इस प्रकार के रंगों वाला उसी जल को देने से मानव का निदान हो जाता है। मानव के निदान के साथ में उसके रूग्णों की शान्तना हो जाती है। विचार क्या कि पुरातन काल में औषधि से युवा होना और वर्तमान काल में औषधि से वृद्धपन की प्रतीति होने लगती है। उसके मूल में क्या है? उसके मूल में है, विज्ञान का अधूरा है। आधुनिक जगत का औषध विज्ञान अधूरा है, अधूरा होने से उसमें पूर्णत नही आ पाती। हे यज्ञमान! पुनः तेरे लिए, तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मन और हृदय में शान्ति की स्थापना हो जिससे अपने जीवन की दीर्घता की कामना प्रभु से करता रहे, द्रव्य का सदुपयोग करता रहे, इस संसार सागर से पार होने की कल्पना करता रहे।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह समय दिया है इसकी मैंने कुछ सदुपयोगिता जानी है। क्योंकि आयुर्वेद अपने में अद्वितीय रहा है, अनूठा रहा है। संसार में जो भी मानव पान करता है। अन्न से ले करके किरण तक, औषधियों तक ये सब औषध कहलाती हैं। उसके भिन्न-भिन्न प्रकार होते हैं, पान करने के जैसे कणक है, उसे हम यदि दुग्ध बना करके उसे अग्नि में तपा करके पान करते हैं। तो उससे मानव के हृदय में तेज आता है। कणक को हम शीतल जल में तपा करके पान करते हैं, बुद्धिवर्धक कहलाया जाता है। इन अन्नों में बड़े गुणों का वर्णन आता रहता है ये सब औषधि कहलाता है इसी प्रकार अपनी औषधियों के ऊपर सदैव बड़ा गौरव रहता है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बहुत से विचार दिये। इनका विचार बड़े सूक्ष्म रूपों से रहा है। परन्तु जो ध्यानशील आयुर्वेदाचार्य हों वे इनको जान सकते हैं। विचार ये है कि आज का हमारा जो वाक्य चल रहा है कि हम आयुर्वेद के ऊपर अपना कुछ निर्णय दें आयुर्वेद के ऊपर कुछ विचार प्रगट करें तो वह बड़ी सार्थक और उज्ज्वलता में परिणत है।

हमारे यहाँ आयुर्वेद की औषधियों को पान करके ऋषि योगाभ्यास करते रहे हैं और यागी बनते रहे हैं क्योंकि जब तक प्राण का संचार अच्छे विशुद्ध रूप से नही हो पाता तब तक हमारा योगी बनना असम्भव हो जाता है। क्योंकि प्राण विशुद्ध रूपों से गति करना प्राण का अपने में संघर्ष न करना बहुत अनिवार्य है। हमारे आचार्यजन एक संकल्पोमयी प्राणायाम किया करते थे। पुरातन काल में ये प्रायः हम भी कराते रहे हैं। संकल्प से प्राणायाम होते हैं। जैसे हमने संकल्प किया है सूर्य और चन्द्रमा स्वरिञ्जनी होती है। जब संकल्प के द्वारा उनका आदान प्रदान होता है। तो संकल्पोमयी प्राणायाम मानव के बहुत से रूग्णों को और चंचलता को समाप्त कर देता है। मुझे बहुत पुरातन काल की एक वार्त्ता स्मरण है। एक समय मगध राष्ट्र में चले गए थे, बहुत पुरातन काल हुआ। मगध राष्ट्र में एक सरूचिकेत नामक ऋषि थे वह राष्ट्र मे बड़े प्रसिद्ध थे वह भयंकर वनों रहते थे। नद नदियों के तट पर रहते और ब्रह्मचारियों को कुछ शिक्षा भी देते रहते, एक ब्रह्मचारी उनके द्वारा ऐसा आ पंहुचा मनोबल चंचल बन गया, चंचल कैसे बना जिसे उन्माद के रूप में परिणत करते हैं। इसे उन्माद के रूपों में वर्णन करते रहते हैं। सरूची ऋषि ने उस ब्रह्मचारी को अपने आश्रम में आसन दिया। वह उसके ऊपर अन्वेषण कर रहे थे। अन्वेषण क्या था, उनके त्रि जो दोष हैं उन दोषों के ऊपर अन्वेषण और शोधन कर रहे थे समुद्र जल की प्रतिक्रियाओं में जल में उन्हें लाना जल में तपाना और संकल्पोमयी प्राणायाम करने से मस्तिष्क की सूक्ष्मवाहक नाड़ी है। जो अग्नि में

यज्ञ और औषधि विज्ञान

किसी कारण किसी आवेश से या किसी के आक्रमण से नाड़ी संकुचित हो जाती है, नाड़ियों में संकुचित पन आ जाता है। वह नाड़ियों का स्पष्टीकरण हो जाता है। स्पष्टीकरण होने से बुद्धि का विकास हो जाता है और बुद्धि का विकास होने से उसका रूग्ण समाप्त हो जाता है।

तो हमारे यहाँ प्राणायाम भी करने से ऐसा होता है, जैसे शीतली प्राणायाम है। अग्नि शरीर में प्रदीप्त हो गई है। भयंकर अग्नि है। शीतली प्राणायाम करने से उसको खेचरी मुद्रा में परिणत करने से उसकी अग्नि में सान्त्वना की प्राप्ति हो जाती है। ये तो विशाल वन में ले गयें हैं। जैसा पुत्र ने अभी-अभी वर्णन किया है। इन्होंने अपनी विवचेना में कहा है कि च्यवन ऋषि इत्यादियों की विवेचना कुछ चित्रों का वर्णन किया है, एक चित्र नही था। बहुत से चित्र इस प्रकार के हैं। मानव आ रहा है और दूरी से ही उसकी वायु को गन्ध को ग्रहण करके उसके रूग्णों को वर्णन करते रहे हैं। इस प्रकार के आयुर्वेदाचार्य हुए हैं। देखो, एक रूग्णित आ रहा है, यन्त्र विद्यमान है। उसका वायु में जो चित्र गति कर रहा है। वह यन्त्र में आया और रूग्णों का वैद्यराज अपने में अनुसन्धान कर रहे हैं। इस प्रकार का आयुर्वेद हमारे यहाँ बड़ा विशिष्ट रहा है। विचित्र रहा है। यन्त्रों में भी हस्तक्रियाओं से भी उनकी प्रतीति होती रही है। आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। मेरे पुत्र ने यज्ञमान के लिए अपनी कामना प्रगट की मेरी भी सदैव ऐसी कामना रहती है। अखण्डता में परिणत, द्रव्य का सदुपयोग देव याग के द्वारा सदैव होता रहे, विष्णु यागों के द्रव्य परिवर्तित होता रहे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।